



शिखर

\*१८३\*

तैं सो गुन लियो । साम्यभाव अमृत रसपीए ॥ तिनके सिष्य अल्पधी धार । मनसुख सिध संग्या  
विस्तार । तिन इह सिखरमहातम ग्रन्थ । भाषा कियो जानि सिवपंथ ॥ \* दोहा \*  
सब्दकोश अरुन्याय के । तर्क छंद लंकार । ध्यंमल काब्य प्रबंध श्रुति । पढ्यो न एकोसार । अक्षर मात्र  
सब्द पद । अंश बंध जो होइ । पढ़ो सुनौ तुम शुद्ध करै । दोश न दीजो कोय । धर्म ध्यान साधन  
निमत । भव्य जीव हित जानि । सिखरमाहातम भाषा कियो । नहि बिद्या अभिमान ॥ बांनवेद शसिगये ।  
विक्रमार्क तुम जान । अस्व निशित दशमी सु गुरु । ग्रंथ समापत ठान । भू रंवि शशि सुमेर सम आयु  
ग्रंथ की होइ ॥ पढ़ै पढ़ावै सुनहि जे । सिवपद पावै सोय ॥

इतिश्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेसुसंभेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सांगरेण वरणनं महावीर चरित्र संपूर्ण ॥२५॥  
श्री रस्तु कल्याणमस्तु शुभं भूयात् । बांचै पढ़ै तयानें मंगल दाता शुभ होइ । संपूर्ण लिख्यौ भित्ती  
फागण शुक्ला ३ । सम्बत १९४१ । का ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

## \* भूमिका \*

अत्यंत हर्ष का विषय है कि आज दिना आप सज्जनों के सन्मुख वही श्री बृहत् सम्मेल शिखर महात्म ( श्रीमत् श्री आचार्य लोहाचार्य कृत जिसे भाषा छंदोबंदमें श्री ब्रह्मचारी मनसुख सागर जीने रचा है ) नामका ग्रंथ उपस्थित करता हूँ जिसके सुनने तथा पढ़ने की लालसा आप लोगों के बहुत दिनोंसे लग रही थी वह मनोरथ आपका आज दिनपूरा होगया क्योंकि इस ग्रंथ में प्रत्येक तीर्थकर के गर्भ कल्याणक से लगाय निर्वाण कल्याणक तकका वर्णन स्पष्ट रीतिसे किया है यह सिद्धेशत्र श्री सम्मेल शिखर सब तीर्थोंका राजा समक्षिये क्योंकि यहांसे पूर्व कालमें अनंतानंत चौबीस तीर्थकर तथा मुनीश्वर इसी पर्वत से मोक्ष प्राप्ति हुये हैं और आगे ( भविष्य ) में जो अनंतानंत तीर्थकर होंगे वही इसी पर्वतसे मोक्षप्राप्त करेंगे परन्तु वर्तमान कालमें बीस तीर्थकरही इस सम्मेल शिखरजीसे मोक्षगये हैं क्योंकि ऋषभदेव कैलास पर्वतसे बास पूज्य चंपापुरसे नेमिनाथ गिरनार पर्वतसे महावीर पावापुरसे और शेष बीस तीर्थकर सम्मेल शिखरसेही मोक्षगये हैं परन्तु यह दोष कालका है कि अनंतानंत कोड़ी उत्सर्पिणी काल व्यतीत होनेपर कोई ऐसा काल आजाता है जिसमें इसनियमका उलंघन होजाता है अर्थात् उसके प्रभावसे तीर्थकरों का निर्वाण अन्यत्र स्थानसे होजाता है ऐसे कालको हुंडा सर्पिणी कहते हैं इसमें आप कुछ संदेह न करें क्योंकि यथार्थमें चौबीस तीर्थकरोंका निर्वाण भूमिसम्मेल शिखरही है—

यह क्षेत्र बंगाल प्रान्त के जिला हजारी बाग के ग्रीडी स्टेशन से ९ कोस चलकर मधुवन सुकामपर उपस्थित है तथा इसरी स्टेशनसे ७ कोस चलकर है इस सम्मेल शिखरसे अनंतानंत तीर्थकर व मुनी मोक्ष पधार हैं इस का कंकड़ २ पूजनी कहै इस तीर्थ राजके दर्शन मात्रसे अधिक संसारमें नहीं भटकना होता उनचौंस भवलेकर पंचास

में भव में अवश्यही सिद्धस्थान में जाकर अजर अमर अविनासी सदा जागती ज्योति होकर अचल रहता है इसके सिवाय यात्रा करने वाला नरक तिर्यच गति में तथा स्त्री पर्याय में भी जन्म नहीं लेता ऐसा नियम है अगर इस ग्रंथ में किसी मुकामपर किसी प्रकार की त्रुटि हो उसे बिद्वजन सुद्ध कर पढ़ेंगे इसलिये ऐसा महात्म इस तीर्थराजका जानकर प्रत्येक गृहस्थी भाई इस ग्रंथ की एक २ प्रति अवश्यही अपने पास रखेंगे

निवेदक सभामार्थी

रघुनाथप्रसाद जैन पद्मावती प्रोखाल

ऐत्मादपुर (आगरा)

## सब से पहिले इसको पढिये

पाठक महाशयों!

यह आपका पवित्र धर्म शास्त्र है, हस्ता लिखित ग्रन्थों की समान आपको इसका विनय नमन पूजन इत्यादि करना उचित है क्योंकि जिनबाणीपना दोनों में समान है यदि आप ऐसा न करेंगे तो हम समझेंगे कि आप जिनबाणी के महत्व का विनय नहीं करेंगे केवल रुपियों काही विनय करते हैं यदि ऐसा करेंगे तो आप अविनय संबंधी दोष के भागी होंगे

मिलने का पता

पं० मूलचंद जैन

तथा

वा० रघुनाथ प्रसाद जैन

\* ॐ नमः सिद्धेश्वर्यै नमः श्रीजिनाय नमः \*

## अथ शिखर माहात्म्य लिख्यते

( छप्यै ) श्रमसेवितचरण कमलजुग समुल्लासक ! श्री शिवलोक विलोक ज्ञानमयहांत सुनायक ॥ अनमितसुख उद्यौत कर्म बैरी घनघासक । ज्ञानभान परगास जास पद सबसुख दासक ॥ ऐसमहंत अरिदंत जिनसेबहु निशिदिन भावसौं । पावो प्रमान अबिचलसदन बीतराग गुनचावसौं ( दोहा ) अहंत प्रसुकौं सुमरिकैं सिद्धचरण चितलाय । अष्टकर्म मलत्यागिकैं अष्टमहायुनपाय ( सवैया ) ज्ञानवर्णी कर्म के गयेंतैसबज्ञान होतदर्शना बरणी गयेंतै पट्टव्यपेखिए । आयुकर्मनाशे अवागाहन सुथिर होतनम कर्मनाश ते अमूर्तीकदेखिए ॥ बेदनी कं नासै निरबाध गुनहोत सारमोहनीके नासैं शुद्धचारित विशेखिये । गीत कर्मनाशै तैअगुरल युगुन होतअंतराय नासै तैअनंत बार्थलेखिये [दोहा] पंचाचारक्रियाधरें गुन षट्तीस प्रवान । सोआचारिजनमन तैं पावै पदनिर्वाण ॥ पंचवीसगुन जेधरेंपढ़ै पढ़ावैसार । उपाध्याय सुकि मनबसौ होहु सुमतिदातार नगनदिगंबर जेरहैं बसुबीस गुनधार . सौंसुसाधु प्रनमौंसदा पाठ भवदधपार ॥ ये पांचूपद सुमरिकैं बंदौं सारदमाय । जाप्रसाद बुध होयसुझ कहौं शिखर गुनगाय (सवैया) परमपुनी तहिमभूधर प्रगट भई सकल जगतजनपय नाशकरनी । एकादस अंगजु ओउपगहैं चारिदस द्रव्यषटत्व सातधारारूप बरनी ॥ बचन विलास भाश भाशत अमल जाकै लौकालौकलौकियत शोक सबहरनी ॥ ऐसीजिन बांनी भव्यजीवनके मनमानी पारखेकौं एकशुभंतरनी ( दोहा ) नमस्कारकरि सरस्वति गण धर सीसनवाय । प्रह्वनदि सुनि आदिगुर परणमौ सबबर्दाय ॥ लोहाचारिज सुनिकही प्राकृतसंस्कृत

रूप । काल दोष बुधि हीनअति भाषा रची अचूय ॥ शिवरमहातम गुनप्रचुर मममेधा अति हीन  
 गुरु प्रशाद वर्त्तनकरौ भगत भाव बश हीन [चौपाई] जंबूदीप दीपहँ सार । लखजोजन ताको विस्तार ॥  
 मय्यसुदर्शनमेरु प्रधान । महिमां कौ कवि कइबखान पंद्रह कर्मभूमिजसार । जिनपतिउपजै सुखदा  
 तार ॥ सुरपति जिन पति कौं लेजाय । सहस्रअधोतर कलशढाराय ॥ अष्ट प्रकारी पूजाकरै । जै नंदी  
 बृद्धिउच्चै ॥ साँसुमेरगिर सौहँसार । बरनन करत होइविस्तार ॥ ताके पूरब पश्चिम जान । क्षेत्रविदेह महा  
 सुखदान ॥ एरावत उतरि दिशिकहा । भरत क्षेत्रदोनो दिशिलहा ॥ पंचसतक षष्ठीसप्रवान । जोजनकला  
 रसाधिकजान । तहांखंडषट सौहँ सार । आरज खंड मोक्षदातार । जीवअनारजे उपजै तहां । खंडमलेक्षजो बरतै  
 जहां । आरजमै जिय आरज होय । कर्मकाटि पडुचै शिवलोक । मागध नाम देसतहां बसै । अमर खंडकीसो  
 भालसै । परवतपांच अधिकशोभत । नरनारी जनमन मोहंत । विपुलाचल बिभारगिरदोइ । रत्नसुवर्णउदय गिर  
 होइ । राज गृहीनगरी सुविसाल । बनउपवन सौहँगुनमाल । राजकरै श्राणिकबर भूप । न्याय नीति अतिधर्मसरूप  
 पठानितसुसुभ चेलनां । सत्यसरूप शील गुनवनां ॥ जैनधर्ममै अति परबीन । गुणसम्यक्त सहित अमली  
 न ॥ जिन पूजावसु विधि जे करै । सुगुरसेव हिरदै में धरै ॥ दांनचतुर विधिनिति प्रतिदेइ । गुनजनको  
 गुन गहि लेइ ॥ दंपति सुखभोगें सुभनीति । पालै प्रजाअहन्निस प्रीति [ दोहा ] रिठबसंत सुखदाइनी  
 आई परम पुनीति । बनउपवन फुलसितभएलीएमद नरसरीति (चौपाई) राजा तवमन हरषित भयो ।  
 बनक्रीडाकरनँ चित दियो ॥ रानी आदि सकल पस्वार । पुरजन मनहँषे अधिकार । बनमै जायजोकीडाकरी  
 जिनपूजा हिरदै में धरी ॥ बसुदिन बसु विधि मनहरषाय । नंदी सुरप्रजामनलाय [ दोहा ]  
 जिन अरचै आनंद धरै बहुत भगत गुनगाय । रानीमन हरषित भई पुन्यअनल उपराय (चौपाई)

बनहींमें भोजनउपजाय । व्यंजन बहुतकीये हरषाय ॥ राजाद्वारापेषण करें । मुनि आगमन द्वियमे धरै  
 पुन्य उदैआइमुनि राज भवदाधि तारनतरन जिहाज ॥ तीन लोक में दुर्लभ होय । पुन्य उदै पावै नरसोथ  
 तिष्ठ तिष्ठ मुख सं उचरै । पड़े गाहन विधिवत विधि करें ॥ नौया भगति हीए उपजाय । सातौ दाताउन  
 जुतराय ॥ अंतरायगत भोजन दीयो । पुन्य कोस बहु शत्रै कीयो ॥ अखै निधि मुनि बोले जबै । जैजेकार  
 कीयो सुरतवै ॥ मुनि अस्थति करि कैं नराय । श्रीमुनि थापिसुमस्तक नाय ॥ धर्म बृद्धमुनिवर तबकही  
 शिव मुख संपति कारण सही ॥ नरपति कहै नायनिज शीस । धर्म सरूप कहौ जगदीस ॥ विनकारन तुम  
 बीर समान । हितउपजावन सबसुखखान [ दोहा ] मुनि मुखतै वानीखिरी हस अस सरूप । सुतैपुंठकरि  
 मनलायकै पीवै श्रेणिकभूप । (चौपाई) धर्म अनेक एक प्रकार । जिनबानी भैबहुविरतार ॥ श्रावक धर्मप्रथम  
 इहसार । सोअनेक सुभशांचनहार ॥ उनइकबीस प्रथम अनुसरै । कर्म नशकारनमनधरै ॥ जैन संघसौराखै  
 प्रीति । निजअनभौकी धारैरीति ॥ षटप्रकार गृहदोष निवारि छहौ कर्मनिनि प्रतिअवधार ॥ दर्शनजुत  
 जोजपतप करै । सो अनेक भैपति गहै ॥ अथै गृहके षट्दोषवर्नन श्लोक ॥ खंडनी पेखनी चूल्ही ।  
 उदकं भीसमज्जने । पंचसून्यगृहस्थस्य । षट् द्रव्यमुपाजनं ॥ षट्कर्मश्लोक ॥ देवपूजगुरु पास्ति  
 स्वाध्यायसंयमंतप । दानश्चेति गृहस्थान । षट्कर्मानिदिने दिने ॥ (दोहा) त्रेपन विधिकजि क्रिया आतम  
 मुख हितेहेत । सागरीरुचि धारि कैंअबिचल सिवपदलेत ॥ त्रेपन क्रियागाथा । गुनबयत बसम पडिमा ।  
 दानंजल गालंनच अनयामियं । दर्शननान्चरितं । किरियाते वनसांवाया मनिया ॥ कुंडलिया ॥ बरनै वसु  
 विधि मूलगुन बारहबूत अवधार द्वादसविधि तपआदरै समगुनएक विचार । समगुनएक विचारसार प्रतिमा  
 एषदस । दानचारि प्रकार और जल गालनकीजस । दर्शन ज्ञानचारित्र रात्रि भोजनपरहरनै । एत्रेपनविधि

कही सही जिनपति नैवरनै । [चौपाई] धर्म रूपक्रिया सबजान । सुभक्षेत्र मुनि मिति परमान ॥ तीर्थ करके विव भगाइ करै प्रतिष्ठा मनहरषाइ । जिनपूजा बहु विधि बिसरै । चारि प्रकार दान नितिकरै ॥ जिन शिद्धांत लिखावैसार । पढ़ै पढ़ावै करै बिचार ॥ जिन मतसंघ चारि प्रकार । भक्ति करै जिन शक्ति समार ॥ शिवरवद्धा जिनमंदिर करै । बहुउपकारनतिहाले धरै ॥ तीरथ भूमि बंदनासार । करै परमपद सुखदातार ॥ सात सुक्षेत्र कहे मुनि राइ । दंपति मुनि हियमहरषाय ॥ छुनिमुनि श्रीमुनि धर्म बखान । आत्म लीन रहित अभिमान ॥ तेह विधि चारित अनुसरै । षट्काया करुणामनधरै ॥ अठईस मूलगुनधार । सुद्ध आतमां करैविचार ॥ करम कलंक कालिमातास । लोका लोक ज्ञानपरगास ॥ सुखसता अवगम चेतना । सुद्ध वेद मिति प्रानमुगनां ॥ गुनअनंत लहि शिवपुरवसै । जगत जाल में बहुरि न फसै ॥ (दोहा) इहविधि मुनि के धर्मकी क्रियाअनेक प्रकार । एकरूप वर्नन करी ग्रंथबदनभयधार ॥ धर्मा मंगल मूलै उसहो मूलंच सबहुष्कानं । धर्मो बलंचविपुलं । धर्मोतानंच शरणंच ( चौपाई ) छुणिश्रेणिक नायो निज सीस । मोपर कृपाकरो जगदीस ॥ कोसुक्षेत्र तीरथ परधान । बरनन करौ महागुनवानं ॥ मुनिवर कहै सुनौ नराय । सिद्ध भूमि बरनौ सुखदाय ॥ जिसथानक जिन पति सिव लहै । सोईसिद्ध भूमि श्रुतिकहे अष्टापद छुनिहै गिरनारि । गिरमंदारमुक्ति दातार ॥ शिवर समैद बीस जिन धाम । और कहे शिव थानक नाम ( दोहा ) इसप्रकार मुनि वचन कहि माग सुद्ध निहारं । करिबिहार सुखदाइनी सामा यक व्रतधारि ॥ ( चौपाई ) राजा अनसौं निज पुरआय । राजकरै सबजन सुखदाय ॥ धर्म काजमै अति लवलीन । जिनवर भक्ति सीहत परबीन ॥ इकदिन सभामथ्य नरनाइ । जिन जात्रा चरचाबरनाइ ॥ शिवरपुरमेर बीस कल्यान । मुनि अनेक लीनौ शिवथान ॥ इम कहि संबंटप उद्यमकीयौ । च्यारि प्रकार



संगनिज लीयौ ॥ राजा चलेपहुचौ वहि ठौर । जो जनपांच शिखर भू और ॥ क्षेत्राधिप ब्यंतर जहँआया।  
 अति उपसर्ग कियौ दुषदाय ॥ इंज्ञावात मेघ उपजंत । उपलादिक बहु विधि बरषंत ॥ राजा मनचेतापुर  
 भयो । कौन कर्म सौँ इह दुखथयौ ॥ बिलखबदन हैनरपतिजदा । निज पुर्मैफिरिआयौ तदा ॥ नीति राजा  
 मारण संचरै । जयतप हित बहु विधि आदरै ॥ निति प्राति पूजादान विचार । करत हरष हियमें अवधार ।  
 ( दोहा ) एकसमै पुरानिकट नग बिपुला चलतहुनाम । समो सरन महावीरजिन । आयो सबसुखधाम ॥  
 ( चौपाई ) जोजन एक तनौविस्तार । तीन कोट सौँहुँ सुखसार ॥ दरवाजे व्याखौँ दिशभले । अति  
 उतंग शिवकौँ मनचले ॥ ( दोहा ) नृत्यशाल गोपुरनिकट मंदिर बनै अदृप । सुरदेवी तहईकै  
 नाचत सरूप ॥ ( चौपाई ) बीथी बनी बीचि में धनी । तूपादिक सोभा सबसनी ॥ तीन लोक  
 तामै निरखंत । भव्य जीव मनमै हरखंत ॥ चैत बुक्षसौँहुँ अति धनै । नगर असौँक बहुसुंदरवनै ॥  
 परिधा भरी अमल जल रासि । पुंडरीक तहलयहुलास ॥ षटरिउ के फलफूल बिसाल । बनउपवन सौँहुँ  
 गुनमाल ॥ मत्तमद्युप जहँ रुन रुन करै । मानूजिन गुनगन उचरै ॥ व्याखौँ दिस वापिकाचारि । श्रेणी  
 मनहाटक मयसार । सवजन तनसुचिकर सुखपाय । जिन पूजाउकरै मनलाय ॥ धुजा पवनकर लहकसार ।  
 भव्य जीव आवन उपकार ॥ धूपकुंभ धूवा नीकलै । मानौँ पाप सकल उडिचलै ( दोहा ) फटिक कोट के  
 अति निकट द्वादस संभानिहारि । रचिधनपति अति भक्त सुत हरिअज्ञा अवधार ॥ सभा बर्नन ( चौपाई )  
 प्रथम सभाभुनि गनधरलसै । नरनरपति दूजे में बसै ॥ कल्प सुबासी देवसुजान । सभा तीसरी कहबसान  
 ॥ मानुष्यनी चौथा मेंसही । और अरज काते में कही । कल्प बासनी देवीसार । सभा पांचई में निरधार ।  
 षष्ठम सभा जोति कीतिया । सप्तम मैजोतिक कीतिया ॥ अष्टम में ब्यंतर सबजान । ब्यंतरनी नौमीसन

आंन ॥ दसमी सभा भवन पति बनी । भवन तिय एका दसगनी ॥ द्वादशमी में पसूल संत । देखत सब जनमन मोहंत ॥ ( दोहा ) तीन तीन च्यार्यौ दिसा सकल समसोभंत ॥ श्रीमंडपति सबीचि में बनत लहौ नअंत ( छंदचाल ) सिंहासन तीन बखानौ ॥ सोभासुभ सुंदरजानौ । भामंडलकी डूति रानै । छवि कोटि दिवाकर लजै ॥ परजाइ सात लखलजै । जिस देखत पातिग छीनै ॥ सतइंद्र हर्ष उपजावै । जिउपरि चौरसगवै ॥ तहँ छत्रतीन सिरसौहँ ॥ त्रिसुवन देखत मनमोहँ । सुरदुंदभि नादवजावै किन्नर मिलि जिनगुन गावै ॥ तहां धर्म चक्र सुबिरजै । देखत मिथ्यातम भाजै ॥ सुरजात सुमनसुख दाई । बरसै अति हित उपजाई ॥ गंधोदिक बृष्टि सुहावै । सबजीवनके मनभावै ॥ सुभमंदमरुत हितकारी परमल अति आवत भारी ॥ इनि आदिक रचनाबरनी । आतम हित कारण करनी; गुनगावत पारन लहिए । बोछिछुछि कैसे कहिए ॥ ( दोहा ) अंगुल च्यारि प्रमाणहँ अंतरीक जिनकाय । शुद्धरफटि कंसमानेतेनआनन च्यारि सुभाय ॥ बानी छिरै अनक्षरी सप्तभंग सुभसार । तीन काल उपदेस मय । सबजीवनहितकार (अडिल) ॥ बन पालिकइहदेवन भयोअचिरजतहां । प्रीति कौंसबजीवबैर ताजि जिनजहां । षडरितु के फलफूल सकल जनमन हरै । अपने कर अवधारि नृपति आगे धरै । सीस नाय करि जोरि भूप सो यौकही । समो सरन महा बीर तनौ आयो सही । महिमां है अति अधिक कहाँलौं गाईए । जिस प्रसाद तुम नाथ अमंगद पईरा ( दोहा ) बनरक्षक इमबचनजुनि भूपति अतिहरषाय । सात पैड उस दिशि धरे बहुबिधि ससिनवाय (चौपाई) बस्त्रा भन दिएतराई । बनमाली चालौ हरषाई । आनंद भेरि नगर मैकरी । श्री जिन भगति हूदैं में धरी । राजा रानी पुरके लोग द्रव्य लीएँ जिन पूजा जोग । गमन कियो धिपुलाचल जाय । जैजैजैजैहोइ ( दोहा ) समो सरन में जाइकैं । बंदेबीरजि

नंद । अहौनाथ तुमदरसतैं कटे करम के फंद । निज तन सुचिश्रेणिक कीयौ । वस्त्रा भूषण धारि ।  
जिन पूजाबसुद्रब्यजुत । रची अनूपमसार । जलचन्दन अक्षत सुमन । नेत्रजदीपसुधूप । फललेप्रसु आगे  
धरे । हरषे श्रेणिक भूप । पूजा करि आनंद सौं । लीये आरती हाथ गुनगर्भित जयमाल सुभ । पढत  
हिण् हरषाय ( दालजयमालपछडी छन्द ) जैजै जिनतारन तरन धीर ॥ बिन कारन शिव सुष कर  
नवीर । जै जै जगजीवन सुख निधान । परमात्म गुन सुविराजमान ॥ जै जै जगनाथक अति पुनीति ।  
वरनी बहुविधि सुभ धर्मरीति । जै जै अनन्त गुन धरन हार । जसंगावत इन्द्रने लहइपार । जै जै कम-  
लानन कुमंदचंद । मुखदेखत नासै कर्मफंद । जै जै प्रसु चिंतामणिसमान । चिततदाइक सिव सुखनिधान ।  
जै जै समुद्र संसारतार । तुम बिनदुखपायो में अपार । जै जै करनाकर दीन देपि ॥ मोपरि करुनांकरिण  
विशेष । जै जै तुम लोका लाक भास । मिथ्यात महात्म कीयो नास । यह विधि अस्तुति बहुकरिणराइ  
करजोरि बिनयसौं सीसनाइ ( दोहा ) फुनि गनधर मुनि नप्रभिकैं । वैडेसभामझारि । जिनवानीअंमृत  
मई सुनै श्रवन सुषकार ( सोरठा ) धरम जगत में सार । सुखकारी सब जीवकौं । सागारी अनगर । इविधि  
भेद बहु विधि कहै ( चौपाई ) आत्म धर्म जगत में सार । मुक्तेरमारमर्नादातार । साततत्वषट्दरव सुजां  
न । जिनवानी में होतवर्षान । सम्यक्दर्शन सम्यकज्ञान । सम्यक्चारित धर्म प्रवांन । जिनवानी पीयुषरस  
भरी । भविजन पाखतारनतारी । गुनसम्यक्त धर्म की चाल । आवतहुदैं नसैं जगजाल । नय अनेकगुन भेद  
अपार । गुनथानक चरचा अवधार ( सवैया ) धर्म हिण् में धारैं सिवपद देनहार धर्म विनाही नरनरक  
में जाइगो । धर्म तैं इन्द्रधरनेंद्र पदपावत हैं धर्म तैं दिवस आनन्द में विहाइगो । धरम जगत सारसिव  
पद देनहार धर्म करत सब कर्म नशायगौं । ऐसी जानि चित आंनिहिण् में बिबेक बांनि कीजे क्यौं न

सुभ जानि पीछे पिछताइगो [दोहा] समो सरण के बीच में होए धर्म उपदेस । सबजन सुनि हरषित भए । संसय रहौ न लेस ॥

इति श्री काष्ठासंग लौहाचार्य विरचिते तीर्थ महात्म्ये समेदा चरित महात्म भाषायां मन सुद्ध सागराणव वर्णनं प्रथम पाठिकाधिकार ॥ १ ॥

( सवैइया ) प्रथम जिनंदसुखआनंदके कंद मरुदेवी जाकेनदि नाक्षिराय प्रसुतात हैं ॥ आयु लष पूर्वचोरासीहेमदुसिदेह लक्षण सुधेन पुत्रचूर्ण सुहातहैं । ऊंचीकायपांच सतधनुषजनम लियो नगर बिनीता माहिदेषे दुःखजातहैं ॥ आदि नाथ नाम जाकौ पूजतसुरेसतम सुषसागर जलधि नमतहरषातहैं ( दोहा ) धर्मकथा सुनिकैं नृपति । हर्षहिणनसमाए ॥ अवर लषिकर जोरिक्ैं । भक्ति सहित सिरनाय प्रभकरै श्रेणिकतवैं ॥ सुनौं जगत पतिवीर । तुमसब संसैहरनकौं ॥ औरनकोईधीर शिषरसुमेद सुबंदने । गयो हर्षउपजाइ । अतिउपसर्गतहां भयो मारगसौं फिरिआय ॥ सोससै मोमनलसैं । मेढौधर्मजहाज ॥ किनउप सर्गकीयौमहा । कारणकहौ महाराज ( चौपाई ) जिनबांनी सबससैंहरनी । गोटमसुनि जिनवानीबरनी । कारन जात्रा सुनिनृपराज । शिषरसमेद महातमआज । तुमनिये गनांही हैं राय । जात्राहोइनही इहकाय ॥ क्षेत्रपर्शबंध अनुसरैं । तेइसक्षेत्रसु परसनकरैं । जेनरभगति भावउपजाय ॥ जात्रा करैं महासुषदाय । नरक पसु गति छेदनहार ॥ सिवपद दाइते पावैसार ( दोहा ) जिनसुष तैएवचनसुनि । भूपति निजसिरनाय करुनां निधि सुझि हृदयमैं ॥ संसैउपज्यौ आय । रावन शिषर सुमेदयै । गजगहनैं कैं आय । प्रतिनारायणनर कथिति । शिषरशौल क्यौंजाइ । पूर्वबंध अतुबंध जिस पदबीधारक जानि ॥ जात्राभावन तिनकीयौ । संसय हृदयन आन । चित्रा भूमिसुथेसदा ॥ लछिनरं वरिस्तकसार । द्वादसयोजन मानसुव । सिषरनाम सुत

धार ॥ रचना अब इसक्षेत्रकी ॥ महिमांघुनि नरराय । सिद्धभूमि इसक्षेत्रमें । दर्शन पातिगजाय । भव्यरासि  
उपजैतहां ॥ जीवअभयनहोइ । काल पाय सिवपद लहै ॥ एकैहृदयसोय ॥ सिद्धकंडउहांबीस है । व्यारि  
अन्यसुभ्रथानं ॥ एचोबीसीकूटके । संग्यासुनोसुजांन ( सवइया ) अष्टापदसिद्धिबर दत्तधवलअनंद अविचल  
भोहन प्रभासनांमठांनिये ॥ ललित सुकुंभ और सुप्रभ विद्वात कूटसा कुली मंदारकृत भंजनसुजांनिए । स्वयं  
भूसुदतवरसुप्रभासंगयान, घरनादिक सवल ॥ निरजर सुब्रषानिए । प्रभव सुकजयंज सुभद्रसुपावा नामनमत  
चौबीसी कूटकरमत्रैभानिए ।

\* दोहा \*

कूट २ प्रति तीर्थ प्रति । सुनिवर और अनेक ॥ कर्म कलंक निवारि करि लीन भए रस एक ॥

\* चौपाई \*

सिषर सुमेद मुकति दातार । भवजल जलधि उतारनहार । संसारी सुख दाइक जांनि । क्रिया सतुपजु  
जात्रामानि । प्रथम जिनसुर पूजाकरै । भाव सुद्धकरे पातिगहै । क्षमारूप चौसंधसमेत । आहारादिकदांन  
सुद्वेत । स्वेत बस्त्र सबधारै अंग । आत्म गुनचरचा सुनिसंग । इसप्रकार जो जात्राकरै । सिव रमणी  
रामा सो बैरे ।

\* दोहा \*

लाल बस्त्र सबधारिकै जिनवर पूजाकरंत । जात्राकरै सुभाव जुत । कमला लहैअनंत । पहरे पीतमनोग  
पद । संध भगति अधिकाय । सुमरि सिषरि जात्रा करै । नंदन सुभ उपजाय । हरित बसन को पहरिकै ।  
हरपहिय गुन गाए । जिन पूजै जात्रा करै । सब चिंता भिटिजाय । स्वामहुकूल सुत निततन । जिनवर

भक्ति करंत । जात्राकरि अति सुषलहैं तन के रोग हरंत । इस विधि बहु सुख दैनि कौं कल्प बृक्षकरूप  
चिंतामनि सुर धेनुसम । सिषिराचलसुनि भृप । क्षेत्रपाल निस क्षेत्र को । पालतहैं दिनराति । व्यतर दस  
लषि भृपसौं । भवि जीवन सुखदात । अडिल । ऐसे श्री जिन बचन सुनै श्रौणिक जवैं । मनमें अति  
हरषाय सीश नाथो तवै । बर्तमान जे न राजकहौ किसिविधि भए । कौन छूट के सिखर कौनजिनशिवगए ।

\* दोहा \*

भव्य प्रश्न इह तुमाकियो सबजनसंसैहर्न । मनबच कायाश्रवनदै ॥ सुनो कथा शिवकर्न ॥ श्रीगोतम मुखते  
कहै । जंबूदीप सुथान । प्रख नाम विदेह शुभ । पुष्कल देशबखान ॥

\* चौपाई \*

पुंडरीक पुरहैं तहांसार । बज्रसेन नृप जिन गुनधार । श्रीकांता पटरानी जानि । शील सुलछन अति  
गुनवान ॥ सोलम स्वर्ग देवसो आए । बज्रनाभ चक्री सुतथाए ॥ बज्रसेननृप जेन तेइ बज्र नाभि सुतराज  
सुदेइ ॥ तपकरि केवल ज्ञानउपाए ॥ करिविहार अति धर्म बटाए ॥ बज्रनाभि चक्री पदधारि । स्समिति  
खंड साधि मुखकार ॥ राज कियो बहुकाल नरेस । देखे मस्तग धवल जुकेस द्वादस भावन निज मन भाइ  
अति बैराग भयो नरराय ॥

\* छंटा \*

संसार असार विचार लीन । दुखदाइक करिए मोह छीन ॥ जिनतात तीर्थ पति पास जाय ॥ ले  
दिक्षा अति तप कियो राय ॥

थित पूरा करि धरि संन्यास ॥ सर्वार्थ सिद्धि कीनौ बास सुनि श्रेणिक आगे शुभकथा ॥  
आदि नाथ अवतार सुजथा ॥

\* चौपाई \*

थित पूरा करि धरि संन्यास ॥ सर्वार्थ सिद्धि कीनौ बास सुनि श्रेणिक आगे शुभकथा ॥

\* दोहा \*

जोतिग चुक्र प्रमान सौ ॥ काल चक्रकी चाल ॥ ऐरावत औरभरत में ॥ रहट घड़ी जिममाल ॥

\* चौपाई \*

इह जोभरत क्षेत्र अधि राम ॥ काल दोइविधि बरनौ नाम । प्रथम काल अवसर्पिनजानि ॥ उत्सर्पिणी  
दूजौ परमान । दश कोडा कोडी थितिकही । इतनी फुनि दूजो की लही । यह अवसर्पिणी काल  
बेचारि । ताहू भेषट भेइसुधारि । पहिला सुखमासुषमाजानि कोडा कोडि बेदनदमंनि । मानवती  
न कौस तनधरै । तीन यल्प की थिति अनुसरै । तजि दिन बदरी परमान । करै अहार निहारन जानि  
। योग सोग नहि ब्यापै कोइ । साल सुभावी सब जन होइ । सुरपादप दसविधि के जहां । गेहा गेह ।  
सुख भोग तहां । सुख में काल बितैतै जोइ । पुन्य पापनहिं जानै कोइ ॥ अंत समै कन्या सुनजनै  
दिन उनचास तरुनता भनै । ते दोऊ नरि भरतार । भोग भोगवै सुख भंडार । छोकजंभाई सौतनुतज  
प्राण त्यागिँ सुर के सुख भजै । तनकपूर सम तब खिरि जाय । दुखचिंता कोईन कराइ ।

\* दोहा \*

प्रथम काल की रीतिइह बरनी जैन आमाय । अब आगे बरनन सुनौ ज्योसंशय मिटजाय ।

## \* चौपाई \*

काल दूसरे को परमंन कोडा कोडिजलधि त्रय जानं । दोग कोस की ऊंची काय । जुगल यल्प  
तह आशु बताय । दिवस दुतिय विभीत समान । असन करे अतिशय बलवानं ॥ और रीतिपूरव जे  
कहता समान जानौ नृपसहा ।

## \* दोहा \*

अब सुनि तीजे काल के ॥ बरनन बहु विधिगई । कोडाकोडी जलाधिजुग । थितिइहदए बताय ।

## \* चौपाई \*

एक कोस ऊंची तन धरे । यल्प एक की थिति अनुसरै । असन आंवलेके परवानं । निति प्रति  
करे महा गुनखानं । और रीति पूरव समसार ॥ जुगल धर्म इस विधि अवधार । अंतसमें कुलकर  
विधिभय । नांय मात्र सो मैं निरमए ॥

## \* अडिह \*

यल्प अठ में भाग काल थिति हूँ जहां । । तेम प्रांमिति सुखदय मनुज उपजे तहां । मति श्रुति  
अवधि भिचारि ज्ञान धारी सब । जो संसय उपजांत हरेसच की तबे ।

## \* संवेया \*

प्रति श्रुति प्रथम दुतिय सुजमत नामभेभंकरसीमंकर मानिए । पेमघर विमल पानचछुष्यांन आव मोहै  
नौमोहै जसस्वी अशिक्षंद्र दुसा जानिए ॥ चंद्रामहै ग्यारमौ मरुदेवहै द्वादश तेरमौ प्रसेन जितमनुज  
प्रमानिए । चौदसौ सुनाभिराय मनुज प्रसिद्ध भयोहाभास्तकीनी सबै निगम बखानिए ॥



\* दोहा \*

नाभरायकी आयुथिति । पूरवकोटि पूबान ॥ सर्वपांचसैं धनुषकी । काया ऊंची जानि ॥ मरुदेवी बनिता सहित ॥ भोगेभोग मंहत । जिनवर जिनवर अवतरे ॥ बरनत लहैं न अंत ।

\* सोरठा \*

आदि नाथ अवतार ॥ नाभि रायधरहौ एसी । इंद्र अबाधि अवतार ॥ धनपति कौ आज्ञादये ॥

\* दोहा \*

नगर विनीता ठुमरचौ । श्रीजिन जन्मति योग ॥ पंचाश्रय करौतहां । सुधी होइसब लोग ॥

\* चौपाई \*

हरि आज्ञा धनपति सिरधारि । नोद्वादसजोजन सुषकार ॥ नगरी रचीपची मनिमई । सुरपति सोअति सोमादई ॥ रसमिति माश अगाऊं जहां । रत्नादिक बरषवैं तहां । छपन कुमारी देवी आई ॥ जिनमाता सैंचिबुलाई ॥ बदि अपाढ़ दुतिया दिनआय । गर्भस्थिति कीनी जिनराय ॥ जाम जामिनीहैं अवशेष । माता सौलह सुपनेदेषि ।

\* दोहा \*

जोसबार्थ सिद्धिमें बज्जूनाभ बरथाय । निजतिथि पूरन चइतहां ॥ मरुदेवी उरआइ ।

\* सर्वैया \*

स्वत सुर कुंजर बृषभ स्वत गाजतहैं पंचानन सुंदर रसा विराजमानहैं । सुमन सुदाम जुग सोम

रवि भीन जग जुगल कलस सर जलधि प्रसन्नहैं । सिंध पीव देव जान छुनिद आवाश मान उद्योत  
प्रकास रावाशरत्न सुखखानि हैं । धूमविन पावकजिनेशगुन सूचकहैं षोडस सुपन जिनमात सुखदांनहैं ॥

\* दाहा \*

एमुपन जिनमात लषिसव जीवन सुषकार । तूर्पनाद सुनि प्रातलषि ॥ निद्राकरि परहार ॥

\* चौपाई \*

वपुसुचिकरि अतिमन हुलशाय ॥ बस्त्रा भरन सिंगार बनाय । सखासहित द्रगमन जौकीयो । देषि  
नाभि नय आदरदीयो ॥ अर्द्धा सनदैं पृच्छयो राय । आगम कारण कहुसुखदाइ ॥ षोडस मुपन अंत निसि  
जांम । देखफल कहए सुखधाम । स्वपन फल नांम फल ॥

\* सवैया \*

गजतैं महंतनंद वृषभतैं राज वाइके हारतैं वली जोरमा लक्षिवानजू । तीर्थ करतरमाल शसितैं सरम  
कार रभितैं अज्ञान हरभीन सुखदानजू ॥ कंभतैं निधानं वतसतैं सुचिहुंधार सागरतैं ज्ञानपीठतैं त्रिज्येक  
मानजू । मोगी सुर जानथकी भीन गेहग्यानतीनमनितैं सुगन धार वन्दिक्कर्म हानिजू ॥

\* चौपाई \*

अवधि ग्यान लाखि जंध्योराइ । जिन अवतार होइसुखदाइ ॥ इहविचारि दंपति सुखमार । कोकवि  
बरनसकै गुनधार ॥ तिहि अवसर सुरलोक मझारि ॥ घंटा सबद भयो अनिवार । जोतिरिलोक  
नाद हरिहोइ ॥ बजै भेरिब्यंतरी लोइ । भवन पति सुर संख अपार । स्वयंनाद नादति अधिकार ॥  
नश्री भूत मुक्क सुरजोइ । सिंहपीठनमि अचिरज जोइ । सौधभेद अवधि अवधार । जान्यो आदिगर्म अवतार

अति आनन्दे चतुरनिकाय । देवचले पूजा चित लाइ । आय नभग्रह मन हरपाय । मनि धिष्टि रथपि जिन मांय । करि अभिषेक गर्भ कल्यांन । मृषन वस्त्र प्रजि तिहि थान । अस्तुति करि गुन गाय विशेष । अपनू जनम सुफल करिलेपे । हरि आज्ञा सुखनितोदइ । जिनजननी सबै स्वयंभेव ।

\* दोहा \*

इन्द्र गयो सुरपतितबै । नाभि नृपति हरपाय । गतिनृत आनंदजुत । इह विधि काल विहाय । नवमासा पूरनभए । जन्म सबै हरआए । सुखुत अति आनंदउर ॥ जन्मोत्पव चितलाए । मधुरित मधुअलि पक्षजुत नंदप्रीभितिधितिसार । ऋक्षउत्तराषाढ सुम । आदिनाथ अवतार ॥

\* चौपाई \*

हरि औरापति सोमाकरी । जिनवर भगति हिएमै धरी । जोजन एक लक्ष परवांन । सुभ्र उतंग काय अमलांन ॥ बदन एक सतचमुसदमार । रदपूति सर उज्जल जलधार । शरशर पूति कमलानिसोभंत सर कर रूप मांनराजंत । कमलनि प्रतिपंकज सुभसार । सरभुजमितनिद्रागतसार । पूति पंकजदलवसुसत लसेजिनजन्मात्रतार सुनिहसै ॥ नृत्यकरै निजमाजसमेत । सुधानिताजिन मंगलेहत । सोगज चढि हरिजुत परिवार । नगर धिनीता गमन विचारि । सकल सुरासु जै जै करै । नंदवृद्धि सुखतै उच्चै । सची सचीपति आयसुपाइ । जिन प्रसूति ग्रह पंडुची जाय । जिनदर्शनकरि हरषीअंग । जिन जननी देवी जिनसंग । अस्तुतिकरि सुखनिद्राची । मायामयथाप्यो सिसुसची । तीन लोक पति निज करलेए । आपु सची पति के करेए । जुग दृग देखि रूप जिन राय । तृयतन होइ हर्ष अधिकाय । तव लोचन दशसत परवांन । करंदेले निजरूप निधान । गज चढाय सुरगिले गए । सब सुहृदेलि

अनंदिता भए । करकरकर कलसा सुरलाय । श्रीरोदिक बसु सहस्र भराय निजकर कलस लशे सुरभृप ।  
 भान जानं सुरनग के रूप ॥ पांडक शिला थापि जिर्नईस ॥ ढौर कलस लोक पति शीस । सुक्ष्म बस्त्रलै  
 सची सुभांय । निर्जल तनकीनौ जिनराय । कुंडल आदि आभुषन सार । अंजन तिलक क्रियो सिंगार  
 लैवसुद्रेव्य पूजतसुधरी । सफलजन्ममानौ तिहधरी । चौथेकाल आदि अवतारि आदिनाथ संग्या  
 अवधारि । सुरकुंजर जिनवर बैठाइ । जिनमाता करदीनौआइ । तांडव नृत्य कल्यौ सुरभृप । जिनमुख  
 देखे अधिक सरूप । सुरसुर पति राखे प्रभु मामि । कीडा निमित महागुनरासि । गंधोपाक शास निज  
 थांन । नाभराय पुत्रोत्सवठांन दांन दीयो जात्रिगजन जवै । जै जै कार भयो पुरतवै ॥

\* दोहा \*

पिता देखि निज तनुजको । हरष हीए नसमाय । सहस्र एक बसु अधिक सुभ ॥ लक्षण तन सो  
 भाय । नाना वर्षवनाए सुर जिनवर मन हर्षाए । वद्धिततनशम शशिकला भवन तीनसुखदाय । पूरव  
 लब्ध दुगन दसमान । बालकैलि बीते सुखदांन । जोजबतनु मंडित जिनराय । सुरपति देखि अवधिमन  
 लाय । दश अतिशै जिनजन्मजुतमति श्रुतिअवधि सुरग्यांन क्षायक समभक्तिभावउर धर्म ध्यानहित आंन ।

\* चौपाई \*

महा कक्ष औ कक्ष नरेश । कन्या जोगि विवाह जिनेस ॥ जस सुति जस नंदा नाम । मघवाल्यायो  
 सच गुनधाम ॥ शुभ मंहरत ग्रह तिथि घरी । पांनि ग्रहन करि जिनवरहरी ॥ नाभि राय मरुदेवीमात ।  
 उतंसव देषि अधिक हर्षात ॥ राज काज अभिषेक कराइ । सुरपति सुरपुर गंमन सुभाय ॥ नगर  
 भिनीता सबजन सुषी । इति भीति कोइ नही दुखा ॥

\* दोहा \*

सुर रुह नष्टभए सवै ॥ पूजाभई दुखलीन । नामिरायपै आइके सवै बैन सुखदीन ॥ पूजा संघले नाभि  
नृप । आये श्री जिन पास । जथा योग्य सुख उच्चै । प्ररौ इनकी आस ॥

\* चौपाइ \*

दुखेदेखि पुरजन जिनराय । इधु जंत्र रसदियो बताय । बंस इक्ष्वाक कहैपुरलोग । धुध्या  
गमवैरस संयोग । केतेक दिन बीते इसरूप । सुखी नगर जन करिजगभूप । राजा नीत मारग संचरै ॥  
सबजन द्विए शंसय प्रमुहरै ।

\* दोहा \*

काल दोष अति ह्यधितनर । फुनि आए जिनतीर ॥ असि मसि ऋषि उपदेशदे । हरी सकल जन  
पीर ॥ जससुती नारी प्रथम । सहित रमे जिनराय ॥ भरतादिक ब्रह्मा सुता । तनुज भए सुखदाय ॥  
नाम सुनंदा दृशरी । महिल सबगुन धाम ॥ कांमदेव वाहूवली । तनयां सुंदरि नाम । जुग कंन्या इक  
ऊनशत । शीलवांन सुकुमार ॥ एकोतर सुत पुत्रसब । जानऊ जिनगम चारि ॥

\* चौपाई \*

एक समय जिनवर मनलाय । सत कंन्या निज निकटबुलाय ॥ जुगसर बरनवताए जवै । भरतादिक  
सुत सीखेतवै । अंक लिखे जोतिक गतसार ॥ ब्रह्मासुंदरि निजमनुमैधार । इसप्रकार सब भाषिरीति ॥  
त्रेसठि लिखि प्रसव सुबितीति ।

सुखसागर में मगन प्रभु । देखि इंद्रचित चिंत ॥ लाख पूर्व अवशेष थिति । कारनजोग विचिंत ॥

\* सर्वैया \*

नालं नसानांम इकदेवी सुरपतित्याए जाक थिति अंतर्महूरत प्रमानिए । गावत सुकंठ गीत न/चर  
संगीत ताल बाजत मृदंग बासुरी बखानिए ॥ नटति नटाते थिति पूरीखिरिगए देहदेखि जिनिःस  
जगनास नीक जानिए । त्यगिं राजकाज कीजे आत्मी करसपीनै दुखलीजै मुखमोहकर्मर्मांनिए

\* सोरठा \*

इहंबिचार जिनराय । भरत बुलायौनिज निकट । राजतिलक सिरधारि । प्रजापालियो नितिजुन राज  
दीयौ जिनराय । पोदन पुर बाहुबली ॥ सब सुत राज समाज, । देवादश भावन भजै । सुलै कांतिक  
आइजथा जोग अस्तुति नामि । अहौ जगत पतिराइ ॥ तुमबिन को औसीकरै ॥

\* सर्वैया \*

तुम जगदीस इस सुकति रसन हार तुमबिन धर्म प्रगट कौन करिहैं । ध्यान धरि धीरज करस गनदाह  
कहौ चाहकहौ आतम अमल रस भरिहैं । तुम बिन नाथ मुक्ति साथ नहि पावतहैं तुमबिन सेवा दुखकसैंह  
ठरिहैं ॥ धन्य प्रभु पंथ सिवसाधनि जगत जन देहुगे दिखाइसैइभोसमुद्र तरिहैं ।

\* दोहा \*

अस्तुति करि निज थानकौं । लौकांतिक सुरजाइ ॥ सक्र जुसिव काल्पाय करि । बैठारे जिनराइ राजा  
दिक सुर सक्र मिलि ॥ मग प्रयाग बनलीन । जाइबसन भूषन तजे ॥ मौहयासिकरिछीन ।

\* चौपाई \*

पंच मुष्टिक चलौंच उतारि ॥ तप कल्याणकसुर पतिकीर्यौ । हुंहुभि नाद गगन बाजियौ निज निज  
थानक सब जनगए ॥ आतम लीन जिनेसुर भए । सहस चारि राजा तिनसंग ॥ धरिदिष्या तपकीनीभंग

\* सोरठा \*

रिति मिति मांस विचारि ॥ व्रत धार्यौ हँ जगतपति । कायोत्सर्ग निहारि तनमन मेर समानहँ

\* चौपाई \*

व्रत पूरन चर्या मनधारि । नग्र विनीता पंच निहारि ॥ राजा प्रजा देखि जगईस । भाव भक्ति जुत  
नायौसीस ॥ अडिल हयगय रथ सुदुकूल आभूपन लाइकँ । कन्यादिक सब भेटधरै सुखपाइकँ ॥ अंत  
रायकोउ दौजांनि प्रसु बनगए । रस मिति मास प्रमान ध्यान जुत पूरनभए ॥ क्षयक श्रेणी आरूढ  
ध्यान अविचल ठयौ । धर्मध्यान के भेदि विचारि चितदयौ ॥ शुक्लध्यान एकल वितकँ विचारियौ ।  
हुतिय प्रथक्त वितकँ विचार सुमन कियौ ॥

\* दोहा \*

वर्ष एक पूरनभए । निराहार जिनराइ ॥ चरिहेत गज पुरचले । थिरकारन तपकाय ॥

\* सवैया \*

हथनापुर नगर पतिसोम प्रभ भ्रात श्रेयांस सुपन बसु वाह निसि देखिए । सुकल पतरुमेरुपंचानन धेन  
सुत रविसोम उदधि गयंद सुभ पेखिए ॥ प्रातं उठि भ्रात सेती पूछँ फल कहत सुपुन्य वांन आवै गेह  
द्वजतल्लेखिए । धीर बलवानं धर्मज्ञ सुप्रताप धस्तेजसां गभीर अति महत विशेषिए ॥

\* दोहा \*

सुनि फल मन हरषितभए । श्रीश्रयांस सुराय । सोध स्थिति अवलोकते । श्रजिन दर्शनपाय ॥

\* छंदचाल \*

सुनिरूप जिनेसुरदेखे । निज जन्म सुफल करिलेखे । भव सुमिरन ग्यांन प्रकास्यौ । परजाय भवातर भास्यौ । इह बत्र जंघ चर जोई । रानीमें श्रीमतिहोई । तहँ सर्प सरोवरतीरे । सुनि चारन पोखधीरे । यहपुन्य महा उपजंत । इहआदि सुनिसोभंत । मैंनारि लिंग निखास्यौ ॥ श्रयांस राय पदधारयौ ॥

\* दोहा \*

सुनि अहार, विधि जानिबहै । अग्र भाग है राय । अस्तुति करि सिरनाय कहि । तिष्ट तिष्ट जिनराय ॥ (सोरा) चामरबंध) । जगत जीवन सबसुख कर्यौ । जगत जीवन सुबिचारि । जगत जीवन सबसुख कर्यौ । जगत जीवन निधतार ॥

\* चौपाई \*

नोधाभगति हिणें धारि । सप्तसुगुन जुत है दातार । इछु रस आहार कराय ।

\* दोहा \*

अक्षय निच्छि दातार धरि । असन अंत जिनराय । ईर्ध्यापंथ सोधत चले । लोग धरयो बनजाय ॥

\* चौपाई \*

पंचाश्रय कियौ सुरसार । पुन्य महातम जग बिस्तार । साढे तेरह कोडि प्रमाण । रतन बृष्टि नृपसदन बखांण । नगर नगर देखि इहिरीति । दांन बिषैं अति धारी प्रीति । सुनिनृप भरत हरष मनलाय । श्रीश्रयांस



ग्रह गमन कराय । धन्य राय पुन्यांतम सार । श्रीजिन तुमग्रह लियौ अहार । अति अस्त्रुति सन्मानं तवकियौ । आय नगर बहुदांन जुदियौ ॥

\* दोहा \*

इस प्रकार आहारकरि । श्रीजिन ध्यान लगाय । सहस वर्ष छद् मस्थ जुत । तपत पियो जिनराय धर्मध्यान बल जोरतैं । प्रकृति सतक्षयजाय । तपबलतेज प्रतापतैं । रिद्धिजुवसु गुनपाय । प्रथमत गुनथानं न्नादि । तीनकर्म करसार । क्षिपक श्रेणि आरूढहै । प्रकृति छतीस निवारि ॥

\* चौपाई \*

गुन दस मैं गुनथानकसार । लोभ संजुल निकरि परिहार । सुकल ध्यान पद हूजे जाय । सोलह प्रकृति हनी जिनराय ॥

\* दोहा \*

कर्म घातिया की प्रकृति । त्रेसठि सबमिलि होइ । सो प्रभु नाशछिन्नक भैं । निर्मल आतम जोय । ( अडिल ) तेरैमें गुनथान संयोगी पद लीयो । सुद्धातम सुअंनंत चतुष्टैं गुनगह्यो । देखि चराचर लोक सारसुख मैं भए । अष्टादस जे दोष दूरि सबहोगए ॥

\* दोहा \*

केवल ज्ञान प्रभावसौं । हरशत आइ निर्मित । सोजिन पति गुनकहनकों । कोकवि ज्ञान लसंत ॥ हरि आइस पयोधनद । समो सरण मनलाइ । रची भूमि द्वादश प्रमित । जोजन अति हरपाय ।

## \* चौपाई \*

कोट तीन दरवाजे चारि । बन उपवन सोभा विस्तार । नटसला सुरनटनी नैँ । जिन गुनगान करत  
अघहैँ । चैस्य वृक्ष सोहैँशुभरूप । अतिउतंग राजत हैँ तूप ॥ च्याखौँ कौन वापिकाच्यारि । अमल शालिल  
अमृत गयसार । मानस्थंभ मान कौँ हैँ । देखि अशोक शोक सबदैँ । मनकल्पित कल्पद्रुमेवइ । सरपंकज  
जुतसोभ धोइ । पुष्प पराग मधुप तहँ लेइ । जिनवर गुन सुख गानकरेइ । चहुँ कोने घट धूप मुवारा ।  
परम लता अति कैँ प्रकास । परिखा सोहत बलयाकार । पंकज जुत निर्भल जल सार । सहस एक  
असी अधिकांन । कहे एक दिसिकेठ प्रमान । सहस च्यारि च्याखौँ दिसि जोए । सतत्रय वासअधिक  
सब होइ । मंदमरुत प्रचलत तेकेत । जिन पूजा जन आवत हेत ॥

## \* दोहा \*

इत्यादिक सोभा तहां । और अनंक प्रकार । बरनन सक न करि सकैँ । अल्प ज्ञान में पार ॥

## \* चौपाई \*

श्रीमंडप तिहं मथ्य प्रदेश । जहां धिराजत मान लोकेस । द्वादश सभा मनोहर जहां । बृषभ सेनादिक  
गणवरतहां । धर्म चक्र सोहैँ सुखकार । गजजन गजत उतारैँ पार । दुंडुभि सप्तहां वाजन्त । आठ  
प्रातहार राजंत । चार अनंत चतुष्टैँ लसैँ । जिन आगम गुन भीतर वसैँ । चौतीसैँ अतिसैँ जुतदेव ।  
गुन छालीस लसैँ स्वय मेव । बरनन करत ग्रंथ बड़जाय । जिन गुन जिनवर पैवरनाइ । समो सरन हरधन  
दरचन्द । जिन सोभित सोभा बहु भंत ॥

\* दोहा \*

फागुन असित एकादसी । प्रथम पहर सुईस । केवल कल्याणक कीयो । सुनो भरत आधीस । बांनी  
खिरौत्रिकाल सुभ । सबभाषा जुतराय । सुरनर लग पसु चितदै । सुनै श्रवन सुखदाइ ॥

\* चौपाई \*

तिन पुर्ष नृप कैडिग आई । करै बीनती सीसनवाई । ताततुमरे केवल ज्ञान । उपज्यौ हैं सबसुखदंन ।  
द्वितीय पुरुष नृपकैडिग आइ । करैबीनती सीस नवाई । चक्र रतन उपज्यौ सुखकार । पुरुष तीसरे निज  
मुख चयौ ॥ तुमसंतति बर्छन सुत भयौ ॥

\* दोहा \*

तनीँ चरके बचन सुनि निजमन मांहि विचारि । धर्म काज कीजे प्रथम ज्यौंमुखलहिए सार ॥

\* चौपाई \*

चक्री जाय पूजा जिनकीरा । अस्तुति भगति बहुत विस्तरी । सुनि धर्मोपदेश मनलाइ । करिनमौस्तु पुनि  
निज पुरआय । करि पुत्रोत्सव हर्ष अपार । चक्ररतन पूजा विस्तार । साधन करि षट खंड प्रमांन । बृषभाचल  
नामांकित थान । नौनिधि चौदह रत्नविशाल । बहुत रिद्धि जुत है भूपाल । आयो नगर तब भरसेश । चक्र  
रतनन करै प्रवेश । विजय नाम प्रोहित बुलाय । चक्र तनी एहवात सुनाय । प्रोहित कहै चक्रपति सुनौ । चक्र  
रतन गुन हिए मैं गुनौ । षट खंड मांहि जितेनर ईस । चक्र रतन कौं नौवैं सीस । नृप एकौ आज्ञा विजुजांन ।  
चक्र नअवैसुर इहमंन । भरत कहै प्रोहित सुनि बात । आज्ञा कौंन चहै कहु आत । सुनि प्रोहित बांनी उच्चै  
बाहुबल आज्ञा नहिधरै । तब ततकाल चल्यो नरराय । यौदनपुरदिग पहुंचौ जाय । जुगल चमूजबसन सुख

आय । मंत्री मतो करै सुखदाइ । चर्म शरीरी दोन्यौं भ्रात । होइनहीं तिनकौ तनघात । बृथासेनि मारी सब जाय । मंत्री नृप सौंकरै सुभाय । यातेजुछ करौ दोऊसार । जीतैं सो आज्ञा सिर धारि । नेत्रजुछ जल जुछबखान । मछ जुछनिहचै मनआन । जुछ परस पर दोन्योबीर । करैहिणै साहसधीर । हुंडासर्पिणी दोष महान । चक्रवर्ति हारथौ तिहथान । मनमलीन निज भ्रात निहार । बाहुवली मनकरै विचार । धृग राज महादुख दाय । जेष्ट सहैदरमाननसाय ।

### \* छंद कुसमलता \*

यह संसार असार निहारथौ । च्यारौं गति दुख दाइसही । चौरासी लखि जोनि फिरथौ । जिय दुर्लभ मानुख देहलही । आश्रव कर्म महा दुखदाई । जासु उदैजन जन्मगहै । राज साध धन जोबैन जिविन ॥ सब अनित्यथिरनाहिरहै । तीनलोकभे दरवि चराचर । सूक्ष्म थुल विशेषभरे । दुर्लभ धर्म जिनेसुर भाषित जा प्रसाद भव जलधितिरै । एक अकेलौ जीवफिरै इह । सरन जगतमें कोइनही । सप्त धातुमें जीव निरंतर । असृचि आया बन देहगही । संवर भाव किये बिनु प्रानी । भव अनंत दुख बंध करै । कर्म निर्जराजीवकरै जब । सिवरमना छिनमांहिबरे ॥

### \* दोहा \*

बाहुबल बैराइबै । द्वादश भावन भाय । पंचमहा व्रत आदरै । ध्यानं धरथौ बनजाय ॥ भरत चक्रपति देखिइह । निज मनमांहि विचार । बाहुबल के तनुजको । राजदियो सुखकार । इत्यादिक विधि खंडखट आंन फिराई राइ । फिर आए निजनगरमें । राजकरै सुखदाइ ॥

### \* चौपाई \*

एक समय मनमांहि विचारि । दान हेत द्रज थापे सार । फुनि जिन समोसरन में जाय । श्री जिन

पूजे मन हरषाय । धर्म सुनों शिव सुखदातार । श्रावक धर्म धर्म अनगार । कुनि ब्राह्मण विधि पूछे  
जबैं । सुनि गनधर मुनि भाषी तबैं ॥ मिथ्यामतए धारक होइ । षट्मत पोषक जानौ सोइ । सुनि कंषित  
चित है पुर आय । पूजादिक करि राजकराइ । \* दोहा \*

समो सरन आदि प्रभु । जिननाना देश विहार ॥ करि कैलाश गए प्रभु । एक मास थिति सार ।  
काथौत्सर्ग सरुपजुत । सेष कर्म कर नाश । पंच लघूक्षर काल मैं । कीनों शिवपुर बास ।

\* चौपाई \*

इन्द्र आय अष्टापद थान । मोक्ष कल्याणक करि सुखदान । सुनि भरतेश चल्थौ हरषाय । गिरकैलास  
पहुंच्यौ आय । शिवकल्याणक पूजा करी । बहुप्रकार जिन थुति उच्चरी ॥ तीन चौईस विंभरवाय । पूजा  
करि नगरी कुनिजाय । राजकरै नृप नीति बिनीत । सब सुखकारी सज्जन रोति । सिव कल्याण कल्याणक  
हेत । शिवरजाय चौसंघ समेत । सर्व सिद्धिवर कूट सुथान । करि थापनां निजमन आन । करि प्रभाव  
नां भक्ति बढाय । पाँलें प्रजा नगर मैं आय । हुंडा सर्पिणी दोष बखान । आदीसुर अष्टापद थान ।  
नां तरि सिखर सुमेर विष्यात । प्रथम तीर्थकर शिव पुरजात । सुनि मगधेस सिखरहात्म । जा प्रसाद  
लाहिए अच्यत्म ॥ सर्व सिद्धितहैक अनूप । पूजकरै सुर नरखग भूप । काल अनंत हुये अरु होइ । भरत  
आदि जिन शिवतहैजोय ॥ मुनि असंख्य जाय तिसथान ॥ सुकतिगए कर आत्म ध्यान ॥

\* दोहा \*

सर्व सिद्धिवर कूटकी ॥ जात्रा करै नरेस ॥ नरक पसुगति नाशिकै पदवी लहै सुरेस ॥

\* चौपाई \*

नोलख कोटि वरत फल होइ । एक्वार वंदैं जो कोइ । अक्षिति अचल जो पूजा कराइ ॥ ताको फल को वरैराइ ॥

\* सर्वैया \*

भरत सुक्षेत्र षट् खंड अति सोभित हैतामैं एक आरज सुखंड परधान हैं । तहां इह शिवा मुमेर विराज मांन भव्य जन जीवनिकों मुक्ति सुथान है ॥ मनवच कायसेती वंदन करत नरनरक निमित्त गति छेदन कृपांनैं । नमत जुमन सुख जलधि विचारि मन पायत मनासिवेकों प्रवल सुभानैं ॥

\* दोहा \*

लौहाचार्य शिखर गुन ॥ बरन्यो प्रकृतवान । ता अनुसार भाषारची धर्म ध्यान मनआंन ॥

इति श्रीकाष्ठासंगे लाहाचार्य विरचिते तीर्थमहात्म्ये सुसंमदाचल माहात्म्य भाषायां मनशुद्ध सागरेण वर्णन द्वितियो दिक पत्र सप्तम ॥२॥

\* सर्वैया \*

अजित कर्म जित धरम प्रकास कर जितसनु जनक कनक समकायेंहैं । विजया सुमात जात नगर विनाता ब्यात सोभित सुचिन्ह गज सत्र सुख दाईहैं । आयु लख पूर्व बहतर उतंगनसारव सुचाप सत धनुष सुभाए हैं । असे प्रभुअजित जिनेस मन वचन काय मनसुख उदधि नमत हरथाय हैं ॥

\* दोहा \*

आदिनाथ शिवथान लहि ॥ गुन अनंत अवधार । कौड पचास उदधि गए अजित नाथ अवतार । मुनि श्रेणिक मनुलाय कैं । शिखर मुक्तिसुखांम । सिद्ध कूट जिह अजित जिन । कथन सुनों अभिराम

\* चौपाई \*

जंबूदीप सुबलया कार सबदीपनमें हैं सिरदार । तहां बिदेहं सुपूख जांनि । चौथा काल सदा तिहि थान ॥ तीर्थकर जहां राजें सदा । इति भीति व्यौषें नहि कदा । सीता नाम बाहनी सुख । आति निर्मल जल लसैं अतुष्य । ताके दक्षिन दिसा मनोन्न । बस्त देस सबजन मुखभोग । नाम सुसीमा हैं तहांपुरी । देखत सुर पुरकी दुति दुरी । तहां बिमल बाहन नृपईस । बहु नृप आइनमावैं शीस ॥ राज विभूति कहां लागी कहौ । सोभा कहत अंतनहिलहौ । राज काज जिन बहु दिनकियौ ॥ पूजा दांन विपैं चित दियौ एकसमें नृप कारन पाइ । होइ विरक्त तप में चित लाइ ॥ राजभार निज सुतको देइ । पंचमहा व्रत ग्रहन करेइ । द्वादस भावन हिणें धरैं । जिनभाषित दुछरतयकरैं ॥ सम्यक् दर्शन सम्यक्ज्ञान । अरुसभ्यक्त चारित्र बखान ॥ षट्प्रकार वाहिजतप सार ॥ अभ्यंतर षट भेदविचारि ॥

\* दोहा \*

बिमल जानि मुनि तपे तपै । भव अनेक इनहार । षोडस कारन भावनां । भावैं निज हितकार ।

\* चौपाई \*

दर्शन विशुद्ध प्रथम अनुसरैं । सरकर मिति दूषन परहरैं । मिथ्या भाव हिणें मैं आंन । मुखसै चवै अलीक नवान ॥ उक्तंच । मूढत्रय मदाचाष्टौ । तथानायतनानिषट । अष्टो शंकादयश्चेति । दृगदोषा पंचविंशति ॥

\* चौपाई \*

तः। नू मूढ मद आठ विचारि । षट् अनाय तनतजैं विचारि । शंकादि बसुदोष बखान । त्यागैं सुचि सम्यक गुणधान ॥ विनय भाव नादश विधिं कही । बिमल जानि मुनि धौर सही ॥ निरती चार सीलव्रतपाल ।

सहस आठदस दूषन टाल । समय विचारि पाठमनुलाय । पैदुँ पढ़ावै हित उपजाय । मुख्यंजन जुत अर्थ बिचारि । बसु गुनज्ञान सहतसुखकार ॥ पुत्रकलत्र भित्र धनगेह ॥ तजै रागनिहि करै सनेह । कायादिक ममता सवतजै । सो स्वंग भावना भजै ॥ उत्तिम मध्यम भज धन्य विचिंत । पात्र दांन कर ब्यारि सुमित । आतम पुद्गल त्यागै सेय । त्यागि भावना निहचैदोय । द्वादस विधितपसाधनकरै । वाहिर अम्यंतर अनुसरै ॥ मोक्षहेतु तनुतावै जहां ॥ शक्तिसतपशि कहवै तहां । मरनरोग उपसर्ग निहारि ॥ हितवियोग अनहित जुत धारि ॥ भै तजि समपरि नाम धराइ । साधु सामाधि कहै मुनि राय ॥

\* सर्वैया \*

कोइ मुनि राइतपकरत अनंक विधि वाय पित कफ योग रोगताधरु है । ज्वरि शीत स्वास कास सुलं शिर पीडा आदि तनसेती कोट योग पीप जो झरु है । और जो विविधि गदउपजत देहमाहि श्रमरत पीडा जो करतु है । औषधि आहार शुद्ध कर दुखनाश करै वै या व्रतधारी सोई सुख आचारतुहै

\* चौपाई \*

मनवच काया आति हितलाय । जिन नामक्षरजपै सुभाय । सदा काल सुमरन जपकरै । अहंद भक्ति सुपातिग हरै ॥

\* सर्वैया \*

जो मुनि-राज महातप साधक कर्म हुलाचल नाशक करैहै । द्वाखडे अवलोकत जेनभोजन हेत सुभावधरै है शीशनवायकरै श्रमभक्ति सुबेभवसागर आयुतिरैहै । जानि अलाभ मुनी सुरको रस्त्यागि करैहिए भावभरैहै लोक अलोक प्रकाशत है सुभद्वादस अंग सुवेद बखानी । श्रीजिन राज सुआननसे परसूत भई सबही सुखदांभी । जासु प्रसाद सधै सिव मार्ग होत मुनीश महाशुभ ध्यानी । सो सुतभक्ति धरैनरजे उरतरनर



होत अनंत सुझानी । जो सुभद्रव्य बखानत हैं षट पंच सुकायक भेद बतावैं । जीव अजीव जुतव विचारत जानत धिनु जवैं जौलावैं । अंक प्रमान पदार्थ है जगते जग में धनजे उरध्यावैं । जोइह अगम भक्ति करै पडि कौन हिए सुभ भाव सुधारै । तीरथ के करता तिनकी श्रुति पाट पढ़ै श्रुत के अनुसरै ॥ आवस्यक इह भक्ति करै सुनि आपतिरै छुनि औरनतारै । श्री जिन विक्रम मनोहर दान करै जिन पूजरथावैं । सो प्रभावन भक्ति करै जन क्यों नहि मुक्ति के नाथ कहावैं । श्रीसुख दाइक चारित पालत सील महानिति चित धरैहैं । सम्यक सुद्ध विचार करै व्रत धारक दर्शन ग्यान धरैहैं । गोर बताइ निकीजु धरैरन आदर मान हिएजु करैहैं । तेजन बात सत्य गुन धारक कर्म कलेक जोपंक हेरैहैं ॥

\* दोहा \*

एषोडस सुभ भावनां । भावै मनहि विचारि । विमल जानि सुनि राजनै । गीत तीर्थ पतिवार ।

\* चौपाई \*

अंत समैं संन्यास सुधार । प्राण तजे शुभ भाव विचारि । बैजयंत नांमाजु विचार । सज्या तंहउत पाद विचारि । उपजै अंत महूरत मांहि । जोबन तन अति सोभ धरांहि । जैजै देव करत तहँदेसि । चक्रित हैं छुनि अवाधि विशेषि । पूरब भव जान्यौ सुरराय । तप फल इहपदवी सुखदाय । श्री जिन भासि तजे तप करै । ते नर इहि थानक अवतरै । \* दोहा \*

सोसुर इसविधि जानिकैं । जिन पूजा चित लाइ । मन हर्षित अति भक्ति जुत । श्री जिनवर गुन गाइ । छुनि निज थानक आइकैं । सुर सुख भोग कराइ । छिन आगैं सुनि मगधि पति । सुरचरजहं उपजाइ ।

\* चौपाई \*

इसही जंबूदीप मझार । कौसल देश लसैं शुभसार । कौसल्या नांमा पुरवसैं । अति सुंदरता सोभा लसैं  
हरि आज्ञा जिन जोगि सरूप । धनपति रची पुंन्य जिनभूप । पंचाश्रय वृष्टिजहँ होइ । पूरव सम सम  
जाँनँ लेइ । जित सनुनृप राज कराइ । प्रजा नीति पाळैं सुखदाइ । विजया नांमहँ पटांनी । गुनगर्भित  
सवजन सुखदांनी । समुद नांम राजा लघु भ्रात । परम पुनीति सुलक्षण गात । जैसे नांर मनी सुख  
खानि । शील शिरोमनि अतिशुण वांन । विजया देवी नृपकी नारि । जिनमाता सुभ लक्षण धारि ।  
पोडस सुपिनां निसि निरपंत । फल सुनिअति मनमैं हरखंत ॥ \* दोहा \*

जेष्ट मांस अलिपक्ष जुत । नष्ट कलादिन जांन । सो सुर चयतिथि गर्भकरि । सवजन कौं सुखदांन ॥  
\* चौपाई \*

इंद्र आय सब देवसमेत । जिनवर गर्भ कल्यानक हेत । मात पिता सिंहासन थाय । पूजा करि हरष्यौ  
अति आय । छुनि सुर पुर पति फिरिजाय । अति सुख कर नव मास विताइ । जिन जन्मौत्सव  
मंगल चार । करै अमर रमनी सुखकार । \* दोहा \*

माघ सुकल दशमी सुदिन । रोहिन नखतर प्रवांन । अजित नांथ जिन जनभियौ । त्रिभुवन जनसुखदांन ।  
\* चौपाई \*

सुरपति सुरगिरपैं लैजाय । सहस अठोतर कलस ढराय । पूजा अस्तुति बहुविधिकरी । हरिहिय हरषि कहै  
धनिघरी । ते न ठोरु पति श्री जिराम । अजिन नाथकहि नगरीमहंलाय । जननी अंक दइ सुरईस । कस्सु

कलत कर नावैसीस। तांडव नृत्य हिण्मैधरैँ। छिन छिन भूमि गगन संचरैँ । बद्धाविधि भगति इंद्र तवकरी ।  
जन्म सुफल मान्यौ तिहघरी । \* दोहा \*

देव सेवकों छोड़िकैँ । मधवा निज पुर जाइ ॥ नाना भेष बनायसुर । जिन सिसु क्रीडकराइ ॥  
\* चौपाई \*

दस अतिसैँ गुन और अनंत । सहस एकवसु चिन्हमंहंत ॥ बालापन बीते इहमान ॥ लाख अठदस  
पूरबजांन ॥ जोवन तन देखे प्रभुतात । पांनीग्रहन कीयो अवदात । उत्तसव शक्र आइतव करैँ । राजछत्र  
निजकर सिरधरैँ ॥ जै जै तीनलोक पतिराज । सब सुखकारन धर्म जिहाज । अस्तुति करि मधवा मनुलाइ ।  
फुनि सुरपुर निज गमन कराइ । जिनवर पंच अनुव्रत करैँ । राजनीत मार्ग सुभ धरैँ ॥ रागवान लखि  
पूरब राज । प्रजापाल लखि सहित समाज ॥ \* दोहा \*

मृतक अमर लखि जल में । बैरागित जिनराय । द्वादशभावन भावतैँ ॥ लौकांतिक सुरराय ॥ (अडिल)  
धन्य जिनेसुरदेव सेवजे तुम करैँ । भव अनंत के पाप एक छिन में हरैँ ॥ तुम बिन कौन विचार करैँ सुभ  
धर्म कौ । तुम बिन जे जगजीव लहै नहि सरसकौ ॥ \* दोहा \*

इस प्रकारते ब्रह्म सुर । प्रणमिजइ निजथान । हरिशिवका परिपाप जिन । जैजै करै सुजांन । राजा सब  
निज कंधधरैँ । सात पैँड लौजाय । पुनि सुर खग निज कंधधर । बनमें थापे जिनराय ॥  
\* चौपाई \*

जंबू बृक्षतलै सुबिचार । बस्त्रा भूषन सबपरिहार । नमः सिद्धेस्य मुखउच्चार । पंचमुष्टिप्रसु केस उतार ॥

\* दोहा \*

दस हजार भूपाल मिलि । जिन चरननि चित्तु लाइ । शीसनवाय दिष्या लई । शिवपदवी सुखदाय ॥  
निज आतम गुनलनि प्रभु । ध्यान धर धर धीर । तप कल्याणक अमर पति । करि बांधी सुख सीर ॥

\* चौपाई \*

मन भाजन में जिनकचलेइ । पय समुद्र परबाह करेय । सुरपति अमर नगर में जाय । पुंन्य जोग सुख  
भोग कराय । श्री जिन जुगल दिवस पर वान्त । अचल मेर समथ्यान बखान । तीजे बास विनीता आइ ।  
ब्रह्मदत्त पर अशन कराइ । गोपय भुजि अक्षय निधि कही । पंचा चर्ये करै सुर सही । साढ़े द्वादस  
कोटि प्रमान । मनि बरषासुर करै सुजांन । फुनि प्रभुथ्यान धरथौ बनबीच । कर्मरूप पायोबनकीच । द्वादश  
बर्षेहे छदमस्य । कर्म घातिया कीने अस्त । \* दोहा \*

लोका लोक प्रकासियो । केवलज्ञान प्रभाव । चौनिकाय सुर आइहरि । ज्ञान कल्याणक चाव ।

\* चौपाई \*

समे सरन घुखकी रीति । सार्धेइकादस योजन मीत । अंतरीष जहां राजैईस । तीनलोक सब नावैसीस ।

\* दोहा \*

समोसरन सोभाविभो ॥ बरनत लहेनपार ॥ धर्मबढावनकारनै ॥ करहिविशेष विहार । माघमालवआदि  
लै ॥ अंग बंगजदेश । बृषउपदेश करत गए । सिसर सैल लोकेस ॥ सुनि श्रेणिक अंतरकथा ॥ सगर  
चक्रवर्ति वात ॥ एकसमय सुविभूति जुत ॥ सिसर सैलपथजात ॥

\* चौपाई \*  
\*

मारग मध्य तपोधनराज । भविजीवन निधि तरनजिहाज ॥ देखि सुमुनि नाथौ निज सीस । तुमजग  
तारन बिस्वाबीस ॥ अंछुति करबैठो नराय ॥ धर्म वृद्धि भाषी मुनि राय । वृपसागारी और अनगार ।  
मनधर सुन्यौं सर्म दातार । छुनि मुनि धर्यौ जाय बन ध्यान । चक्री आगैं कर्यौ पर्यांन । गयो सिखर  
देष्यौ जिनंद । नमस्कार तब कीयौ नेरद । अष्ट द्रबिले पूजाचरी । हिण्ड हरष अंछुति बिस्तरि । जैजै  
जिन देवन के देव । सिव ब्रह्मा विशु स्वमेव । जगत जीव तारन तुम नाथ । गतभौसिव पढ़चन साथ ।  
हे जग पति मेरी पर जाय । कहौ जथा वत श्री जिनराइ । \* दोहा \*

अबिरल धुनि जिन सुखथकी । प्रगट भईसुख दाइ । गनधर बरनन करहितव । सुनौ सगर मन लाय ।

\* चौपाई \*  
\*

एजंबू वर दीप दिपंत । सब दीपन के मध्य वसंत । प्राची नाम बिदेह सुजांन । देशव तसका  
वती बखान । भूप पुरी नगरी सोभंत । अमर नगर की सोभ लसंत । प्रजा पाल संज्ञा जैसिन । नर  
नागरं जन सब सुखदैन । जैसे नाना भै पटनारि । रूप सील गुन लक्षण धारि । जिनकें जुग नंदन जन  
भियौ । जाचि गजन बहु दांनजो दियौ । जेठु तनय बृत खैन सुजान । रूपवंत सब लक्षण वान । लछु  
सुतहै रतिखैन मनोग । तिन जुत भूमय भोग । ( अडिल ) एक समै रतिखैन काल बसि हैगयौ ।  
भूपतिके मनसांहि दुख अतिही भयौ । इस संसार असार सकल छिन भंगहैं । धन धान्यादिक पुत्र  
कलित्रन संगहैं ॥

## \* दोहा \*

इहि मन सांहि बिचारि नृप । जेठ तनय देशज । निज चित अतिवैराग होइ । बिनय चले तपकाज ।

## \* चालछंद \*

जैसेत नाम नृप ईस । वनजाय लखे मुनिईस । सुखदेन जसोधर नाम । करजोरि कियो परनाम ॥ तुम  
 तारन तरन विशेख । भयो जनम सुफल तुमदेखि ॥ मेरी पूख पर जाई । कहिए प्रभुतुम सुख दाई ॥  
 नृपबैन सुनै मुनिराई । मुखबैन चबै हितदाई ॥ इहभरत क्षेत्र शुभधांम । तहां पट्टक पुर अभिराम ॥  
 संखिक नांमा द्विजवर एक । धनवांन वसै सुबिबेक । तसु गेह तपोधन आय ॥ तिन देखि हिए हरपाय ।  
 पडि गाह महामुनि लीनौ ॥ आहार सुप्रासुखदीनौ । बहु पुन्य प्रभाव निहार ॥ करु भोग भूमिअत्रतार ।

## \* सवैया \*

तहांतैं सुरगज इचयो हैं ॥ महा घोष तात मात चंद्रानी भई सुगात मनसंचै पुरमें पयोवल सोथ योहैं ॥  
 मुनिहोइ सुर्गजाय जसोधर जीकैभूम पुरमाहि जय सैन नाम लयो हैं ॥ \* दोहा \*

इसप्रकार मुनि सुखथकी । मुनि जैसेन नरेस ॥ परिग्रह तजिमुनि पद ल्यौ । कीयौ दिगंबर भेष पंच  
 महा व्रत आदैं । पंच सुमति मनधारि ॥ तीन गुपति गौपैं सदा डुद्धर तपकर सार । विविधि तपस्या  
 कर तहां ॥ आयु स्वल्प जब जान । धरिसंन्यास रहतैं ॥ प्रांनकिए अवसान । \*चौपाई \*

बिजय बिमान तैंउपजाय ॥ सुर संवंधी भोग कराय । हैतैं चए अए सुभथान ॥ कोसलेदेश विपैं तुम  
 जान । नगर विनीता हैं जिस नाम ॥ जित अरि लघु आता गुनग्राम । समुद्राय सवजन सुखकारि ॥  
 नाम सुबाला हैं सुभनारि । तिनके सगर नामसुत होइ । चकी पदवहतपवल जइ ॥ नमस्कार करि निज  
 पुर आय ॥ बहु प्रकार सुख करैं अघाय ॥ \* दोहा \*

पुन्य प्रताप अपार अति छैं सड पति जोइ । सगर चक्रपति कौबिमो वरनत श्रुति अतिहोइ ।

सार्ध चारसैं धनुषक काया उन्नतजासु । सतरलाख सुपूर्वकी । आशु बखानी तासु ॥ \* चौपाई \*  
 द्वात्रिंशत नृप नृप के ईस । चक्री पतीकौ नवै सीस । नौ नियांन संचित भंडार । मन वंचित फल  
 सुख दातार । रतन देखेदि गाज ग्रह बसै । और अनेक विभूत जौलसैं । चक्री इनजुत भोगभोग । कुनि  
 तहँ भये और इक जोग । \* दोहा \*  
 चतुरांन सुनि राज इक । करम घातिया नार । सबजग संसैं तमहरन । केवल ग्यांन प्रकास ॥

\* चौपाई \*

चक्री सुनि मनसैं हरषाय । सबविभूतिं जुत वंदन जाय । तहां सुरासुर आएतैं । बानी सुनि हर्ष  
 जन सैं ॥ सुनि चूला नामैं इक देव । देखि चक्र पति जान्यो भव । कहै देव सुनि चक्री वात । हमतुम  
 देव भिन्न थे भ्रात । तबहम तुम प्रतंज्ञा करी । ऐसी वात हिए मैं धरी । जो पाहल मातुष अवतरैं । ताको  
 देव समोधानकरैं । सो तुम अब चक्री पदपाय । मोह नींद क्यों सोवो राय । विषय त्यागि करिए  
 नरराय ॥ तप करि करिए सिवपुर साथ ॥ \* सौरठा \*  
 पद खंडी सुनि वात । मौन पकरि आति हठ गही । जान्यो सुरमन माहि । इसपकार समझनही ॥

\* चौपाई \*

देव एकदिन इह मनधरै । अपनो रूप विप्रको करै । साठि सहस चक्री सुतजहां । सोद्विज देव गयो  
 तबतहां । बोल्यो द्विज सुनि चक्री नंद । साय पिताधन करत अनंद । धृग तुम जनम हृदशीपना ॥  
 ध्यान रहित यह भोजन गना । निज सुज बल बिनु जोनराय । धृग जीवन जीवन अधिकाय । इहसुनि  
 त । भिलि करै विचारि । सत्य कहत द्विज देखि निहारि ॥

## \* दोहा \*

प्रगट जगत में देखिए । उदिम करि नरहीन ॥ तिनै लोग सबयौ कहै । बड़े छीव अति दीन । गएपिता  
पैबेगिदै । सुनौतात हमबात । आज्ञा हम कछु दीजिए । बेगि करोबिख्यात । सुनौ पुत्रछहबडमै । अरि  
है कोई नाहिं । आनंदसुतुम सुख करो बैठेभंदिर मांहि । विन उदिम है जनकजी । अंजोदिक नहि  
खाय । हठ सुत को इह देखि कै चित चितै नरसाय । अष्टापद पैश्रीजिन धाम । तिनि चतुर्विंसाति हैं नाम ।  
रतन विंव कंचनमय थांन । वृजाकरतै होइ अवहान । भरत किए सबसुख दातार । सुनौ पुत्रमनमांहि  
बिचार । आगे काल महा दुखदाइ । आवै पुन्य हीन नरथाय । \* दोहा \*

मनचंचलहो जाहि जन । इहि विचारि मनलाइ । गंगा परिषावत करौ । सुनि सुत अति हरषाय ।  
ब्रजडंडले हाथ मै गए गगन तटजोर । नाला करनविचारिमन ॥ ब्रज बेद का तोरि ॥ \* चौपाई \*  
तब वहउरण रूप सुरधर । मूर्छित सुरकीने सुकुमार भीम भागीरथ दोन्योभाइ । आएनगर मांहि दुखपाय ।  
भंत्री सुनि सुखतै उच्चैरे । रायकान इहबात नपरै । फुनिमणि चूलि भेष द्विजकीयो । निज कंधेइकसुतधरलीयो ॥

## \* दोहा \*

राय निकट तैजाइकै । कहे देव द्विज रूप । मेरो सुतजमलै गयो । देमगायबडभूप ॥ \* चौपाई \*  
सुनि चक्री मुख बैन उचार । अरेभूप सुरभयो गवार । जमग्रहगयो न कोई फिरे । ऐसी भूलि हिए मति धरे ।  
मौहनाश जग दुख दातार । दिक्षाकौ नहिं लेइ विचार । सुनौ चक्रपति मोसुतमरो ॥ अति मोहांतर मैदुखधरो ।  
अति कठोर तुम उरहैराय । इसप्रकार तुम राजकराय । साठि सहस तुमसुतमस्यो । रचक दुखाहिए नहि धस्यो



\* दोहा \*

यह हुआ बच सुनि बज्रसम ॥ मूर्छित चक्री होइ । सीत क्रिया मंत्री करी ॥ है सचेत समजोय ॥

\* सोरठा \*

लखि संसार असार । मनबैरागित चित है । चक्री मुनि पदधारि । भागीरथ कौ राज दे । \* दोहा \*  
सुत नंदन लघुभीम कौ संग लेइवन जाइ । आतितप करत बिरक्त है । निज आतम मनलाइ ॥

\* चौपाई \*

देव देखि इह सुत ढिग जाय । उन्मूर्छित कर गमन कराइ । तेउ विनि जग्रह आवत भए । सुन्यो पिता  
दिक्षा ले गए । मन उदास है राजकुमार । परिग्रहत्यागी महा व्रतधारि । द्वादशभेद तपीतप करै । कर्मकलंक  
पंक सब हैं । \* दोहा \*

निज आतम लौलाइकै । शुक्ल ध्यान मनलाय । योग निरोध क्रियोसवै शिवपद लयो सुभाव । भागीरथ  
बहु राजकरि ॥ श्रुति सागर सुनि देखि । करछुगजोरिनवायसिर । जनम सुफल करिलेखि \* चौपाई \*  
सुनि उपद सेसुन्यो मनुलाय ॥ छुनि नमोस्तु भाषे राइ । मेरो तात तात सुनतात । समवाइ मृच्छि  
किमजात । ओमेरो पूरव भवसार ॥ बरनन करि भवतारनहार । यह संसै मेरो हियवास । नाश करो  
सुनि ज्ञान प्रकास । सुनि मुनि बोले निजमन लाइ । गिरसमेद महा सुखदाइ । जहां चलुविसति जिन  
देव । भरत क्षेत्र उपजै स्वय मेव ॥ कालअनन्त हुए अरहोय । मुकृति थान निहचै हैसोय । और अनंत  
तपोधन जहां ॥ सिव पदवी पाई है तहां ।

सौगिर बंदन जे करै । सुचि करि मनबचकाय ॥ नर्क तिर्य गति छेद करि ॥ सुरनर पदई पाइ । काल  
लब्धि कौ पाइकरि । ते नरसिव पुरजाइ । सोनर जग विध्यातहँ मबि जीवन सुखदाइ ।

\* दोहा \*

\* चौपाई \*

संघ एक बंदनि केहेत । चलयो जात माग चित तेत । यपमाहि नगरी इकसार । लोक संघ निंदामल  
धार । कुंभकारतहँ एक विरुष । मन आनंदौ संघ जुदेखि । बहु अस्तुति करि मनबचकाय । पुन्यउपार्जन  
कखौ सुभाय ॥

\* दोहा \*

वानगरी को एक नर । गयो न तसकरी काज । राइजानि पुरदग्धकरि याकौ इहईलाजौ । संघनिद को  
पापजै भया प्रमट ततकाल । भई गजा ईमरतहां । पुनि पुनि वहभवजाल । कुंभकार वहसैमै । गयो  
अन्य इकथांन । आइ लख्यौ पुरदग्धसब । जान्यौ असुभ पूर्वांन ॥

\* चौपाई \*

आठु पूर्न वानिक घर भयौ । पुनि नृप है तप दुद्धर थयौ ॥ सोलम स्वर्ग देव पदपाय ॥ बहुत भोग भोगे  
मनलाय ॥

\* दोहा \*

एक भूप गजपग तलै । मरी गिजाईसोइ । अनुक्रम करि मर है सुवृष । साधिदेव सब होय ॥

\* चौपाई \*

तेसब आय सगर के नंद । भए लहो सिवपदसुष कंद । कुभकारचर तिथि अवसान । सोलम स्वर्ग  
देव सोजांन । तुम भागीरथ उपजे आइ । संघ स्तुति शुभफल इहि पाय । संघ निंदजे तिर्यगया ॥

फल समुदाय कर्म इहिलए । इस विधि भार्गीरथ छुनिवैन । रोगी पथ्य लहैं जिम चैन । सुनि सुनि  
वचन जुमनहि विचारि । इह संसार असार निहारि । \* सोरठा \*

निज सुत कौं देराज । चले आतमा काजकौं । तारन तरन जिहाज । तप करिकैं सिवपद लखौं ॥

\* चौपाई \*

सुनि श्रेनक निहचै मनलाइ । जहां अजित सिव पद को पाय । सियरनाम भूधर भूधर । आयसुरानुर  
सेवाकरैं । नाम सिद्धवर कूट सुथान । तहां आय तिष्ठे भगवान । जोगरोव करि कर्म जुनाए । कीर्त्तौ  
मुकति पुरी में बास । \* दोहा \*

एकलाख पूरव जहां । द्वादशवर्ष जुहीन । केवल ज्ञान विराजियो । अजित आतमा लीन । चैतपांइ  
सुभ सौंम दिन । रौहति पंचमिजंन । सिवकल्याणक सककर । गए अमरपुर थान । \* चौपाई \*  
अजित आदि संभव अवसान । चौरासी यकरौर बसान । पैतालीसलाख अधिकाय । एते मुकति गए  
मुनिराय । जेनरठौक बंदनाकरैं । कोडवतीसवरत फलधरैं नरक तिर्थचगति नाशैं सोय । एकवार बंदैजोकोय ॥

\* अडिल \*

एक मुनी सिव थान सुर्ग सिव सुखकरैं । भव अनेकके पाप एक छिन भैं हरैं । जहां त्रिनंद्र अंतत  
मुनी सिव पद गहैं । सोमुखेत्र फल वर्नन कहौ कवि कौकहे \* दोहा \*

लौहाचार्थे विशेष करि । शिखर शैल गुनगाय । धर्मध्यान हित जानिरचि । नरभ । पासुसदाय ।

इत श्री काष्ठासंगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहतमे खुसमदोचल महातम भापायापन सुद्धसांगेण विशचितसिद्ध वर्ननोतृतीया अध्याय ॥३॥

## \* सवैया \*

भवके हरन द्वार साबित्री सार दृढ़ रथ जनक सुमाता देवी सैनौह । सुंदर सुवर्ण तन सोभित  
अनेक गुन च्यारि सत धनुष उन्नत सुख दैनौह । आठ लाख पूर्व सुथिति जिनराज करि तपलयौ  
जानिजग जल केशे फेनाह । असो जिन संभवजुसेवो मनबचकाय मनसुख सिंधुजौपै सिवसुखलेना है ॥

## \* दोहा \*

अजित नाथ जब सिवगए । त्रिशत लाख करोड । इत नौकाल बीतीतियौ । संभव जिन लगजोए ।  
ते संभव भव नाशि जिन । बंदो मन बचकाय । तिंह चरित्र बरनन करौ । सुनौ सुधमन लाय ।  
आदिम दीप विष्यातहै । जंबूदीप सुनाम । लख जोजन बिस्तार सुम । है अनंत सुखयांम ॥

## \* चौपाई \*

पूर्व विदेह क्षेत्रसुभ जान । सीता सरिता उत्तिम थांन ॥ कक्षदेश सो है सुखकार । क्षेमपुरी नगरी  
मनहारि । बिमल सुबाहन नृप पुर तनौ बिमल धर्म धारै गुनघनौ ॥ बिमलमती रांनी सुनवांन । सत्य  
सरूप सीलकी खानि ॥ भौगै भोग मनोगत सार । प्रख पुन्य तनौ अधिकार । एक समै जिन मंदिर  
चढ़ै । दिसा अवलोकनि मन अति बड़ै । सजल जलद देखे तिंहिषार । नाना बर्न धरै मनहार ।  
दंपति देखि सुमन हरखाय । छिनक मांहिते गए बिलाय । ताहि देखि राजा चितयौ ॥ ध्यान धाम  
धनव्याप लेखियौ । क्षिन भंगुर जान्यौ संसार । बिन सत सकलम लागैबार । \* दोहा \*

इहंविधि जगमै जानिजग । सुतकौ दीनौराज । द्वादश भावन भावधरि । गहन चले जिनकाज ।  
समोशरण भै जाइकै । जिनपति सीस नवाय । धर्म सुनौ इकचितकरि । दिक्षा लए सुभाय । अडिल

पंच महा व्रतधारि सार मनमें लियौ । पंचसुमति सुभेद विचारन मन दियो । तीनगुप्ति मनुलाय  
महातप जे करै । ते मुनि भव दाधि पारहोड सिवसुखरै । \* दोहा \*

खोडस कारन भावना । भावैहिए त्रिकाल । राग दोष परिणाम तजि । सब दुखनकौंशलि । चौपाई  
अंत समै सलेखन कर्यौ । ज्यारि प्रकार असन परिहार्यौ । पूरनआउ प्राण तजिसोय । प्रथम श्रीवभ  
सुरपदहोय । तहां बिमान सुदर्शन लसै । अहि भिद्रक लहि संज्ञा लहि बसै । देवमहाहिंद्रक पदवीपाय  
अंतर महरत जौवन थाय । अंगुल खष्टि सुत्रपु परमान । सप्तवालु तन रहित वखान । तीन वीस  
सागर तिथि धार । भोग सुभोग चणवैसार । तेईस सहस वर्ष सब जाइ । मानसीक आहार कराइ ।  
साढ़े ग्यारह मास बितीत । स्वासो स्वास लेइ इह रीत । ब्रह्मचर्य जहैहैं सब देव । करहिन अमर आंन

\* दोहा \*

तसुसेव । अणि माहि मांदिक सवारिछि और अनेक लसै जुत सिद्धि ।

इस प्रकार श्रीवक बिपै । सुर सुख भोग कराय । खटमासा सुरही जवै । निज पूजा मनलाय । चौपाई  
तदनंतर सुणि श्रेणिकराय । जिन जन्मोसव हिय मै लाय । जंबूदीप भरत तहैखेत जिन चौबीसी  
उपजन हेत । सावित्री नगरी सुनिसाल । दिदरथ नाम तहां भूपाल । नाम सुखेनां हें पटनारि । वंस

\* दोहा \*

इख्याक सबनि सुखकार ।

इंद्र अवाधि करि जानि उर । धनपति प्रति उपदेस । नगर रचा मनि बृष्टिकरि । ज्यौं सुख लहौ असस ।  
साढ़े तीन किरोर बखान । एक काल मन बृष्ट सुजान । सुखमै बीते हें पटमास । सोअहि भिद्र पूर्व  
तिथि बास । सुरचय गर्भ कियो हें बास । सुपन लखे जिन मात सुभास । प्रात काल उठिपति दिगजाय ।  
सुपनै षोडस दिये सुभाय । कहि फल सुनि हरषे दंपती । जगपति सुत उपजै सुभमती । फाणुण सुदि

अष्टमी बखान । गर्भस्थिति जिन देव सुजान । आयु सुरेस कल्पनक कियौ । अति उत्सव करि हरख्यौ हियौ ॥  
 गयौ अमर पति अपनै धाम । जिन जननी सेव सुरताम । अगहन सुकल पंचमी सार ॥ जनमें जिन  
 तीरथ करतार । औरपति सुरपति चढ़ि आय । इंद्रानी जिन ग्रहमें जाय । प्रनमि करी जिनवर करलेइ ॥  
 हर्ष सची निजपति करदेइ । जैजै करत गए सुरसैल । जिन मंजन करि निज हर मेल । बसुबिधि पूजा  
 विशोषि । अपनों जन्म सुफलतसु लेखि । संभव जिनभव हरन विशाल । संग्या सक सुमुख उच्चाल । फुनि  
 ग्रहजाय दिए जिन मात । नृत्य कियौ अति पुलकित गात ॥ अमर अमर पतिराखे तहां । बाल अवस्था  
 श्री जिन जहां । निजपुर जाय भोग बहुकरै ॥ श्री जिन भक्ति हिएमें धरै । करै बाललीला जिनदेव ॥  
 हरे नारि नर मन स्वमेव । पंद्रालाख पूर्व सिसु रूप ॥ जिन जोवन लखि दिदरथ भूप । करिए पान ग्रहन  
 विचारि ॥ राज भोग सब बन्यौ समाज ॥

\* दोहा \*

उत्सवकरि निज पुरगयौ ॥ राज करै जिनराज । श्रावक व्रत समभाव जुत । करै आतमा काज ॥

\* चौपाई

लाख चवालिस पूरव राज ॥ प्रजा सरम उपजावन काज । सिंह पीठ इकदिन थितिराइ ॥ उलका  
 पात दोषि जिनराइ । छिन भंगुर जान्यौ संसार । दृष्टि पड़े सब बिनसन हार । निज चित्तमें बैरागित होय ।  
 द्वादश भावन भावै सोय । ब्रह्म लोक बासी सुर जहां । आए श्री जिनवर हूँ तहां । धन्य धन्य जगतारन  
 हार । तुमबिन कौन उतारै पार ॥

\* दोहा \*

असृति करि जिन देवकी । ब्रह्मलोक सुर जाय । सिद्धाथ सिक्कापरी । सक थापि जिनराय ॥

\* चौपाई \*

सहेचुकवन में प्रसुजाय । बस्त्रा भूषण तजि जिनराइ । मागिश्रसुदि घनिम अवसान । तप दिन जानि लेउ गुनवांन ।

\* दोहा \*

ॐनमः सिद्धेभ्य सबद श्री जिन सुख उच्चार । निर्बि कल्प मन सरस जुत । सिरके केश उतार ।  
( आडिल ) सहस एक नृपराज तज्यौ मन लाइकैं । दिखाले जिन चरन कमल सिरनाइ कै ।  
लागे आतम काज सजतप कौंधरैं । जोपूर्व कृत कर्म नास तिनकौ करैं । बृतधारयो जुग दिवस जगत पति मौंन सौंचरन कमल थिर जुगल काज नहि गोनसौ । जोग त्यागी जिनराज जोग गाहि करैहैं ।  
ध्यांन मेरु समधार कर्म अरि कौंदहैं ।

\* दोहा \*

बेला करिश्रीजिन उठे ॥ असन हेत हियधार ॥ ईर्याषथ सोधत चले ॥ सावित्री मधि सार ॥

\* चौपाई \*

तहां सुद्धें दत नृपराइ । पडिगाहे श्रीत्रिभवन राय । नौधा भगति भक्ति मय होय । सस सुगुन दाताका जोय । गोपय मुक्ति जुक्त मनधारि । उत्पत्तो दभदोषनिवारि । अर्थे निधिजिन जवउच्चरी । पंचार्च्य बृष्टि सुर करी । साढ़े द्वादस कोटि प्रमांन । रत्नसुद्धेंदत्तग्रहथांन । पुनि निर्जन अटवी में जाइ । । अचलध्यान लागे मनलाइ । दुर्द्धरतप कीनों जिनराज । करन सकल आतमकाज । तारन तरन महागुनधार । नाम लेत भवभव भयहार । करमुनिवरष प्रामीति मुनिराय । छदमस्तक पदवी सुख दाइ । घाति घातिया प्रकृति विशेष । निज शुद्धातम निर्मल देखि । ज्ञान भान परवांन पूरचनि । लोकालोक व्यापगुन लीन । चारि अनंत चतुष्टय सक्ति

जुगलाखि जिनहरकानी भाक्ति । समो सरन प्राग्वांन धन देव । रवी विभूति जोग जिनदेव । बरनत कथा होय  
विस्तार । सुरगुरुकहिनाहि पावैपार । \* दोहा \*

सुभ क्रातिग भ्रमरानपत्र । चोथतीसेरजाम । केवल कल्याणक रच्यो सक्र महासुख धाम । व्याख्यान धारिसवै  
बानी परखनहार । पंचोतर सत जानिए । गनधर अनभोधार । \* अडिल \*

श्रीजिन धर्म प्रकास द्विविधिकीनौ तवै । सकल मुरासुरसुनत हिए इरषेसवै । द्वात्रिंशतशुभ भेद सहस बिहराइ  
जी ॥ शतजोजन चहुँदिसा सकल सुखदाइजी ॥ \* दोहा \*

करि बिहार इसबिधि प्रभु । बंगदेशमै जाय । हेमपुरी नगरीतहां । समो सरन तिथिथाय । राजकरै समदत  
नृप । सैनानामानारि ॥ नृपसुनि श्रीजिन आगमन ॥ हरष्यौ हिए अपार ॥ सबपरिवार समेतहै ॥ लैपूजाउप  
करन ॥ आयौ राजाभावसौ ॥ जहं तिथौ समोसरण ॥ \* चाल \*

पूजा करि मनहरषानौ ॥ जिन जन्म सुफल करि जानौ ॥ तुमदर्शन बिनु दुखपायौ ॥ देखे भवभृमनसायो ॥  
जान्यौ मैं निजहिए माही ॥ तुमसौ प्रभु दूजौनाही ॥ दुखहीन भाएसबहारे ॥ जबपूजे चरनतुमारे ॥ तुम  
ही सिव बिम्बु बिधाता ॥ तीनों तुमगुनसुखदाता ॥ मेरेनिहचै इहआई । तुमसवै तेसिवजाई । मोको सुतक  
अभिलाषा । लखियौ तुम छुरदुमसाखा । उपदेश महा मुनि दीजै । पतिग जिनमेरे छजै । \* दोहा \*  
इस बिधि श्रुति करि कै नृपाति । श्रीजिन सीसनवाइ । नरकोठमैआइकै । बौहो हिए हरषाय अडिल  
जिनबानी धुनि होत सकल जन सुख करै । आतप्र हित उपजाइ और ससहरै । सबभाषा में सासमागधी  
नामहै । सुनत श्रवन मनहरनपरम सुखधामहै । \* दोहा \*

चतुर्थनगणधरतवै । बरनन करैबिचार । सुननरै मनुलाइकै । सुतउपजै जिमसार । सिद्ध क्षेत्र जात्राकरै ।



सुचि करमनवचकाय ॥ कल्पद्रुमपूजाकरो ॥ संवेगसँबें लु मिलाइ ।  
 \* चौपाई \*  
 भाव शुद्धनिज गृहसौ करै । पीतवसन अपनौ तनयै । जिन चैत्यालें उसादिन जाइ । पूजाकरैं हि एहरषाइ ।  
 मगमैं जिनकल्याणकरै । पूजाकरैं जिनअस्तुति करै । आहारादिक च्यारथौ देदान । करै नृत्य जिनवरगुन  
 गांन । सिखर जाय छुचि भावसेमत । दौक चतुर्विसति मनेदेत । पूजाकरि फिरि निज ग्रहआइ । पुन्य  
 वांन लुमसुत उपजाइ ॥  
 \* दोहा \*  
 सुनि नृप मनहरषायबहु । सीसनाइग्रहआइ । विधिवत नृपजात्राकरी सुतउपज्यौसुखदाइ ॥

\* चौपाई \*  
 संभव जिनवर कर उपदेश । अस्तुति सुरनर करतथुरेस । मास एक थिति रही प्रमान । सिखर सैल  
 पडुंचे भगवान । दवल दत्त बरकट निहारि । कायोत्सर्ग ध्यान चितथारि । पुन्य प्रकृति रसदेसवर्षिरी ।  
 जोगानिरोध सिव सुंदर बरी ॥  
 \* दोहा \*  
 आय पाकस्यासन जहां । सिव कल्याणक ठानि । चैत्रसुकल षष्ठी सुरवि । उत्सवकरि तिसथान ॥ (आडिल)  
 तहां सुरासुर आइ विद्याधरनरतबैं ॥ कियौ महा उछाह हरषि हिए में सबैं । ग्रंथदेपि मनसुछ सिंधु ऐसे  
 कब्यौ । जैजैजै शट्दसौं दिसि है रब्यौ ॥  
 \* दोहा \*  
 सुनि निज थानक जायसब ॥ सुनि श्रेणिक मनुलाय । महा पुन्य के योग सौं ॥ उपथानक जियजाय ।

\* सोरठा \*  
 सौ समेद तैं नरेस ॥ पुत्र पाय बहु सुख कब्यौ । धवल देखि निज केस । राजभार सुतकौं दियौ ।  
 दिशा लेव न जाइ । तपहुंधरधारथोतबैं ॥ केवल ज्ञान उपाय । कर्मकटि सिव पदलब्यौ \* आडिल \*

निवै कोडा कोडि मुनी सुर जानियै । लाखवहतरि सात सहस्र बखानिये । पंचशतक व्यालीससिद्ध  
पदवी लही ॥ संभव सै अभिनंदन लौगिनती कही । \* दोहा \*

लाखवयालीप्रोषधी । बृत्तकरजो फलहोइ ॥ धवल कूटंबंदनकिये । सौफल हैभबिलेइ जे नर पूरन सिषरि  
गुन । फुनि चौबीसूं कूट ॥ बदै तिनैं अनंतफल ॥ नरक पसुगति हूट ॥ \* अडिल \*

लौहाचार्य बिचारि सिषरि गुन कहि दियो ॥ सौ अनुसार निहारि जिन गुन में कियो सिद्ध थान इह  
जानि ध्यान हैधर्म कौ ॥ चौबीसौ जिनथान हैं सबकर्म कौ ॥ \* दोहा \*

जात्रा करै त्रिकाल भवि ॥ ऐसी हिए मै धारि ॥ सकल हैअप्रमजाल ज्यो ॥ दोन्यो भवसुखकार

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचने तीर्थमहात्म्ये खुसपेदाचल महात्म भाषायामन सुद्धसांगेरण विरचिनसिद्ध बर्ननोचतुथो अध्याय४॥

### \* सवैया \*

सकल सुकृत खान जनम बिनीता थान सिद्धाथ माता सुख दाता सबजनैहें । संबर जिनतीसव  
लक्ष्मी बरन हार सो में कपि चिन्ह चरन बर्न हेमतनैहें । सांदूतीन शत चाप उन्त लुकाय पूर्व पचास  
लाख आयमुभमनैहें । ऐसे अभिनंदीजनंदमसुखसिंधुतिनचरनांबुज कौ मेरी प्रनमैहें \* सोरठा \*  
संभव जिन दशलाख । कोटि उदधि जबहीगए । धर्म प्रकासनहार । अभिनंदन जिन जनभियो  
अभिनंदन आनंद करि । सब जीवन सुखकंद । जिन चरित्र बर्नन करौ ॥ नासन दुर्मद फंद ॥

### \* चौपाई \*

जंबूदीप जगत बिष्यात । सकलदीप के मधि अत्रदान । पूरब नांम बिदेह प्रसिद्ध ॥ सेभित सोभा  
धनकनरिद्ध ॥ सीता नन्दी मध्य में वहै । बज्रकूल जुग जलकौ गहै ॥ तोकै जमदिस देश महंत ।

नाम मंगलावती दिष्ट ॥ नगर नाम सुभ परम पुनीति । सब नरनारि करें मिलि प्रीति ॥ महासैन  
नृपराज जो करें ॥ अरिगन कोऊ धीर न धरें ॥ पट रानी महसेना नाम ॥ पिय हितकारी सब सुखधाम ।  
इकादिन भूप सुकर कर धार ॥ अवलोकै निजमुख हितकार । स्वेतवाल लखियौ सिरतवै ॥ अति सेवग  
भयौ हियजबै ॥ निजदे जघन पाल बुलाय । राज भार सोंप्यौ सुखदाय ॥ वस्त्रा भूषन तजि तिहथान ।  
चले आत्मा काज मुजान ॥ हिए विवेक बैराग समाज । अविचल राज करन के काज । निर्जन  
अटवी जाइ महासैन । लखियौ महामुनि सब सुखदेन । विमल बाहु स्वामी अतिधीर । विद्याजल निधि गुण  
गंभीर ॥ बिन सहित नृप सीस नवाय । अस्त्रतिकरत परम पददाय ! कृपासिंधु दुम दीनदयाल । दिक्षा  
देहु मिटै जगजाल । मुनिधर्मोप देश तव दियो । मुनि दर्पित है तिन तप लियो ॥ मूलोत्तर मुनवारत  
अन ॥ निश्चल मनुजु रहित सब संग । करत ध्यान जैसन मुनीस ॥ अति निदाघरित गिरके सीश सीत  
सभै सरिता तटजाइ ॥ निज आतम सेती लवलाइ । वर्षा में दुमकेतर रहै । पूर्व करम विपन इमदेहै ॥  
दर्शन विशुद्ध आदि मनधारि षोडस कारन भावै सार । प्रकृति बंध तीर्थकर गौत । तीनलोक सुख  
दाइक होत । अंत समै गहिकारि संन्यास । विजै विमान कियो तिनवास । देव भयौ अहमिंद्रप्रधान ।  
सकलदेव सेवै तिनथान । तेतीस जलधि आउतह परी । देहीदुति अति बहु विस्तरी । एकहरत उन्नत  
तनधारि ॥ अंशुल्यारि उन सुखकार ॥ तेतीससहस्र वर्ष जबजाय । मानसीक आहार कराय । सादेसोह  
माश वितीत । सुरभितस्वसलेहि सुभरीति ब्रह्म चर्यपद ईसव धरै । साततत्व की चर्चा करै । इह  
विधि और वर्नन विस्तार ॥ जानौं ग्रंथ तनै अनुसार । आयुर्हो षट्मास जुसीपि । रतनमाल मूर्छित  
गलेदेखि । आभूषण मणितज विनांस । देखि मरणभै हैदुःखरासि । आरत ध्यान हरन के काज । उद्यत

है पूजन जिनराज । अष्टद्रव्य जुत भव समेत । निज आतम सुख कारन हेत । धर्म ध्यानमें अहनिशि जाय । अविचल पदवी जातैं पाय ।

\* दोहा \*

तदनंतर मगदेश सुनि ॥ निज निश्चल मनुलाय । जन्म जहां अभिनंद जिन । वरनैं मन बचकाय । ईह जंबूवर दीप मैं । भरतक्षेत्र अभिराम कौसलदेश मनोग्य अति । नगर विनीतानाम । बंशइक्ष्वाक विष्यात । जग कासिप गोत्र प्रसिद्ध । संवर नामां भूपत है । राज करैं जुतरिद्धि । सिद्धारथ नामां त्रिया । सील वंत सुकुमार । जाके उर जिन अवतरे । तिस गुन लहैन पार । \* पच्छडी छंद \*

नो द्वादस योजन रचि धनेस । पुर जैजै होत सकल देस ॥ वर्षीवैं रतन त्रिकाल देव । जिन माता देवी करत सेव । बीते षट् मास अनंद मांहि । दुर्जन भैंभीतिनही करांहि । एक दिन संबर भूपति सुनारि । अति आनंद जुत कर सैन सार । पछिम निसि खेडस सुपन देखि । गज सुख करत प्रबेस देखि । उठि प्रात सुपन फल सुने सर्व । दंपति हर्षे निज मन अर्गाव । बैसाख सुकल छठि सुदिन जानि । नक्षत्र पुनर्वसुसुभ बखानि । इंद्रादि अमर आए तुरंत । करि गर्भ कल्याणक मन सहंत ॥ फुनि निज निज थान किं गमनतेह । नगरी नृप ग्रह उत्सव करेह ॥ नव मांस बितीतेहैं सुछंद । प्रभु जन्म भयौ त्रिभुवन अनंद ॥

\* दोहा \*

माघ मास शुभ सुकल पक्ष । द्वादसि दिवस निहार । शुभ महूर्त जिन जन्मको । तीनभवन हितकार ।

\* पधरी छंत \*

अमरेस आय गजपर चढ़ाय । सुर गिर परि जाय प्रभु नहाइ । अभिनंदन कहि पूजेसुदर्व । जय नंद बृद्धि सुर करांहि सर्व । ल्याये नगरी उत्सव करंत । देखत जिन सुख पातिक हंत । दंपति सिंहासन

थापि इंद्र । जिन माता गोददे कै जिनंद । करि नृत्य अमरपति नाक जाय । जिनवर सुर मिल क्रीडा कराय । तन हेम बर्न लक्षण समेत । आतिसैं दश सोभा अधिक देत । साढ़े द्वादश लखि पूर्व जांन ॥ प्रसुबाल अवस्था सुत बखान । जोवन तन जनक जिनेंद्र देखि । प्रभुके विवाह कौ कियौ भेष । दोहा वस्त्रा शूषण इंद्रलै । प्रभुतन में पहराइ । राज सिंघासन थापिकैं मंगल गान कराय । राज कुमारी कन्यका । सीलवान गुन ध्यान । करि विवाह संवर जनक । मन धरि हर्ष प्रधान उत्सव करिकैं अमर पति । गमन देव पुरकीन । नित पंथ अडुसारजिन । सब नागर सुखदीन \* चौपाई \*  
 पूर्व एक लाख थितिरही । श्री जिन आगम ऐसीकही । इक दिन सिंघासन जिनराज । थिति दिस दिस अवलोकन काज । पांचौ बरन जलधि तनधरैं । लाल आसि सित पीतजौ हरैं । छिनक मांहि गए विलाइ । देखि विचारै श्री जिनराइ । इस संसार अथिर कर जांनि । नाश नीक तन विभौ बखानि । द्वादश अडुप्रशा चित धारि । अभिनंदन जिन करहि विचारि । इतनै लौकांतिक सुर आय । अस्तुति करैं त्रिजग सुखदाय । तुमबिन ऐसी कौ चितधरैं । मुकति गमन कारन कौ करैं । \* सवैया \*  
 तुम जगईस सीस नावन त्रिलोक हुत तुम जग धाता सब साता के करनहौ । मिथ्या तमसेती निजद्रग हीन जन ग्यान की सवाई देखि तिम हरनहौ । भवन दहन सिव रामा के हिए अहार जम जोरावर अरिताइ के दरनहौ । गुनहैं अगम तुम ग्यानहैं अल्प हम सुख सिद्ध कौ जो तुमाहि सरनहौ । \* दोहा \*  
 इमबहु थुति लोकांति सुर । करि निज ध्यान किजाय । आति रमनिक सुरेस तव । सिवका ल्यावैं चढ़ाइ ॥

\* चौपाई \*

चलि सुलतस्तलि तजिसंग । ध्यान मौन आविचल मन अंग । बारह सहस्र वर्ष बन लसैं । नंदनवनशोभा

कौं हंसै ॥ एक सहस्र नृप सीस नवाय । तप लीडुं अतम सुखदाय । तप कल्याणकं सुरपति कियौ । अपनौ जन्म सुफल करि लियौ । जैजै करत इंद्र सुर एव । निज निज थान गए सबेदेव । श्री जिन जुगम दिवस व्रत धारि । नगर विनीता फुनि पग धारि । इंद्र दत्त नांमा तहं भूप । जिन सुनिवर कौ देखि सरूप । करि प्रनांम जुग चरन प्रछालि । करि पूजा फुनि पहुँ गुनमाल ॥ प्रासुकक्षीर धेनु कौ लाइ । भक्ति सहित आहार कराइ । अखैं निद्धिकहि अटवीगए । आतम लीन जिनेसुर भए । \* दोहा \*

इंद्रदत्त ग्रहसुमन सब पंचाश्वर्य करंत । दांन प्रभावन प्रगट करि ॥ मनमांहि हरंत ।

\* पच्छडी छंद \*

प्रभुमौनि धारिव्रतकरत जोर । द्वादश विधि जिनतपकरत घोर । आचारज कियो चारित विशेष अष्टादशवर्ष प्रमांन लेख । मिथ्यातम नाशक ज्ञान सूर । प्रगढ्यौ सिवदायक त्रिजग पूर । तवइन्द्रादिकसुर धनदआय ॥ रचि समो सरन आनंद उपाय ॥ साढेदस जोजन महिनाय । मंगल जिन गुननिज सुख अलाय ॥ केवल कल्याणक सुरकीन । अपनै पातिक सबकिए छीन ॥ \* दोहा \*

पौस सुदि चौदसि दिवस । अभिनंदन जिन ज्ञान । उपज्यौ सबजगसुख करन । परन पुन्य निधान ॥

\* चौपाई \*

ब्रत्रनाभि आदिक गुनधार ॥ इकसत अधिक तीन सुखकार । तीनलाखसबसंघ समेत । करैबिहार धर्मके हेत । नाना देश बिहारकरंत । कवि बर्नन करि लहे अनंत । आएसुमेर सिपर के सीस । जैजैकरत सुरासुरईस । आयुमास इकजब थिति रही । मौनअवस्था फुनि प्रमु गही । समोसरन बिघट्यो तत्काल । संखप्रकति नासी दरदाल । पुन्य पाप दोन्यौ समकीए । निर्विकल्प आतम हित हिए ॥ सित बैसाख छठि

सुवरासि । सुक्ति पुरी कीर्णों बहुबासि । आनंद नाम कूटके सीस । सिवरसनी परनी जिन ईस । मुनिवर और गिनत कछु कही । सोभाषित होजो सुत लही । कोडा कोडि तिहातरि जानि । सातकिरोखधिक परवांन सतरलख फुनि सात हजार । पंचसतक ब्यालीसहजार । इतनें मुनितिस कूटसुथांन । सुकति गएजिन बैनवखान । ऐसो पर्वत पूजन जोग । बड़े भाग सौं होए संजोग । सिक्कल्यानक मधवाकयिौ । भक्ति पूर्व है हरषित हियौ । सुर नर खगमुनि पुंज रचाइ ॥ निज निज थांनिकि गमन कराय ॥ \*दोहा\* तदनन्तर श्रेणिक सुनौं ॥ जिन इक चित लगाय । हें अभव्य राजा कथा । भाँपेँ गोतमराइ । जंबूदीप मध्य रमनीक । भरतक्षेत्र सोभै शुभलीक ॥ सूरमंद तहं देस प्रधांन ॥ पूरन नगर वसै सुखखान । पुर सोभा अति बनी अनूप । मुनि सेपरनांमां तहंभूप । चंद्रमती रानी गुनवंत । चंद्रसमांन रूप छविवंत । तिनके बंस भूप इक भयौ । बिजैँ भद्र सौ बन में गयौ ॥ सिद्ध सैन नृप लखि मुनिराय ॥ हर्ष सहित है सीस नवाय । पूछै नृपति कहौ सुनि बैन । निज आगम सब जन सुखदेन । मुनिवर कहै सुनौ भूपेस जात्रा करि आए इसदेश ॥ बिजैँ भद्र नृप मुनि सिरनाय ॥ निजजात्रा पूछै हितदाय ॥ श्री गुर अवधि । निरखिक कहै ॥ हें अभव्य जात्रा नहि लहै ॥ भूपचमूस जियौ चतुंग । पुरजन लोग लिए सबसंग । पुहुप पुरी कौ नृप जैसेन । सूनि करिवालयौ निज सैन । बिजैँ भद्र जैसेनसु धीर ॥ जात्रा हेत चले दोऊ बीर ॥ परम प्रीति हित हिए उपाय ॥ तिस अवसर मुनि श्रेणिकराय । दश जौजन गिरि थिति अवसेस । मुन्न लख्यौ जै भद्र नेरस ॥ राजनास सुत जमपुर गयौ ॥ जागत नृप अति व्याकुल भयौ ॥ समझावैँ जैसेन महीस । मौह उदैँ सुनि व्यापैँ रीस ॥ में निज ग्रह फिरि जाऊंआज ॥ तौ मेरी सोभै सबकाज । हठ करि निजपुर आयौ वही ॥ कथा अभव्यजीव इह कही । नृप जैसेनि शिषरपैँजाय । कूट कूट पर पूजकराय ।

मंगल गान किये दिन तीन ॥ भौ भौ के पातिक करि छीन । छुनि निजपुर में गमन करंत । नितिप्रति  
 अरुचै श्रीभगवंत ॥ दांनच्यारि विधे करै विचार । व्याख्यौ संघ सुपात्र निहारि । निज ग्रह आय कीयो  
 उत्साह ॥ परभव कौतिन लीयौ लाह ॥ तनुज विभाव शैन दै राज ॥ दिक्षा लई निजातम काज । द्वात्रिं  
 शतलख संघ सुगइ । तप करि केवल ज्ञान उपाय ॥ आनन्द कूट शिषि शिवथान ॥ अविचल सिद्ध हुवे  
 भगवान । नृपति विभाव सैन सुतसार । बिपै सैन नृपपद गुनधार ॥ आनन्दनाम टौकरजाइ । महिमा  
 भगति करी अधिकाइ । जेनरनारी बंदन करै । सोरहलाप बरत फल धरै । गति तिर्थच नरक गतिनास ॥  
 मानुष सुरगति पावैबास ॥ गिरि समस्त जो नरपूजन्त ॥ ताके फल कौ लहै नहि अन्त ॥ \* दोहा \*  
 मन मरकट रोधन निमित । भवि जीवन हितकार । लौहाचार्य कथन लपि । क्रियौ ग्रन्थ विस्तार ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहात्म्येबुसमदाचल महात्म भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनसिद्ध कृत्नं पंचमो अध्याय ॥५॥

### \* सर्वथा \*

सुमति करत हार दुर्मति हरत हार जन्म विनीता धार हेमदुति तनकी । तात मेघ प्रय जानि मात  
 मंगला बखानि चक्वा कौ चिन्ह आस पुरै सब जनकी ॥ तीनसँ धनुष कायं सवही हिए मुहाय पूरव  
 चालीस लाख आयु अचरनकी । जैसे हैं सुमति नाथ सुक्ति गमन साथ मन सुद्ध सिंधुन मैदेहु मेरे मनकी ॥  
 \* दोहा \*

नवलख सागर वीतियौ । अभिनंदन सिवथान । जन्म लियौ जग सुखकरन । सुमतिनाथ भगवान ।  
 विन चरित्र बर्नन करौ । ग्रंथ उक्त मन धारि । सुनत पापमल दूरि है । भवदधि उत्तरे पार ॥



## \* चौपाई \*

जोजन च्यारिखि विस्तार । खंडधार की तामैसार । प्राची दिसि तहनाम विदेह ॥ सुन्दर सुबसबसैशुन  
 गेह । ताके मध्यमा हार मनीक ॥ सीता सरिता हैं शुभ लोक । उतरदिशि तटेशवसंत । कवि बरनन  
 कहि लहन अन्त ॥ नाम पुष्कलावती प्रसिद्ध । धन धान्यादिक है तह रिद्धि । पुंडर कर्ना हैं तहपुरी ।  
 सोभाकर सुरपुर हुति डुरी । नृपतिषेन नगर कौ ईस । नृपति अनेक नवावैं सीस । सील सिरोमनि बहु  
 गुन गेह । सब परिजा सौ अधिक सनेह ॥ निति रज करिकै सुखदेह । नरनारी गुनगान करेइ । स्याम  
 दांम षट विधि गुनराइ । दंड भेदकरि राजकमाइ । धर्म प्रवर्त कविसन विनांस । जाचि गजन मन पूरै  
 आस ॥ इह विधि सौ राजै राजेंद । अमरलोक सम सौहै इंद ॥ इकदिन सिंह पीठि थितिराय ॥ करै धर्म  
 चरचा चितलाइ । तिन अवसर इक पुरुष निहार । लए भृतक सुत कस्त पुकार । लखि नृप चित विरक्त  
 अति भयो । अतिरथ सुत कौ नृपपददयौ ॥ ग्रंथत्यागि व्रत लयौ अनूप । बैरै महातप बहु विधि भूप  
 घौर वीरतप साधन कीयौ ॥ ग्यारह अंग पावकरि लियौ । देह नेह तजि आतम ध्यान । करै परीस्यास  
 है निदान । सोलहकारण निज चितधार । गोत तीर्थ पति बाध्यौ सार । प्रायोप गमन अंत सन्यास ।  
 करि सर्वार्थ सिद्धि सुवास । यद अहमिंद्र लयौ रविषेन । मन बंछित अति हित सुखदेन । लखि बिमान  
 बैजयंतसु नाम । सबसुर सेवकरै अभिराम । एकहाथ चौ अंगुलु हीन । सुंदरतन सोहत अमलीन । ब्रह्मचर्य  
 तप बुद्धि अपार । सात तत्व चरचा बिस्तार । तेतीस सहस्रवर्ष वीतन्त ॥ मानसीक आहार करंत । जाहि  
 सार्द्ध षोडश जव भांस । सुरभितलेहि अनंदित स्वास । अवधि नर्क सप्त लौजाइ । तद्वलगि तनवै  
 क्रिया कराइ । लेख्या शुक्ल धरै सब देव । करै प्रीति मिलि सुरस्वमेव । ईहविधि सुखमै आशु वितीत ॥

षट् मासाद्यु सेष लहिराति । लगे मुकट मनिहै छविछीन । लगेहारकी जाति मलीन । विकल भाव ताज  
 करि मनसंत । पूजा करै जौ अरिहंत । अव सुनि श्रेनिक जन्म सुथान । जहां लहै पदवी भगवांन ।  
 जंबू नाम दीप परतक्ष । सेवै ताहि सुरासुर जक्ष । भरतक्षेत्र तहं कौशल देश । बसे नारि नर उत्तम भेस ॥  
 पुरी विनीता रचि धनिंद । नौ द्वादश जौजन सुखकंद । तीन काल मनि वर्षा होये । रस मित मास  
 अगाऊ जोय ॥ तहां मेघ रथ नाम सुगइ । नारि मंगलावती सुहाइ । दंपति प्रीति परस्पर करै । राज  
 नीति मारग अनुसरै । इकदिन रानी सैन करंत । लखे सुधन षोडस निशि अंत । उठि करि  
 प्रात शुद्ध करि देह । पतिदिग जाय चवै बुतनेह । सुने सुप्र फल अति सुखपाथ । सुरनारी मिलि  
 मंगल गाय । इतनेमै आए सुरईस । जैजै करत नवावै सीस । थापि सिंह विष्टर नृपनारि । पूजै बस्त्र  
 आभूषन धारि । अस्तुति करि निज थांनकि जाइ । देवीसेवकरै जिनमाय । \* दोहा \*  
 पावस रिठु श्रावन सुदी । द्वितीया मघा नक्षत्र । गर्भ कल्याणक सुर कियौ । निज तन कियौ पवित्र ।

\* चौपाई \*

निज निज काज रचै सुर नारि । मंगल गांन करै सुख कार । इसविधि सौ बीते नव मास । जनमै  
 जिन जग प्ररन आस । चैत सुकल एकादसि जानि ॥ सुमति नाथ जिन जन्म कल्यांन । आइ शची  
 पति लैजिन राज । चले देव गिरि मंजन काज । कर कर कलस सकल सुर लाय । क्षीर उदधि सुचि  
 जल भखाइ । सहस एकबसुंभ सुरस । सनपन करि सुर ब्रजि जिनेस । जैजै सुमति नाथ जगदीस  
 सुमति दाय है विश्वा बीस । श्रीजिन जोग बस्त्र पहराइ । आभूषन करि मूषित काय । ऐरापति  
 पैथापि जिनेंद्र । ढारत निज कर चमर सुरेंद्र ॥ जैजै सब सुरकरै निभंक । जिन पति दिए मात के

अंक । नृत्य गांन करि निजश्रु जाय । सुर जिनसेवकैं सुख दाय । बाल रूप बहु भेष धरंत । छिन छिन में जिनमन हरंत । दशलक्ष पूरव बाल कुमार । क्रीडा करैं मात मन हार । देखि मेघ रथ जनक जिनेस । अति पबित्र तन सुरभेस । जान्यौ ब्याह जोग जग राइ । उत्सव करि रमनी पर नाइ । आइ पुलोभि जंपति हरंत । श्री प्रभु गुन गन सुर गावंत । थापि राज वृष्टिरु भगवांन । आत पात्र फेरैं अम लांन । बस्त्र आमूपन सब पहिराइ । फिरिनिज थानक सुरपति जाइ । सुमति नांथ जिन राज जोकरैं । प्रजा नीति सुभ मग पगधरैं । जनतीस लाख पूर्व करि राज । बहुरि विचार्यौ आतम काज । इह संसार असार निहारि । द्वादस भावनां भावैं सार । तिस औसर लौकांतिक देव । अस्तुति करैं आ यस्वमेव । धन्य धन्य प्रभुदीन दयाल । तुमबिन कौ छेदैं जग जाल । कौ सिव मार्ग देइ दिखाइ । कौ इह मुनि पद धरैं सुभाइ । इत्यादिक अनेक थुति करी । बहुत भक्तिनिज मनमैं धरी । अपनौ निमित साधि ग्रह गए । सक्रजु सिवका ल्यावत भए । प्रभु बैठाइ लय बन जहां । गए सहेतकं नांमां तहां ॥ परिग्रह तजि जिन नगन सरूप । एक सहस सह और जो भूप । वृत धरि जुगल दिवसके अंत । उठे आहार निमित मन संत । विजय नगर भैं बधू नखिंद्र । आवत निज द्रग लखे जिनेंद्र । आंगैं हूँ सुकलित कर कर्यौ । निज लौचन निज द्रग पद धर्यौ । कर नमोस्तु विधि अस्तुति ठानि । दे आहार विधिवत विधि जानि । अलैं निखि कहि जिनवन आइ । धर्यौ ध्यान आतम लव ल्याइ । नृपति गेह सुर उत्सव करैं । पंचाश्रथ अधिक विस्तरैं । जिनवर बीस बरस छदमस्त । रहकरि किए कर्म गन अस्त । त्रैत्र शुक्ल एकादसि जान । उपज्यौ केवल ज्ञान सुभांन । चलुर निकाय देव सब आइ । समोसरन विधि रची बनाय । गनधर इकस्त सोरह तहां । द्वादश सभा जिनेसुर जहां । बतीस

सहस्र देश विहरंत । दया धर्म उपदेश करंत । सेष मास इक आयुसु जानि । सिखर समेद आए भगवान । अविचल कूट परम पदलेइ । जामन मरन जला जालेदे । अविचल कूटन में जोकोई । सो अविचल रमनी पतिहोई ॥ कोडा कौडी एक निहार । चौरासी करोमन धारि । लाख बहतीर उपरि कहे ॥ सात सत्तक इक्यासी लहे । इत तैं मुनि सिव पद तिस थांन ॥ लहि करि अविचल भए सुजांन ॥ एक बेर प्रण में जौ कोइ । लाख बतीस बरत फल होइ ॥ \* दोहा \*

चैत मास शित पक्ष सुभ । एकादसी निहार । सिव कल्याणक । इंद्र कर सुमति नाथ गुण धार ॥ \* चौपाई \*

और कथा मुनि श्रेनिक राय । शिखर महातम अति सुख दाइ । जंबू दीप दीप में सार । लख जोजन ताकै बिस्तार । भरत क्षेत्र तहं आरिज खंड । जोधदेश सोहै अति चंड ॥ पद्म नाम नगरी मनहार । नर नारी सुंदर गुन धार । आनंद । सेन नगर पति नाम । करै राज सोभित धन वांन । प्रभावती रानी दुतिवंत । सील सुलक्षण क्रिया वंत । जेष्ट पुत्र सुभ सैन बखान मित्र सैन । लडु तनुज सुजांन । सुख सागर में मगन नरेस । शोधे बहुत नृपति के देस । इक दिन भूपति बन में गयौ ॥ जुग चारण मुनि देखत भयौ । दे प्रदक्षणा प्रणयौराइ । धर्म बृद्धि दीनी मुनि राइ ॥ धर्म कथा मुनिकें नृपतैं । पूरन करै मुनि भौषैं अबैं । मेरी आचक है हितकार ॥ जिम सुभ गतिमें पाऊं सार । इम मुनि करि बोलौ मुनि धीर । अवाधि ग्यांन जुत गुन गंभीर । आयु मासह षट परमांन ॥ निहचै करि निज मनमें जानि । अविचल कूट बंदनां करौ । तब अविचल सिव नारी वरौ । असे बैन सुने नर ईस । आयौ नगर नाइ मुनि सीस । चारि प्रकार संगलै साथ ॥ सकल बस्त्र पहरे नर नाथ । जिन पूजा करि भाव समेत । बहु विधि दांन सुपात्रन देत ।

त्रलयौ शिखर नृप मन हरखंत । पंडुच्यौ अविचल कंट तुंत । टोंक टोंक पूजे जिन थान । मुनि संजुत चौबीस प्रमान । निजग्रह आय प्रतिष्ठा करी । शुद्ध भाव कीनों तिहि घरी । सुभ सेना सुतकों देराज । दिक्षा लई सुआतम काज । तप करिके बल ज्ञान उपाय । सिद्ध निरंजन पदवी पाय । जो नर शिखर जात इह गीति । करें देव नर गति सौं प्रीति । महिमां कथन बढै बिस्तार । को मेधा धर पावैं पार । नरक पसू गति नासनं करैं । क्रम क्रम सौ सिव नारी वरैं ।

\* अडिछ \*  
\* दोहा \*

महिमां शिखर सुमेर कहां लौं गईए । परम पवित्र पुनीत पुन्य सौं पाईए । आरिज खंड मझारि क्षेत्र या समनही । यह विचारि । मन शुद्ध सिंधु प्रनमैं सही ।

\* दोहा \*

मद प्रसाद के नाशकौ । इह उदिम लख लीन ॥ लौहा चार्य कृत निरखि नर भाषी चित दीन ।

इति श्री काष्ठा संगे छोहाचार्य विरचतेतीर्थमहात्म्येखुसपेदाचल महात्म भापायामन सुद्धसांगरेण वर्णनअविचल कूटनं पष्ठमो अध्याय ६ ॥

जाकौ शत नमत सुखस तन रतन बरण में चिन्ह सौहै जलज नवीनौ हैं । जननी सुसीमा सुभ धारक जनक नाम नगरी । कुसाग्र सुख धाम आस लीनौ हैं । साछे द्वध सतक धनुष काय उन्नतहैं तीस लाख पूर्व सू आयु कहिदीनौ हैं । अैसे पदम प्रभुके निहारि पद पंकज कौमन सुख समुद्र श्री नमस्कार कीनौ हैं ॥

\* सारठा \*

नवै सहस करोर ॥ सागर बीतैं जानिए । सुमति नाथ सिव और । जनम पदम प्रभु मानिए ॥

\* दोहा \*

नमस्कार करि कंज प्रभु । सारद सीस नवाय । चरित सुकति थानक कथा । वरनौं अति हितदाय ॥

\* चौपाई \*

खंड धातकी सौहैं सार ॥ च्यारि लाख जोजन विस्तार । पूख नाम बिदेह बखान । तहां सदा पावैं सिव

शान । सीता नंदी मध्य में बहें । निर्मल जल करि सोभा लहें । ताके दक्षिन दिसि इक देश । वत्स नांम सुख दाइ असेस । सोमा नांम नगर रमनीक । सोहैं इंद्र पुरी समठीक । नर नारी मन हरन बसंत । देषि देव देवी लाजंत । अपराजित नामां नृपराज । करें नीति पथ निज हित काज ॥ चक्री पद सम भोगें भोग । लखैन सुपने में दुख सोग । जिनवर पूजा करें त्रिकाल ॥ हूदैं धारि गावैं गुनमाल । च्यारि प्रकार संघ ह्रस्व दाइ । करें भक्ति आति प्रीति उपाइ । दान च्यारि विधि देइ अहार ॥ पात्र अपात्र जुकरैं विचार । इह विधि निसिदिन करें बितीत ॥ जोहैं सिवपद सायक रीति । इकदिन सौध मध्य थिति राइ ॥ लखैं गवाखण में चितलाइ । इंद्र धनुष नृप लाखि पंचरंग ॥ छिनक प्राज्ञ हुवेते भंग । इह संसारी रीत मन जानि । प्रसम भाव निज मनमें आनि ॥ चित चत्पौ आतम हितकरौ । कर्म महा अरि छिन में हरौ । नांम सुमित्र पुत्र बुलवाइ ॥ राज भार दीनों चित लाइ । पिहिता श्रव सुनिकें ढिगा जाइ ॥ करि प्रनांम व्रत लीनौ राय । नाना विधि तप साधन करें ॥ पूर्व कृत कल्मसबहरैं । सहैं परीस्थाधीरज धारि ॥ करें अहार बिहर निहार । गज करि मित गुन निज चितु लाइ ॥ साधैं अपराजित सुनिराइ । ग्यारह अंग पाठ मुनि कीन ॥ ग्यानांखन जलांजुलि दीन । पंचा चार आचारन कियौ ॥ निज आतम सतारस पियौ । दर्श विशुद्ध भावना भाय ॥ करें बिनें संपन्न बिचार । उचित दांन तप द्वादश रूप ॥ ब्राह्मां भ्यंतर करें अनूप । साधु समाधि हिए में धरें ॥ बैया व्रत मुनिनिकी करें । अर्हद भक्ति सुबिधि बिस्तार ॥ पुनि आचारिज भक्ति निहार । द्वादशांग श्रुत भक्त करंत ॥ प्रवचन भक्ति सुहिण धरंत । षट आवस्यक भक्ति जुदेसि । करें प्रभावन धर्म विशेष ॥ जेजन जैन धर्म बृत लीन । चाह करें व्रत लैन नवीन ॥ तिनके व्रतकी थिरता करें । सो नर बात्सल्य गुन धरें ॥ एषोडस भावना सुभाइ । तथिंकर पद बंध

कराइ ॥ अंत-समें थिर कहि परनांम । व्रत सन्यास धर्यौ अभिरांम ॥ सर्वोपर प्रेवे एक सार । जन्म धर्यौ मुनि अति गुनधार ॥ श्रुत कर बिमान मनु लाइ । तहं उपातक सेज विछाय ॥ अंत महूरत जो बन होय । पद अहमिंद्र महा सुख जोय । झुग कर तन उतंगता धरें ॥ हुतिकर मन सोभा सब हरें । आय जलधि इकर्तास बखानि । लेस्या सुकल बड़े बुधिवान ॥ ब्यारि सतस चौसठि दिनजाय । खासो स्वास लेय सुखदाय ॥ एकतिस सहस वर्ष बीतंत । मानसीक आहार करंत । छहौं दरबि चरवा हित दाइ । सब सुर मिलि चरचैं चित लाइ । रिनु मिति मास आहु प्रमांन । राही माल मनि छवि लखि हांन ॥ बीतराग पूजा चित दीयौ । अंतर शुद्ध भावनां कीयौ । तदंतर जिन जन्म सुथांन । मुनि श्रेणिक निज मन इक आंन । एही दीप जंबू वर नांम । भरत क्षेत्र सुख आतिम धांम । आरज खंड मथ्य सुभ देश । ताकी महिमां करै सुरस । नगर कुशंबी नांम विख्यात । तहां बसैं शुभ उत्तिम जाति । वन उपवन भूधर परचंड ॥ तहँ काला इह बहै अखंड । धारन नामैं नृप राजंत ॥ सोभा गुन कहि लहौं न अंत । प्रिया सुसीमा हैं पटनारि ॥ सील सुलक्षण सुभ आचार । \* दोहा \*

हरि आज्ञा धन देवलै ॥ भक्ति शक्ति उरधारि । पुरी रची जिन जे गतसु ॥ महिमां लहौंन पार ॥ तीन काल षट मास लौं ॥ मणि वर्षाए देव । बहुतक देवी देव मिलि । करै मात की सेव ॥

\* चौपाई \*

इरु दिन निज मंदिर में आइ । सैन करै श्री जिनकर माय ॥ सुपने षोडस लखै दुस्त । गज मुख दस्त देखियौ अंत ॥ ( अडिछ ) प्रात सूर्य बरनाद सुनै निज श्रवनदे । कत कर वस्त्रसुधार बली निज भवन में ॥ श्री पति के ढिग जाय स्वप्न षोडस कहै । तीर्थकर सुतहोइ सुनै फल सुखलहै ॥

## \* दोहा \*

दंपति निज आनंदमें ॥ करें परस्पर नेह । सुर सुर पति तहँ आईकें ॥ करें मात सुचि देह । माघ  
अशित षष्ठी दिवस ॥ उडु चित्रा सुख दाइ । गर्भ कल्याणक शक्रा करि ॥ निज थानक पुन जाइ ।

## \* चौपाई \*

देवी गांन करें दिन रात ॥ नाचैं अति पुलकित है गात । निज निज काज गेह की करें ॥ छिन २  
जिन माता मनु हैं । पंचाश्वर्य होय सुखसार । नगर देश पुरजन दुखहार ॥ इति भीति नहि व्योपें कोइ ।  
सुख में रहें नगर के लोइ ॥ इस विधि सौं बीती दशमांस । जन्म लियौ श्री जिन सुख रासि । संची  
पुलोम जपति सुर सबै ॥ ऐरापति सजि ल्याए तबै । जै जै करत कौशांबी थान । सक्र गोद में लै भगवान ।  
सुर गिरिजाय कलस भ्रवाय ॥ नह्वन कियो सुरपति हरषाय ॥ पदम प्रभु अभिधान उचार ॥ पूजाकारि  
सिखद दातार । पुन आए माता के तीर । थापि अंक जिन गुन गंभीर ॥ कियो नृत्य उत्सव गुनगान ।  
जाधि गजन बहु दीनों दान । इन्द्र गयो निजथान तुरंत ॥ सेवक सुराखे प्रभु अन्त । नृपधारन मंगल  
सानन्द ॥ पुरजन मिलि कीनों सुखकन्द ॥ श्री जिन शिशुक्रीडा सब करें । मात जनकपुर अनुमनहैं ॥

## \* दोहा \*

कातिक सुकल त्रयोदसी जनमे पदम जिनस । मनवंछित सुखदाइ है । मेहत त्रिजगकलेस ॥

## \* चौपाई \*

तीसलाख पूख हैं आयु । दस अतिसैं तनु सोभ सुभाय ॥ धनुषसार्द्ध द्वै सतक उत्तंग । रत्नवर्ण छाव हैं  
जिन अंग । साडासातलाख पूर्ववाल ॥ लीला करत मनोहरचाल ॥ करि विवाह पुन नृपपदधार ॥ राज



कियौ पुरजन सुखकार ॥ इकईसलाख सहस पचास । पूरवराज कियो ब्रह्मास । इक दिन वन क्रीड़ा के काज ॥ गऐ मृतक पसुलखि जिनराज । बिनासीक जांन्यौ जबराह । धन धान्यादिक मानुष देह । आत्म काज करन अबजोग । आथिर रूप संसारी भोग । द्वादश भावन गर्नहि बिचार ॥ वीतराग पद सुखदातार । सुरलौकांतिक बिनवै आइ । निज थांनिक पुनि गमन कराइ । आनन्दनांस पालकी इन्द्र । ल्याय तवै थापियो जिनन्द । बिपिनि जाय तजि भूपन चीर । लीए महाव्रत धरि मनधीर । कातिग असि तजो तेरसिजांनि । मघवा कियो सुतप कल्यांन । बला व्रत करि पदम जिनेस । मंगल पुर कीनौ पवेस । सोस दत नृप लखि जिन देव । नोधा भक्ति करी बहु भेव । करि आहार अटवी वन गए । स्वांन भूतरस लीनजोभए ।

\* दोहा \*

सोम दत ब्रह्म सुर करै । पंचश्रवर्ष प्रमान । प्रगट करै जैजै सष्ट ऊचरि महातम दान । पछुडीछंद छदम सत मास षट्जिन रहंत । तप कियौ घातिया कर्म अंत । सुभ चैत्र मुदी पूनम वखान । केवल उपज्यौ जगमै सुमान । कल्याणक सुरपति कियौ आय । तव समोसरन रचियौ बनाय । कीनौ बिहार बहु देस देव । षट्मास हीन लखि पूर्वएव । इकमांस आयु पा मिलि रहाय । समेद सिपर तव प्रभुआय । मोहन कूटपर मोनधारि । परमातम गुन गर्भित अपार ॥ फागुन अलिपक्ष सुचैथि जान । अविचल सिव वास बसे सुधान । तव आय सक सब सुर समेत । निर्वाण कल्यांनक करन हेत ॥ \* दोहा \* पूजाकरि सुरनर असुर गए सु निजनिज धाम । भविजनको आनन्द कसौ । कूट मोहनी नाम । (अडिछ) निन्याणवै किरोर चौरासीलाख है । ब्यालीसलाख प्रमान सातसै भाप है । सतासी पुन अधिक

सुनीतिस थांन हैं । भए सिद्ध गुनलीन अनन्त सुग्यांन हैं ।

सोई कूट प्रासिद्ध अबैं । जो प्रणवैं सुषरासि । नर्क तिर्यगगति नासिकैं ॥ करि सुर गिरिखगवास ॥

\* दोहा \*

\* चौपाई \*

एक बेर जो बंदन करैं । बतीस कोट ब्रत फल धरैं । सुनि मगदेस कथा इक और । महा पुनीति सिखर सिव ठौर । जंबू दीप भरत सुभ भेत । बंग देश तहां सोभा देत । प्रभां करी नगरी तहं बसैं । धन कन करि अति सोभा लसैं ॥ सुप्रभ नाम भूप सुभ नीति । करो एसौ जोजन सब प्रीत ॥ और देश नृप पीडा देइ । सुप्रसु देश छूटि सब लेइ ॥ इह चिंता में निसिदिन रहैं । छिनक एक थिरता नहि गहैं ॥ एक दिवस बन में नृप गए । जुग चारन सुनि देखत भए ॥ नमस्कार करि पूछै राइ । सुनौं महासुनि तुम सुख दाइ ॥ मेरेमन चिंता इक् बसैं । सो किहिं बिधि मोसंसैनेसैं ॥ सुनि सुनि बोले अमृत बांन । सिखरिजत करिणुन बांन । सांतिक पाठ करी चित लाइ । सब संसैं जातैं मिटि जाइ । सुप्रभ राइ महा सुनि बैन ॥ सिर धारै जानैं सुख दैन । निज पुर अर्चित है जिन राज ॥ संघ सहित कर जात समाज । हर तवसन पहेरे तब भूप ॥ संघ भगति नृप करैं अनृप । जाय सिखर पूजे जिन थांन ॥ सांतिक पाठ करैं सुजांन । कूट कूट प्रति बांधे केतु ॥ दान दियौ आतम सुख हेत । करि उत्सव आयौ निज गेह ॥ सब नृप मिलि तब करैं सनेह । चिंता सब नृपकीं मिठिगई ॥ निर्मल बुद्धि अचलता भई । कारन पाप भयौ बैराग ॥ सकल परिश्रह कीनीं त्याग । सुत रति खेन राज पद दियौ ॥ पंच महा ब्रत निज गहि लियौ । चौरासी लख संघ समेत ॥ दुद्धर तप कीनौ निज हेत ।

\* दोहा \*

घाति घातिया छिनक में केवल ग्यांन प्रकास । पंच लघुशर कालमें । कीनीं सिव पुर बास । सोई

सोई

सिखिर सुमेरु भुवअति प्रबित्र रम नीक । जो बँदै आति भक्तिसौं ॥ लह अचल पद ठीक । लौहाचार्य  
गरव गुरु कीनों सिखिर महात्म ॥ मन सुख सागर निरखि हित । कीनों कारज आत्म ॥

इति श्री काष्ठा संगे, लौहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेंसुखमेदाचल महातम भाषायामन सुद्धसांगरण वर्तनं सिद्ध कूट मोहनौ पर  
पदम प्रभु मोक्ष मगन सप्त परिच्छेदः सत्तमो अध्याय ७ ॥

\* सवैया \*

परम पुरुष गुन सागर नमत जग सुप्रतिष्ठ जन हरित तन वर्णनहैं । पृथिवी देवी हैं मात दोयसैं  
धनुष गत उन्नत जुस्वस्तिक सुचिन्ह सौहैं चर्नहैं ॥ बानारसि जन्महैं बीस लाख पूरव आयु जिन राज  
अर कर्म जुहरन हैं । अैसेहैं सुपारस परमपदै निहार मन सुख सिंधुन में चरनकी सरन हैं ॥

\* दोहा \*

नौ हजार सागरगण ॥ पद्म प्रभुशिवधाम । जन्म लियो सिव सुखकरन । निज सुपार्श्वतसु नांम ॥

\* चौपाई \*

दूजोखंड धात कीनाम । सौहैं अतिसुंदर अभिराम । पूरव क्षेत्र विदेह बखान । सीतां नंदी बहैजलखान ॥  
ताके उत्तर देस प्रसिद्ध । बत्स नांम सौहैं धन रिद्धि । नंदखेना पटनारि समेत । भोग करैं सज्जन सुखदेत ॥  
आति प्रताप सौहैं नृप धीर । महाबली बीरन प्रति वीर ॥ एक समय हिए हर्ष अनूप । सौध सिखरपरिवेष्टी  
भूप ॥ जलधि लखे मंदिर आकार । अति सुंदर बिसतार अपार ॥ चित्र कारतव नृप बुलवाय । कही  
लिखौ इमपट सुखदाइ । चित्राकार कागद पर लेइ ॥ लेखन लैहृग वादर देइ । तोलगी विनसि गए  
घनसार । सोचकरहि नृप मनहि अपार । तनधन जोवन हैं इहरीति । तापर जन्म न राखत प्रीत । इम

विचारि करि भूपति तैं । बस्त्राभूषण त्यागे सैं ॥ सुत सुखेन नरपति पददयौ । चिर विरकत है वनमें  
 गयो । अर्हंनंद मुनिके ढिग जाय ॥ दिखलै तपकीनो राय । मास पाख बरस ब्रतअवधार । करै आहार  
 निहार । विचार ग्यारह अंग पाठकर मुनी । सप्ततत्त्वचरा चित गुनी । षोडस भावन भाइसुछंद । तीर्थकर  
 पदबंध अनंद । ब्रतसंन्यास धारिगुनवंत । प्रानकिण्णहं विधि सौंअंत । श्रीवक मध्य सुभद्रविमान । पद अह  
 भिद्रक धखौ सुजान । दाय अढाई उन्नत देह । मिलि सब सुर तंह करै सनेह ॥ सताइस जलधि की आउ ।  
 भोगै भोग सुभोग सुभाउ । वर्ष सहस सताइस जाहि । मानसीक आहार कराहि ॥ इतने पषवारीवेतंत । सासउ  
 साम लहै इहि भंत ॥ ससम भूमिथांन लौंसार । करै विक्रिया अति बलधार ॥ सप्त तत्व षट्दख सुवेद । चरचा  
 करै लहै नहिं वेद ॥ रही आयु षट मास प्रमान । हारहीन छवि लखि मनजान । मरन सैं अब पहुँच्यौ  
 आय ॥ जिन पूजा रचियौ सुर राय ॥

\* दोहा \*

सुनि श्रेणिक आंग कथा । मन बच काया धारि ॥ अब वरनौ संक्षेपसौं । जहां होय अवतार ।

\* चौपाई \*

इह जंबू वरदीप महान । भरत क्षेत्र हैं तहै प्रधान ॥ आर्य खंड पुन्य भंडार । जहां लसै बहुसंपतिसार ॥  
 कांसी देश देश सिर मौर । निज उपमां जीती सब ठौर ॥ नगर बनारस उत्तम बसै । मधवा पुर सब  
 सोमा लसै । सुप्रतिष्ठ पुर कौ नरनाथ । सुभट चमूं सैं नृप साथ । पृथ्वी देवी रमनी बांम । अति प्रिय  
 प्यारी बहु सुख धाम ॥ इंद्र देई आग्या धन देव । रचि पुर मानि बरषावै राव । बीते जब षट मांस  
 विशेष ॥ जिन जननी तब सुपन सुदेख ॥ अंत सोलमोसुपनविचित्र । मुख प्रवेश गंज करत पबित्र ॥  
 उठो शत मंजुन कर अंग । पति ढिग जाय सहवरी संग ॥ ब्यक्त सुपन बरते मन लाय । सुनि पति निज

दिए मैं हृषाय । तीर्थकर तुमरै सुत होय । तीन लोक सुखदाई सोय ॥ इंद्र आय थोपे मनि पीठ ।  
 करि स्नान मात हग दीठ ॥ बस्त्राभूषन दंपति अर्चि । चरन जुगल मलयगिरि चर्चि ॥ सित बैसाख  
 पक्ष सुभ बार । गर्भ कल्याणक सक सुधार ॥ देवी माता सेवन काज । राखि गए सुर पुर सुर राज ॥  
 षट पंचास कुमारी सुरा । सेवा करन रहै आतुरी ॥ काव्य प्रबंध छंद जुतसार । कहे पहेली गूढबिचार ॥  
 उतर देइ हरषित जिन मात । इहि विधि सौं बीते दिन रात ॥ जेठ बदी द्वादसी पवित्र । तहां विसाषा  
 जानि नखित्र ॥

\* अडिल्ल \*

जन्म लियो जिनराज माइ लखि सुख तवै । हरष हिए न समाय अंग पुलकित सबै ॥ धन्य धन्य बड  
 भाग मात पुरजन कहै । तीन लोक सुख करन अंत शिव पद लहै ॥ \* दोहा \*

इतने में सक्रादि सुर । औरापति सजि लाय ॥ सत्री कपट निद्रा रची । जिन माता ग्रह आय ॥ प्रसु  
 गोद लै आईकै । इंद्र अंक में देइ ॥ गज चढ़ाय सुरगिरि गये । जैजै सष्ट करेइ ॥ \* चौपाई \*

करि अभियेक अरिचि पद दोइ । बस्य अभुषन विधिवत जोइ ॥ श्री सुपार्श्व जिन नाम उचार । आय  
 बनारसि करि संचार ॥ मात अंकद नृत्य करंत । मात पिता जिन मन जुहरंत ॥ सेवा निमित्त राखि  
 सुर जबै । गयो पाक सासन पुनि तवै ॥ अमर सहित निज क्रीडा करै । जिन बलक सब जन दुख  
 हौं ॥ द्रैसैं धनुष उतंग सरीर । दस अतिसें जुत गुन गंभीर ॥ आयु बीस लाख पुरख कही । हरित  
 बरन तन सोभा लही ॥ पांच लाख बालापन गए । तरुण अवस्था श्री जिन भए ॥ पांनि ग्रहन करि  
 राज जो करै । प्रजा सुपथ मार्ग अजुसै ॥ चौदह लाख सुपूरख राज । करि पुनि चित्तौं आतम काज ॥  
 विषय भोग दुख दाहनि हार । कदली गर्भ जानि संसार ॥ द्वादशाष्ट प्रेक्षा जिनराइ । चित चित्तौ

आत्म सुख दाइ ॥ लोक पाल जिन भक्ति समेत । आए प्रसम दिवाउहेत ॥ तुम बिन कौ ऐसी चित धरै । तुमबिन कौ दुर्द्धर व्रत करै ॥ इम अनेक अस्तुति चित लाइ । बिनय भक्ति करि निज थल जाइ ॥ अमर नाथ सिव का सिव जोइ । ल्याय आय निज कियौ नियोग ॥ अटबी मध्य नाग तरुतलै । तपलै सब दयातिग दलमैल ॥ सहस एक नृप दिक्षा लेइ । श्री जिन चरनन सीसनमेइ ॥ \* दोहा \*

जेठ मास सित पक्षजुत । दिवस द्वादसी जानि ॥ श्रुपाश्र्व जिन देवकौ । भयौ सुतप कल्यांन ॥

\*अडिल्लु \*

पूजा करि बसु भेद गए सुर नर सवै ॥ प्रभु आत्म लौं लाइ ध्यान धारथौ तबै । मन पैयै सुभ ज्ञान भयौ ततक्षण तहां ॥ करि बेला व्रत गए पुरी पाटल जहां । महीदत नृप देखि चरन सिर नाईयौ नौधा भक्ति बिचारि अहार कराईयौ । अखै निद्धिकहि प्रभु जाइ बन तप लियौ । पंचाचर्य विशेष नृपति ग्रह सुर कीयौ ।

\* दोहा \*

बरस अंग परमानं जिन । तप जुतरहि छदमस्त । ब्यारि घातिथा कर्मकी । करी प्रकृति सब अस्त । केवल ज्ञान सुभानं जग । अंग किरन परगास । निस मिथ्यात .निवारि कै । समकित दिन परकास ।

\* चौपाई \*

आए देव देव प्रद साथ । समोसरन रचियौ धन साथ । केवल कल्याणक सुराइ । करि पूरब सम निज पुर जाइ । फायन बदी छठि सुभ बार । ग्यानं कल्यांनक श्री जिनधार । बिबिध देश बिहरे जिन भूप । करि उपदेश सुधर्म अनूप । आयु रह इक मांस प्रमानं । आए समेद सिखिरि भगवानं । जोग निरोध मौन प्रसुगेहे । कूट प्रभास ध्यान धरिहे । फायण कृष्ण ससमी जानि । इंद्र आइ करि सिव कल्याण ।

तनु संस्कार क्रिया कर तबैं । गए अरवि सुर सुरपति सबैं ॥ सो प्रभास बर कूट महंत । बड़े पुंन्य सौं-  
इसलहंत । महिमां करत न पाऊ पार । लहि अनंत जिनपति सिवसार । लाख बहचरि तीन करोर । सात  
हजार सात सैं जोर । ब्यालीस मुनिवर सुकति जोगए । कूट प्रभास विदित इमभए । सुनि मगथेस  
कूट फल कथा । एक बार बंदन फल यथा । काट बतीस प्रोषधी सार । होइ बरत फल सुख अधिकार ।

\* दोहा \*

याही जंबूदीपमें । भरत क्षेत्र सुख धामं ॥ आराजि खंड सुदेस तंह । नगर कुसंबी नामं ॥

\* छंदपच्छडी \*

उद्योत नाम राजा पुनीत । तहं राज करैं सुभ राज नीत ॥ जिन भक्ति यथावत हीए धार । सम्यक्त  
सहित धर सील सार ॥ नृप कै ग्रह प्रीति मतीसुनारि । सब गुन लक्षण सुतसदाचार ॥ प्रख कृत  
पाप उदै नरेस । तन कृष्ट भयो भूपति कुंभष ॥ इक दिन दुखकरि बन गयो राय । मुनि चारन जुग  
तहैं ईसपाइ ॥ करमुकलित कर जुग नाइ सीस । बहु विधि अस्तुति करि पुर पुनीस । पछे रिषि सौं  
निज पूर्व पाप । मेरी पर्यायजो कहौ आप ॥ मुनिकैं मुनि बैन कहै रसाल । अपनै दुख फल सुनि  
नगर पाल ॥

\* दोहा \*

प्रख भव बरनौ नृपति सुनिलै यक चित लाय । याही को संबी विषैं । सोम दत्त द्विज थाइ ॥ प्रभा  
चंद्र इक सेठ तहं । धर्मवंत गुन वंत । ते दोऊ मिलि परस्पर । अतिसैं प्रीति करंत ॥ \* चौपाई \*  
लै अहार मुनिवर बनगए । प्रभाचंद्र मन हर्षितमए ॥ सोमदत्त द्विजमित्र मिलान । पूछैं मुनि अहारफल  
दान । सो विद्या मद गर्भित रहैं । हास्य बचन सुख सौं इम कहैं ॥ जो नर मुनि अहार दै सोय ॥

कृष्ट ब्याधि तन पीडितहोइ । इहसन प्रभाचंद दुखपाय । छोडी प्रीति गेह निजआइ ॥ सोमदत्तनिंदक  
 कहवाइ ॥ मरिक्कै प्रथम नरक उपजाय । आउ परी तह सागर एक । लहे महा दुख हरति विवेक ॥  
 मुनि निंदा फल निज मन जानि । पश्चाताप हिण मै आनि ॥ क्रम क्रम करि सो पूरन आव ।  
 प्रणतजे राख्यौ समभाव ॥ आय नरक सँ नृप पद पाय । कृष्ट बिथु तुमरे उपजाय ॥ इहफलेह  
 मुनि निंदा तनौ । सुगतौ राव कियौ आपनौ ॥ इम मुनि नृप मनकंपित होय ॥ हाथ जेरि  
 कैं बिनवै सोय । एप्रसु दीनदयाल महंत । कही जतन जिभि गदहै अंत ॥ मुनि मुनि कहै सिपर समेद  
 करौ जात पूजौ बसु भेद । कूटप्रभास गंधोदक लैऊ । संपूरन गद नास करेऊ ॥ मुनि हर्षितहै मुनि  
 पद नयौ । बन सौनिज पुर आवत भयौ ॥ व्यारि प्रकार संघलै साथ । जात्रा हेत चलो नर नाथ ॥  
 स्यांम बस्त्र पहरे तब भूप । पूजकरै बसुभेद अनूप ॥ औथवि दांन अधिक विशार । देइ अहार दांन ।  
 सुखकार । आतम निंदा निस दिन करै । संग भक्ति बहु विधि विस्तरे ॥ सिखर सुमेर गए इह रीति  
 पूजा करै परस्पर प्रीति ॥ संपूरन गिरि बंदन कियौ । अति उत्सव करि दांनजु दियौ ॥ कूट प्रभास  
 गंधोदक लयौ । ततक्षिन कोढ़ नृपति को गयो ॥ अति आनन्द हिण मै ल्याय । फुनि फिरि निज ग्रह  
 पढुब्यौ आय । बहुत दिवस लौ राज करेइ । है विरक्त सुत नृप पद देइ । सुप्रभ राज सुमगपग धरै ।  
 नृप उद्यौतक अति तप करै । लाख वतीस संघ मुनि लेइ । नाना देश बिहार करेइ ॥ अंत आयु आए  
 संभेद । गिरि पवित्र सोहै बहु भेद । कूटप्रभास सीस पर जाय । केवल लहि शिव पदवी पाय । जो नर  
 नारि बंदना करै । नरक पसु दोनौगत हरै । अतिसै कहत पार नहि लहौ । सुलप बुद्धि कै भे कर कहाँ ।



धन्यभाग जो बंदै कोइ ॥ सुर नर गति ले सिव पद होइ ।

\* दोहा \*

लोहा चार्थ कृत कठिन । अल्प बुद्धि इस काल । मनसुख जलाधि विचारि मन । भाषा रचीरसाल ।

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहात्म्ये भाषायामन सुद्धसांगरेण वर्णनं सिद्ध कूट भाषा सुपाश्वर्नानथ मोक्षगमन

अष्टमो परिच्छेद ॥ ८ ॥

\* सबैया \*

जिनको नमत हैं गणेश और सुरेश सेस महा सेन जनक फटिक समेद हैं । सुलभ्य नांमांत सोम पुर हैं विष्यात जग दसलाख पुरष की आयु सब तेरह हैं ॥ उड़पति चिन्ह है चरन सेवै भावेसेती सद्धा एकसत चाप उचगुन गेह हैं ॥ ऐसे चन्द्र प्रभु सिवदायक नमत हम मनसुख सिंधु जिन चरन सौं नेह हैं ॥

\* दोहा \*

चन्द्रा प्रभु चारित्रअब । बरनौहिण हरषाय ॥ शिषसैल परि सिवगये । तिस अतिसैं अधिकाइ । नौसैं कोटि उदधि गए ॥ श्रीसुपार्श्व सिवथान । आय अमरपति सोम प्रभु कीनों जन्म कल्यांन । \*चौपाई\* सुनि श्रेणिकइक चितमनि आनि । पंचकल्याण करौ बखानि । दृजो दीपघात की खंड । सोई बल याकार अखंड ॥ प्राचीनांम विदेह महंत । सीता सरिता मध्यबहंत । तकिे दक्षन नगर जो बसै । अमरनगर की सोभा लसै । नांम मंगलावती प्रसिद्धि । धन धान्यादि भरी बहुरिद्धि । तहां रत्न सैंवैपुर एक । बसै नारिनर सहित विबेक ॥ कनक प्रभु नृपराज करंत । अति प्रतापंधर बहु गुनवंत । कनकावलिसुंदरि सुकृमार । पटरानीपति सुखदातार । नृप जिन पूजाबसु विधिठानि । अस्तुति पढ़ै करै गुनगांन । वृषभावनां अंगजुधै । भिनय भक्तिश्रुत गुरु की करै । जाकै राज सुखी सब लोग । मन

बंधित कर भोगें भोग । बहुत दिवस इहि विधि करिगए । पद्मनाभि नामा सुत भए । जौवन देह  
 पुत्र देराज । मनहि विचारैं आतमकाज । गए मनोहर बिपन मझारि । श्रीधर तीर्थ करहि निहारि ।  
 करि नमोस्तु सुनि बृष दो भेद ॥ मन विकल्प सब कियो उछेद । सीसनइ व्रत लीनों राइ । पद्मनाभि  
 नृपराज कराइ ॥ श्रवन नाभि तिनकै सुत भयो । जाचक जनमन बंधित द्यौ ॥ बालकमार अवस्था  
 भई । नृप पदवी राजानै दई ॥ श्रीधर निकटिजाइ सिरनाइ । लयो त्रिप्र परमसुखदाइ । सिंघनि क्रीडित  
 तप अतितपै । पूर्व कृत पातिग सबखिपै ॥ पक्षमास उपवास करंत । सुमति महाव्रत सुप्ति धरंत ।  
 षोडस कारन भा उनभाय । तीर्थकर पद बंध कराइ ॥ द्वादशानु प्रेक्षा चिंतयो । गहि संन्य मरन मुनि  
 क्रियो । सर्वार्थ सिद्धि ठपजेदेव । पूरव सम सब जानौ भेव ॥ सुनि श्रेणिक अब आगैं कथा । चंद प्रभु  
 वर्नन है जथा । जंबूद्वीप भरत शुभषेत । कासीदेस जु सोभा देत ॥ चन्द्रपुरी नगरी इकवसै । देवपुरी  
 सम सोभा लसै । महासेनि भूपति तिहथान । करै राजपुरजन सुखदान ॥ रानी है सुलक्षनानांम । पिय  
 प्यारी गुनजुत अभिरांम । सदाचार धारी मनसंत । सील सिरामनि लक्षणवन्त ॥ \* दोहा \*

सोपुर निजकर धनंदन । हरि आयस रचि लीन । सोपुर वर्नन करेन कौ । मेरी बुद्धि मलीन ॥ तीन  
 काल वर्षा करै । मनसुर अति हरषाय । आगमांस प्रमान छह । सबजिवनि सुखदाह ॥ \*सवैया\*  
 एकदिन सुलक्षना सैन करै मंदिर मैं षोडस सुपन लखि लीनै निसि अन्त मैं । प्रात उठि तन सुचि  
 करि सखीसंग लेइजाय पति ढिग प्रैछ सुपन जो संत मैं । सुनि महासेन नृपति अवाधि बिलोकि कहै  
 जिनपति सुत उरजन मे महंत मैं । दंपति हरष मन करत सनेहधन इन्द्रआय गर्भ कल्यानक करंत मैं ॥

\* दोहा \*

चैत मास अलि आभ पखि दिवस पंचमी जानि । सासि पूभू गर्भ कल्यांन करि गमन करै निजथान ।

\* चौपाई \*

गर्भ सोधनां करै विचार । सैयँ सुरी कुलाचल धार । षट पंचास कुमारी सुरी । निज निज काज करै न आतुरी । अति मंगल मन हर्षित रहै । दोहा छंद पहिली कहै । जैसे कर बीते नव मास । जनमैं जिन जग पूरन आस ॥ मघवा पूरब सम तहं आइ । जाय सुराचल नवन कराइ ॥ पूजा करि बसु विधि श्रुतिकरै । जै जै चंद्र पूभू अघ हँ ॥ सब निज काज साधि हरि गयो । चंद्र पुरी उत्सव भयो ॥ जिन बालक सुर सेव करंत । निरखि निरखि निज मन हरषंत ॥ माति श्रुति अवधि ग्यान त्रयधार । परम पुरुष परमात्म सार ॥ आशु पूर्व दश लाख बखान । कायड्यौ डस धनुष सुजान । \* सर्वैया \*

तनुसुद्ध फटिक समान देइ । बसु सहस चिन्ह जुत सुगुन गेह । सिधुकेलि लाख पूर्व अडाइ ॥ वीते सुर सेव करै सुभाइ ॥ माहासेन सक मिलि करि उछाह । करि पांनिग्रहन पुनराज चाह । साढ़ षटलाख जु पूर्वसार । कीनौ प्रभूराजसु नीतधार । इकदिन लखि उलकापात देव । छिन भंगुर जान्यो जगत भव द्वादश भावन मनमंही भाइ । लौकांतिक सुर पहुंचे मुआइ ॥ \* दोहा \*

अस्तुति करै सुभाव सौ । धन्य धन्य तुम धन्य ॥ जैसे कारिज करन कौ । तुमसम नांही अन्य ॥

\* सर्वैया \*

अहौ तुम दीननाथ शिवपुर पंथ साथ तुम चिन यह काजकरै कौनजगमैं । पंच महाव्रत पंच सुमति

शुभति तीन चरित कौ धारि तुम ठाढ़े सिव मग मैं । तुम्हारी दयासौ सुख लहत जगत जन तुम बिन  
फिरत चौरासीलाख मग मैं । तुममन मांहिजौ विचार सोईधरै कोईमन सुखसिंधु मुक्ति लहैं एक उगमैं ॥

शिवर

\* दोहा \*

इम बिनती करि लोक सुर । निज थानक मैं जाइ ॥ शिव सुंदरि सिव कामधव । श्रीजिनवर बैठाइ ॥  
राजा लै निज कंधधारि । सातपैंड लैजाय । पुनि विद्याधर आपलै । इंद्रादिक बन जाय ॥ मल्लक तरु तलि  
चंद्रप्रभु । बस्त्राभूषन त्यागि । सहस एक नृप संगलै । आत्म ध्यान जो लागि ॥ \* सोरठा \*  
इंद्र कियौ कल्यान रिठु श्रीषम बैसाषमैं ॥ कृश्न एकादसि जानि । पूजा करि निज पुर गए ॥

\* ७२ \*

\* चौपाई \*

पद मासन जुग दिन परमान । करि उपास भोजन चित आन ॥ पदमण्ड पुर करि प्रवेश । सोमदत्त नृप  
लखि मुनि भेस ॥ करि नमोस्तु आनन सौचवैं । तिष्ट तिष्ट तिष्टी मुनि अँवैं ॥ नौधा भगति अहार कराइ  
अषे निछि कहि जिन बन जाइ ॥ पंचार्चय भूप कै होय । जै जै सब्द करैं सुर सोय ॥ दान अहार सुजस  
मन धरैं । मनि गंधोदित वर्षा करैं ॥

\* दोहा \*

वर्ष तीन छद मस्त । जिन रहे मोन ब्रत लीन ॥ नाना विधि तप जोगसौं । कीए घातिया छान ॥ फ्रागुण  
कृष्ण जो सप्तमी । केवल ग्यान प्रकास ॥ तिम भित्यात निसा प्रबल संप्रन कर नास ॥ सत मधवा  
मिलि धनद जू । संमो सरन रच लीन ॥ पूजा करि अति भक्ति सौं । अस्तुत करै नवीन ॥

\* चौपाई \*

दत्तसैन आदिक गुनि धार । सवतिरानवैं सोहै सार ॥ बानी परखैं तीव्र काल ॥ सुनत नासैं

जग जाल । विविधि देश बिहरे भगवान । दया धर्म को करत बखान ॥ एक मास मिति आयु रहाय ।  
सिषर सुमेद जिनेसुर आय ॥ जोग रोधकरि मा भगवान । दयाधर्म को करत बखान । एकमास मिति  
आयुरहाय । सिषरि सुमेद जिनेसुर आय ॥ \* दोहा \*  
सकल सुराधुर ब्यामचर । आए अति हरषाय । भादौसित अष्टमि दिवस । उत्सव छुनि जाय ॥

\* अडिछ \*  
\* चौपाई \*

कोडा कौडि सुनीस चौरासी जानिए । कोडि बहतर लाख असी मन आनिए ॥ चौरासी हजार पांचसैं पच  
पनैं । ललित कुंभ सिर कूट सुक्ति लाहि सुनि गनैं \* चौपाई \*  
नरक यस्तु दोन्यौ गति हरैं । एक बार जो बंदन करैं ॥ सोह कोटि बरत फल होए । जिन भाषित  
जानो भवि लोय । \* दोहा \*

बंदत नर सुर गति जुलहि । सिव रमनी बस कीन ॥ ताकी महिमां कथन कौं । मेरी धिखनां हीन ॥  
अब आगें मगयेस सुनि । ललित दक्ष नृप बात । कूट बंदनां करत लहि । चारन रिद्धि अवदात ॥  
\* चौपाई \*

मध्य दीप जंबू वर नाम । भरत क्षेत्र तामैं अभिराम । आरज षंड जोध तंह देश । इति भीति व्यर्षे नहि  
लेस ॥ मुर पुर नगर बसैं रमनीक । नर नारी सोभैं छुक लोक ॥ अजित नाम राजैं मूपाल । दुर्जन बैरी  
उर साल ॥ जीवन वंत भयौ सुत सार । दत जुसैन्या ब्याही नारि । कारन पाय भयौ बैराज्ञ । माह सैन  
नृप पदवी त्याग ॥ ललित दत कौं दे सब राज । विपनि चले निज आतम काज ॥ तप करिके दल  
ज्ञान उपाय । सिव पदवी पाई सुखदाय । ललित दत अवनी मति पाल । राज करैं सजन दुख टाल ॥

एक समें बन केलकरंत । चारन मुनि जुगलषि हरंपंत । सीस नवाय धर्म मुनि राय । प्रश्न करै तब  
औसर पाय । चारन रिद्धिहोय किहि रीति । सो बरनन करिए करि प्रीति ॥ भब्य जीव लखि मुनिवर कहै ।  
जिस बिधि रिद्धि चारनी लहै । जात्रा करो सिषर की जाइ । ललितकूट पूजौ मन लाय । स्वल्प तपस्या  
तब आदरै । चारन रिद्धि क्षिनक में फुरै ॥ यह मुनि मुनि नृप बंदत भए । सीस नवाइ नगर में गए ॥

\* अडिछे \*

संघ ब्यारि प्रकार संघ लै आपनै । धर्म ध्यान मन लाइ त्यागि कै पापनै ॥ जाय सिखर के सीस  
ललित घट कूटपै । अरैच श्री भगवंत करम गन दूटपै ॥ \* दोहा \*

हुनि आए निज नगर मै । कीनौ अति उत्साह । सुख भोगत नृप एक दिन । देख्यौ निज पुर दाह ।  
ललित दत भूपति तबै । भयौ हिए बैराग ॥ राज भार दै पुत्रको सर्व परिग्रह त्यागि ॥ तप करिकै दिन  
अल्प मै । गही चारन रिद्धि ॥ केवल पद लहि कूटपै । भए निरंजन सिद्धि ॥ सोई कूट सुमेर कौ । मन  
बंधित फल देइ । संपूरन गिरि की कथा । कौन कबीस कहेव ॥ महिमां सिखर समर की । लोहा चारिज  
कीन ॥ मनसुख सागर श्रुति निरखि । भाषा रची नवीन ।

इति श्री काथा संगे लोहाचार्य विरचत तीर्थमहातमैखुसमेदाचल महातम भाषायामन सुद्धसागरेण विरचित सिद्ध कूटललेतेभ्यो  
नवमौ परछेद ॥ ९ ॥

\* संवेयां \*

सुमुन रदन पदन मत अमर पति रामा देवी मात तात सुश्रीव बखान्यौहै । किदकंदी पुर जन्म हाटक बर  
नतन एक सत धनुष छतंग तन मान्यौहै ॥ मकर मुचिन्ह चरन दोय लाख पूर्व आछु सुर नर खग तीन

लोक पति जान्योहैं ॥ अैसे पुहप दंत जिन मन सुख सिंधुनमि नरभव सुफल सुनिज मन आन्योहैं ॥

शिवर

\* दोहा \*

निवि कोडि जलधि गए । सोम प्रभु सिवलोक ॥ सुमनरदनजन में सुजिन तिन प्रति हमरी धोक ।  
पुहपदंत जिनवर प्रणमि । सारद सीस नवाय । पंच कल्याणक सिषरिगुन बरनौ अति हरषाइ ॥

\* ७५ \*

\* चौपाई \*

खंड-धात की सोहैं सार । ब्यारिलास जोजन विस्तार ॥ प्राचीनाम बिदेह सुजांन । सीता सरिता  
मध्य बहांन ॥ ताकी दक्षन तट इक देश । जाकी महिमाकरैं सुरेस ॥ नाम पुष्कलावति प्रसिद्ध । नाना विधि  
सोभित रिद्धि ॥ पुंडरीक-नगरी तहैं बसैं । गेह गेह उत्सह करि लसैं । महाराजा राजा परचंड । करैं राज  
दुर्जन अरिखंड । प्रजा पुत्र समपालैं भूप । दांन देइ जस लेइ अद्रूप । बिब प्रतिष्ठा श्री जिन गेह । करैं  
ब्यारि विधि सिंध सनेह । पूजा रवैं करैं उत्साह । इह विधि सौं नर भव फललाह । एक दिना बन गयो  
नरेस । देखे सुनिवर खड़े सुभेस । नमस्कार करि बैठे राय । दुबिध धर्म सुनि अति हरषाय । सुत धन  
दत्तराज नृप दियो । तेरह विधि चरित गह लियो । अति तप करि पड़िगार अंग । चौबीसों विधितंजि  
करि संग । षोडस कारन भावन भाइ । तीर्थकर पद बंध कराइ । करि संन्यास मरण तिथि अंत । नाक  
पन्द्र है देव महंत । उपजे बिमल देह दुति सार । अंत महूरत जोवन धार । सोढीतीन भुजा उत्तंग । सातौं  
धातरहि सुचि अंग । सागर बीस तहां हें आनु । लेखा सुकल रैं सुभभातु । बीस हजार-बरस बीतंत ।  
मानसीक तहें असन करंत । दस दूने षषवोर गए । परिमल सहित स्वास जब लए । अवधि भूभि षष्टम  
लैं होइ । काय बिक्रिया तहांलग जोइ । साततत्व चरचा मिलि करैं । जिन पूजा जिय में निति धरैं ॥

## \* दोहा \*

आउरही षटमास जब ॥ सुभ उपजोग कराइ । सुन मगधेसुर जिन जनम । कथा परम पदपाइ । इसही  
जंबूद्वीप मैं ॥ भरत क्षेत्र अभिराम । पाठ देश मैं नगर इक । काकंदीपुर नाम । राजा तहं सुग्रीव हैं ।  
जयनांमां पटनारि । दंपति सुखविलास बिपुल । करैं राज चितधार ॥ हरि आग्या धन देवलै । रच्यौ  
नगर जिन जोग ॥ करैं रतन वर्षा हरष । होइ सुधी पुरलोग ॥

## \* अडिह्ल \*

जय रामा नृपनारि एक दिन सैन मैं । षोडस सुपन निहार पाछिली रेनि मैं । उठि प्रभाति बरनार  
जाय पतिसौ कहै । बीतराग सुत हंइ सुनै फल सुख लहै ॥ जबलौं रानी भूप परस्पर नेह मैं । तबलौं  
अमर सुरेस आइयो गेह मैं । थापि सिंघासन मात नहन विधिवत कियो । वस्त्राभूषन सार चरचि हर  
षित हियो ॥

## \* दोहा \*

फागुन मास असेत पषि । नौमी दिवस निहारि । सुरनर खगमिलि गरभ थित । आए हर्ष अपार ॥  
पूजा गर्भ कल्यान कीर । पुर मैं उत्सव ठानि ॥ गयो देवपति थान निज । करिकैं बहु विधि, ग्यान । षट  
पंचास छमारिका । सेवकरैं जिनमात । काव्य पहेली छंद कहि निसिदिन हिए हरषात । बीते हैं नवमास  
इम । आयो अगहन मांस । गर्भस्थिति पूरन भई । बाढौ परम उलास । कृष्णपक्ष हैं प्रतिपद भान मूल  
सुषकंद । तीनजगत जन सुख करन । लीनों जनम जिनन्द ॥

## \* चौपाई \*

हरि आए औरापति साज । श्री जिननहन करन के काज । देवकरैं सब जै जै नाद । नंद बृद्धे कहिहै अहलाद ।  
जिनवर अकल ईसुरईस । बारंबार नवात्रैसीस । गए देवगिरि देवअनंद पांडुक शिल पर थापि जिनंद । क्षीर  
समुद्र कलस भरवाय ॥ ह्याइ कियौ अभिषेक सुभाइ ॥ पूजा करि कजल दै नैन ॥ कियौ तिलक कंकम



सुख दैन । बस्त्राभूषण भूषित अंग । रूप निराखि लाजै जुअंग । पुष्पदंत अभियांन उचार । लाय नगर जिन मंदिर सार ॥ मात गोद है निस्त करंत । पूरब कृत सब पाप हंत ॥ राखै सुर सेवक जिन जोग । जाय नाय भोगै सुख भोग । दोष सहस पूरब जिन आय । धनुष एक सत उनतकाय । तनकी दुति कलधौत सुमान । बाल सहस पचास बखान ॥ भए तरुन सुश्रीव निहार । आयै सुरपति हरष अपार ॥ उत्सव करि शिवाह नरनाथ । राज छत्र फेरै सुर साथ ॥ राज सिंह बिष्टर पर देव । थापि हरषसौं करै सुसेव ॥ इन्द्र गये निज थान कि जवै । प्रजा नीति प्रसु पोषी तवै ॥ बहुत दिवसलौं राज करंत । पालि अनुव्रत निज मन संत ॥ दिसावलोकन इकदिन करै । उलका पात दिष्टि तब परै ॥ है विरक्त अनुप्रेक्षा भाइ । लोकांतिक सुर पहुंचे आई ॥ करि अस्तुति जिन जोगजिनंद । गएब्रह्म पुर करत अनंद । सुरपति जिन शिवका बैठाइ । गए महा बन हर्ष उपाय ॥ बस्त्राभूषण तजि सबसंग । भए दिगम्बर नगन जुअंग ॥ सहस एक नरपति सब लेइ । ध्यान धरयो आतम चित देइ ॥ मन पर्जे युत भये जिनैस । ठाढ़े अस्तुति करत सुरैस ॥

\* दोहा \*

मार्ग सीषै हँ सेतपक्ष प्रथम दिवस अभिधान । तप कल्याणक करतवै गए आपने थान ॥ शुभ दिवस व्रत ध्यान धरि उठ पारने हेत । चित हरपुर सुर भिन्न ग्रह जुगयमगचित देत ॥ नोधा मगति बिचारि नृप शुद्ध अहार कराइ । अपै निधि कहि बन गये ध्यान धरयो चितलाइ ॥ नृप ग्रह सुर वर्षा करै पंचाश्वर्च्य अनल्प । जस माहात्म्य जग प्रगट करि जैजै सुख जल्प । [अहिल]कीनौ तप चित लाय ध्यान शुभ मौनसौं । अचल किए करवर्नकाज नहि मौनसौं ॥ कर्म घातिया ज्ञान केवल लख्यो ।

पाय-चतुष्टय चारि निजातम पद गंधो ॥

\* दोहा \*

समो सरन रचना करी इन्द्र कोस पतिआइ । सुरनर खग मिलिआइ पसु जिन बचन सुन हरषाय ॥  
कातिग पक्ष शशि किरन सम दुतियां दिनके अन्त । केवल ज्ञान भयो विमेल पुष्प दन्त हरहंत ॥

\* चौपाई \*

गनधर नाम चिदर्भक आदि । अग्रासी निजगुण अहलादि ॥ चारि ज्ञान धारक सब जान । श्री  
जिन बानी करत बखान ॥ समो सरन सोभा अधिकाय । बरनन करत ग्रन्थ बढिजाय ॥ देश देश  
उपदेश महन्त । धर्म देशनकरि भगवंत ॥ आयुही षट्मास प्रमान । समेद शिष्यआए भगवान । पूकृति  
कर्मकी सबतहं छूटि । मुक्तगए सुप्रभुवरकूट ॥ भादौमास सांपदुतिपक्ष । तेरसि दिवसजान परतक्ष ॥  
आयु पुलोमिज पतितस्थान । शिव कल्यानककरि सुखदान ॥ सुप्रभास साईबरकूठ जोवंदतसुपातिगछ्छटि ।  
सुप्रभुपमुगति नाशनकरै । सुनरगति लहि शिवपदवरै ॥ एकचन सतकौटि बखान । निबैलाख सहस  
नवजान । चारिसतक अस्सीमुनि राज । सुप्रभासपर निज करकाज ॥ साई कूट बन्डनाकरै । सोरहकौट वरत  
फलधरै ॥ महिमा कहतपार नहि लहाँ । अलबुद्धि कैसे गुनगई ॥ आगे मुनि श्रेनिक मनलाइ । कहै  
कथा कौठी भटशइ ॥ जंबूदोप भिरताज भरतक्षेत्र सबमहिमामाज ॥ आरजिखंड मध्य में बैसै । कहाकदेश  
अनुपमलसै ॥ श्रपुर नगरीराज करंत । हेमप्रभ राजायुगवंत ॥ जयानामरानी मनहार । भागैभोग सरम  
दातार ॥ तिनके पुत्र सोमप्रभ नाम । कोठी भट सोहै अभिराम ॥ एक समय वरसैन सुराज । मंडलीक  
सब कौ सिरताज ॥ चढि आयो निज बल लैसाथ । ताके संग बहुत नर नाथ ॥ हेमप्रभ निज चमू  
समेत । निकरयो बुद्ध करनके हेत ॥ भयो परस्पर अति संग्राम । हयगयै पहुंचे जमयाम ॥ सोमप्रभ

निज नास निहारि । आत दुष्यत संग्राममञ्जारि ॥ गदात्रिलोकी निज कर लयो । आगे जाय लखतसो भयो ॥

\* दोहा \*

इह कोटी भट अतुलबल । वे नर कुंथ शमान ॥ जिस दिसपै वैभुजन सौं । मार करै घमसांन ॥ जेवसैं नर नरेस के हय गय स्थ भट सार । ते सब छिन में मारि कै । डारै रन्हिमञ्जार ॥ भाग गयो बरसैन तव सोम दत नर देखि ॥ धृग धृग कहै विचार । ईबृथा जन्म निज लेख ॥ एक राज के काज । हम नासे जीव अनंत । भो भौ मैं दुख दाइहैं । असो पाप मंहत ॥

\* चौपाई \*

जाय अरन्य महा मुनि पासि । नाश करन करमानि की पासि ॥ मिलै विमल बाहन मुनि धार । करै छिनक मैं भव जल तीर । सीस नाथ आलोचन करै ॥ निज पातिग मुनि छिग उच्चरै । कहाँ मुर गुर पूरव पर जाय । किम कोटी भट पदवी पाय । मुनि बर कहै दीप इहां जानि ॥ यही क्षेत्र मरु क्षेत्र बखानि नगर अनूप सेठ धन दत । बहुत द्रव्य सौं रहै प्रमित । अति लोभी कछु दान न देइ । अपकीरत पुरमें बहु लेइ ॥ कोइ नांम लेत नाहि तवै । क्रोधसहित है निकस्यौ तवैं ॥ गयौ गहन में लखि मुनि राइ । तीन ग्यांन जुत दुर्वल काय ॥ करि प्रणाम पूछै धनदत्त । देह क्षीन क्यों कहिए तंत । मुनिवर कहै सेठ मुनि बात । अतितपकरत अहर्निसि जात । पक्षमास जुगमास वितीत । बृथाउन्नोदर की रीति । दार्विसति परी सहमन एक ॥ सहत जैन तप दुद्धर टेक । क्रोध लोभ माया अरु मांन । तजैं मुकति पद हौ निदान । मुनि बचन सुनत लोभ तजि गयौ ॥ सेठ उदार चित तब भयो । छुनि मुनि धर्म कथा मनलाइ । करि नमोस्तु फिर निज धरि आय ॥ दांन अहार प्रतिज्ञा करी । जिन पूजा जिन जिन प्रति धरी । दांसि पात्र नौ बिधि विधिधार । दान देइ ब्यासौ परकार । एकदिवसमुभ शैन सुनीस । आएएसम

धर्म के ईस । निर्मल तन कंपितव्रत इत धरै । पाखमाश पर भोजन करै । प्रासुक अन्न वोषधी जोग । दे  
अहार तन कियौ निरोग । तप लाइक सुनि तन बलधारि । अस्त्यति करै सुवारंवार । सुनि निज सुखसै  
बर्नन कस्यौ । सुप्रभु कूट बहुत गुन भर्यौ । मुनिवन जाय धर्यौ तप जबै । सेठ चल्या जात्रा कौ तबै  
सिषिर् भूमि पहुँच्यौ चित धारि । जिनवर पूजा करहि विचारि । प्रांन तजे सुभ से तिहि थान ॥ सोम  
प्रभु तुम उपजे आंन । वह सुनि वर कौ दांनछु दियौ । यतै आय सबल तन लियौ ॥ करो जात पुनि  
भाव समेत । शिव पदवी पावन के हेत ॥

\* दोहा \*

इह सुनि हिए बैराग है ॥ दयौ पुत्र कौ राज । चारित ग्रहन कियो तबै । करन आतमा काज । शिखर  
जाय बंदन कियो ॥ सुप्रभास वर कूट । ध्यान धारि मन अचल क्रिय कर्म कालिमां छूट । लहि केवल  
सिव पुर गए । सोम प्रभ बलवंत । और अनेक भये सुइमि ॥ बरन्त लहाँ न अंत ॥ ( अडिल )  
असै सिखर समेद बंदनां जो करै । सोनिहँच नर नारि मुकति नारी बरै ॥ लौहाचार्य कियौ ग्रंथ  
लखि मै लियौ । कठिन जानि मन सुद्ध सिंधु भाषा कियौ ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्येषु सपेदाचलमहात्म्ये भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनं सिद्ध कूट सुप्रभासपुष्पदंत  
मोक्ष गमन दसमो परिच्छेदा १० ॥

\* सर्वैया \*

कर जुग जोरि क नमत तीन लोक जन दृढ़ रथ जनक सुनंदा देवी माइ है । महलपुरी में जनम सहस  
पूरुब एक आयु तन उन्नधनु नवै थाइहै ॥ स्वैतहै बरन काय सब जन सुखदाय सीहत सुभग  
चिन्ह सुर तरु पाइह ॥ असे प्रभु सीतल सुशीत कनहाह मन सुख सागर नमत सुखदाइहै ॥

## \* दोहा \*

नव कोडि जलधि गए । पुहप दंत मिव धांम । सीतल जिन जनमें तव । तिन प्रति सदा प्रनाम ।  
तिन चरित्र बरनन करथौ । सिषर माहातम मांदि । सुनि श्रेनिक गोतम कहै । बरनत शेष थकाहि ॥

## \* चौपाई \*

पुहकर दीप तीसरी जान । मंदिर नांम सुमेर बखान ॥ तहां बिदेह पूर्व थिति रहै । सीता नंदी  
मध्यमें बहै ॥ दक्षिन कूट पूरब थिति देस । नग्र सुशीमालसैं अशेष । पद्म शुल्म नृप राज करंत ॥  
देइ दांन पूजै अरिहंत । पट नारी बसंत श्री नांम । सील सुलक्षण सब गुण धांम । तिनकें सुत उपज्यौ  
गुणवंत । चंदन संगया सील धरंत ॥ इक दिन भूप जलद पच रंग ॥ देखि जगत जान्यौ छिन भंग  
प्रसम भाव अति चित मन दियौ । चंदन सुत कौ नृप पद कियो । दिक्षा लई कियो नप घोर । सहै  
परिस्या तनपै जोर । द्वादश विधि तप करत अभंग । सहै कष्ट नाना विधिअंग ॥ पौडस भावन जिन  
मन धारि ॥ तीर्थकर पद सुख दातार ॥ आयु अंत संन्यास जो लियो ॥ निर्मल भाव मरन तब  
कियो । दिव्य पंद्रह देव मंहत । ठाढ वज्र सुर सेव करंत ॥ पद देवेंद्र जलधि चाईस । आयु पुरी सुर नावत  
सीस । और भेद पूरब व्रत जानि ॥ कहां लागि अब मैं कगौ बखान ॥ जनम थान अब सुनि मगधेस ।  
जाकी सेवा करत सुरेस । जबू दीप सुमध्य मंहत । भरत क्षेत्र धनुषाक्रत संत ॥ आरज खंड सुमालव  
देस । महलपुर जिमनगर सुरेस ॥ दिठरथ भूप राज तहं करै । प्रजानीति मारग अनुसरै । नारिसुनंदा  
सील निधान । जिन मणि उपजन कीहै खान । \* दोहा \*

हरि आरग्या धन पति लई । रथौ महापुर जाय । तीन काल षट मास लौ । मणिकी बृष्टि कराय ॥ त्रैत

मास शुभ अष्टमी । अंत जामिनी जांभ । जिन माता षोडस सुपन । लखे महा सुख धाम ॥ उठि प्रभात अस्नान करि बस्त्राभूषण धारि । सखी संग लेकर चली । पति ढिग जाइ उचार । अवाधि चक्षु लखि नृप कहँ ! तीर्थकर सुत होइ । तबै गर्भ कल्याण हरि । आय कियौ सुख जौय । छहौ कुलाचल वासनी । षटपचास कुमार और सुरी सेवै जननि । हरि आग्या सिर धारि ॥

### \* चौपाई \*

मंगल भीतकरत दिन गए । नंदमस पूरन इमभए । माघ बदी द्वादसि सुभवार । श्रीजिनजनम लियौ सुखकार ॥ आएहरि दंपति पतिसाज । जिनचढ़ाय पहुंचे गिरिसाज । करि अभिषेक अरवि जिनचर्न । अस्तुति करी जुपातिग हरण । सिध ऋतकरआए निज पुरी । सोहरि मंगल गाँव सुरी । तांडव नृत्य इन्द्रकर गयौ । अति उत्साह नगरसै भयौ । पूरब सहस आयुपरमान । नवै सहस सेतततु जान । सहस पर्वसि बालपनगए ॥ क्रीड़ाकरत तरुन प्रभुभए ॥ पानिग्रहन करि राजकरंत । सहस पर्वश सिरी भगवंत । देखि वृसाभए बैराग । इच्छया करी परिगूह त्याग । अनुप्रेक्षा द्वादसि मनभाइ । ब्रह्मलोकसुरपैडी आइ । करि अस्तुति पहुंचे जिनथान ॥ हरि सिवका थापे भगवान । गए महाबन परिग्रहत्यागि । निजआतम सेती लोलागि । सहस भूपजिन सीसनवाइ । ग्रहनकियौ चरित सुखदाइ । \* दोहा \*

माघ महीना कृष्ण पक्ष दिवस द्वादसी जानि । कचखीरौ दधिडारि कै । कीनौ तपकल्याण ॥ मनपर्यै प्रभु ज्ञान लहै ध्यान कियौ दिन दोइ । असन हेत हरिपुर गए । मार्ग सुचिअवलोइ ॥ देखि पुनर्वसु भूप तब ॥ पडिगोहे जिनराय । नौधाभगति उचारि उरगोपयचरी कराय पट्टडी छंद

एजिन बन में धरौ धान । नृपकै ग्रहपंचाचर्य जानि ॥ छंदमस्त रहे त्रयवर्ष देव ॥ श्लैष्मिण घात्रिणा

कर्म रोव ॥ सुभपाषुदी चौदासि सुअन्हि ॥ करि भस्म करमतप ध्यान बन्हि । केवल मारैड प्रकासलीन ॥  
मिथ्यातमहातमकरनहीन ॥ तवइंद्र कोस पति आइवर्न । पूजाकीरि के रचि समोसरन । गनधइक्यासी  
भए सर्व ॥ जिन बानी परसै है अगर्व ॥ \* दोहः \*

पूरब समसोभासकल ॥ बरनतशेष थकाय । मेरी धिखना है अल्प ॥ क्यों करि बरनी जाय । नानादेश  
बिहार प्रभु कीनों बृषउपदेश ॥ नरबिद्याधर देवमिलि । अस्त्वति करत सुरेस ॥ आयु रही जबमास. इक  
आये सिषरि मुमेर । जोग रोध करि ध्यान धरि । निजआतम गुनहेर । श्रवनसुकल सुदिवस दिन । पूरन  
मासी जान । विधुतनांमा कूटतैं । लख्यो सुअबिचल थान \* चौपाई \*

सुरपति सिवकल्याणक कियो । अपना जनम सुफल करि लियो ॥ सो विद्युत बरकूट सुधार । बंदनकरत  
लहैं पदसार । पसूनरकगति छिन में नास । करै देवनर गति में बास । बत्तास कोटि प्रोषधी करै । एक  
बारबंदनफल धरैं ॥ अरआगैं सुनि श्रेनिक भूप । अबिचल राज कथा अनूप । हुंडाकाल दोषप्रगटाय ।  
मिथ्या धर्म चलयौतव आय । \* दोहा \*

मलय देस में नगरपुर । भूपमेघरथनाम । अति प्रताप धरभुजबली । बहुदृषकरै प्रनाम ।

\* चौपाई \*

सभा मध्यं इक दिवस नरेस । धर्म कथा कौ करैविसिस । कौनदान तैं अति सुखहोय । मंत्री प्रति पूछैं  
नृपसोय । कहैं अमात्य सुनौ नृपबैन । ब्यारिदान भाषैजिन अैन ॥ औषय शास्त्र अभै अहार । एई दान  
सुकृति आचार । वनस्यंदन भूपत सुनि कहैं । और दान इच्छामम बहैं । प्रोहित सोमसर्म सुततहां ।  
सुंडसाल बाल्यौ नृप जहां । सुनौराइ ए ब्यारथौदान । करैं दीन राखैं अतिमान । दान केहे दसबिधि के भेद

कैं भूप सिवलहैं अपेद ॥ गजहय भूम महलवरनारि । तिलस्यंदनदासी सुलकार । अजादान भूपति  
दसजोग । करि पावै बैकुंठ सुभोग । \* दोहा \*

बिद्या मंद आंधो पुरुष । लंपट लोभी दर्भ । गिने न काज अकाज कौ । करै पाप बससर्ब ॥

\* चौपाई \*

मुंडसालएं दान बताय । मिथ्या धर्म बुदियौ चलाय । जैनधर्म करलोपमहंत । दुरगति बंदन काज  
करंत । नृपति बंसभूपति बहुभाए । केतिककाल बीतइमगए । अविचल नांम भूपइम ॥ सोवन में क्रीड़ाको  
गए । लखि चारन मुनि सीस नवाय । दुबिध सुन्यौ बृषचित्तलगाय । विद्युत कूट महातम सुन्यौ । जात्रा  
हेत हिए में गुन्यौ । सोरह लाख जीव लैसंग । जात्रा कीनी भूप अभंग । होइवैराग महाव्रतधार ।  
विद्युत कूट सीससुखकार । लखौ सुकति पदपरम रसाल । छुट्यौ जनम मरन जगजाल । जे नरनारिबंदन  
कैं ॥ सो शिवरमणी सम्पति बैरें ।

\* दोहा \*

महिमां एक सुकूटकी सुरगुरुबुद्धि असमर्थ । संपूरन गिरि जोनि में कौकबि कहन असमर्थ ॥ ( आडिल )  
सिखिर महातम ग्रंथ नाम भाषा कथौ । लौहाचार्य सूरिसुजग में लखौ । मनसुख सिधुनि आपनै  
पठनि कौ । भाषा सरलबनाय ज्ञान के बढ़नि कौ ॥ \* दोहा \*

चपल चित बरचरसदस । करत ध्यान बनछीन । बांधन सुर्मति जंजीर कौ ज्ञान खंभइहकनि ॥

इति श्री काष्ठा संगे लौहाचार्य विरचते तीर्थमहातमसुखमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुदसांगरण बरणने एकादसमोपरिच्छेद ११

\* सवैया \*

ताके तनसोहत सुलक्षण । अनेक विधि सिध पुरजन्म हेमसमच्छवि काइ हैं । विमल नृपति तात विमला



मुदेवी मात गैड़ाकौ चरन में मुचिन्ह सुखदाइहैं । चारि बीस चापतनउनत चौरासीलाख बरष प्रमानं जिन देवजी की अइहैं । ऐसे हैं श्रीयांस प्रभू मनसुख सागर कौ देहु शिवमाराग नमत शिरनाइ हैं ॥

**\*दाहा \***

निन्याणवे सुलाखत्र । अरु निन्याणवैहजार । नौसैनेद सीतलगण । जनम श्रयांस सुधार । तिनके पंचकल्याणअब । बरनौ सीसनवाय । कूटशंखुली सिषरिपैं । अविचल पदबीपाइ । \*चाँपाई\* \* पुष्करार्द्धमुभदीप महांन । मंदिर मेर सुमेरबखान । तहां बिदेह सुप्रख नाम । जहांकाल चौथौ सुख धांम । सीतानंदी मध्यमेंवहैं । निर्मल जल अति सोभालहैं । उतरकूट देससुभ बसैं । नांम मुकक्ष क्षेमपुर लसैं । नलिन प्रभाराजाराजंत । अरिभंजन हरिजिमगाजंत । सहस्र खन परम पुनीति । जिमअंतस्वामी सुभरीति । सुनिकैं राजा अति आनन्द । लैपरवार जाइ जिनअंदि । सागंशिअनगारमहंत । दुत्रिधि धर्म मुनि नृपहूसंत ॥ भोगलखे भोगेंद्रसमान ॥ अक्षविषैं विषसमनृपजान । राजसुभ्रम कारनलखि लीन । नृपपदवी निज मुतकौ दीन । त्यागी परिग्रह चारित लियौ । निर्जनवन में अति तपकीयौ । एकग्राम दिनप्रति जुघटाइ । द्वात्रिसत दिन दिनहि वढ़ाइ । षोडसकारन व्रतकरि राज । निश्रै अरुबिबहार समाज । भावन भावैं निजमनलाइ । जिन पति पदबांध्यौ सुखदाइ । धरि संन्यास प्राणतजि दिए ॥ पूरन आउभाउ सुभ किण । सोलम स्वर्ग इंद्र पदधरैं । ठाड़े सबसुरसेवाकरैं । पुष्योतर विमान थितिसार । करैं भोगसवसुखदातार द्वाविंशति सागर थिति परी । जिन सेवा छाड़ैं नहिधरी ॥ बाईस सहस्र वर्ष जवजाइ । मानसीक आहारकराइ । ग्यारह मास बितितैंजबैं । सास उसास लेहिं सुरतबैं ॥ \*दाहा\* \* आयुर्ही छहमास जब । तब जिन पूज करंत । सुनि श्रेनिक बरनौ जनम । श्री श्रयांस भगवन्त ॥

## \* चौपाई \*

जंबूदीप क्षेत्र है भरत । कौसल देश कहन असमर्थ ॥ सिवपुरी नृप बिमल बिष्यात । बिगला रानी बिमल सुगात ॥ रतन वृष्टि तिनके घर होइ । सुखी बसैं पुरजन सब लोइ । आगैं रिति भित्तियास प्रमांन ॥ धनद स्वयौ पुर श्री भगवान । जेष्टवदि षट निसि अन्त । सुपन लखि जिन मात तुरंत । पांडस मांन प्रात उठि जैं ॥ जाइ कहे जिनपति सौं तबैं । बिमल भूप लखि अवाधि विचारि । तीर्थकर सुत उपजैं सार । इतनें में आए हरिदेव । गर्भ कल्यांनक करि सुरसेव \* दोहा \*

षट पंचास कुमारिका । निज निज काज करंत । गूढ पहेली छंद कहि । माता मन हरषंत ॥

## \* चौपाई \*

ऐसी रिति गए नवमास । दंपति मन में धरै हुलास । फागुण बदी द्वादसी जान । जनम लियौ श्रयांस भगवांन ॥ ( अडिल ) आए हरि गजराज साजि-हरिपुर विषैं । सची प्रसूत ग्रहजाइ दृगनि सौं जिन दिषैं । है प्रसन्न थुति कारी मात निद्वारची । लैकैं अंक जिनस इन्द्र कौं दे सची । सक्र लेइ जिन थापि छुर गिर गए । क्षीरोदक भरि त्यायन्हवन करते भए । अरचे पदव सुद्रबसव आभरन लै । पहिआए मन मुद्ध सिंधु जिन सर्नाह ॥ कहि श्रयांस जिन जगत श्रेयकारी सदा । पुन ऐरापति थापि पुरी आएतदा । मात गोद दै सक्र नृत्य तांडव कीयो । सेवा करन सुरगाखि देवपुर मगलियो ॥

## \* सोरठा \*

पिता कियो उत्साह । जाचिकजन बहु दर्ब दे ॥ रही नहीं कछु चाह । जिन दर्शन मन तृपति है ॥

\* दोहा \*

बिबिधि देव स्वगरूप धरि । जिनमन अति हर्षाइ । ईकईसलाख बरष गए । बालब्याल जिनराय ॥

\* चौपाई \*

पांनि ग्रहन शक्र मिलितात । करि मन हर्षे पुलकित गात । ब्यालीसलाख बर्ष करिराज । रिदु बसंत लखि नृप पदत्याजि । द्वादस भावन भावै सार ॥ लौकांतिक आए तिहिवार ॥ करै बानती सीस नवाय । निजधुर गए प्रसन उपजाइ । ल्याय विमल प्रभसिवका इन्द्र । जै जै करत चढ़ाय जिनंद । जाए विपिन बस्त्रादिक त्यागि । ध्यान धर्यौ आतम लौ लागि ॥ \* दोहा \* सहस राय अवनीस पद । निज निज सुत को देइ । श्री जिन चरन प्रनामकरि । शुभ चारित गहिलेइ ॥

\* चौपाई \*

बेला व्रत हरि कै जिन भूप । अरिष्टनगरनाह अबूप । गए गेह करिकै आहार ॥ निज आतम धरिध्यान सुवार । पंचाचार्य भयौ नृपगेह । जै जै सुर कहि करै सनेह । दोय बरष छदमस्थ जो रहै । कर्म वातिया प्रकृति सु देहै ॥ तेदू बृक्ष तलै अरिहंत । धर्यौ ध्यान जिन मनकरि संत । केवल ग्यानभान प्रग टाय । जग मिथ्यातम नास कराइ । आए इन्द्र संग लै सची ॥ समोसरन की रचनां रची ॥ कुंथ सैनि आदिक गनधार । जिन बानी के हरषन हार । सतहत्तरि परमान बखान । चौरासी हजारसुनि जानि ॥ सब पूरख सम रचनां कही ॥ ग्रंथ उक्त करि जानौं सही । सहसवती सदेस विहंत कृपा धरम उपदेश करंत । रही मास मिति अइ जिनन्द । आए सिपरि सुरासुर बन्द । जोग रोध चढि कै गुनगान । कृत

साकुली प्रकृति जुहानि । पंच लघुक्षर काल मझारि । चिदानन्द सिवपद लहिसार ॥ \* दोहा \*  
कूटसाकुली सीस पर । सो इंद्रादिक आइ । सिवकल्याणक कर गए । मनमें आति हरषाय ।

\* चौपाई \*

सुनि सुगधेस साकुली कूट । बंदिनकरक पछु गति कूट ॥ महा पुन्य थानिक हें सही । अति महिमां  
जिन श्रुति भै कही ॥ कोडा कौडी छिनवै जांनि । अरु छानवै किरोर वखान ॥ लाखछ्यांनवे सडम  
पैताल । पांच सतक ब्यालिस सुनि पाल । इतने सुनि सिव पद तहँ लहै । वलख त्यागि सुनिजगुनगह  
कूट बंदना करै इक बार । कोडि प्रोषधी फल दातार । अब आगे सुनि श्रेणिक भूप । मन बंछित फल  
कथा अनुप । जंबू दीप दीप सिरदार । भरत क्षेत्र तहं धनुषाकार ॥ आरज पंड नांम सुम देस ।  
नगर कल्पपुर वंस अमेस ॥ नंद सैन नरपति सुखदाय । करै राज अरि नाश कराइ । विजै सुसेना  
रानी सार । ताजुत भोग भोगैजु अपार । इकदिन आमृ विपन मै जाइ । लखि सुनि भद्र केवली राइ ॥  
करनयोस्तु सुनि धर्म बिसेष । यह संसार अथिर करिलेख । पूछु भ्रम आत्मा काज ॥ क्यों करि होइ  
महा सुनि राज । तन कोमल तप होय न लेस । धारि सकै नहि चारित भेस ॥ सिवपदकी इच्छाजे रहै ।  
सो उपाव बहि भूपति कहै ॥ बोले केवल ग्यानी धीर । सुनौ नृपति अविचल पद सीर । सिखरि कूट  
संछली धान । बंदिन सिव पद लहै निदान । सुनि नृप सीस नवाय । जात्रा करन चलयौ हें राय ॥  
एक कूट लै संघ सुसंग । पूजा दान जुकरत अमंग । जात्रा करी जाइ नृप जैबै । अति बेराग भयी जिय  
तैबै ॥ देसुतराज दिगंबर भयी । कूट संछली परि सिव गयी । \* दोहा \*  
सुनि श्रेणिक इहिविधि बहुत ॥ मुक्ति गए नर नाह । यात्रा करि सिव कूट की नर पद लीनौ लाह ।

महिमां सिखर अगम्यगम । को कवि कह न समर्थ । जो मनमें बाँधा करै सो पावै निज अर्थ ॥

\* अडिल \*

लोहाचार्य सूरि सिखरि सुर तरु कह्यो ॥ मन कल्पित फल देइ । फौलि जग जस रह्यो ॥ मनसुख सागर जानि आपनै काज कौ करवौ ग्रंथ नर भाष त्यागि कै लाजकौ ।

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्येषु संपदाचलमहात्म भाषाया मनसुपसागरेण वर्णनं सिद्ध कूटवर सांकुलीजाम  
श्रेयांसनाथ मोक्ष गमन द्वादसमौ परिच्छेदा ॥ १.२ ॥

\* सवैया \*

अमल अमंत गुन सोभित सुवर्ण काय चंपापुर नगर सुजनम बखान्योहै । जननी अयासु देवी जनक ह  
बसुदेव उन्नत सुतनु धनुष सतरि प्रमान्योहै । लक्षण महिष चिन्ह सेवत सुेन्द्र सत मंदारगिर कूट सेती कर्मन  
को भान्यो है । जैसे बास हूजि जिन बसत जो थिर थांन मन सुख सिंधु नमि सुकृत भौ जान्यो है ॥

\* दोहा \*

बास पूज्य बसु दर्व सो । जे पूजै मन लाय । बसु करमनि तै रहित है ॥ बसु गुन जुत सुख पाइ ॥  
तिन चरित्र मनुलाय कै सुनि श्रेनिकनर इंद्र । मन बच काया सुद्ध कर । ज्यौ पद लहै सुरिंद्र ॥

\* चौपाई \*

पुष्करछे में दीप महान । पूरव दिगजो मेर बखाव । सीता सरिता उजल नीर । ताके पूरव तटके तीर  
बत्सकावती देस इक बसे ॥ सुर पुरवत सोभा सब लसे ॥ रतन पुरी पुर उत्तम धाम । अति सरूप  
गुन जुत नर ठाम ॥ पोहोतर नाम नृप भूप ॥ सुरपति वत सोभित है रूप ॥ धर्म विषै हित अति द्यौत

धारि । पूजा दान अधिक विस्तार । नीति मारग नागरि पूति पाल । दुरजन जन कोहे उर साल ॥  
 अति प्रताप राजै नर ईस । बहु नृप आय नवावै सीस ॥ गुन प्रिय युनं गन जुतहै प्रिया । कटल  
 रहित सरल सुहिया । सो नृप रानी सहत मनोग । मन वंछित वर भोग भोग ॥ नगर वाह्य मन  
 हरि गिरि एक । मन हर सोमा लसे अनेक । तहं आएजु जुगंधर नाम । तीर्थकर सबजन सुख धाम ।  
 पोढोतर नृप सुनि हरषाय । पूजन द्रव्य लेइ नरनाह ॥ जाइ चरन अरचे भगवंत । अस्तुति करि  
 बहं गुन गावंत । करि नमोस्तु नर कोष्ट मझारि । बैठौ मन आनंद अपार । जिन मुख उदित धर्म  
 सुनि लियौ । दादस भावन मै चित दियौ ॥ इंद्रजाल जग रीति बखान । सत्या सत्य न लखै  
 अज्ञान ॥ पंच पराव्रतन यहि जिय करै । थिति छिन एक नहीं अनुसरै ॥ देखत देखत इह जगजाइ ।  
 इंद्र धनुष सम जानि सुभाय ॥ अब कीजे कछु आतम काज । पुत्र बुलाय दीजिए राज ॥

\* दोहा \*

पाढोतर बैराग है । निज सुत दीनों राज ॥ परिग्रह तजि तप ग्रहण करि । करन लगे निज काज ॥  
 बहुत राजवी साथि ले दुद्धरूप जुत होइ । यन्तर सुनि रांय अति । आतम रसलों जोइ ॥ अर्थास  
 जुत मूल गुन । उतर गुन सुबिचार ॥ चौरासी लख आदरै । करै बरत अनगार ॥ एक दभाग अर्थात  
 श्रति । नय बल श्री सुनि रांय ॥ षोडस कारण भावनां । भावै निज लौ लाय ॥ \* चौपाई \*  
 तीर्थकर पदवी दातार । उतिम नाम करम अवधार ॥ भिबिधि तपोधन तप अनुसरै ॥ पूर्व क्रत  
 बसुकर्मनि हरे । अंत समै अन सन व्रतलेइ । निरती चारं हिए मै देइ । प्राण अंतकरि तजि सब आस ।  
 महा सुक्र मै कीनों बास । महा सुक्र अभिधान प्रतिष्ट । आमराछिप है सब सुर इष्ट । महा शुक्रसु

विमान मझारि । सेज्या तहं उत्पात सुसार ॥ अंत महूरत जोवन पाइ । हस्त च्यारि उन्नत सुमकाय ।  
सप्तधातु बर्जित तनु धरै । सब सुर मिलि सेवा बहुरै ॥ षोडस उदधि आयुपरमान । लेष्या पदम विसेप  
बखान । अष्ट मास बीते सुभ स्वास । सुरभित सहित बहत है वाम । षट दस सहस वर्ष जब जाय ।  
मानसीक आहार कराइ । अविधि चतुर्थ भूम लौ होइ । काय विक्रिया जहां लौ जोइ ॥ \* दोहा \*  
इस विधि सुर सुख भोगकै । सुनि मगधिसुर राइ । षट मासा पुरही जेव । जिन पूजा सुकराइ ॥

\* सारिठा \*

आगे जिन अवतार । होय तीन जग सुख करन । भो मुनिए मन धार । मन बच काया सुदकरि ॥

\* चाल छंद \*

इम जंबूदीप मझारा । सुर गिरि सुंदर मन हारा । तिस दक्षिन भरत विराजै ॥ षट खंड मांहीं शुभ  
छाजै ॥ तहं अरज क्षेत्र अनूप सब जन सुख कारन रूप । इक अंगदेस तहं सोहै । देखत जन मन  
मोहै ॥ चंपापुर सुर विख्यावा ॥ बहु सोभ सकल सुख दाता ॥ तहं को बसु पूज्य नरसे । विख्यात  
सुदेस विदेश ॥ रानी जयावती नाम ॥ अति प्रिय पति हैं सुख धाम ॥ राजा रानी हित जोगै । मन  
इछत भोगै भोगै । सब सिंधु मगन है राय । जानौ न काल कित जाइ । जिन जन्म लेइ जिन ग्रेह  
सुख बरनत पार न तेह ॥ \* दोहा \*

सुनासीर स्वावधि लख्यौ चंपापुर जिन राय । गर्भस्थिति षट् मास गति । कीनों अपनों काज ।

\* सवैया \*

आशुसु धनद पाथ चंपापुर आयत बनौ द्वादस जोजन प्रमिति परकरियो । पंचाश्वर्य तीनकाल करत

हरषयार भंदिंर विचित्र सुरपुर सोभा हरियो ॥ सजन सनेही रूपके निधांन सब नरनारि रूप निरखि सुदेवी पाइ परियौ । मंगल सुगान नृत्य बीते षटमास इम सौधै गर्भदेवी आइ हिये भक्ति धरियो ॥

\* दोहा \*

भृमरामा अषाढ पक्षि षष्ठी शर्ताभषनाम । महा सुक सुराइ तिथि गर्भ कियो सुख धाम ॥

\* चौपाई \*

करत सेव सुरी सब आईकै । अति आनन्द महा सुख पाइकै ॥ कगलिये बरवस्त्र मनोहरं । विविधि भोजन भूषन भासुरं ॥ केइक चंदन केसरि गारती । केइक चवर लिये सिरढारती ॥ केइक छत्र लिये कर फेरती । केई एक मात सुखांबुज हेरती ॥ कहत काव्य कलागुन गावती । शुभ पेहेली कथा मनभावनी ॥ सुरभि छुक्ति सुषुष्प विसेषती । सुरविसेज सुजन्म सुखेलती ॥ धरति चर्न सुनृत्यात भावसौं । ताग्रद ताता तता करचावसौं ॥ झुनन झुनन नूपुर बाजती । तनन तानन आनन साजती ॥ सुर ससि चिंता गीत उच रती । जननि अग्र करै शुभ आरती ॥ इंद्र सुअन्य सुसेव करै सुरी । सकल उत्सव होत महा पुरी ॥

\* दोहा \*

फागुन सुकल पक्ष शुभ दिन चतुदसी सार । वरुन जोग जिन जनमियौ त्रिमवन सुख दातार ॥

\* चौपाई \*

चौनिकाय सूर सुचक देखि चिन्ह लख्यौ निज जन्म विशेष ॥ नाग जुसजि गज लायौ तहां । चंपापुर जिन जन्मे जहां ॥ लैप्रभु हरि सुर गिरपर जाइ । पर्यनिधि जल कलसा भषाय । मञ्जन करि पूजा रचि तबै । अस्तुति करत कहत धन अर्घै ॥ ग्रह ल्यायौ बहु हिये अनंद । वास पुज्य



काहे जयो जिनंद ॥ अंकमांत कैदे सुखपाय । नृत्य क्रियो पुन निज पुजाय ॥ श्रीनृपजिन वसु पूज्य  
 निहारि । जयावती जननी हग धार ॥ देखि देखि अति हर्षित गात । बहू पुलकित निज तनन  
 समाज ॥ पुर उत्सव कर दान जुदेइ । मन बाँछित देवहू जसलेइ ॥ गेह गेह मंगल सानंद । सब जन  
 के नाशै दुख फंद ॥ रोगी चकित न दीसे कोइ । नृत्य गान सब थानक होइ ॥ इस विधि उत्सव  
 जुत पुरसार । बाल रूप जिन राज कुमार ॥ जंबूनन्द तन सोभा धरे । सुर बालक सब कीड़ा करे ॥  
 सत्तरि धनुष सुकाय उत्तंग । वज्र नृपम नाराच अभंग ॥ लाख बहत्तरि अष्ट प्रमान । वासु पूज्य  
 जिन आशु बखानि ॥ अष्टादस लख वर्ष वितीत ॥ बाल कुमार अधिक सब प्रीनि ॥ इक दिन द्रव्य  
 बिचारन करै । आतम गुन निर्भेमन धरै ॥ हिये उपज्यो संवेग अपार । जल फेनापम लखि संसार ॥  
 इहिजिय काल अनादि अनंत ॥ भूमनर नहिं पायो अंत ॥ परभव भावरूप है गह्यो ॥ तजि  
 गुनरूप न कबहु गह्यो ॥ मोह भूपअपने बसिल्य । अष्टकर्म काराग्रहदेइ ॥ कुमति सुता दीनी परनाइ  
 तिन अपनै बस नाचनचाथ ॥ अपनी बिभौ मोहनेदेई ॥ डारि निगोद खबर नहिंलई । भाग्य जोरग्य  
 तहँतैनिकसंत । लष्य चौरसी जोनि भ्रमंत । फुनि निगोद मै फुनि गति च्यारि । फित फित नहि  
 पावैपार । इमचित तजि नवरसवेग । लौकांतिक सुरआए बेग ॥ करजुग जोर नमस्तुक्रियो । प्रममलिए  
 थुति कर हरषियो ॥ धन्य धन्य पूसुतारनहार । तुमबिन कौ इह बातविचार । जगत जीव  
 तुम नादाहि तरै । गुन गावत भव भव दुखहरै ॥ थुति करि गए आनि थान ॥  
 परम सरमसी भाव बखान । सिवकापर जिनलए चढ़ाय । सत्कंध धरि अति हरषाय अटवी महा मनहार

नाम । जाइ तहां कीनों विश्राम । जंबूतरु तलितजि निज ग्रंथ । लीनों तप जान्यौ सिवंपंथ । तपकल्यानक सुरपति कीन । किए पूर्व भवपातिग छीन ।

\* दोहा \*

पूजा करि विनती करी । हरष हर्ष गुनगाइ । सीस नवाय अति विनेसौ । निज पुर गएसुभाय । द्वागुण कृष्ण चतुर्दसी । उड़ बिसाष अभिसंम । दिन के अंत लियौ प्रभु । महाव्रत मुखधांम । छहसैछिहतरि नृपति तबैं । त्यागि परिग्रहभार ॥ निज पदनमि दिक्षालई ॥ करन तपस्यासारो \* चौपाई \*

बेला व्रत धरि निज पद जदा । ध्यान धर्यौ निहचल तनतदा । सुद्धातम गुनमन अति लीन ॥ करन मोह अरिसिना क्षीन । चौथौ ज्ञान भ्रगट भयौ जहां । बेला व्रत धार्यौ जिन तहां । चर्या करने उठे जिनराइ ईर्योपंथ चले मनलाइ । सिद्धारथपुर पहुंचे तबैं । सुंदरनांम भूपलखितवैं । है सन्मुख प्रनम्यौ नरईस । बारंबार नवारैसीस । जथायोग्य विधिवत विधि धार । धैतुदुग्ध दीनौ अहार । अस्तुतिकरैं हरष निज अंग । पुन्य सर्भ जनं कियौ अभंग । अखैनिधि बोले जिनदेव । मनिवर्षीवैं सुरस्वमेव । पंचाचर्य कियौ नृपगेह । दांन सुजस करि धरि हिए नेह । फिरि तीर्थकर बनमैआइ । आतम ध्यान रहे लौलाइ । एक वर्ष छदमस्थ बखानं कर्म छलाचल नासि सुजान । केवल ज्ञान भयौ उद्यौत । भव्य भवांबुध तारनयोत जैजैकरत । सुरासुर सक्र आइ ज्ञान कल्यानकचक्र । समोसस्त विधि पूरब रच्यौ । धनद देव अपनै करसच्यौ निज २ सभाथानं निज जीउ । करैं परस्पर प्रीति अतीव । जिनवानी अमृत करिपान । हैसंतुष्ट हरष उरआंन । केतक जीव महा व्रतधारि केतकलेइअनैव्रतसारि । केइक सीलग्रहन करितहां छ्याछठि गनधर जुताजिनजहां । माघसुकल दुतिया दिनअंत । कियौ ज्ञान कल्यानकअनंत । करिबिहार बरदेस जिनैस ॥ सहस्रबहतारि संगअसेस । धर्मोपदेस दीयौ

हितखान। रही आयु इकमास प्रमान। गिरिमंदार कूटपरिजाह। जोग ध्यान दीयौ चितलाह। क्लृप्त अपाढ़ अष्टमी सार। अविनासी पदजिनसंचार।

\* दोहा \*

मोक्ष कल्यांनक करि तबैं पूजाकरि लैदुर्ब। जिन स्तुति करि कैँ गए। निज निज थानकिसर्ब ॥ चंपापुर के निकट आति है वैकूट प्रसिद्ध। जेनरघूजैं भावधरि। तेपावैं सिवसिद्धि। एककूट बंदन किए। कोटि बर्त फल

\* अडिल \*

होइ। सिखर कूट जिन बीसनामि। को फल बनें सोय। सोई सिखर सुमेर सिखर प्रधानहैं। आतिसैवंत महंत भव्य सिवदान हैं। लौहाचार्य सिखर महातम बरनियौ मनसुख सागर देखि सुहित भापा कीयौ ॥

इनिश्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्ये भाषा यामन सुद्धमागरेण बर्णन सिद्धकूट मंदगिरिकूट श्रोत्रास्य पुज्य जिन मोक्षगमन त्रयोदसमो ध्याय १३ ॥

\* सर्वैया \*

बिमल उपाड ज्ञान धर्म भए निधान कंपिला जनमथान कृत धर्म तातहैं। मातहैं सुसीमादेवी लावन बाराह सेबी लाल बरन अतिमुंदर सुगातहैं। साठलाख बरष आयुहैं प्रमान प्रमुउन्नत सरीर साठि धनुष सुहात है। ऐसैं विमल जिन मन सुखसागर कौं देहु मीत विमल नमत हरषातहैं। \* दोहा \*  
बास पूज्य सिवपदगए बीते सागरीस। विमल नाथजनमे तबैंतीन भुवन केईस ॥ विमल करौ मल रहित

\* चौपाई \*

बुध। नमौ सीस करनाइ। तुमरे पंचकल्यांन अब बरनौ अतिसुखदाइ ॥  
उत्तम खंड धातु की जानि। पश्चिममेर बिदेह बखानि। मध्य बहै सीतोदानंदि ॥ दक्षिन कूट देस एक संदि ॥ परम मन्य है नाम बिल्यात। बसैं तहां सब उत्तम जाति। महानगरपुर पदमा नरेस। करै राज

जिमनाक सुरेस ॥ पूजादान विषै अति लीन । पोक्षजन लखि दुखित दान । अति प्रताप अरिजन  
 भयंत विविधि भेटदै सेव करंत ॥ इतिभीति ब्यापै नहि कदा ॥ रहै सुखित मै पुरजन सदा ॥ इक दिन  
 बन पीतंबर जहां ॥ सर्व सुक्ति सुनि आए तहां । सुनि आगमन भूप बन गए । सीस नवाथ पदबंदत  
 भए ॥ वृषउपदश करै सुनि राज ॥ च्यारि बरग फल सुनि नरराज ॥ प्रथम बर्ग हँ धर्म प्रधान । जातैं तीनुं  
 साधै निदान ॥ धर्महीतैं आति लक्ष्मी होइ ॥ सर्व अर्थ पूरै नरलोइ । धर्म हतैं सब सीझैं काज । धर्महितैं  
 है आतम काज । सोई धर्म बर्ग सुनि राइ । पुलकित है नरपति हरषाय । काम बर्ग सुनि कहै दुतीय ।  
 अर्थ बर्ग सुनि भाषै तीय । काम बर्ग कारिज संसार । पुन्य उदै पावै नरनार ॥ अर्थ मिलै शुभ के परसाद  
 अर्थ बिनां सब कारिज बाद ॥ मोक्ष बर्ग साधनहैं श्रेष्ठ ॥ तीन लोक में होइ सजेष्ट ॥ आवागमन  
 रहित पदहोइ ॥ सीस नवावै त्रिभुवन लोइ ॥ मोक्ष बर्ग सुनिकैं नरनाथ ॥ जानै सुनि शिवमाराग साथ ॥ है  
 बिरक्त सुत कौ देराज । जात रूपवरि तजिकै लाज ॥ तेरहबिधि चरित प्रतिपाल ॥ अति चारपरमाद जोटाल ॥  
 ग्यारहअंग कियो अभ्यास । ग्याना वरणकियो कछु नास ॥ षाडस भाई भावनासार । करै तपस्या सुचि  
 आचार । तीर्थकर सुगोत बांधियो । निजआतम सातासांधियो । अंतसमै ब्रतधरि संन्यास । सहश्रारि में कीनो  
 बास । परी अठारा सागरआव । सुरसैवै अतिमन धरिचाव । बासअठारह सहसचितीत । करै आहारम/नसीक  
 श्रूति ॥ मास गए नव मास प्रमान ॥ सास उसस लहि सुख दान ॥ इंद्र विभूति सकल तिन लही ॥  
 एक भवतारीथिति लही ॥ होय जहां जिनवर कल्यांन ॥ जाइ विक्रिया धर गुण खान ॥ सस तत्व  
 षट द्रव पुनीति ॥ चरषा करै धरै शुभ रीति ॥ इस प्रकार पूरन करि आव ॥ रही मास छह सेष सुआयु  
 मूर्छित माला लखि निज अंत ॥ अष्टदशवि जिनपूजकरंत ॥ अब आगे सुनिसेनिक राय ॥ जहां विमल

जिन जन मै आइ । जंबू दीप लसैं अभिराम । भरत क्षेत्र तामैं सुष धाम । देस हिरन्य मनोहर थान ॥  
नगर कपीली तहां बखान । ऋत वर भूप राज सुख करैं । बहुत राइ अग्या सिर धरैं ॥ नाम सुसीमा  
हैं नृप त्रिया । शुभ लक्षण सोभित तन क्रिया । ते दोऊ दंपति मनलाइ । बिलसैं भोग मनोगत राइ ॥

\* दोहा \*

हरि भंडारी आइ कै । करि अपनो नियोग ॥ मणि वरषाये मास षट । रचि सुर श्री जिन जोग ।

\* आडिल \*

एक दिना जिन मात सौधपर सौवती । सोलह सुपिन विभिन्न अंत निसि जोवती । प्रात जाय पतिया  
सिकहै बिधिवत सबैं । तीर्थकर सुतहोइ नृपति भाषैं तबैं । करै परस्पर नेह नारि नरहैजहां । आइ बिजोडा  
देव करै जैजै तहां । कीनौ गर्भ कल्यान बस्त्रआभरन दे । गएथान सुर छरी मात की सरनहैं \* दोहा\*  
जेष्ट मास भृमराभष । दसमी दिवसनिहारि । बिमलनाथ जिन देव की । भयी गर्भ अवतार ॥

\* चौपाई \*

आए देवी सेवनिजोग । करै काज सबआपन योग । पूछैं गूढ़ कथा मडुलाइ । निनै करि जिन मात  
कहाय तीनज्ञान छुत जिन उरबसैं । तिहं प्रभाव जिन संसैनसैं ॥ छंद पहेली दोहाकहैं ॥ ताकौं सब प्रति  
उत्तर लहैं । नऊ मास बीते इह रीति ॥ दिन दिन सुरी करै सब प्रीति । माघ सुकल शुभ चौथि बखान  
तिसदिन भयौजनम कल्यांन । पूरब सुर उत्सव हरि कियो । नन्हन जथावत हरिहरणियो । बिमल नाथ  
मिथ्या मल हर्न । आइ इंद्र सत सेवैं चरन ॥ इंद्र गए थुति करि निज थान । राखे सुर सेवैं भगवान ।  
जिन बालक सुर सेवा करै । बालक रूप आपनौं चरैं ॥ केइ होय कबूतर देव । केइ मोर रूप धरि सब ।

केई तामृचुड होजाय । मुनिथा भेष धत अधिकाइ ॥ जिनवर तन बंधूक समांन ॥ उन्नत साठिघनुष परमांन । वर्ष साठलख आय जो परी । जिन बांनी अमृत रसभरी ॥ पंद्रहलाख वरष प्रभु बाल । कीनी कलि क्रिया सिसु ख्याल ॥ पांनि ग्रहन राज पद धारि । कियो इंद्र कृतवर सुख कार ॥ तीस लाख मिति वर्ष मंहंत ॥ राज कियो जिनवर मत संत ॥ देखि सुतारा पटल जिनराइ ! है वैराग्य चितअधि काइ । लौकांतिक पैडी सुर जहां । आय करै श्रुति श्री जिन तहां ॥ इंद्र लाय सिवकासिवरूप । बैठाये जिन पति जग भूप ॥ बन मैं जाय महाव्रत लियो । जात रूप अपनौ प्रभु कियो ॥ सहस एक भूपति सिर नाय । दिक्षा धरी परम पद पाइ । मन पैये उपज्यौ प्रभु ग्यांन । कीनी मधवा तप कल्यांन । माघ शुक्ल दिन चौथि अनंद । गए सुरासुर श्री जिन बंदि । जुगल दिवस धरि ध्यान जिनेस । गए महा पुर नंद नरेस । नोधा भक्ति करी नर राय । श्री जिन राज अहार कराय ॥ अक्षय निच्छि कहि जिन बन गए । पंचार्चय राय ग्रह भए । रहि छदमस्थ वरष त्रय सार । कर्म धातिया पूकति निहारि । माघ स्वेत पंख षष्ठी जबै । केवल ग्यांन प्रगट है तबै । कल्याणक सुरपति तब कीन । समो सरन तहै रव्यौ पूबीन । पचपन गण धर ग्यांन अपार । बांनी परखै संसै द्वार । करि बिहार द्वात्रिसत देस सेवा करै सुरासुर सेस । सिखर सुमेद आय भगवांन । क्रतभंजन है कूट महान । जोग रोध सिव नारी बरी । जैजे कार भयौ तिह धरी । चैत असेत अमावसि जानि । कियो सक्र तब सिव कल्यांन । नर सुर खगपसु हरष अनंत । क्रतभंजन सुक्कलनमत । सतरकोटिसातलख सार । छहहजार सत सात निहार । ब्यालीस अधिक महा मुनि राज । क्रत भंजन पै है सिव राज । सोई कूट मनुज मनु लाय । बंदन करै हरष उपजाय । प्रभु शुभगति नास करंत । सुर नर गति सिव थान लहंत ॥ गोतम कहै सुनौ मगधेस

सुप्रसु कथा अनूप नरेस । जंबू दीप छुपूर्व विदेह । सीता नदी बहै गुन गेह । उत्तर कुल देस मद  
 याल । नगर हिरन्य पुरी अघटाल । नृप क्रत सैन तहां कौ मूप । राज करै पुर जन सुख रूप ॥  
 अरिवै श्रवन प्रजा दुख देई । क्रत सेना पुर छटि जो लेई । निज बल लेनिकरौ क्रत सैन । नृपवै  
 श्रवन महा दुख दैन ॥ जुद्ध परस्पर भयौ अपार । नृप वै श्रवन हार दुख धार । त्यागि भूप पद दिक्षालई ।  
 क्रोध सहित तपकरि मृत्यु भई ॥ गरिकै चौथे दिवस देव । भयौ सकल सुरकरै जुसेव । मालवेदेस अवंती  
 पुरी । नरनारी मानौ सुरसुरी । रुद्रदत्तराजा बलवान । तारैनारि सुधर्माजानि । चयौवै श्रवन चरतह आइ ।  
 सुतसुप्रभनाम उपजाइ । महासरूपी सील गुनमान । तेज तपस्वी सील निधान । एकसमै मुनि आए  
 तहां । नगर अवंती बनहै जहां । छुनि नृपगयो बंदन काज । सुप्रभनाम नम्यौ मुनिराज । पूछै सुकति  
 गमन के हेत । दुविध धर्म उपदेश जुदेत । जिसथानिक उपज्यौ सम्यक्त । सबल्य तपस्या अपनी सक्त ।  
 महापुन्य तीरथ जो नमै । सोनर निहचै सिवपुरगमै । सिखर कूट कृतभंजन नाम । बंदन करतलहै सिवधाम  
 सुनि करि भयौ संघ संयुक्त । सुप्रभनाम मुनि वानी उक्त । जाय सकल नगपरि जिन थान । पूजाकरी  
 हर्ष उरआनि । समर्कित की प्रापति जिहभई । तिह मिथ्यात प्रकृति नसिगई । प्रसम भाव चितमै अति  
 भयौ ॥ संग त्यागी शुभ चारित ल्यौ ॥ एकअवर बनकोट नरेस ॥ धास्यो तहां दिगंबर भेष ॥

\* दोहा \*

करी तपस्या अठल अति । क्रत भंजन जहं कूट । सिवरमनी लहि छिनक मै । जनम जरामृत छूट ।

\* अडिल \*

सोई कूट प्रधान जानि जौं नरनमै । कोट प्रोषधी पाइ महाफल सिवगमै ॥ लौहाचार्य कब्यौ जो प्राकृत

बचन सौं । मन सुख उदधि जो हेत सुभाषा रचन सौं ॥

सुगति दैनि अघहरनकौं । यासम तीरथनाहिं । अन्य क्षेत्र आतिसंघनी । देखत दुख भिटि जांहि ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचिते तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महास्थे भाषायामन सुद्धसांगरेण वरणनं सिद्ध कूट कृतमंजन ऊपर विमलनाथ मोक्षगमनौ नाम चतुर्दशोऽध्याय ॥ १४ ॥

\* सर्वैया \*

दर्शन ज्ञान सुखसता हैं अन्त जाकै जनम विनीता थान तात सिंघसैनहैं । सूर्यादेवी मातेहेम बर्न सुभग देह उन्नत पचास जग जस लैनहैं । सेह चिन्ह चरन में तीसलाख वर्ष की आयु लखि जीवन जो जाग जल फैन हैं ॥ ऐसे हैं अनंत जिन व्रत धारि लियौ तिन मन में मोको सुख दैन हैं ॥

\* दोहा \*

गए जलधि नौबीत कैं । विमल नांथ सिव थान ॥ जनमे जवरहि अनंत जिन तीन भुवन भगवान ॥  
गुन अनंत महिमा अठुल मेरी मति आति हीन ॥ भक्ति भक्ति बस होइ हम करौ चरित्र नबीन ॥

\* चौपाई \*

खंड धातकी पूरबमेर । पूरबनांम बिदेह सुहेर । तामैं दुर्ग देस सिरताज । नगर अरिष्ट पदमथराज ।  
पुन्य प्रताप महागुणवंत । अरि छुलकनी छिन मैं अंत । निज भुजबल राजें नईस ॥ बहुविधि आइ  
नवावैं सीस । इकदिन सभा मध्य जिनराइ । माली तवैं जुहारचौ आइ । नाम स्वयंभू तीरथराज । आये  
बनमें धर्म जिहाज । तिनप्रसाद चिरजीयो नरेस । आनि फिरै तुम देस बिदेस । सुनि नरेद्र हिण हर्ष  
अपार । करी परोक्ष बंदना सार । निज अंकुस आभूषणदेह । पुष्प जीव की बिदा करेइ । लै पूजा पाहर



नृप जाइ । अर्चन श्रुति करि सीस नवाय । श्रावक धर्म अनंतर जहां । अनागार बुधमुनियो तहां ॥  
 पंचमहाव्रत सुमति जुसार । तीन उपति सिव सुखदातार । तेरह विधि चारित मुनिभूप । हैं विरक्त बैराग  
 सरूप । ततक्षिण धनुद तनुज दैराज । आपुन भयो महा मुनि राज । पाखमास उपवास करंत । नानाविधि  
 तप हिए धरंत । ग्यारह अंग पढ़ैमनुलाइ । ध्यान धरन भैं अह निसि जाय । । आयु पूरन करि धरि  
 संन्यास ॥ कीनौ सुर्ग सो लहै बास । पुण्योतर विमान मनहर्न । ठाढ़ेसुरसेधैजुगचर्न । द्वाविसति सागर परवान  
 परी । आयुसुख सहित सुजान । कृतम अकृतम श्रीजिनधाम । निति प्रति सबकौं करै प्रनाम । मन  
 बंछित सब भोगैं भोग । व्यापै नाहि रोग तन सोग । बहुतकअमर समा थितिकरै । छहौं द्रवचरचाविस्तरै ।

\* अडिल \*

इहविधि सो वह देव आयु पूरनकरी । सेषही पठमास माल मूर्छाधरी । मरत चिन्ह लखि अमर भाव  
 बिकल पत जैनिसि दिन लै बसु दर्ब चरन श्रीजिनजजै । \* दोहा \*  
 आगें सुनि मगधेस नृप जिन अनंत अवतार । धर्म पूगट करि मुक्ति लहि तीन लोक सुखकार ॥

\* चौपाई \*

सब दीपन के मध्य बखानि । जंबूदीप अनूपम जानि ॥ भरत क्षेत्र में कोसल देस । साक्रेतापुर  
 बसै सुभेस ॥ सिंह सैनि नगरी पाति कहा । नरनारीजन सब सुखलहां ॥ सूर्यो देवी नारि समेत । करै  
 भोग दंपति अति हेत ॥ सोपुर सोभा करी धनिंद । मान वर्षा तहं करै सुंद्र ॥ इहि विधिसौं वति पट्ट  
 मास । नगर बसै महा सुखरास ॥ सूर्यो देवी इकदिन रैनि ॥ सोध सिषरी करती सुख चैन । सोला  
 सुपिन देखि निसि अन्त ॥ कहैं प्रातपति सो हरपंत । अवधि ज्ञान बलि भाषैं राइ ॥ तीन जगत

पति सुत उपजाइ । कैर परस्पर दंपति नेह ॥ मगल गांन होइ तिन गेह । कार्तिक बदि एकदिन ॥  
 कीनों इन्द्र गर्भ कल्यांन । राखि सुरि सेवन जिन मात ॥ जांनि नयो सुरपुर अवतार । लुप्यो देव  
 कुमारी आइ ॥ निज निज सब ग्रह काज कराय । गूढ प्रश्न पूछै मुरनारि ॥ उत्तर देइ भात चितधारि ।  
 गए महिनां नौ इहि रूप ॥ जनमे तीन जगत के भूप । आइ इन्द्र सुर गिरि लग्यौ । जन्म कल्याण ॥ इह  
 विधि ठ्यौ ॥ अनन्तनाथ गुन अन्त न लहौ । अल्प बुद्धिमें कैसें कहौ । जैजै करत नगर फुनि आइ ।  
 जिन मात के गोदथपाइ । तांडव नृत्य इन्द्र तव कियौ । निरषि निरषि जिन मुख हरिषियौ । बालरूप  
 सुर सुरपति थाय । गए सुछिन में सुरपुर आय । जिन बालक सुरबाल समेत । क्रीड़ा करै धरै बहुहेत ।  
 अगूढा अमृत रस थापि । करै सीर पृष्ट अतिजानि । दस अतिमें सोहै सुखदाइ । एक सहस बहु लक्षण  
 काइ । बरस तीसलखि आयु मंहत । काय पचास चापि बलवन्त । सातलाख पंचास हजार । बालरूप  
 बीते मनहार । पांनिग्रहन करि कीनों राज । विधि पुरव सब बन्धौ समाज । पंद्रहलाख वर्ष मर्जाद ।  
 प्रजा पोषन करि अहलाद । इक दिन सिंध पीठि धिति देव । ठाढे सुरनर करत सुसेव । उल्कापात  
 देखि दिसि एक । मन में श्री जिन धखौ विवेक ॥ छिन बिधंसी इह संसार । बिबिधि रूप जग दुष  
 भंडार । द्वादस बिधि सुभावन भाय । सुर लौकांतिक पहुंचे आइ । अस्तुति विनै भक्ति चित धारि । करि  
 कै गए ब्रह्म सुरमार । सागरदत पालकी जवै । जिन बैग्ये मघवा तवै । गए सहेत कवन के मध्य । जै  
 जै कै देव अनिवध्य । सुभ दुक्कल आभूषन त्यागि । निहचल ध्यान आतमा लागि । दस सत भूप राज  
 तजि जहां । करि प्रनांम तप लीनौ तहां ।

\* दोहा \*

जेट असितथिति द्वादसी । जिन अनंत तप लीन । सुरनर सग सुत इन्द्र मिलि । तप कल्यांनक कीन ॥

\* चौपाई \*

निज निज थान गए सब जीव । दुँडेर तप जिन करै अतीव । मनपैय उपल्यौ तिनिवार । जुगल दिवस जिन बृत धार ॥ तदनंतर पारन चित लाय ॥ धर्मगढ़ पुर गमन कराय । नृप बिसाल लखि अस्तुति करी । नौवा भक्ति हिए भै धरी । प्राप्तु क धेनु दुग्ध आहार । करिकै अखै निधि उच्चार पंचाचार्य देव तब कियौ । नर नारी तब लखि हरषियौ ॥ प्रभुजी जाय बिपिन धरि ध्यान ॥ जुगल वर्ष छद मस्थ बखान ॥ घात घातिया कर्म महंत । जे चेतन गुण घात कंत ॥ केवल ज्ञान भांन प्रगटाइ मिथ्या तम छिन मांहि नसाय । समौ सरन रचना धर निंद ॥ कर थुति कर सुरासुर इंद्र ॥ व्यौम बांन भिति मन धर सार । जिन बांनी धुनि परखन हार । डादस सभा जीव सब भैर । जिन माषा समझै रुचि धरे । केवल कल्यानक करि इंद्र । गयो निजास्पद हरप सुरिंद्र । तीनकाल बांनी धुनि होय । धर्म बखान सुनै सब कोय ॥

\* दोहा \*

नष्ट कला धिनि चैत की उपल्यौ केवल ज्ञान । अत विधान जे नर करै । तिनको होय कल्यांन ॥

\* अडिल \*

नाना देस बिहार कियौ जिन राजनै । दुबिधि धर्म उपदेश भव्य जनका जनै । मास एक थिति आशु रहीपर गिति जवै । आरि सिपर सुमेद सुरासुजु तवै ॥ \* दोहा \*  
समौ सरन तहं परिगयौ । कूटस्वयंभू शीस । जोगरोध श्रीजिन रहै । तीन लोक के ईस । जेठ सुकल तिथि चौथि कौ । मुक्ति बास प्रमुर्कनि । गुन अनंत जामै लस । मुष्य आठगुन लीन । नसर गखपसु अमुरपति । आए अति आनंद मंगल गान विधान करि पूजा करि खबंधि । \* अडिल \*

सिवकल्याणक सक्त कियो बहुकूटपै । जेनर नमै त्रिशुद्ध पाप सबछूटपै । नरक पंशुगति नास देव पदनर ।  
 लहै । क्रम क्रम सौ सिव जाय जैन बचयौ कहै \* दोहा \*  
 और मुनी सुरसिध गए ॥ वहैकूटसिर थान ॥ जो आगम गिनती लही । तिन कौ करो बखान ।

\* अडिल \*  
 मुनिवर कोहाकोहि छ्यानबै जानियो ॥ सतरि कोहि लाख सुसतरि मानियो । सतरि सहस प्रमंनि  
 सानसै अघहरी । कूटसुयंभू सीस सुक्क रमनी वरी ॥ \* दोहा \*

असै क्षेत्र पुनीति की महिमा कही न जाइ ॥ भक्ति सहित जात्राकरै । तिनके दुख्य नसाइ । औरकथा  
 श्रैनिक सुनौ । ब्यारि सैननृप बात । जात्राकरि जोफल लखौ । सोबनौ अवतार । \* छंदचाल \*  
 यह जंबूदीप विराजै । बलया कनसाभाजै । तहं भरतक्षेत्र सुखदाइ । धनुषा कनसाभपाइ । कौसांवीपुर  
 इकसाहै । देखत सबजन मनभौहै । एकसेठ बसै बृत्तसन ॥ घरिद्वय प्रभुर सुख दैन ॥ वरनी सुभसेना नाम ।  
 बहुरूप सील गुनधाम । तिनको कोई पूर्व नियोग भयो पुत्रअसुमके जोग । छिनमै लक्ष्मी सवनासी ।  
 समदत नाम सुखरासी । छुनि यात पिता तिस मूवा । तबही अति कृष्टत हूवा । उच्छिष्ट उदर भरि  
 जीवै । सरसरिताको जलपीवै । इक दिन बनभ्रमतो होलै । मुनि देखि पूनगं हमबोलै ॥ मै कौन सो  
 कर्म कमायौ ॥ जासौ इहविधि दुखपायौ ॥ मुनि निरखि दयाउरआनि ॥ बोलेथुम अंशुतबानि । इहअंत  
 रायचलकर्म ॥ उपज्यौ बलवन्त असर्म । जय पूजा जिनवर करिए । प्रसन्न पातिग हाए । सुनि  
 बोल्यौ हमसमदत्त । सुनियौ मुनि बच सुत ॥ मेरो मन चंचल रूप । तन छीन पेट जिगि कूप ॥  
 कैसे बृत्त पूजा कीजै । किहि विधि जयध्यान धरीजै ॥ सबसौं मैहौं असमर्थ । कछु होय नहीं बिनअर्थ ॥

\* दोहा \*

फुनि सुनि बोल्यौ मधुर बच । निज मन लेकरि संत ॥ सिखर सुमेद जात्रा करौ । लक्ष्मी होय अनंत ॥ सुनि बूझै समदत्तइम । किहिं बिधिं जात्रा होय । सोभाषौ अनुंकपि धरि । भाग उदै तुम जोय ॥

\* चौपाई \*

कहै तपोधन हित मित बैन । श्री जिन मारग भाषित औन ॥ पीत बसन पहैरे मन सुद्ध । जिन ग्रह जाय नमै धरि बुद्ध । संघ भक्ति जिन सकि समान । करै ज्यारि बिधि विधिवत दान ॥ इह प्रकार जो जात्रा करै । लहि लक्ष्मी सिव लक्ष्मी बरै । दे उपदेस गए सुनि राज ॥ नमि समदत्त चलयौ निजकाज आम्र बृक्ष तर बैठि तुरंत । निज मन मांही सोच करंत ॥ मोकौ मिले बसन केहि पीत । जात्रा होय कौनसी रीत । इह बिधि चित करै तिस ठौर । कारन आइ बन्यौ इक और ॥ \* दोहा \*

पदमं प्रभु पूजा निमति । इक बिधा घर आय । पूजा श्रुति कर न्याय जुत । वनमै केलि कराय ॥ दान हीन दुखित निरखि । दया दान बहु देइ । जैन धर्म धर्मज्ञ अति । पर उपगार करेइ । मो चतुर सम दच लखि । खग पूछै छुसलात । तरुन रूप है कै कहै । अपनै दुख की वात ॥ \* चौपाई \*

गद गद बचन सुने खग जबै । करुणा भाव भयौ हिए तबै ॥ हिए वस्त्र पीरे आभनै । चली साथ लै जात्रा करन ॥ पूजा दान करत वह गए । सिखर सुभेर निहारत भए । कूट स्वयंभूपै जिन नाथ अनंत नाथ कौ सिव कल्यांन ॥ जहां जाय जिन पूजा रची । भगति बहुत अपने मन सर्बी । विदा किये खग कौतिहि घरी । आय दिगंबर पदवी धरी ॥ तप करि धरि संन्यास मंहंत । सुर पद सोलम सुर्ग लहंत । बाबिसति सागर थिति धार ॥ और कथा कौ सुनि विस्तार \* दोहा

इह सुनि जंबू दीप में । भरतक्षेत्र तहं जानि ॥ तहं कुर जंगल देस में । हथनांपुर सुम थान । रतन  
सैन भूपत जहां । सुर बीर अभिराम । मलया देवी नारि घर । सीलवंत सुख थाम । तिनकै सोम  
दंतं चर सोलमं स्वर्ग मझारि । सुस्पद तजि तहं जनमियो । चारिसिन सुतसार । रतन सैन दिक्षालई ।  
चारि सैन दै राज । प्रजा पोषनां करत सुख । राखत सवकी लाज ॥ \* अडिल \*

एक दिन बन केलि करत नरपति गयो । महादरिद्री पुरष एक देखत भयो ॥ पृर्व भवस्थनि जानि  
कहै मुख से तवैं । सिखर जात प्रसाद लखौ इह पद जवैं । \* दोहा \*  
आनि फिरी परदेस मे । विभौ भई आति गेह । सेवा करै अनेक नृप । राखै सब जन नेह ॥

\* अडिल \*

फुनि अबजात्रा करह जथावत गिरितनी । जो मन बंछित काज होय सव विधिवनी ॥ जनम जरा  
मृतिनासिवास सिव में करौ । आवागमन निवारि कर्म आठौ हरो \* दोहा \*  
असौ मनहि विचार नृप । फुनि आये निज गेह । अवर दस क्षीहनि संगलै । चलयौ भक्ति धरिनेह  
\* चौपाई \*

थान थान जिन पूजा करै । न्यारि प्रकार दान बिसतरै । सबजीवन कौ राखै मान । परम त्रिवेक  
बुद्धि की खानि ॥ जाय सिखर जिन जात्रा करी । कूट कूट पूजा विस्तरी । जेठे सुत कौ दीनोराज ।  
आप लियो तप आतम काज । चारि सैन बुद्धरतप धारि । सिव पदवीपाई सुख कार ॥ भाव सहित जो  
जात्रा करै । सिव रमनी सो निहचै बरै ॥ कूट स्वयंभू बंदै कोइ । कोट प्रोपथी फल तिस होय ॥ जो  
सब गिर बंदै मन लाइ । ताकौ फल बरन्यौ नहि जाइ ॥ \* दोहा \*

लौहाचार्य ने कहा ॥ शिवर माहात्म ग्रंथ ॥ रवि भाषा मनसुख उदधि । जानौ इह शिव पंथ ॥  
इतिश्री काष्ठा संगे लौहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्ये थाषा यामन सुद्धसागरेण बर्णनं सिद्धकूट स्वयंभूपर  
अनंतनाथ जिनमोक्ष गमन पंचदसमो परिच्छेद ॥ १५ ॥

\* सर्वैया \*

कर्म हरन हार धर्म कहन हार शिव केल हनहारतन पुरजनम हैं । रत्न सैना तात मात सुव्रता सुने  
विख्यात बज्र दंड चारन चिन्ह हेम डुति तनहैं । दशलाख पूर्व आशु पैतालीस चाप काय देखि जग सुम  
समजाइ बैसे बनमें । ऐसे धर्मनाथ जी कौ मनसुख सिंधु नामि सुफल जनम जानि हर्षित हैं मनमें ॥

\* दोहा \*

जिन अनंत सुकतें गए । बीते सागर चारि धर्मनाथ जन्में जबैं । त्रिभुवनसुखदातार । तिनके पंच  
कल्याणक अब । बरनौ आगम देखि । धर्मी धर्म प्रकास करि । शिव रमनी छवि पेपि । कूटदत्त रवि  
प्रगट करि । भव्य जीव शिवराह । भाव सहित जात्रा करै । लेइ सुनर भवलाह । प्रजाखंड धातु की जानि  
पूरब जहां बिदेह बखानि । सीता नंदी याम्यादास कूल । देस बत्स नामा सुखमूल । तामें नगर सुसीमां  
सार । बसैं नारि नरसब गुनधार । अति प्रतापी दसस्थनाम । राजा राजकरै सुखधाम । प्रजा पोषनाकरै  
नरस । निसि दिन पूजाकरै नरस । धर्म ध्यान सौं राखैं प्रीति । निकट भव्य जनकी इहरिति । सरद पूरणमास  
लखि रैनि । जगत समस्त जानि हिए फैन । है बैराग्य महाराथ राज । सुतकौ देय हुवे मुनि राज । अठईस मूल  
गुण धार । उतर गुनकौ करै विचार । बुद्धर व्रत धारै मुनिराह । षोडस कारनकरि मनलाह । \* दोहा \*  
तीर्थकर के गोतकौ । कीनों सदस्थ बंध । अंत समैं संन्यास है । तजे प्राण तजि धंध । उपजे छिनमें जाइके

जहं सर्वार्थं सिद्धि । पद अहमिंद्र लक्ष्मी तहां । पाईवहु विधि सिद्धि पूरव समसव जानिए । आयु कायु सुख सर्व । सबसुर मिलि चरचारै । सात तत्व षट्दर्श । त्रय त्रिंशत सागर उमर वीते हैं इह रीति । रहिमास षट

शेष जब । जिनपूजा करि प्रीति ॥

\* चौपाई ❀

अब सुनि श्रेनिक जिन अवतार । धर्मनाथ स्वामी विस्तार । यहजंबू वरदीप महंत । सबदीपन के मध्य बसंत । भरत क्षेत्र तहं कौशल दंस । रत्नपुरी जिम पुरी सुरेस । स्वैसननृप राजसुरै । राजा प्रजानाति पगधरै सो मृतसैना भूपति नारि । दंपति भोगे भोग अपार । तहां आय धनपति सुरस्वयौ । नौ द्वादस जोजन विधि स्वयौ । रत्नद्वीष्ट करि तीनु काल । वीते इमपद् मास विसाल । थिति विसाखअष्टमी ऐन । करै मात निजमंदिर सैन । सो अहमिंद्र चरचइआय । गर्भस्थिति करि सुमलखाय । पोइस मिति उठि मजन कियो । प्राप्तजाइ पति सौ कहि दियो । श्रीजिन जनम सुपन फलजानि । हरष परस्पर करै वखान । इतनेमें आयौ अमरैस । जैजै करत सुरासुर शेष । सिंह पीठि थापे जिनमात । करि अस्नान पूजहरषत । गर्भ कल्यानक कीनों जवै । निज निज घांम गए पुनि तवै । छपन देव कुमारी आइ । निज नियाग साधे सुखपाइ । निति प्रति गीत नृत्यधर होय । उत्सव करै सकल पुरलोइ । क्रमकरि वीते हैं नवमास । पूरन भए गर्भ की आस । माघ शुक्लतेरिस अति सार । लीनों धर्मनाथ अवतार । मधवा ऐरापति सजिलीन । जेजे सकल सुरासुर कीन ॥ आये नगर जिनालय चढ़ाय । भक्ति सहित सुर गिरि लेजाय ॥ विधिवत नोन्ह पूज्य करिवंदि । गंधोदिक लै भद्र अनंदि ॥ वस्त्राभूषन सब पहगाइ । माता गोद दिए पुरआय ॥ तांडव नृत्य कियो तव इन्द । गयो रासि सुरभेव जिनन्द ॥ माति श्रुति ज्ञान अवधि प्रसुधरै । बाल केल करि सब मनहरै ॥ पैतालीस चाप उत्तंग । बज्रकाय हुति हेम अंभंग ॥ दसलख सबै आयु परमान । सहस एक वसु विन्द



बखान ॥ इस अतिसँ सुत जन्म जिनस । वर्ष अढ़ाई लखि सुभेस ॥ गयो व्याह करि नृप पद धारि । बरस पांचलख नीति विचारि ॥ एक समै प्रभु सभा समेत । बैठे बात करि हित हेत ॥ इतने इन्द्र धनुष देखियौ ॥ नासनीक सब जग लाखल्यौ । निज हित निरखि प्रसम उपजाइ ॥ राज दियौ सुत कौ मुखदाय । झादसानु प्रेक्षा भावन्त ॥ सुर लौकांति तव आवन्त । धृति करि ब्रह्मलोक सुरग्यौ । सक पालकी लावत भयौ ॥ नामिदतपुर श्रीजिन थाप । गए लवन वन श्री जिनथाप ॥ \*दोहा\* धर्मनाथ जिन राजहं ॥ जात रूप करि अंक । चौबीसौ परकार कौ ॥ तजियौ जिनवर संग । आतम ध्यान धर्यौ तबैं ॥ लषन आतम रूप । निरखि बरननमि सहस इक ॥ दिक्षा लीनी भूप । अडिल तप कल्याणक सक कियौ हरषाय कै ॥ क्षीर सिंधु केशडारियौ जाइकै । जन्म दिवस तवजांनि सक सुरनर जवैं ॥ निज निज थान के गए सुनमिनमिकै तबैं ॥ \* दोहा \*

दिन द्वै करि ब्रत ध्यान धरि । उठे असन के हेत । धरमनमी जिनपुर गए ॥ सुधर सैन से केत ।

\* चौपाई \*

जिन मुनि भेप लए धरि सैन । जनि ए प्रभु जग सुख दैन । नौधा भक्ति करै तवराइ । धेनु दुग्ध आहार कराइ । अषैं निधि जिन जव उचरैं ॥ पंचाचार्य देव तंह करैं । छुनिवन आइ धर्यौ प्रभुध्यान ।

\* दोहा \*

एक वर्ष छदमस्थ बखान

पौष मुदि दसमी सुदिन । कर्म घातिया भास । केवल ग्यान भयौ तबैं । लौका लोक प्रकास । समौ सरन रचियो धनपति । झादस समा बिसाल । आइ सुगसुर नर पसु । बांनि सुनै रसाल ॥

\* चौपाई \*

गनधर तेतालीस सुनीस । आदि अरिष्ट सैन गन ईस ॥ विविधि देस में करथौ बिहार । दीनी धर्म देसनांसार ॥ मास पूमान रहि थिति जबै । समेद सिषर आए प्रभु तबै । पोष सुदि दसमी थिति जानि । कीनों सक्रयान कल्यांन ॥ पुंन्य पाप सम करि जिनराय । समो सरन तव बिभोनसाय । कूटदत पर ऊपर गए । जोगरोध निज गुनलौ दिए । जेष्ट सुकल तिथि चौथि बखानि । गए अचलपुर श्री भगवान । तनकपूर समजब खिरि गयो । वेनष केस गाय जो दियो ॥ इन्द्रआय श्री षंड मगाय । अगर कपूर सुरभि बहुल्याय । सुर रचितन माया मई कियो ॥ वेनष केस गाय जो दियो । अगनि कुमार पूणमि युगवर्न । पूगधी अग्नि भस्म तन कर्न । छिन मै डारभई अति सीत ॥ ताल लगावै सुरनर प्रीति । पूजाकरि बसु विधि लै दुर्ब । जैजै कौं अमर गनसर्व ॥ इह विधि सिक्कल्यानक सर । करि करि निज निज पुरसाचार । सोई कूटदत वरपूत । बंदित छुर नरगन संजून । नरक पसुगति छिन भे हरे क्रमक्रम सौं सिव नारी बरे

\* दोहा \*

महिमा दतबर कूटकी । मोपै कही नजाइ । इतनें मुनि तहं सिवगए । संख्या कही सुभाय । अडिल कोडि उनईस बखान लाखनौ जानिए । नौहजार सतसात पचास खेवांनए । भए निरंजन सिद्ध लखौ पद आपनौ । कर्म कुलाचल भांनि हींनि सब पापनौ ॥ \* दोहा \*

और कथा मगधेस इक । सुनौं सुछ मन लाय ॥ भाउ दत्त नृप जात्रा करि । फल पायो सुखदाय ॥

\* चौपाई \*

जंबू दीप सुचक्राकार । लख जोजन ताकौ बिस्तार । भरत क्षेत्र चापाकत जानि । श्री पुर नामे

नगर बखान ॥ भवदत्त नाम तहांहैं भूप ॥ त्रिया महेंद्रदत्ता अति रूप । दंपति पूजै श्री जिव राज ॥  
 निति प्रति दांन देइ हित काज ॥ संघ भक्ति विधिवत बिस्तरे ॥ अंन प्रतित हिए में धरे । द्रव्य खरवे  
 जिन मंदिर क्रियो । बिब भरा द्रव्य बहु दियो ॥ च्यारि प्रकार संघ लै साथि । जात्रा हेत चल्थो नर  
 नाथ । जाइसिखर परि पूजा करी । इंद्र धनुष की विधि उच्चरी । निस में ध्यान धरथो मनु लाय । लखिके  
 निर्जन थान कि जाय । निसि दिन नीन बितति जेबै । अंतर कथा सुनौ इक तैवै ।

\* दोहा \*

प्रथम स्वर्ग के इंद्र की ॥ बैठी समा सुनंत ॥ समकितकी चरचा करै । देव परस्पर अंत ॥ भरत क्षेत्र  
 में कौन नर । समकित सहित बखान ॥ सक्त चवै निज मुख थकी भावदत्त नृप जानि ॥ सो आयोहैं  
 सिखरि परि ॥ कूट बंदना हेत ॥ पूजा करि अब ध्यान धरि । तिष्टै निहचल देत । देव अनखुवा अंबिका ।  
 चल्थो परिध्या लैन । बिन देखै मानौ नहीं । इंद्र कहे जे बैन ॥ तीजे दिनके अंत निसि । आइ क्रियो  
 उप सर्ग । भाव दत्त मन बचन । चल्थो नहीं तन बर्ग । \* चौपाई \*

इतने में पुनि भयौ प्रभात । नमस्कार करि सुर हरषात । स्तन अमोलि बस्तु वउ लेइ । धिनौ भक्ति  
 करि भेट धरेइ । कहे बचन सुर अस्तुति किये । सुगति भेट तुमए दिए । भाव दत्त तत्र अभै कही  
 मेरे काम न यकी सही । अति आग्रह सुर करि तिहि थान ॥ भावदत्त यकी नहिमान । निश्चल चित देखि  
 सिर नाथ ॥ कहे धनि समकित धराय ॥ तुम अस्तुति जिम सुर पति करी । इहमें देखी सो इहधरी  
 बारंबार पूणामि सुर जेबै । एक भेरी दीनी करै तबै । भेरी सष्ट जहां लौ होइ ॥ नौकार गद नासन सोय ॥  
 इह गुन सुनि करि भेरी लेइ । पर उपगार चित में देइ । याद करौ तत्र प्रगटौ आय । ऐसा कहि सुर

सुर पुर जाय । भावदत्त पुनि संघ समेत । आयो गेह राज सुख हेत । शुक्ल चतुर दसि व्रतकोधारि ।  
 सांतिक पाठ जंत्र रचि सार । राजा रानी पूजा करें । भाव भक्ति अपने द्विष्ट धरें । तिस दिन भेरि  
 बजै दिन रात । सुनत सबदवाके गद जात । मास मास इह रीति बखान । देस देस  
 जस भयो निर्दान । इह विधि सौ बहने दिन भए । बहु रोगी आरोगी भए । राज ग्रही को  
 भूप बिसेष । वाइ पीडित नारी एक । भेषज करी अनेक प्रकार । अधिक रोग बाढो दुख कार ।  
 भेरि सुजंस छुनि आयौ तहां । भावदत्त भूपति पुरजहां ॥ पूछै नृप भेरी की बात । कहै नगर बासी दुखदत्त ।  
 परबी परे मास के अंत । सुनत सबद गद नसैं व्रंत । भेरि बजै जबलौ सुखदाइ ॥ तबलौ प्रांन नासि है जाय  
 निज अमात्य सौ भूपति कहै ॥ इहांउपाय कौनसरदहै ॥ मंत्री कहै चिंतमति करो ॥ एकबात मेरीजियधरो  
 दरबि खरच करिए नृपअबै । जाइ रोग छिन मये सबै । जाके सष्ट सुनत दुखजाय । घसिलगाय गदक्यो  
 नामिठाय । राजासुनि मनभयो आनंद । रोगनास कौपायो छंद ॥ दोहा ॥  
 भेरि अनुचर शीघ्र तवै । लीनों एकबुलाय । मिष्ट बचनतव योप करि । बातकहै इमराइ ॥ \*चौपाई\*  
 कोटदर्व तुम हमसौ लेइ । भेरी सष्ट सुनाइ जु देइ ॥ सुनि किंकर ऐसैं उच्चरैं ॥ नृप अग्या बिनु कैसें करैं ।  
 फुनि । भूपति इम बोलै बैन । सुनु सेवक हम तुम सुख दैन ॥ गुप्ति द्रव्य लै कोटि छुजान ॥ भरिखंड रंचक दे  
 आंन ॥

\* दोहा \*

बात मानि राजा तनी । छप्ति दर्व लै लीन ॥ भेरि खंडकरि छिनक में । आइ भूप कौं दीन ॥ राज ग्रही  
 को भूप तव । लै घसि देह लगाय ॥ बाय बिथा नास तुस्त ॥ देह अरोगित थाय ॥ हरिषित होय नरेस ॥  
 फुनि आयौ अपने धाम । खण्ड खण्ड होइ सब गण ॥ भेरि लोभ बस दाम ॥ भेरि सेवक भरि लखि । चिंता

तुर अति होइ ॥ जो कदापि राजा छुनैं ॥ दुख दे डारे खोइ । वही भेरि की खोलि परि ॥ करि भेरि इक आन  
 बाजै भेरि अनेक बल ॥ रोग नासनहि जान राजा मन में सोचित करि ॥ कहैं कौनइहवात ॥ सुमरन कीनौ  
 देव वहै ॥ आयौ सुर हरषत ॥ कहै राय छुनि देवजी ॥ भेरि गयौ गुनआज ॥ सोहम सो तुममति कहौ ॥  
 अबवह कौनिकाज ॥ देव चवै इष्टत बचन ॥ सुनि भूपति मनलाय । मो भेरी गदनासनी । गई लोभवसिगइ ।  
 यह भेरीहैं कृतिमअर्च । क्यों करि नासै रोग । छुनितराय चक्रति भयौ । बढ्यौ हिण मैं सोग । रोग नसिन  
 भिरि यह । खोये अनुचर मूढ़ । खंडखंड करि लोभ बसि । करि राखी पुनि गूढ़ ॥ धृगहैं ऐसे लौभकौ । धृग  
 अनुचर धृगलोग । धृगइह राज बिभ्रुतिकौ धृगपंचद्री भोग । देव कहै सुनि भूपअव । राज करौ सुखदाइ ॥  
 और भेरि तुमलेऊ अब । सबगुन आगमराइ । भाव दतसुर सौ कहैं । सुनौ देव मुझि बात । राज करत  
 बहु दिन गर । बृथा मनुष भवजात । जाय सिखर परि तपकरौ हरौ पूर्व कृत कर्म । जन्म जरा मृति नासि  
 करि । लहौं मुक्ति गत मर्म् । राज दियौ सुत जेष्ट कौ । संघ साथि लै राय । सिखर जाय करि छुटनमि । व्रत  
 लै तपजुकराय । पाखमास उपवासकरि । सही परीस्याधोर । जिन गुनसता सक्ति सब । ध्यान क्रियौ बल  
 फौर । छुटदत बरसीसपर । कर्म धातिया नासि । केवल ज्ञान प्रकासि करि । कीनौ सिवपुर वास । इह विधि  
 जो नरभावधरि । करै जात्रा मनलाय । इष्टबस्तु पावैं छुरत । सेवकरैं सुरआय । कोडि प्रोषधी फललहैं । छुटसुदत  
 नयंत । सो सब गिरि बदैमनुष । तिहिकल लहैं अनंत । लोहाचार्य मुक्ति मग । इहश्रुत दियौ वताय ।  
 मन सुखसागर पठिनकौ । भाषा रची बनाय ॥

इति श्री काष्ठा संग लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्ये छुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुब्र सागरेण वर्णनं सिद्ध कृद दत्तवर  
 धर्मनाथ त्रिनमोत्तमगमन नामषष्ठसौध्याय ॥ २६ ॥

\* सवैया \*

विघ्न हरन हार सुखसांत के करन दुखनासन जिनेस नागपुर अवतरे हैं । विश्वसेनि नृपतात ऐशदेवी नाम मात मृगकौ चिन्ह तन हेम दुति घरे हैं । घनुष चलीस काय एक लाख वर्ष आयु सहस अवतार सु चिन्ह आयु परे हैं । ऐसे सांतिनाथ जीकौ नमै मनसुख सिंधु उनही के चरन की आसहमकरे हैं ।

\* दोहा \*

धर्म नाथ सिवपुरगए ॥ भए जल दधि जवतीन ॥ शांति नाथ सिवसुख करन ॥ जनम अएतब लीन ॥ जिन के चरनांबुजजुल ॥ नमौं जारि करि दोइ । कहत पंचकल्यान अब ॥ विघ्न सांति सबकोइ

\* चौपाई \*

इहजंबूबर दीप महान । तहां विदेह सो पूरब जान । सीता नंदी मध्य में बहै । अमृत सम पांनी तसु कहै ॥ याम्य कूल दिसिबसैं सुदस । लखि बिभूति लालै अमरेस । पुंडरीकनगरी मनहार । बन उपवन सोभा अधिकार । श्रीयखन नामैं नरपाल । दुर्जन जनकौ हैं समकाल । सहसीमयु रानी अतिसंत । सीलरूप निधि बहु गुनवंत ! राज भांग भोगैं दिन राति । जानैं नहिं काल कित जात । उत्तम कार्य करे मनु लाय । श्री जिन भक्ति घरैं हिय राय । मृतक पुरुष लखि है बैराग । छिनमें राज बिभै सब त्यागि ॥ राज भार जेठे सुत दियौ । जाइ महाव्रत गहि लियौ । जैन महाव्रत दुद्धर धारि । कीनो बृत द्वादस विधि सार । दर्श विशुद्ध भावनां भाय । तीर्थकर पद लै सुख दाइ । उदैं परीस्या औंठे जबै । धरि सम भाव सैं सुनि तैं । आयु वितीत भई इह रीति । व्रत सन्यास धारि अति प्रीति । मरन क्रियौ निज गुन धित देइ । जासौं सिव पुर गमन करेइ । जहं सर्वार्थ सिद्धि बिमान । सिव नगरी लघु लात

समानं । पद अहमिंद्र लयौ गुन धार । ठाढ़े सुर सेवै अधिकार ॥ निर्विकार हिण समता धरै । चरचा सात तत्व की करै । आठ परी सागर तेतीस । तीन ग्यांन जुत बिस्वा बीस । पूख सम सब जांनि जुलेहु । मन बच काय चित निज देह । अंत मास षट आव जौ र्हा । तब जिन पूजा हिण सरदही आगै कथा सुनौ मग घेस । जहां होय अवतार जिनिस ॥ यह जंबूबर नांम सुदीप । लवणार्ण वतिस लखै समीप । भरत क्षेत्र भैं आरिज खंड । सोहैतहं कुरु देस अखंड । गजपुर नांम नगर इक बसै । अमर लोग पुर सोभा लसै । विश्व सेनि नृप राज करंत । बहुत देसके नृप सेवंत । ऐरा देवी ई पटनारि रूप सील गुन लक्षण धारि । ते नर नारि करै सुख भोग । श्री जिनवर शुति जनम नियोग । हरि आग्या ले धनपति आइ । रतन बृष्टिकर नगर रचाय । पछिम रैनि सैन जिन मात । सोरह स्वय लखे सुख दात । उठिकरि प्रात स्नान सिंगार । अलि साथि ले चली विचार । सभा मध्य पति लखि नामि जंबू । अर्द्धासन नृप दीनौ तबै ॥ आगम कारन पूछै राइ । भिन्न भिन्न सब सुपन बताय ॥ ग्यांन चक्षु लखि जांन्यौ भूप ॥ जिन जन्मोत्सव होइ अनूप । और देवी सुनि हरषंत । करै परस्पर नेह अनंत । भादौं वादि सप्तमी जांनि । आइ सक करि गर्भ कल्यांन । कीनौ उत्सव अधिक सुरेस ॥ इति भीति नासी वह देस ॥ छहौं कुलाचल बासनी जंबू । गर्भ सोधनां करती सबै ॥ षट पंचास कुमारी आइ ॥ जिन माता सेवै सुख दाइ ॥ कथा पहेली करत हुलास ॥ इह विधि सौं बीते नव मास ॥

\* दोहा\*

जेष्ट मास अलि अभ पक्ष । चतुर दशी सुख दांन ॥ तीन ज्ञान संयुक्त तत्र । लियौ जन्म भग वांन । नित्र निज चिन्ह विचार सुर । आए चतुर निकाय ॥ जन्म कल्यांन करि सबै । निज निज

धांन किजाय ॥ सुद्ध सुवर्ण समानतन । सांति नांथ जिननांम ॥ बालपनै कीडा करै । सब जनकै सुख  
 धांम । आयु एक लख बरसकी । तजुज चाप चालीस ॥ बाल केलि मै तेवरस ॥ गए सहस पचीस ॥  
 दक्षन पग मृग चिन्ह सुभ । दस अतिसै जुत देव । विश्व सेन मुत तरुन लखि । करत सुरा सुर सेव  
 पानि ग्रहन करि भूष तव । क्रियौ राज अभिषेक ॥ सक सुरा सुर मिलि करै । जै जे धोष अनेक ॥  
 जनभ्यौ आय गेहमै । चक्र रतन अभिराम ॥ जिनवर चक्री मदन पद ॥ सांति नाथ सुख धाम ।  
 आनि फिछिह खंड मै चक्र रतन की जानि । एजिनेद्र पदवी धरै त्रिभवन आग्या मांनि ॥

### \* चालछुन्द \*

सबरे छहखंड जो साधै । चक्री जनसवंनि आराधै । तबचौदह रतन जो पाए । नौ निधि आयुनेत  
 आए । चक्रवति बिभौ अधिकारी । तिह सौं जिन लक्ष्मीभारी । किमबरनौ राजबिभूत । मेरी अति बुद्धि  
 कप्रत । तिसतै सुगतै सुखसागरै तवंवर्ष पचासहजारै । इकदिन वैठेहरिपीठे । चपला चमकत लखि जुगदीठे  
 इहजग बस चंचल जान्यौ । बैराग हिएमै आन्यौ । तवलौकांतिक सुरआवै । जबदादस भावन भावै ।  
 थुति करिबिनिज पुरजाई । सचीयत तवसिव कल्पाई । गजातट अटवी भारी । तहं जाइ भए बृतधारी ।  
 मनपर्यै ज्ञान प्रकास्यौ । जैजै जे देवनि भास्यौ । जादिन तपकल्यानक कीयौ । अपनौं अपनौं मंगल लीयौ  
 बोइदिन व्रत करि जिनराई । सोमनस नगरतवजाई । पिय भिष्ट नृप जिनवर देखे । नभिं जन्म सुफल करि  
 लेखे । गोडुग्ध अहार जो दीनौ । थुति करि शुभ सचै कीनौ । सुरपंचाचय बखानै । वनजाय धर्यौ प्रभु  
 ध्यानै । तबकीनौ बिबिधि प्रकरी । जिन संयम दुद्धरधारी । मर्जाद जो षोडसवर्ष । छदमस्थ रहे जिनमर्ष ।  
 दसमी सुदि पोष महंत ॥ प्रभु ज्ञान भयौछु अनंत । समवाद सरनकी रचना । धनेदेवकरी अति रचना ॥



\* दीहा \*

देवमनुज खग व्योमचर ॥ आए सब तिहिं थान ॥ मिलिसक्रादि करें । सबै श्रीजिन ज्ञानकल्यान ।  
तीन कली बानी खिरैं ॥ भव्य जीव हित हेत ॥ जे हिण्धारैं भावसौं ॥ ते पावैं सिव खेत ॥ ( आडिल )  
सांतिनाथ जिनराइ सांति करताभए । करि विहार बहु देस सिखर उपरगए । रहिमास मिति आयु जो  
गरोय न कीयौ । जहं प्रभास बरकूट ध्यान उह धरि दियो \* दीहा \*

सितवैसाखी प्रथम दिन सांति गए सिवलोक । मन सुखसागर भावसौं करमु कलित दे धोक ।  
वही कूट परि सिव गए ॥ मुनिवर और अनेक ॥ श्रुतलाखि कछू संष्या कहौं ॥ जितनौ हिण् विवेक ॥  
\* आडिल \*

कौडा कोडि एक कोडि नौ सतर नौ । कुनि नौलाख प्रमान जानिए सहस नौ । नौसैं अधिक  
निन्याणवैं मुनि इतनें कहे । भए निरंजन सिद्ध आपनैं गुनलहे । सोप्रभास बरकूट नमत जो भावसौं ॥  
सोनर सुरगति पाय लहै सिवचावसौं । नकं प्रमुगति नास करैं छिनमें । सही धरै हिण् सम्यक्तजैन श्रुतिहमकहि ।

\* चौपाई \*

कूटप्रभास कथा सुखदाइ । जात्राकरि सुदर्शन राइ । सोम सरम द्विज वंदन कियौ । फल निदान  
बंदन कौं लियौ । सोमुनियौ इक चित लगाय । बरनन करौ जथावतराय । जंबूदीप अन्नूपम  
सार । भरत क्षेत्र तहं धनुषाकार । देस विरंच मित्रपुर बसैं । नरनारी अति सोभा लसैं । नांम सुदर्शन  
राजै भूप । रानी जैसेना बहुरूप । बहुत विभूति भूप कैं भई । रांग सेग दुखवाधा गई । दंपति राज भोग  
सुख करै । काल जात हिय भैं नहि धरै ॥ इक दिन भवन क्रीडानृप गयौ । सुनि अनंत धीरज लखि

लियौ । केवल ज्ञानलसैं अवदात । जैसै सष्टहोहि दिनराति । तिनकी तीन प्रदक्षणदर्ई । हिए भगति आति । अदभूत भई । नमि कैं पूछैं निज परजाइ ॥ कौन पुन्य इहलक्ष्मी प्राइ ॥ कहे केवली मुनि नरनाथ ॥ पूरव जनम चलाए साथ । सिपरसुमेद बंदना करी ॥ पूजादान भक्ति बहुधरी । जोनर मन बचकाय समेत ॥ जात्रा करैं लहैं सिवप्रेत । इतनी विभौ कौनसी बात ॥ जो लुम राइ पाइ दरघात । इह निवि सुनि नृप मनहि विचार ॥ करैं राज पुनि सिवदातार । करि नमोस्तु आयौ निज गेह ॥ करैं संघ सामग्री जेह । तदनन्तर इक कथा बिसाल । सोम सर्पद्वज की भूपाल ॥ सुनौ श्रवन दै गोतम कहै । जातै भव्य मुक्ति मग लहै ॥ योदनपुर इक नगर मनोग । धन धान्यादि सहित सब लोग ॥ सोम सरम भूसुर धन हीन । तहां बसैं आति आलुर दीन ॥ दुःखकर अटवी अष्टै अनैक । जुग चारन मुनि लखि दिन एक ॥ धाइ पाउ में दीनों सीस । गद गद जल्यौ भूसुर ईस ॥ दुखित देखि दया मुनि भई । श्री जिन धर्म देसनां दर्ई ॥ जात्रा करौं सिपर की जाइ । तव मन बंडित लक्ष्मी पाय ॥ सोम सर्प नमिकै मुनि राज । चलयौ सिपर बंदन के काज ॥ नधैं मित्रपुर पहुच्यौ जाय । जवैं सुदर्सन सिंघ मिलाय ॥ पूजा करैं सुनै श्रुति जैन । सोम सर्प उपज्यौ हिय चैन ॥ राय सुदर्शन भाव समेत । संघ भगति अपनै मन देत ॥ पहुंचे सिपर सुमेर गिरीस । कर जुग जोरि नवावैं सीस । पूजा करत भयौ वैगग । भूप सुदर्शन परि ग्रह त्याग । अपनौ राजपुत्र कौं दिथी ॥ कूट प्रभास सीस तप लियौ । सोम सर्प इह देखि लुरंत । धर्यौ महाव्रत मन महं संत । जात्रा हेत एकखग आइ । भर विभूति जुत अति सुखपाइ ॥ सो निज नारि सहित तिह थांन । बंदत फिरैं टोक भगवान ॥

\* दाहा \*

सोम सर्प लखि खग विभौ । कियौ निदान जो बन्ध ॥ जात्रा तपफल होइ सुधि । छूटै दालिद

दुग्ध । आशु अन्त करि प्रांन तजि । विजयाद्धं उपजाइ । है खगेस सुत-विभौ लहि । कुनि जात्रा कौं आइ । भई भवस्थिति सिपर लखि भयो हिये वैराग । पंच महाव्रत आदरैं । विभौ करि सब त्यागि । और अनेक मनुष्य तहि । लीनौ चारित भार । करि करि तप सिव पद लहौ । पायौ सुख मंडार । जो नर पूजैं भाव समेत । बसौं कूद प्रभास महंत । कोट प्रोषधी फल लहै । गदैंत भव पाय दहंत । सिपर महातम ग्रन्थ यह । कीनों लोहाचार्य । मनसुख हागर कठिन लखि । भाषा रची सुआर्ज ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्येपुसमेदाचल महात्म भाषायामन सुद्धसांगरेण वर्णनं सिद्ध कूटप्रभास सांति जिन मोक्ष गमनं सप्तदसमो परिच्छेद ॥ १७ ॥

### \* सवैया \*

ग्यानधर नाम कूट सिवभग पग दियौ अजाकौ चिन्ह अवतरे गजपुर में । सूर सैनि जनक सु कनक समांन तन श्री मती सुमात है । निपुन दया धर में । वर्ष पंचासनवैं सहस आशु पैतीस जुचाय । ऊंची देह केलि करी बालसुर में । ऐसे कुंथनाथ जिन कूंथ वादि जीव रक्ष मनसुख सिंधु नमि हरपित उरमें ॥

### \* दोहा \*

शांतिनाथ सुकै गए । अद्वायल्प वितोत । कुंथ नाथ अवतार लेकरि प्रगट वृष रीति । कुंथनाथ पद पंकज कौ । मौमन मधुकर रूप । पंच कल्यांनक बरनि हौ सिवपद सादन भूप ॥ \* चौपाई \*  
जंबूदीप अनूपमथान । तहां विदेह सुपूरु जानि । बहै बाहनी सीतानाम । मध्य प्रवाहनीरगुनधाम । तकिदक्षन देसबसाय । बत्सदेसनि अधिकाय । नाम सिंधपुर नगर मनोग्य । जहांबसैं सब उतिमलोग । सिंधनांम भूपति महाराज । करै राजपुर जन सुखकाज ॥ सिंधसमानं पराक्रम जानि । चौदह विद्या करै बखान । प्रसम भाव

उपलब्धी दिन एक । जब जिय धार्यौ परम विवेक । दियौ तबुजकौ तवहीं राज । लियौ महाव्रत आतमकाज  
 अठईस मूल गुनचरै । पटमाया जिय रक्षकरै । पालै सील बाडिनौ धारि । अतीचार जियधरै विचार ।  
 दर्से त्रिमुद्ध आदि भावना ॥ भावै सुनि आतम पावना ॥ तीर्थकर पद बांध्यौ गैत । जहां छियालिस  
 अतिसे होत । दुछर व्रत धरै सुनि राय । अंत समैं संन्यास धराइ । क्रिये भाव सः सौं अबिरुद्ध  
 प्राण तजे मन वचन मुद्ध । सर्वार्थ बुद्धि अभिराम । पद अहर्मिंद्र लयौ सुख धामा तेतीस जलवि  
 आयु तहं लही । और कथा सब पूरन कही । रहौ आयु षट मास प्रमान । तब जिन पूजा रची सुजान  
 अब मुनि श्रोनिक जन में जिनस । बर्नन करै होय जिम देस । जंबू दीप भक्त जहं खेत ॥ उत्तम जन  
 उपजावन हेत । कुर जंगल इक देन बसाय । नाग पुगी नगरा मुख दाय ॥ सूर सेन नामा भूपाल ॥  
 सब जीवन पै रहै दयाल । श्री यमतीरानी मन हार ॥ सील रूप सुत मदा अचार । जिन के उर तीर्थ  
 कर होय । जिन थुति करन सकबिकोइ । वह पुर धनद आइ पुनि रच्यौ । मनि मानिक मौतिन करि  
 सच्यौ ॥ तीन काल बरपावै रत्न ॥ श्री जिन जनम करै सच जन । श्रावक कै तिथि दसभी निसि  
 माता पोडन सुम निहार । उठि करि प्रात जाय पति पास । भिन्न भिन्न सुभ स्वप्न प्रकास । सूर सेन  
 सबके फल कहै । बडे भाग जिनत सुत तुम लहै । इतने में अमराधिप आइ ॥ गर्भ कल्यांन कियो  
 हरषाय । देवनि कौ हरि आइसु देइ । नाक लोक पुनि गमन करेय । देवी सेव करै बहु मात । गत नृत्य करि  
 अति हरषात ॥ गूढ पूरन पूछै नर नारि ॥ जिन अंबा उत्तर देसार । क्रम सेती बीते नव मास । पूरन  
 भई गर्भ की आस । सित बैसाख प्रदिपदा जानि ॥ आइ इंद्र करि जन्म कल्यांन ॥ \* अडिल \*  
 दंती परि हरिल्याय थापि जिन राज कौ ॥ सूर गुर जाय नह्यायन त्रियौ निज काज कौ ॥ पूजे

ले बसु दर्ब आय राज पुर जबै ॥ नृत्य क्रियौ सुर रायगयी थानिक तबै ।

\* चौपाई \*

सुर निज बाल रूप धरि तहां । जिन बालक हरषावै जहां ॥ केलि करावै धरि खग रूप । जिनकर क्रीडा करै अनूप । पंचास हजार उतन एक लाख । आयु कुंथ जिनवर की भाष ॥ उन्नत काय चाप सै तीस । हेम बसन तन विश्वा वीस ॥ द्वाविंशति हजार मन आंन ॥ सात सतक पंचास बखान । इतने वर्ष बाल पन गए । फुनि विवाह करि चकी भए । चक्र नियोग विभौ सब भई । दिन विभौति अधि की बरनई । राज क्रियौ श्री जिन सुख दाइ । मुर नर खग मिलि सेव कराइ । सोढे सैतालीस हजार बीते बर्ष गज पद धारि । हरि विष्टा गैठे दिन एक । मौन धारि हिए करत द्विके । इहत्तो राज दुःख भंडार । अथिर रूप लखिए संसार ॥ इम चिंतत उपल्यौ बैराग । द्वादस भावनसौ चित लाग ॥ इतने भौ लौकांतग देव ॥ अस्तुति करी आइ स्वमव । तागन तान कहे लुमनांथ । तुमहीहौ प्रभु शिवपुर साथ

\* अडिल \*

इह विचारिमन मांहि करै कौ लुप विना । भिवपुर सारथ वाह एक तुमही विना । करन योग इहवात दयानिधि जानिए । अष्टकर्म आत दुष्ट पुष्ट पुष्ट सबभानिए ॥ \* दोहा \*

इहविधि और अनेक थुति । करि जिन थानिक जाइ मुक्ति गमनी पलिकी । सकथापि जिनराइ । मुर सरिता तट विपनमै । सकल ग्रंथ पाढ़िहार । पंचगुष्टिक चलौच करि । धरेमहा व्रतसार । मनपर्यै अब बौधलहि । निज गुन भिन्न कराय ॥ सहसराय जिनचरन नामि । उत्तम तपसुद्धराय । मिथुन दिवस श्री कुंथ जिन । धखौ आतमा ध्यान । गए सुरामुर खग मनुज ॥ करि करि तपकल्यान \* चौपाई \*

असन हेत तवचले जिनैस । मंदिर पुर बरदत नरेस । देखे श्री जिन इर्यापंथ । सोधत आवत हैं निरग्रंथ ।

नौधाभक्ति करी तबसार । दीनों तहं प्राशुक आहार । असन अंत कहि अखैं निधान । कांनन जाइ धर्यौ  
 मुनि ध्यान । नृपग्रह पंचाचर्य करंत । सबसुर भृपसुजस गावंत । साढ़ाद्वादस कौंडि सुरतन । बरषाए नृपघरि  
 करिबल । द्वादश बिधि जिनतप तापिताप । निर्मल करी आत्मा आप । द्वाविंसत उपसर्ग सहंत । जिस दिन  
 उदै जोगिआवंत । थिति छदमस्थ जो षोडसवर्ष । रहे छंथ जिन तजिदुखहर्ष । ब्याख्यौ कर्म धातिथानासि  
 केवल ज्ञान सूर्यपरासि । लौका लौक विलोकनि कियौ । समोसरन धनपति रचिलियौ । द्वादस सभा  
 बापिका तूप । जिनमंडप तिहि मध्य अनूप । तीन पीठ सुभजडित जडाव ॥ श्रीजिन अंतरीक सिसुभाव ॥  
 उपरि तीन छत्रराजन्त । तिहि लखि त्रिभवन दुतिलाजंत ।

\*दोहा \*

चैतथुकल तृतियादिवस । आइसुग सुरराइ । केवल वल्यानक करैं । कुनि निज थानिक जाय ॥

\* चौपाई \*

तीनगल जिन बानी होइ । ससैं मेटन समर्थ सोइ । आदिस्वभू गनधरजांनि । औरसबै पैतीस वखान  
 साठि सहस बस जु कहे । देबी देव असंखलहे । करि बिहारि बहुदेस विदेस । सेवैं शेष धनेस हुंस । आयु  
 रही इकमास जिनन्द । आय सितर सुमेद सुछन्द । पुन्य पाप दोन्यूसम भए । नसुरखग पसृनिज थलगए ।  
 रचना समोसरन की तबै । भई बिनास छिनकमै तबै । कूट ज्ञान धरुपर जाइ । जोगरोध कीनों जिनराइ ।  
 जरी जेवरी समजे रही । कर्म प्रकृति जहं सबजन दही । आइ उकल समय समान । अचल भए सिवमैं  
 भगवांन । सम्यक्तादि मुष्य गुनआठ । तेई करन जोग मुखपाठ । औरसुगन गुन सहित अनेक । को कवि  
 बरने रसना एक । सितबैसाख सु पाडिवा जानि । भयौ छंथ जिन सिव कल्यान । कूटज्ञानधरपर जिनअर्च ।  
 रजपलाय तनेकेसरअर्च । सुरपति गीत नृत्य करि तहां । कहै सुरासुर जैजै तहां ॥ उतसव करिते गए सुजान ।

अब मुनि संस्था कहाँ बखानि । कोडा कोडि छथानबैं कहे । कौडि छथानबैं उपरि लहे । सहसछथानबैं लाख बतीस । सात सतक ब्यालीस मुनीस । निर्मल करि आत्म विधि नास । कीनों मुक्ति पुरी मैं बास । सोई कूट मैं जो कोइ । कोडि प्रोषधी फल तिस हेइ । नरक पशुगति नास छुरंत । नरसुर गति लहि मुक्ति बसंत । जो जात्रा करिसिवपदपाइ । अवातिन कथामुनौ नराइ । जंबूदीप विषै सुखदैन । भरतक्षेत्र कहियतु हैं अैन देस मनोहर उतिम लसैं । अति छुंदर नर नारी बसैं ॥ भूप जसोधर राज करंत । पुत्र सोमधर भयो छुरंत ॥ पाय पिता पद पर उपगार । करन सील सुख भोगैं सार । महा विवेकी मन्न गुन धरैं । जिन प्रजा गुर सेवा करैं ॥ अ्यारि प्रकार देइ सो दान । राज नीति मैं परमसुजान ॥ क्रीडा हेत गयो वन जहां महा मुनी छुर देखेतहां ॥ जाइ निकट नमि छुगपद कंज ॥ अस्तुतिकरि निज पातिग भंज । धर्म वृद्धि दीनी मुनिजबै । तिथि है प्रश्न करी नृपतैव । कौनधर्म सेवन सुखहेइ । किहि विधिमुक्ति लहे नरकाइ । मुनि मुनि बोले अमृतबांन ॥ सुनौ रायतुम धर्म बषांन ॥ दर्शनग्यांन चारित्र जो तीन । करै प्रभावन समकितलीन । श्री जिन चर्न धरैं जिय भक्ति ॥ चौविधि दांनदेइ निजसक्ति ॥ जात्रा करैं सिखर सुमेर । धर्म चक्र पूजा विधि हेर । धरसनादि धरै बसु अंग ॥ लहे मुकति तजिकै सब संग ॥ विन सम्यक्त जीव नहिं तिरै ॥ इह विधि मुनि नृपसो उच्चरैं ॥ भव मुनि कहाँ कहै इमराव । किहि विधि उपजै सम्यक भाव ॥ फेरि तपो निधि बैन उचार । सुनौ भूप निज चित दे सार । श्री जिन मंदिर करैं उछाह । पूजा करि नरभौ लै लाह ॥ ब्यारि प्रकार संघ लै साथ । जात्रा करैं सिखर गिरि नाथ ॥ जैन सिद्धांत सुगुरु सुख सुनै । सातें तत्व चरचा जिय गुनै । तब उपजै सम्यक्त सुभाव । परधा तम देखनि इहि भाव । मुनि नेंद्र मनि हर्ष अपार । मुनि पद नमि घर आइ विचारि । प्रथम कियो श्री जिनवर

धांम ॥ बिंब भराय खरचि कै दांम ॥ संघ बुलाय प्रतिष्ठा करी । अपने हिए भक्ति अति धरी । नीद देखि-मब संघ समेत । चलयौ भूप जात्रा कै हेत ॥ सिखर सीम मेथा धर कूट । करि पूजा अनमो रम लूट ॥ आइ सुरा सुर नर खग जहां । थांन थांन पूजै जिन तहां ॥ गिरि परि ध्यान धर सुनिराज थान थन ठोहे हिन काज । देखि सोमधर गिरि रमनीक । जान्यौ सिवपुर की इह लीक ॥ समकित भाव प्रबल तब भए । चारित मोह कर्म नसि गए ॥ उपज्यौ प्रसम दिए नरराज ॥ करन विचार्यौ आतम काज । जेठे तबुज राज पद दियौ ॥ आपुन पंच महा व्रत लियौ ॥ विविधि महा तप तपियौ राज । केवल ज्ञान भान उपजाइ । कूट ज्ञान धर सीस महान । लियौ सोमधर सुनि शिव थांन ॥ और अनेक महा सुनि ईस । लए सुक्ति धियनां धर भीस ।

\* अडिल \*

सो शिवदायक भिखर प्रथान वखानियौ । असौ क्षत्र पुनीति और नहिं जानियौ ॥ जो नर भाव समेत सुंगर बंदन करै । नर सुर पद सुख भोग सुक्तिरमनी बरै ॥

\* दोहा \*

सिखर क्षेत्र महिमां अठरु ॥ लोहा चार्य बरन ॥ भाषा निज गुन लखि रची । मन सुख सागरसग्न इति श्री काण्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्ये सुपेदाचलभाषा यामन मुद्रमागरेण वणनं भिद्वकूट ज्ञान धरा परकुंथ

जिनमोक्षगपन नाम अष्टादसमेः परिच्छेद १८

\* सर्वैया \*

नृत्य नाम झूटसीसौ भए हँ सुकति इस हस्तनागपुर अवतार तिन लियौ हँ । जनक सुदर्शन है मित्र सैना जननि है स्वर्न सम तन मीन चिन्ह कहि दियौ हँ । तीन चाप ऊंचिकाय चौरासी बरस आप जाइ बन तप करि ज्ञान अमि पीयौ हँ ॥ असे अह नाथजी कौ नमि मन सुख सिंधु जिन



गुन गाय सुभ संचै बहु कीयौ है ।

याउ यल्य बीते तहां गएकुंग सिव थान । आइ सची पति अहांजिन । कियौ जन्म कल्यान । अरह जिनंसुर चरन जुग । बंदौ मनबचकाय । गर्भ जन्म तपज्ञानसिव ॥ बरनौ हिय हरषाय । \*चौपाई\*

जंबुदीप जगत बिख्यात । तहं पूरव बिदेह सिवदात । सीता अपगाउतर कूल । कक्षदेस सोहै मुखमूल ।  
क्षेमपुरी नगरीहैं तहां । धनपति राज करै नृप तहां । धनरेखा रानी जुतराइ । भोगे भोग सजन सुखदाइ ।  
नगर नारि नरसुखमै रहैं । मन बंछित सब जन धनलहैं । प्रजा पाल उठि देइ असीस । राज करो राजी अब नीस ॥  
वनआनंद नगर तटलसैं । बंदन बन छवि लखि मन हसैं । अरह नंद जिन के बलधारि । समोसरन आयौ सुखकार ।  
सुनि धनपति मनहंरिषित होइ । करि परीक्ष बंदन दिसि जोय । लैपरिवार चलयौ नरनाथ ।  
दुर्बि लिए बसु प्ररजन साथ । जाइ प्रनामि पूजायुतिकरी । अपने हिए भगति आतिधरी । नरकोठे बैठेनरनाह ।  
दुबिध धर्म सुनिवे कीचाह । ग्रहआचार प्रथम सुनि लियौ । गुनि बृष सुनत प्रसम उपजियौ । राज दीयौ सुत कौ तिह थान ।  
लियौ चरित्र प्रनामि भगवान । धनपति मुनिपतिपदवी धारि । सही परीस्या तपकरि सार । बांनी ग्यारहअंग अधीत ।  
त्रसथांवर जिय सौं आति प्रीति । सोरह कारन त्रत धरिजबैं । तीर्थकर पदवांध्यौतबैं । अन्त समैं धरि कैसन्यास ।  
सर्वार्थ सिध कीनीं बास ॥ पद अहमिंद्र लख्यौ तहं जाइ ॥ तेतिस जलधि आशु मुखदाइ । पूरव सम बरनन और ।  
जांनि लेहु बुधि जन बुध गौर । सात तत्व चरवा दिन रैन ॥ करत आयु बीती सुख दैन ॥ रही सेष पट मास प्रमान ॥ बसु बिधि पूजा रचि भगवान ॥ \* दोहा \*

सुनि मगधेस नरेस अब ॥ बरनौ जिन अवतार ॥ अरह नाथ जिन गुनकथन । सिवलक्ष्मी दातार ॥

## \* चौपाई \*

जंबूद्वीप लसै अभिराम ॥ भरत क्षेत्र में आरिज नाम । खंडतहां कुजंगल देस । महिमा कहिनसकै अमरेस ।  
नागपुरी नगरी तहंबसै ॥ घरघर धनधान्यादि लसै ॥ सोमवंस में सबगुन लीन ॥ राइसुदर्शन अति लवलीन ॥  
नारि मंत्र सेना सुखदाइ । जिनके उरनिज उपजे आइ ॥ करै राज सुख संपति भोग ॥ रहै अनंदित पुरके  
लोग

## \* दाहा \*

भब्य जन्म जिनशहरि जानि पठाइ धनेस । रचि पुरआगम मान मित थुति कैं नरेस ॥ तीन समै  
षटमासलौं । करै रत्न की बृष्ट । आति अद्भुत रचनारची । और न यासम सुष्ट ॥ \* चौपाई \*

इकदिन सौंध मिषरि नृपनारि । उठि प्रभांत चित है अहलाद ॥ जाय सुपनपति सौ बरनए ।  
फल बिचारि आनंदित भए ॥ फागुण सुदी तीज हरिआइ । गर्भ कल्यांनक करि गुनगाय । सेवाकरनि  
राखि सुरसता । षट पंचास प्रमिति गुन जुता ॥ आपुन गयो इन्द्र सुरलोक । त्रिभवन जिनभिद्र  
द्वै धोक ॥ सब निजजोग कुमारी देव । करै भक्ति जिन माता सेव ॥ सरम कथा दोहा चौपाई । काव्य  
पहेली कहत सां भई ॥ क्रिया करम करता करनाथ । वैनै स्वर व्यंजन बहु लोय ॥ कहत श्लोक निरोष्ट  
बिचार । अन्तर बहिर्लपकासार । गीत नृत्य बीते नवमास ॥ जिन जनमें जगपूरन आस । अगहन  
सुदि चौदसि दिन जानि ॥ आइ इन्द्र करि जन्म कल्यांन । अरह जिनेस जगत जयवंत ॥ सुरगिर  
से आए पुर अन्त । थापि जिनेस जननि के अंक ॥ तांडव नृत्य करै अति वंक । बालक सुरसेवन तजि  
तहां । गयो इन्द्र अपने पुर तहां । सुरसिसुजिन सिमु सेवा करै । क्रीडा करि सब जनमन हरै ॥  
जंबू नन्द सम देह दियन्त । बरन्त चिन्ह लहौं नां हंत । दक्षन चरन मीन मनहार ॥ उर्द्ध रेख पगतली

निहार । पदम चक्र असि चाप मनोग । कलस दाम तोरन हय जोग । गज स्वस्तिक अंकुस मन  
 बिंध । चमर छत्र रेषा अनुसंध ॥ इनि आदिक लक्षण तन लसैं । एकहजार आठ हुख नसैं ॥ सहस वर्ष  
 चौरासी आशु । तीन चाप उन्नत हैं काय ॥ निरखि देह दुति अहुत भूप । कोट कामही भंत सरूप ॥  
 इरुईस सहस वर्ष परजन्त । बालकोलि कीनौ भगवंत ॥ सक्त भूप मिलि क्रियो विवाह । सुरपति पद  
 कौ लीनौ लाह । सहस वर्ष ब्यालीस प्रमान । राज कियो अबिचल भगवान । नीत विनत प्रजा  
 पति पाल । इति भीतिपुरजन सब टाल । रत्न चतुर्दस नौ निधिसार । अर्हनाथ चक्र पदधार  
 पाह अनौ वृत धारी धार । तीन ज्ञान सुत गुन गंभीर । इक दिन सभामध्य थिति जवैं । स्यांम  
 घना घन देखे जवैं । छिन में बिनसे लखि जिन राइ । अधिर जगत जान्यौ दुपदाइ । अति वैराग  
 दिए मैं भयौ । द्वादमांनु प्रेक्षा चित दियौ । लौकांतिक निर्जलव आय । अमृतोत करि वैराग दिवाय ।  
 गए देवलौकांतिक जवैं । इन्द्र पालकी ल्याए तवैं । भक्ति सहित वैराग जिनंद । गए महावन करत  
 अनन्द । भए दिगंबर परिग्रह त्यागि । निज चिहूय ध्यान तव लागि । नृपति हजार जात पद धार ॥  
 करि नमोस्तु तप लीनौ सार । अरहनाथ सब परिग्रह टाल । मन पर्यै उपल्यौ तत्काल । अगहन सुदि  
 दसमी सुख दाय । भए भूप जिनवर मुनि राय ॥ तप कल्यानक मधवा कियौ । सुर नर खग पसु  
 हर्षित हियौ । निज निज थान गए सब जीव । द्वे दिन मौनि ध्यान धरि देव । चले असन कारन तव  
 एव । पाठ अढाई सुद्ध निहार । धरैं चरन चितदया सुधारि ॥ गजपुर जाय राज पद देखि । ऐरा नृप  
 जिन आवत पेलि । हैं सनमुख कजोरि नरेस । अस्तुति करि नाम भूप जिनस । आगैं हैं मंदिर  
 ले गयौ ॥ तिष्ठ तिष्ठ कहि आसन दियौ । प्रासुक धेनु खीर अहार । नौधा भक्ति सहित दे सार ।

करि भोजन मुख अखि निधान । तिहि औसर बोल भगवान । आइ अमर जे जे उचरै । पंचाचर्य  
भूप ग्रह करै ॥

\* चाल छंद \*

फुनि आए श्री जिन बन मै ॥ आत्म अवलोकि निम नमै ॥ लखि निर्जन प्रसुक थान । धरि  
ध्यान खड़े भगवान ॥ सुद्धात्म गुन सुचारै ॥ पूरब क्रत फंद उचरै । निश्चैन यलोक प्रमाणै विवहार  
देह मम जानै । निश्चय जय जीव अंध । विवहार पर्यौ जिम धंध । निश्चय गुन तीत्र अनंत ।  
विवहार उदै आवंत । जिय धरै चतुष्टय व्यार । सुद्ध प्रांत व्यारि प्रकार । इनको नहि धरै जीव ॥  
दुख सैह निगोद अतीव । जग जौनि चौरासी लख । बह कष्ट सैह विधि साख ॥ निज गुन धरै जीय  
वंही । बंसु कर्म नसैगे तबही । इह विधि जिन मनहि विचार । तप कीनौ सिवदातार । वसु  
दुगुन बरस छंदमस्थ ॥ कर कर्म घातिया अस्थ । \* दोहा \*

कातिग सुदि एकादसी । उपज्यौ केवल ग्यान । हरि आयसलै धनंद ॥ तब समोसरन रचिअंद ।  
पूरबे सम सब जानिए । कोट पीठ बन तूप । बीथी गो पुर नृत धर । सोभावनी अनूप । कुम सैनि  
आदिक तहं गनधर तीस लसंत । व्यारि ग्यान जुत जिनसु । धुनि चर्नन बेद करंत । देवी देव अनंत  
जहं । करै नृत्य गुन गांन । नर नारी पूजा करै । अंतरीरु भगवान । तीन काल बानी बिरै । सब  
जन संसै हरन । मन सुख सागर नमहि तब । अरहनाथ जिन चान । देस विदेस विहार करि । बृष  
उपेस करंत । आयु रहीं इक मास जब । सिलर गए भगवंत । \* चोपाई \*

नाटिक कूट भीस जिन राइ । जोगरोध धरि ध्यान सुभाइ । चैत कृशं दिन अंत ॥ जानि । भए  
सिद्ध अविचल भगवान । आए सुरासुर सक नरस । लै पूजो याहार सुभ भेस । कया हुतासनकरि

रजवृद्धि । निज निज मंदिर गए अनंदि । सौनाटिक बरकूट प्रसिद्ध । वंदन करैत लहै सिवशिद्ध । नरक पसुगति  
 नासन करै । श्रीजिन सासन इमउच्चरै । गएसुकृति सुनिवर तिहिधान । तिनकी संख्या करौ बखानि । निन्यानबै  
 हजार सुजान । लौसैनि वै इहपरमान । इतने की में संख्या लही । नाटिक कूटसुकृति मगसही \* दोहा \*  
 नृत्यकूट जात्रा करी । सुप्रभा नाम नरेस । तासुकथा मगधेस सुनि । भव्यलहै उपदेश ॥ \* चौपाई \*  
 सकल देश सबवै परधान । नगर भद्रपुर तामैं जानि । भूप अनंद सैनि हैजहां । सुखी प्रजासब दौसै  
 तहां । बिजया पटरानी जूतभूप ॥ । राजभोग सुखकरै अनूप । तिनकैसुप्रभ सुतइकभयो । नृपति राज  
 पदताकौं द्यौ । आपजाइ धन दिखालेइ । आवागमन जलांजुलिदेइ । सुप्रभ राजकरै सुखदाइ । प्रजाधर्माराग  
 चलिजाइ । एकसमैं निजसभामझारि । जिति है धर्मकथाविस्तार । तिहि अवसरवनरक्षक आय । वेणपात्र  
 भरि पंकज ल्याय । निजकर एक सुमन नृपालियौ । फेरत छतक अमर पेधियौ । भयो हिऐ वैराग्यअपार । राजा  
 मनमें करै विचार । ताही समैं एकधुनि राज । आए तहं असन केकाज । नौवाभक्ति करी तवराइ । प्राशुक  
 भोजन देमुनिराइ । कुनि श्रुतिकरि श्रुति कीनीभूप । पूछै धर्मा धर्मसरूप । मुनि बोलिसुनि क्षिति पतवैन ।  
 जिन थापित बृष है जग ऐन । पूजा दान दया दूतवर्न । सीलसुतप ए सब अवहर्न । कल्याणक जिनवर  
 जिहथान । जात्रा करत होइकल्यान । सिखर महातम वर्न मुनीस । सुनि नरेस मुनिनाथी सीस । धर्यौ  
 ध्यान मुनि वनमें जाय । चलयौ सिखर भूणति हरषाय । व्यारि प्रकार संघलै साथि । पूजा दान करत  
 नरनाथ । जहां जाय नमि नाटक कूट । सबगिर वंदित पातिगहूट । तप कारन सुतकौंदेराज । लीनौ दूत  
 निज आतम काज । अचिरकाल में त्यागे प्राण ॥ लेहे स्वर्ग सोलह विमान \* दोहा \*  
 सोपुनि जंबूदीप में भरतक्षेत्र ऋजु खंड । सुरम्य देश योदनपुरी । नृप श्रीखंड प्रचंड । तिनके सुत है

सुगन जुत सुकंभन नाम प्रसिद्ध । जात्रा सिखर सुमेरकर । लहै मुकतिपद रिच्छि । नाटिक छूट प्रसिद्धसो  
जो बँदै मगधिस ॥ नरपसुगति नासकरि नरगति लहै सुरेस । धन्य भाग वे मनुजहँ । बँदैसिखर सुमेर ।  
मनुष धारि भवसिख बँरै ॥ जन्म धरै नहि फेर ॥ कोटिछ्यानरै प्रोषधी । बरत कियौ फल होय ॥ सोई  
नाटिक छूटकौ बँदनकौ फलजोय ॥ ऐसे सिखर समेद गिर ॥ महिमा कहिनजाइ लोहाचार्य कृतनिरंखि ॥  
भाषा सुगम बनाय ॥

इति श्री काथा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेसुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामव सुद्ध सागरेण वरणने नाटिककूट परअरहनाथ  
जिनमोक्षगमन एकोनवधिस परिबंद ॥ १९ ॥

### \* सवैया \*

जाके पद पूजत सुरेस सतभावसेती कुंभरांय जनक सुरेखा देव माईहँ ॥ कलस चरन चिन्हहेम के बरन  
तनयनुष सची सुमभ उन्नत सुकाईहँ ॥ मिथुला जनम आइ साढ़े दसआयु हैसंबल सुकूट सीस सुकति  
सुमाईहँ ॥ ऐसे माछिनाथ सुबिधि मछ मछडारै मनसुख सागर नमित तसु पाईहँ \* दोहा \*  
वर्ष किरोरहजार जब बीते अरह जिनंद । मछिनाथ जिनजन्म लै ॥ कीनौ त्रिजग अनंद ॥  
तिनके चरनांबुज सुनामि ॥ सारद सुमरि सुभाइ । गर्भ जन्म तपज्ञानसिव । बरनै हिए हरषाय ॥  
\* चौपाई \*

बलयाकृत यह जंबूनांम । दीपनमथ्य दयसुभधांम । अचल सुमेर अचल हँ जहां ॥ श्रीजिन नन्ह होतहँ  
तहां । प्राचिनाम विदेह प्रसिद्ध । धनधान्यादि लसै बहुरिच्छि ॥ देस वत्सकावती मंहत ॥ उपमां कहत न पाउ  
अंत ॥ बीतसोक पुरसोहपुरी । नागर हैमानौ सुरह मुरी । अति उत्तंग राजै जिनधाम ॥ रतन मई प्रतिमां

अभिराम । समोसरन बिहैरै सर्वदा । बानीखिरै जथास्थ तदा । बतै काल चतुर्थमसार । ह्वै मुनिभवदधिउतरैपार ।

### \* दोहा \*

माहिमा सोपुरदेसकी । बरन कोविधि सार । पंथवधि भयधारमन । नाहि कियो विस्तार \* चौपाई \*  
 वै श्रवन नांमां तहं भूप । लखन जुतरतिपति समरूप । महा प्रतापी सुगुन अनेक । न्यायवंत हिण्धार  
 बिवेक । तीन काल अरुचै अरुहंत । प्रसन्न सहित पुर राज करंत । इक दिन श्री मुनि अटवी आय । मुनि  
 भूपति चाल्यौ हरपाय । नगर बाह्यवट बिटप जुएक । तापरि पंक्षी बसै अनेक । छाया सघन बड़े विस्तार ।  
 अति सीतल परमलगुन धार । राइ सराहन करिकै जाहां । फुनि आगै चाल्यौ मुनि तहां । विद्वृत पात  
 भयौ बट सीस । भस्म भयौ छिन मै नग ईस । राइ जाय मुनि सीस नवाय । दुविधि धर्म सुनियौ  
 चितलाय । व्यास्यौ गति चौरासी लाख । जोनि निभेद भिन्न मुनि भाख । लौका लोक द्रव्य षट वर्न ।  
 कहे तत्व जिय संसै हर्न नमस्कार । करि उठ्यौ नरिंद । धर्म वृद्धि तब दई मुनिंद । आवत मध्य मध्य  
 लखि भूप ॥ दामिनि दग्धित बृक्ष अन्नूप । छिन भंगुर जांन्यौ संसार । दुख दाई कहि जग निरधार ।  
 जात समै देख्यौ बट वृक्ष । आवत नास लख्यौ प्रतक्ष । द्वादसांन प्रेक्षा चित लाइ । पुष्पित भयौ प्रसम  
 नगराइ ॥ अग्रज तनुज राज पद दियौ ॥ आपसु ग्रंथ रहित पद लियौ । निर्जन गहन जाइ कै जवै ॥  
 रत्न त्रय ब्रत धरे तवै ॥ तप करि अति उठ्यो ग्रमहंत । ध्यान अग्नि बसु कर्म दहत ॥ द्वादसांग बांनी  
 हिय ज्ञान । तप बल कियौ अचल निज ध्यान । फुनि खोडस कारन धर अंत । गीत तीर्थकर बंद करंत ।  
 ब्रत सन्यास लेयतन त्यागि । निज अनुभूत कियौ अनुराग । वास कियो सरबार्थ सिद्धि । देव मद्धिक पाइ रिद्धि

\* दोहा \*

त्रय त्रिसत सागर तहां । उरुक्छी है आयु । तेतीस सहस बरस गए । लेह आहार सुभाव ॥ साढे सोरह  
 मास जब । बीते सासउसास ॥ आवत इहि स्वय मेव थिति । दिस दिस होत सुभास \* अडिल \*  
 देव खडे करजोरि छुसेवा करवहैं । देवी गावैं गीत नृत्य अचात हैं ॥ रहै सुथिर हरि पीव मूल देही तहां  
 रमें बिक्रिया धर होत निज मन जहां । \* दोहा \*

इह बिधि तेतीस जलधिक्की । आयु सुपूरन कीन ॥ सेष रही षट मास जब । माल भई छवि छीन ॥  
 आंभा रहित सरौर लखि । जान्यौ अपनौ मर्न ॥ चेत्याले मै जायकैं । अरचे श्री जिन चरन ॥

\* चाल छंद \*

अब आगैं छुनि मगंधस । सोचर उपजैं जिस देस । उनीसम जिन पद धार ॥ भवि जीव उतारै पार ।  
 इह जंबूदीप बिराजैं । नामो सम सुर गिरि राजैं । ताके दक्षिन दिसि सोहैं । इक भरत क्षेत्र मन मोहैं ।  
 तामैं है आरिज खंड । बरतै जहां धर्म अखंड । तहां बंक देस सुख दाई । उपमां नहि बरनी जाई ॥  
 उपमां बन सोभा एक । बापी सर हूप अनेक । मिथुलापुर नगर मंहंत । कलसा पति कुंभ कहंत ॥ रानी  
 जुसुरेखा नांम । छत सील सुलक्षण धांम । दंपति मिलि भोगैं भोग । पालैं सुर पूजा सुनि रोग ॥

\* दोहा \*

इक दिन नाक सुधर्म पति । अवाधि ज्ञान सो जानि । मिथुलापुर उनीसमौ । जनमें जिन सुखधांम ॥  
 आयुस दयो धनेस । तव नगर रचना के हेत । पंचार्च्य करौ अर्वे । श्री जिन जनक निकेत ॥



\* छडिल \*

आयौ उरत कुंवर । रच्यौ जिन पुर तहां ॥ उन्नत कीयौ आवास । कुंभ भूपति जहां । बर्यै उत्तम रत्न  
मुमन जलकन झरैं । बाजैं दुंदभि मंद मरुत जन हित करैं । \* दोहा \*  
इह बिधि बीते मास षट उत्सव जुत सर्व । निरखत मंगल गेह छवि । जाय सची पति सर्व ॥

\* आडिल \*

इह दिन मंदिर सीस सुरेखा सैन में खोडस रुपन निहार पाछिली रैनमें ॥ बय सर्वार्थ सिद्धि थकी  
सो आइकैं । करि गर्भ थिति प्रात उठि हरषाइ कै । \* दोहा \*  
मंजन करि शृंगार जुत । गए नाथ के पासि । कहे सुप्रफल सुनि तहां । दंपति भए हुलास ।

\* चौपाई \*

चेत शुक्र परिमां सुभवार । कीनौ गर्भ कल्याणक सार । सेवन आज्ञा दे सुर सुरी । सक्र गयौ कुनि  
अपनी पुरी । मिथुलापुर घर घर सानंद । मंगल गीत जौ होत सुछंद ॥ देवी सेवे श्री जिन मात ॥  
करैं मनोगत हिए हरषात । इह बिधि गर्भ दिवस दस भए । अंक मास दस अहिनि सु भए ॥ जन्म लियौ  
श्री त्रिसुवन नाथ । भव दधि भव्य उतारन हाथ । \* आडिल \*

कल्प बासि घर घंटा अनाहद बाजियौ । जोतिष घर हरनाद सहज गलगाजियौ । सब सष्ट अनिवार  
भवन सुर गेहमें ॥ पटहाब्यंतर गेह बजैं अति नेह में । \* दोहा \*

निज निज चिन्ह सुभाव सौं । जान्यौ जन्म जिनंद । करि बंदन सौ धर्म पति । पायौ हिए अनंद ।  
औरपति असवार है । संघ साहित परिवार । मिथुलापुर के गगन में । जै जै करत अपार । हरि आयुस

ले कैं सची । जन्म गेह में जाय । माता माया नीद रचि । अंक लिए जिन राय । \*सर्वैसा\*

सहस खैयेदु मांन जोजन सुनाग राज सतैह बदन अति तन छवि सितैह । बदन बदन बसु देन  
रदन प्रति सर सर प्रति काजीसर रचि भितैह । कमलनी प्रतिवांन भुजै माठ पुंडरीक बसु सत दलभुभ  
सोभा छवि अतिहै । दल दल प्रति नदी नदत समाज जुत सताईस कोट इम अपछरा विदितैह ।

### \* चौपाई \*

जै जै नन्द वृद्धि जिनदेव । चतुर निकाय करै मिलि सेव ॥ सुर गिरिपैयां डुकवन जहां । जाय नहन कर्  
विधिवत तहां ॥ करम मल्ल मलि डारन हार । मल्लि नांथ संज्ञा उच्चरै ॥ फुनि आयेपुर उत्सव क्रियाँ ॥  
श्री जिन मात गोद तव दियौ । निज सिधु तट बहुचुर सिमुथाय ॥ गयौ जिनालय सुरपति आय ।  
कंभराइ जिन सुत उत्साह । करि जाचिक जन पूरन चाह । पंचोत्तर पंचास हजार ॥ परी आयु  
थिति जन मनहार । देह हेम दुति धनुष पचास ॥ उन्नत काय लक्ष जिन ईस ॥ बालपन सतवर्ष प्रभान ।  
धार अनुव्रत रहे मुजांन ॥ इ ऋदिन उल्कापात बिलोक । सकल चराचर जांन्यौ लोक ॥ द्वादसान प्रेक्षयां चित  
लाय ॥ लौकांतिक सुर पंहंचे आय । अस्तुति करि निज मंदिर गए ॥ इन्द्र पालकी ल्यावत भए । प्रभु  
चढ़ाय गए बन जहां ॥ अति उन्नत चंपक तरु तहां । बस्त्रा भरन तजे तिहिवार ॥ नमः सिद्धेभ्यः सुख  
उच्चार । पंच सुष्टिक चलोचन क्रियाँ ॥ निज आतम आतम चितु दियो । सहस राइ नमि श्री जिन  
चर्न । लीनौ पंच महाव्रत सरन ॥ \* दोहा \*

मथवा तप कल्यांन कर गयौ आपनै धाम । अगहन सुक एकदसी ॥ मल्लिनांथ जिन नाम ।  
मन पर्यै उपज्यौ तहां जब बेलव्रत धारि । नंदसैन नृप सोध फुनि । लीनौ जाय आहार ॥ चौपाई

अपै निछि जिन सुख उच्चरै । पंचाचर्य देव तब करै । नौसैचौवन सहस जु वर्ष । जाय विपन कीनौ तग  
हर्ष । ताही में षट् वर्ष प्रमान । रहि छद्मस्थ भयौ तव ज्ञान । समोसरन रचि हर्ष कुबेर । श्री अंडप  
सब सोभा हेर । गन्धर अठाईस मंहंत । न्यारि ग्यान धारी बुद्धिवंत ॥ दूरब सम सब और विभेद । जानहु  
सास्त्र देखि बिन खेद ॥ क्रियौ विहार देस प्रीति देस । दीनौ दयाधर्म उपदेश । रही आयु जुग पक्ष प्रमान ।  
सिपर सीस आए भगवान । पुन्य पाप प्रकृति सममई । समो सरन सोभा सब गई ॥ जोग निगोध रहे जिन  
राइ । निज निर्मल चेतन लौलाइ । फागुण कृष्ण छादभी सार । लहि सिवथान अष्ट गुणधार । इन्द्र  
क्रियौ कल्याणक आइ । संवल कूट सीस सुखदाइ ॥ जिन निर्वाण प्राप्तु हगवाय । करि पूजा अस्तुति  
गुनगाय । नर सुर पसु लग असुर मंहंत । निज निज आलय गमन करंत ॥ \* दोहा \*  
धानि घरी वह अहन की । धन्य महुगत जानि । निसिदिन संवल कूट पै । इन्द्र क्रियौ कल्यान ।  
शिखरमहानम प्रचुर अति । बरन्यौ श्री जिन श्रथ । जानहु संवल कूटपल । संवल है सिवपन्थ अडिल  
अब आगै सुनि राय कथा इकराइकी । जात्रा संवल कूट जथावत भायकी । तदभव सिवपद पाइ  
अष्ट शिवि जारिकै । किनौ है तप स्वल्प निजातम धारिक ॥ \* दोहा \*  
जंबूद्वीप प्रसिद्ध इह भरक्षेत्र अभिगम । जोध देस श्रोपुर नगर । इन्द्रपुरी समधाम ॥ चौपाई  
बंकदम नांमां अवनीस । भूप अनल्यनवावै सीस । विजय पटरानी जुतराय । भोगैभोग अपै सुखदाइ । तिन  
के तनुज भयौ बलिवंत । सुन लक्षण कहि लहौं न अंत । सतसेन संज्ञा बुधिधार । जौवनवंत भयौ अविहार ।  
कारन मातपिता तपलियौ । सतसेनिकौ नृपपददियौ । राजविभूति पाइ सुखदाइ । इंद्री जनित सुभोग कराइ ।  
पौल प्रजाप्रजा समभूप । न्याय नीति चितधारि अचूप ॥ इकदिन सत्य सेनि गुनरास ॥ पूजन हेत गयौ

कैलास ॥ तहां सुलोचन श्री मुनि एक ॥ लाखि प्रनाम करि धरि सुबिबेक ॥ थिर है विधि धर्म सुनि राइ ।  
 निर्धन धन लाहि इमहराय । फुनि मुनि सिखर महातम कहौ । मुनत भूप दर्शन वृतगह्यो ॥ आइ गेह लें  
 संघमहंत । ज ॥ हरन नो च ॥ यौ ठुरंत ॥ क्रमक्रमसौं मधुवन में गए । देखि सिखर आनंदित भए ।  
 लै पूजो पहार मनहर्न गएकूट परपूजा करन । आबिचरन गुनगाय अनंत । विभैभक्ति हिएथारि  
 सुमुन्द । है वैरांग लीयो तपसार । तेरहविधि च रित्रउधार । संबलकूट सीस सिवगंधे । भिछि गुनज्ञान रंजन  
 भो । ऐसो कूट नैमै जो कोइ । सोई सिवनारि पतिहोइ । निन्याणनै कोटमुनिराय । वही कूटपरि सिवपदपाइ ।  
 कोटि छ्यानवै वृत्तफल होइ । एकवार वंदै जोकोइ ॥ नर्क पसुगति नास करंत । जात्रा करै भावधरि संत । नर्क  
 पसुगति नैलहि सिवपदलेइ । जन्म मरन जनांजुल देइ ॥ \* दोहा \*

इहविधि लोहाचार्यगुर । वरन्यौ सिखर महात्म । मनसुखधि भापारची कीनौ सुचिनिज आतम ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्ये पुसपेदाचल महात्म भाषायामन सुद्धसांगरेण वर्णनं नाम संवल कूट वर्णनं  
 मल्लनाथ मोक्ष गमनं विमत परिच्छेद ॥ २० ॥

\* संवेया \*

सुवृत्तथर निहारसुमित्र जनकसार नगर कुसाग्र नाम सबसुखदाइहै । मात पदमावतीहै हेमके वरनतन कक्षप  
 सुलखन सुचरन सुभाइहै । त्रिसत हजार जो वर्ष आयु भाषियतु उन्नत धनुषवीस अति सुभकार्यहै । ऐसे  
 व्रतसुकूट निर्जर सिव मनसुद्ध सागर नमत जिनपाइहै ॥ \* दोहा \*

चौवनलाख वर्षगण । अन्तर मल्लि जिनेस । मनि सुव्रत जिन जनमियौ ॥ हरये त्रिजग अशेष ॥  
 नमि मुनि सौ व्रत चरन जुग ॥ सारद सीसनवाय वरनौ पंच कल्यान अब श्री गुर भये सहांथ ॥

\* चौपाई \*

सबदीपनि में नामिसमान ॥ जंबूनाम सुदीप बखान । भरत क्षेत्र सेवै सुसुरी अंगदस चंपावतपुरी ॥  
 नरनारी सब सुंदरबसे ॥ धनधान्यादिक रिद्ध बहुलसे ॥ सुसरिता जुतलसे  
 अनूप ॥ हरि वर्मा राजा बलिवन्त । न्याय निणुन गुनवंत अनंत ॥ महाप्रतापी सीलसुभाव । राजकरै चंपापुर  
 राव । पबिसेना पटनारि समेत ॥ भोग करै इंक्षी सुखेहत ॥ पालै प्रजा तनुज समसवै ॥ कारन एकभयौ पुनि  
 तबै । पुराट बनआए मुनि तहां ॥ षट्कतु पुष्पफलाकर जहां ॥ बनपालिक लखि अचिरजएह ॥ भ्रम  
 बिपन में करसेदेह । अटत अटत देखे मुनि राज ॥ अनंत वीर्य गुन धर्म जिहाज । चलयौ नगर कौ मुनि  
 सिरिक ॥ लै षट्कतु फलफूल अनेक । भेटधरी भूपति के अग्र ॥ दै आसीस बचवै समग्र ॥ मुनि मुनि  
 आगम राइ अनंद ॥ बस्त्राभूषण दिए सुछंद ॥ करि परोष बंदननृप जबै ॥ आनंद भेरि दिवाई तबै । करि  
 सुभेष नृप पुरजन सर्व । लेचाले पूजन बसु द्रव्य । भृपादिक सब जाइ नमंत । अस्तुति करै हिए हरथतै ।  
 थिति है दुबिधि धर्म सुनि भूप । सागरी अनगार अनूप । मन बैराग भयौ नर राउ । दिक्ष्या लेन  
 चलयौ हिय चाउ ॥ अग्र सुतकौ दीनौ राज । लीनौ व्रत नृप आतम काज । दुबिधि ग्रंथ तजि भजि  
 अरहंत । षोडस कारन हिए धरंत । जीवा जीव दबै षट् भेद्र । निनै करि निज साता बेद । द्वादस  
 रूप अग्र तप तप्यौ । पूरब कृत दुःकृत सबलप्यौ । तीर्थकर तव बांध्यौ गोत । तहां पंच कल्यानक  
 होत ॥ अंत समै धरिकै सन्यास । प्राणतनाकजु कीजौ बास ॥ जलध बीस थिति पदवी इंद्र । अरचै  
 तीन काल जिनेंद्र ॥ सात तत्व की चरचा करै । निर्विकल्प निज गुन उच्चरै ॥ जहं जहं पंच कल्याणक  
 होइ । करै प्रतक्ष बंदनां सोइ ॥ बीस हजार वर्ष बीतंत । मानसीक तव असन करंत ॥ गए मास दस

सासउसास । लेत् दसौं दिसि होइ सुवास । इह बिधिसौं बीती सब आशु । रही शेष षट् भास सुभाव ।  
मणि माला सुछित्त जब भई । रतन अभूषन तन दुति गई ॥ मनहि विचारि जोइ जिन धाम ॥ करि  
जिन पद अष्टांग प्रनाम । पूजा रची दर्बवसुल्याय । अस्तुति करैसु निज गुन गाए । \*दोहा \*  
तदनंतर सुनि मगध पति । इक मन है अमलांन । सौ चरचइ जिन पद लहै । वह वरनौ सुभथान ।

### \* चाल छंद \*

इह जंबू दीप मझार । तहां भरत क्षेत्रहै सार ॥ गंगा सिंधु अचलै ॥ हैं आरिज खंड विसालै । तामें  
सुभ मागध देस । सरब बन उपवन जुअसेस । कदली सहकार अनेक ॥ श्री फल बन सोभा एक ॥  
उन्नत दुम सारिका राजै ॥ जाती फल बृक्ष विराजै । पूंगी फल लगेइ अनंत । वरनत में लहौं नांअंत ।  
ता बन श्री सुनिवर आवैं । त्रिन भाषित धर्म चलावैं ॥ तहां बसैं छुउत्तम ग्राम । छावत कुसाग्रसु  
नाम ॥ उन्नत सुभ सोभ मंहत । गिरि फटिक शृंग सम संत ॥ पुर मथ्य जिनालय सोहैं । सबसौं ऊंचे  
मनमोहैं ॥ तहां आय भव्य जिन अरचैं । गुन गाय करै सिव परचैं ॥ सुर देवी सम नर नारि । पुर  
सुर पुर सोभ अपार ॥ राजा सुमित्र तहं राजै । दुति देखि सची पति लाजै ॥ सुजदंड प्रताप अखंड ॥  
अरि जीति अधिक प्रचंड । नृत नीति प्रजा सब पालै । उगजार चौर सचटालैं ॥ पदमावति नारि समेत ।  
सुख भोग करै बहु हेतं ॥

### \* दोहा \*

एकह दिनि सौ धर्म पति । सुमिरत जिन कल्याण ॥ पद्मावती सुमित्र घर । जन्म लख्यौ भगवान ।  
आग्या दई धनेस कौ । जाह रच्यौ पुर सार ॥ पंचा चार्य करो तहां । होइ सुखी नर नारि ॥

## \* अडिल \*

आयौ तबहि कृबेर सक्ति निज धारिकैं । नौ बारह प्रमांन नगर विस्तारकैं । पुर कृसाप्र नृप गेहस्त  
वरषा करैं ॥ बाजैं दुंडुभि सुमन अनिल जलकन झरैं ॥ तीन काल मन हरन गान सुर करत हें ॥ घर घर  
उत्सव होइ सब जन मन हरतहैं । इह प्रकार षट मास गए अनि चावसौं । अब जिन गर्भ कल्यांन सुनौ  
भवि भावसौं ॥

## \* दोहा \*

श्रवन दुतिया असित पक्ष । प्रांनत सो सुर आइ । पद्मावति उर थिति करी । तीन लोक सुखदाय ।

## \* सोरठा \*

एक समैं जिन मात । सैन करत निज महल मैं ॥ सुम लखे अवदात । षोडस पछिम जांमिनि ॥

## \* दोहा \*

सूर्य उदय उठि स्नान करि । पहारि आभुषन चीर । सखी संग ले हर्ष धर । गई लुरत पति तीर ॥  
व्यक्त व्यक्त सुनि सुपन फल । कहै हर्ष नर नाह । तीन लोक पति होइ सुत । लेह मनुष भव लाह ।  
कहै परस्पर प्रीतिबच । दंपति सुख्य अपार । इंद्रआयु सुर सहित कर । गर्भ कल्याणक सार । छहौं  
कुलाचल बासनी । मघवा आयशपाइ । गर्भ सोधनाकरहिनित । सबैनिज चितलाइ । छपन देवकुमार सब ।  
निज निज काज समारि । सक्रग्यौ निज थान सब । हर्षे सुर नस्मारि । घरघर मंगल होइनिनि । गीत  
नृत्य संगीत । काइ कबहुन देखिए । बदन पीत भैभीत

## \* चौपाई \*

इहविधिसौं बीते नवमास । आनंद मैं बीते सुखरास । असित दसैं बैसाख निहारि । श्री सुनि सुब्रत जिन  
अवतार । बिरद राज साजि आइसुरेस । दीनौं पुलौमजा आदेस । जिन प्रसूति मंदिर मैं जाइ । अंकलेइ प्रसु

ज्वलुम आइ। जाइ सची निद्रा रचि अंब। थुति करि गोद लियौ अर्बिलंब। आइ सचीपति अकैं देइ।  
 पुत्रकित है मधवा प्रभु लेइ। तस न होइ निहारि जिनेंद्र। सहश्राक्षत तबभ्यौ सुरेंद्र। दंती पति पै थापि तुरंत।  
 जय जय नंदि वृधि उचरंत। सुरगिरि जाय नन्ह विधि करी। भक्ति सहित प्रजा विस्तरी। मुनि सुव्रत  
 वृत्त धर्म धरने। जाइ सची पति नामि पुनि चरने। आइ नगर कीनौ उत्साह। नाक ईस पद लीनौ लाह।  
 मात अंक दै नृत्य करंत। छिनक भूमि छिन नभि विचरंत। वीन बासुरी बेन बजाइ। ताल मूर्ज सुह  
 चंग चढ़ाइ। जल तरंग मिरदंग सितार। सारंगी षटताल विचार। सिलमदरा कानून जफ़ीर। बाजैं खंजर  
 अति गंभीर। इत्यादिक बाजैं अमलोन। साढ़े ढादस कोटि प्रमान। सुरसातौ सुरजुत गुनगाइ। साढ़े  
 बाराह ताल बजाइ। बालक सुर सुरपति सुरथाइ। नामि जिन लोक गयौ पुनि आइ। पिता आदि पुरजन  
 मिलि सबै। पुत्रात्सव बहुकीनौ तबै। बीस चाप उन्नत प्रमुकाय ॥ तीस हजार वर्ष जिमराइ। हेमबरन  
 सुरबाल समेत। बाल केलि कीनौ सुख हेत। सात हजार पंच सत वर्ष। बाल पन बीते जुतहर्ष। पुनि  
 विवाह कर राजकरंत ॥ नीति सुपथ हिए धरंत ॥ पंद्रह सहस वर्ष लगराज। कीनौ मुनि सुव्रतजिनराज।  
 प्रसम में जब पढुंच्यौ आय। कारण एक भ्यौ सुनिराय। धन धनि गजप्रभु है असवार। चले चमूले करन  
 विहार। सो गजलखि पावस ऋतु जबै। प्रख भव जिन जान्यौ तबै ॥ दूहौ नागदत पर जाइ ॥ माघा  
 उदै भ्यौ गजआइ। इह विचारि जल असन तजंत। है वैराग भजैं अरहंत। एह विवस्था देखि गइंद्र ॥  
 अविधि ज्ञान लखि कहै जिनंद्र। अरेमंतंग जीव जग अमैं ॥ नरक देव पसु नरगति गमैं। क्रोधं लोम माया  
 अरु मान। ब्याखौं गति मै होइ निदान। चौरासी लखि जोनि अमंत। काया धर दुख सहै अनंत ॥  
 गज सो कहि प्रख परजाइ। पंचअणु व्रत दिए सुणाई ॥ निज भुपति पद सुतकौ देइ। जीवा जीव विचार



कोई । बारह भावन भाव धरंत ॥ मुरलौकातिग आइ नमंत । अस्तुति करत प्रसम अधिकाइ । गए ब्रह्मसुर  
 आति हरषाइ । अपराजित सिक्कातिह थान । लाइ सक्र थपे भगवान । जैकैरि पालकी उठाइ गए महावनमंगल  
 दाइ । बकुल विठपिनीचे धिति धारि । नमः सिद्धेभ्यः सुखउच्चार । पंचमुष्टिक चलौचन कियौ । सहस रायतत्रिजिन  
 व्रतलियौ । कृष्ण दसै बैसाख सुजानि । इंद्रकियौ जिन तपकल्याण । मन पैये को भयौ प्रकास ॥  
 सूक्ष्मपुद गलाउ सब मास । बेलाव्रत करि रव गिर आइ ॥ विजयेसेन घर असन कराइ । अक्षे  
 निछि जिनवर सुखचर्यौ ॥ पंचाचर्य भूप घर भयौ । वर्ष जु सोढमात हजार ॥ कीनौ तप आतम चित  
 धार । फुनि बनजाय कियौ तप धौर ॥ वसु बिधि कर्म पटल सब तौर । \* सोरठा \*  
 भयौ जु केवल ग्यान । सुनि सुवन जिनराजकौ । तीन लोक सुखदान ॥ प्रसित नवमि वैसाखकी ।  
 समौ सरन धर निंद ॥ रवि निज सक्ति समान सब । राजैतहां जिनन्द ॥ कल्यानक बिधि इन्द्रकर ।

\* दोहा \*

महिमेनिहू आदिदे । अठदस गणवर सार ॥ ब्यारि ग्यानधारी सबै । बानी परखन हार ॥

\* चौपाई \*

देश देश विहरै भगवान । दुबिध धर्म को करै बखान ॥ त्रेपन क्रिया कहि सागार । तेरह बिधि  
 चारित्र अनगार ॥ पुद्गल जविकाल आकास । धर्म अधर्म द्रव्य पट्मास । सान तत्त्व पंचास्तिकाय ॥  
 नौ पदार्थ भाषे जिनराइ । गुनथानक चौदहभाषंत चौदह मारग ना । वरनन्त । उनईस जीव समास जु  
 कहे । चौबीसौ दंडक जिय गहे । सुनि सुव्रत श्री जिनवर ईस । बिहस्त गए सिपर गिरि सीस । कूट  
 निर्जरा ऊपरि जाइ । जो गरोध कीनौ जिनराइ । आयु अन्त पहुंचे निर्वाण । आइ इन्द्र करि सिव

कल्यांन । सुनर असुर तिर्यंच खगेस । वंदे रज शुनि कैरे फनेस ॥ महिमां निर्जर कूट विथार । निज निज थांन गए विथार ॥ सोवर कूडन मै जो कोइ । सुनर गति लहि सिवपतिहोइ । मन बचकाय भक्ति चित धरै । नरक पसु दोन्हीं गति हरै । आगै और कथा सुनिराइ । निज जात्रा कीनी मनलाई । कौसल नाम देस विष्यात ॥ तहां अयोध्यापुर अवदात । रामधन्द नामां अवनीम । आइ बहुन नृप नवावै सीस । पटरानी सीता संयुक्त ॥ भोगै भोग निगमके युक्त । एकदिवस थिति सभा मझारि । धर्म कथा महिमां विस्तार ॥ तिहिं अवसर इक खगपति आइ । अहमिंद्र दुतिवंत सुभाइ । आइ सभा भे देखे राम । कर जुग जोर कियौ परनांम ॥ आज्ञा लहि नमत्र थिति भयो । धर्म कथा सुनि वेचित दयो । औसर पाइ कहै खगवात । जीव उथारन धर्म विख्यात ॥ लहि सुछेप योग जिय सार । भवि जीवननिधिउतरे पार । सुम उपयोग जुसाधन करै । तौ मन बंछित कारिज सारै ॥ \* दोहा \*

कहै व्यौमचर मिष्ट बच । सुनौ रामजी बात । सिपर सुभर पुनीत गिरि । नमत पाप सब जात ॥

\* सोरठा \*

सुनिसु व्रत जिनराज । सिव कल्यान कहते भयो । तिनकी जात्रा काज । जात हते हम भाव सौं ॥

\* दोहा \*

देखि सभा हम आपकी । धर्म कथा संवाद । सुनि आए लखि दरस तुम । भयो हिए अहलाद जात्रा के बच राम सुनि । सुनि सुव्रत कल्यांन । संघ ब्यारि विधि संघ लै । ततक्षण कियौ पर्यांन ॥

\* चौपाई \*

करतदान पूजा श्रुत सौन । कलह विवाद करत धरि मौन ॥ खेचर आदि संघ बहु भूप । मधुवन

गए सुथान अनूप ॥ पूजा सामग्री सजिपार । मन बच काय भक्ति चिन्धारि ॥ जै जै करत चले गिरि  
जहां । मुनि सुव्रत कल्याणक तहां ॥ पूजा करि गुनगाय अनन्त । निर्त कियो द्विए धरि सुबिबेक ॥  
दांन अल्प दियो तहां राम । फुनि आए हर्षित निज धाम ॥ राय सहस बाहु भूपेंद्र । स्वगपति  
आदिक नभैं सुनेंद्र । कोटि एकपैतालीस लाख । दिक्षा लीनी श्रीजिन साख । धरि बैराग महातप  
कियो । कर्म रिपु सुजलांजल दियो । विविधि परीस्या सहि तिहि थान । धर्म शुक्ल फुनि धाखौ ध्यान  
केवल ज्ञान कियो परतक्ष । भई आतमा केवल सुक्ष । निर्जनाम कूट के सीस । मुक्ति गए द्वैभिवन ईस ।

\* दोहा \*

तिहिं थानक मुनि ध्यान धरि । पायौ पद निर्बान ॥ मुनि सुव्रत पर्यंत नमि ॥ संख्या करौ बखान ॥

\* अडिल \*

एक ऊनसतकोडा कोडि बखानिए । सितानिबैं कियो लाखनौ जानिये । नौसैं अधिक निन्याणबैं मुक्ति  
गएतहां । सिखर मुमेद सुकूट निर्जरा हैं जहां \* दोहा \*

एक बार एक कूटकौ । जो नरबंदे कोइ । कोटि प्रोषधी फल लहैं । सिवपद पावै सोइ ॥ ऐसे सिखर मुमेर  
नग । महिमां कहत न अंत ॥ बनबच काया भक्ति सौं ॥ मनसुख जलधि नमंत ॥ लोहाचार्यतना बचन ।  
सिखर महातम बर्न ॥ तिहप्रति मनसुख सिंधु कहि ॥ नरभाषा मन हर्न ॥

इति श्री काष्ठा संगे छेहाचार्य विरचते समेदांचल माहात्म्ये भाषा यामन सुख सांगरण वर्णन निर्जर कूट तैं मुनि सुव्रत नांथ  
मोक्षगमन नाम वर्णने नाम ईकीसवां पर्व अधूर्ण ॥ २५ ॥

## \* सवैया \*

आठो अपराजित विमान सों जनम लियौ मिथुला नगर तात विजय सुराहैं ॥ विप्रो देवी नाम मात  
हरित वर्ण गात पंद्रह धनुष कंज चिन्ह मुख दाहैं । आयु है वरप दस सहस सुमेर गिरि प्रभव सुकूट सोस  
सिव पदपाहैं । ऐसे नमि नाथ नेमि धार के मन सुख सिंधु पूनमि चरन हिए हर्ष दड़ाइ ह ॥

## \* दोहा \*

गए वर्ष षट् लाख जब । मुनि सुव्रत सिव लोक ॥ जनम लियौ नमि नाथ तव तिनपद मेरी धोक ।  
गर्भे जन्म तप ग्यांन सिव । एई पंच कल्यांन । पढ़ै सुनै अर्चै त्रिविधि ते पावै सिवथान ॥ चौपाई  
शुभ सहस एकशत मान । जंबूदीप जिनेश वखान । मध्य सुमेर मनोहर अंग । एकलाख जोजन उत्तंग ।  
ताके यमदिसि क्षेत्र बशंत । भरत नांमजुत देश महंत । आर्यपंड वत्स हें देम ॥ बन उणवन सरकूप असेस ।  
कारिंद्री कूलजल भरपूर । अति गंभीर उर्मिजुन भूर । ताही के उपकंड ज वसैं । को संवीपुर उत्तम लसैं  
नगर सब सुरसुरी समान । बसु विधि पूजै श्री भगवान । पढ़ै जैन श्रुत निज मन लाइ । चौ विधि दान  
देइ सुख दाइ । प्रार्थ नांम नृप राज करंत । वंश इरुयाक मध्य गुनवंत ॥ न्याय मार्गमें अति लवलान ।  
प्रजा दुल्ल नासन परवीन ॥ इक दिन मुनि आहार के हेत । आए भूप गेहसम चेत । दै आहार नमि श्री  
मुनि चर्न । दुविधि धर्म मुनि पातिगहर्न ॥ करि नमस्तु पूछै फुनि भूप । कहिए मुनि सम्यक्त सरूप  
श्रीजिन भाषित तत्व संस्थान । इहनिहचै सम्यक्त बखान । बर्नन करि मुनि गमन कराइ । ध्यान धर्यौ  
निर्जन बनजाइ ॥ प्रार्थनृपति सम्यक्त गुणधार ॥ राजकरै पुरजन सुखकार ॥ पुरुवहिस्वन हें रमनीक ॥  
नाम मनोहर सिव वृथलीक ॥ तहं आए केवली मुनीश्वर । जुगधर नाम नमे सो ईस । बनके नगसेवा

अनुकूल । हर्षे सहित भए फलफूल । जेयजय शष्टदेव तहंकरै । पूजै जिन धुति उच्चैरै । यहअचिजलखि  
मालाकार । षट्कतु फलसु मनोत्कर सार । धर नृपभेट असीस जो देइ । करमुकलत करबैन कहेइ । तुम  
वन आएहै केवली । सिवनिकेत निरखवै गली । सुनिबच नृपहै पुलकित अंग । नमन चलयौ पुरजन  
ले संग । लैवसु दर्ब अवि पद कंद । दुहुंन कर्म कुलाचल भंग । सागरी अनगरी धर्म ।  
सुनत हिए नृप नास्यौ भर्म । उष्यौ प्रसम मोह करि छीन । निज पद श्री धर सुनको दीन । आप  
दिगंबर पद आदर्यौ । जन्म जन्म कौ पातिक हर्यौ । भाई माधना खोडस जहां । तीर्थकर पद  
बांध्यौ तहां । विविधि प्रकार महा तप कियौ ॥ अंत समैं संन्यास सुलियौ ॥ अपराजित विमान में  
जाइ । पदअहमिंद्र ल्यौ सुखदाय ॥ जिन पूजा करि लै सुर संग । सुकल बर्ण भास्वत सुत्रि अंग ॥ सब  
मिलि अमर समा थिति होइ । सात तत्व चरचा चित जोइ । आयु काशु भोजन उस्वास । मै पूरव भव  
कियौ प्रकास ॥ क्रम क्रम करि सुखसिंधु मझारि । सेषमास षट आयु विचारि ॥ सोअहमिंद्र निरंतरसंत ।  
पूजै जिन गुन गांन करंत ।

\* दोहा \*

आगै अब सुनि मगध पति । नमि कल्यानक ध्यान । धर्म पूगट करि सिव गए । अष्ट कर्म अरिदान

\* सर्वैया \*

जंबू दीप मध्य मेर दक्षिण भरतक्षेत्र । तहां आरिज खंड बंगदेसमौ रहै । तामै है नगरनाम मिथुला  
पुरी सुधांम बन उपवन सर कूप बहु ठारै है ॥ उन्नत नगर कोट कांठुरे बिाज मान मन के हरन  
हार छबिपुर धारै है । उन्नल अवासु केतु पवन चलत इमि कहत इहां कीसम सोभा नहि औरै है ।

\* दोहा \*

विजय सैन अचनीप तहं । करै पूजापते पाल ॥ जार चौर ठग दुष्ट जन । इति भीति सब ढाल । बिप्रा पट रानी सहित । भोगें भोग सुभृप । तदनंतर इक कथन अब सुनि मगधेस अनूप । \* अडिल \* प्रथम नाक नाकेस समा में थिति करै । धर्म कथा संबंध अचहि हिय में धरै । ग्यान दृष्ट लखि कहै नमी जिन राजजी । मिथला पुर अवतार होइ बृषराजजी । \* दोहा \*

हरि आग्या लै धनपती । आइ रब्यौ पुरसार । नौ द्वादस जोजन प्रमिति । ग्रह ग्रह मंगल चार । तीन काल हुंहुभि बजै । बरषै रतन मनोग । साढे द्वादस कोटि मिति । श्री जिन जन्म नियोग ॥

\* चाल छंद \*

एक दिन निज मंदिर माहीं । जिन मात सैत कराहीं । निशि अंत सुप्त सब देखे । श्रुतहि पति पाशि विशेषे । सोई चरचय अहमिंद्र । थिति गर्भ कल्यान जिनेंद्र । आए तहं सुरनाकेश । करिकै निज उत्तम भेष । हरि पीठि थापि जिन मात ॥ करि पूजा हिय हरषात । अश्वनि बदि हुतिया जान । हरि कीनौ गर्भ कल्यान । सैव देवी जिन अंब । त्रिभवन पति गर्भ अवलंब । निज धाम गयौ पुर ईस ॥ हिए भक्ति बुविस्वा बीस । क्रमसै नवमास वितीत । जिन भाषी पूरब । रीति । अषाढ बदी सुमवार दसमी नमि जिन अवतार । \* दोहा \*

आए देवी देव पुनि । चौं निकाय सुर ईस । गजपै थापि जिनेंद्र तब । गए मेर गिरि सीस ।

\* सवैया \*

प्रबसामान जिमजिन बिधान करि अंतुक अभूषन तन पहिराईयो । लेइबसुद्रव सुचि चरन चढाय

तब बहु बिधि युति प्रभु गुन गाईयो ॥ फेरि ऐरापति थापि अवधि न जाय जपत जय सुर सुर जिन पुर आईयो । मात गोद थापि नृत्य करि निज थानक गयो मन सुख सिंधु असे प्रभु सिर नाईयो ॥

\* दोहा \*

तन उन्नत पंद्रह धनुष । हरित बर्ण हुति वंत । आयु वर्ष दस सहसकी । लक्षण सुगुन अनंत । सहस अढाई बाल जिन । बीते नभिय जिनंद । पांनि ग्रहन करि राज फुनि । कौनों प्रजा अनंद । थारि अनुव्रत नीति पद । प्रजापाल हिय हर्ष । तीन ग्यान धरि धर्म जुत । सहस पंच गत वर्ष ॥

\* चौपाई \*

एकदिन श्री जिन बन में गए । नाना विधि हुम देखत भए ॥ कमल संगेवर जल करि हीन ॥ मछिन जलज पल्लव सबछीन ॥ तनछिन लखि हियहै बैराग ॥ आतमीकपद करि अनुराग ॥ द्वादस भाव न करे विचार । अथि रूपा जान्यो संसार । इतनेमै लौकांतिक देव ॥ आयजे जे करि स्वय भेव ॥ धन्य धानि निज निज गुनधार ॥ भब्य भाव बुधि तान हार ॥

\* सवैया \*

अहो नाथ तुम बिन कौन इह काज करे दुर्द्धर बरत तुम बिन कौन गहिहें ॥ बसु विधिरूप धरि जीव गुन नासि कौनों असे कर्म । बैरी बिन ध्यान कौन दहिहें ॥ निज गुनपाय लौका लौककौ प्रकास करि सिव थान जाइ जीव थि होय रहिहें । मन बचकात मनसुखसिंधु सेवै तुमसे उभव दधितरि सिवपुर लहिहें ॥

\* दोहा \*

अस्तुति इह बिधि लैक सुर । करि बैराग दिढाइ । ब्रह्मलोक बासी अपर । नमि नमि थानक जाइ ॥

## \* चौपाई \*

विजयसेन पालकी बुल्याये । पुलोम जाय तिन जिन बैगये । बनमें जाय दुक्कल उतार ॥ नमः सिद्धेभ्यः  
 सुख उच्चार ॥ कायौत्सर्ग ध्यान धरि द्यौ । तप कल्यानक सुरपति क्रियौ । सहस एक नृप नमि नमि  
 नाथ । लीनौ तप क्रियो सिव साथ ॥ मनपथै तब उपज्यौ ज्ञान । बला वृत कीनौ तिहि थान । जाइ  
 सूर्य गिरि क्षीर आहार । देत राउधर लीनौ सार । पंचात्रय तहां सुर क्रियौ । देखि नगर जब दरख्यौ हियो ।  
 फुनि प्रभु बनमें जाय तुरंत । निश्चलांग होइ ध्यान करंत । प्रीति वर्ष नै रह छदमस्थ । च्यारि घातिया  
 करमनिस्थ । मगि शिर सुकल रुद्र थिति जानि । नमि जिन उपज्यौ केवल ज्ञान । समो सरन रचियौ  
 धनदेव । सुर नर पसु आए स्वय मेव । पूजा करि बसु दर्ब चढाइ । निज निज सभावैठ हरषाय । सत्रह  
 गणधर सुखदातार । श्री जिन बांनी परखनहार । सहस बीस सब संघ बतांहि । ग्रंथ बृद्ध भय बरन्यौ  
 नांहि ।

## \* दोहा \*

देस देस उपदेस करि । समो सरन नमि नाथ । गए वर्ष पचीस सत । कात सुगसुर साथ । रहीं आशु  
 इक मास मित । गए सिखरि गिरि सीस । प्रभव कूट परि ध्यान धरि । भए सुक्ति केईस । अडिल  
 रहे सेष नख केस शक्र रचितन तहां । मलया गिरि श्रीबंड प्रमुख सर साचि जहां । मनम्यौ अगनि कुमार  
 मुकट मणि क्रांतिसौ । पूगटी अगनि महंत भस्म करि सांतसौ । \* दोहा \*

सोरज भालनि लाय करि सुर नर खग पसु सर्व । शिव थांनिक पूजा करै हाथदेइ बसु दर्ब । मास  
 अंषाढ सुक्लषण पक्ष तिथि अष्टमी महंत । बिबहारी बसुगुन धरे निश्चै सुगुन अनंत । कल्यांनक निर्बान  
 करि । हरि अपनै पुरजाय । सो प्रभास बरकूटफल कोकविजन बरनाइ । भाव सहिततहं जाइजो पूजै



नामि शिवथान । कोटनीस सुप्रोषधी । वर्त क्रियौ फल जान । जितने मुनि तिहि थानसैं । लियौ मुकनि पद सार ॥ तिनकीमें संख्या कहौं ॥ श्रीजिन श्रुत अनुसार । नौसैंकोडा कोडाभिति । अरु पैतालिस लाख सात सहस नौसैं अधिक ॥ ब्यालीस श्रीजिन भाष । मेघदत कोकथन अब । सुनिश्रेणिक मनलाइ । संघ सहित लै शिखर नामि । तपकरि सिवपुरजाइ । \* चौपाई \*

श्रीपुर नाम नगर इक बसैं । धनधान्यादि सहित जनलसैं । महा बर्तनामा भूपती । शिव सेनापति रानी सती । दंपति भोग करत दिन गए । मेघदत सुततिनके भए । पाइ पिता पदराज करंत । निति प्रति अरुचैं श्रीअरहंत । श्रीषेना तिनकै पटनारि । सील सुलक्षण सबयुन धारि । इकदिन नृपरानी जुततहां । क्रीडा हेत गयौ बनजहां । लखे बसंत सेन मुनि राइ । भक्ति सहित भूपति शिरनाइ । धर्म बुद्धि दै धर्म बखान ॥ मन बचकाय सुनौदे कान ॥ छुनि मुनि आगम प्रीछि नरेस । बरनन करै सहित उपदेस । सिखरि महात्म कह्यौ सुभाय । जात्रा फल सिव पंथवताय ॥ \* दोहा \*

नमस्कार करि भूपतव । आयौ अपने गेह । जिन मंदिर में जाय कैं । पूजा करि धरि नेह ॥ \* चौपाई \*

व्यारि प्रकार संघ लैं साथि । जात्रा हेत चल्यां नरनाथ । साततख चरचा त्रितचाव । दान व्यागिबिधि देत सुभाव । क्रमक्रम से मधुवन में गए ॥ मधुक्रतु समछवि देखत भए । जायकूट परि पूजाकरी ॥ जय जयजय आख उचरी । इतने मे चारन मुनिराज । आए जुगल सुधर्म जिहाज ॥ जिन श्रुति कीनी प्रसेम सरूप । मुनि चित मै बैराग्यौ भूप । निज पद जिन सुतकौं राइ ॥ मुनि पदनमितप लै शुखदाइ । एककोटि पैतालीस लक्ष्य । भए महा मुनि सुनि परतक्ष । तपकरि अष्टकरम गननाश । ततक्षिन लौकालौक

प्रकास। अविनाशी पद पायौ तहां। कूटप्रभास नाम है जहां। \* दोहा \*  
मन बचकाया शुद्ध करि ॥ प्रणमै शिवर सुमेर ॥ सुरनर सिवपद पाइ करि ॥ जन्म धरै नहि फेर ॥

\* अडिल \*

लोहाचार्य धर्म ग्रंथ बर्णन कियौ प्राकृत रूप अनूप कठिन अति वरि दियौ ॥ निज कल्याणक पाठ  
हेत अति चावसौ ॥ भाषा मनसुखसिंधु रचिबहु भावसौ ॥

इति श्री काश्या संगे लोहाचार्य विरचित तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सांगरेण वरणनं प्रभास कूटने नमि  
नाथ मोक्षगमन वर्णन नाम बाईसवां पर्व ॥ १२१ ॥

\* सवैया \*

सील सिंधु धारक बिदारक मदन दल सुरी पुर जन्म सुर संभरत हैं ॥ सागर बिजय पिता सुमाता  
शिव देवी नामक चिन्ह चरन सोभासु धरत है ॥ उन्नत सुतन दस धनुष सजल धन बरन बरस आयु  
सहस चरत है ॥ ऐसे नेमनाथ नेमधार जन सुख सिंधु नमत चरन सिव संपति करत है \* दोहा \*  
नेम नाथ जिन के चरित ॥ सल्प मात्र मनधारि । सुनि श्रेणिक मनलाइकै । ज्यौं पावै भवपार ॥

\* चौपाई \*

दीप प्रथम जंबू बरनाम । मध्य सुदर्शन सबसुखधाम । भरत क्षेत्र दक्षिण दिसि बसै । अवानि तहां खंड  
खंड जु लसै । आरिज खंड खंड सिर मोर । तदवत सोभा औरन ठौर । तहां देशबहु बसै असेस ॥ जाइ  
कै जिन बृषपदेस । कुरजांगल इकदेस विसाल । प्रजा सुखितसोहै गुनमाल । गज पुरनाम नगर प्रसिद्ध ।  
बर विभूत जुत सोहै रिद्ध । लक्ष्मीचन्द्र नृपति परचंड । राजकै बहुआरिजन खंड ॥ श्रीयमती नामा प्रिय

प्रिया । सीलमुलक्षण सुंदर तिया । सोलम स्वर्ग देवहक आइ । तिन दोन्यौ के सुत उपजाइ । सप्रतिष्ट अभिधान विचार । धखौ गणक सुभलजन निहार । क्रमक्रम बड़े बाल तियथान । रूपमुलक्षण अतिगुणवान । शास्त्र शास्त्र बिद्या पढ़ि लई । नृपनिज कारिज मनमें ल्याइ । पानिग्रहन पिताकरि दियो । नारि सुनंदा सुत जुग कियो । नृप निजकारिज मनमें लइ । राज दियो निजसुत सुखदाइ ॥ जाइ सुमिंद्र मुनि शिर नयो । पंचमहाव्रत तिन गहिलियो । दुछर तप श्रचंद सुनीस । करै हानि त्रिभुवनक ईस ॥ \*दोहा\*

पंच अब्रत राइ सुत लिये पिता मुनि पास । करि नमोस्तु पुर जाइ निज पूरे सबकी आस ॥

\* चौपाई \*

राज करै सुप्रतिष्ट नरेंद्र । अरिगन गज मद हरन धृगेन्द्र ॥ प्रजा पुत्र सम पालै राइ । इतिभीति भय दूर नसाय ॥

\* दोहा \*

तिस अवसर मुनि राज इक आए सब सुखकार । नाम जसोधर जगत हित उपजावन गुनधार ॥

\* अडिल \*

देखि नृपति ऋषाइ अग्रहै भक्तिसौं । तिष्ठ तिष्ठ मुख चवै करे श्रुति सक्तिसौं ॥ धन्य तपोधन धीर बीर तुमहौ सही । जेतुमसैवचरन मुक्ति तिनही लही ॥ \* दोहा \*

अस्तुति करि नव भक्ति युत दाता गुन पुनि सात । शुद्ध आहार सुमुनि दियो देखि नृपति हरषात ॥ अपैं निद्धि मुखतैं जुकहि ध्यान धरे बनजाइ । पंचा चर्य अमर कियो देखि नृपति हरषाइ ॥ \*चौपाई\*

सुख सागर मैमन नरेस । साधिलिये बहु नृपके देस ॥ बहुत कालचीते इसरीति । भोगे भोग नारिनर प्रीति ।

## \* अडिल \*

एक दिना नरनाह सहित नारी तथा । बैठे अति हित मनसो धर्युपर जहां ॥ दिस विलौकन करत एक  
दिस देखियौ । उलकापात उद्योत नृपति तथां पेथियौ ॥ \* दोहा \*

सुप्रतिष्ठ नृप देखि इह मन विरक्त अति होय । तव धन पुत्र कलत्र ग्रह उल्कापत पिव जोइ ॥  
अष्टान्हिक पूजाकरी । निजमन हर्ष बढ़ाइ । अष्ट द्रव्य शुभ भाव उत श्री जिन चरन चढ़ाइ ॥ निज  
सुतकौं सब राजदे भाँवै भावनसार । सुमंदिर जिन निकट नृप मुनि मुद्रा अवधार ॥ \* अडिल \*  
पंच महाव्रत सुमति श्रुति त्रय धारही । बसुकरि गुनमन धारि जिनात्म विचारही ॥ द्वादस विधि  
तप करहि लीन मन तत्व सौं । सैह परीस्या विविधि आपने सत्वसौं ॥ \* दोहा \*

षोडस कारन भावना मन धरि करहि विचार । तीर्थकर सुगोतकौं बंध कियौ सुखकार ॥ अंत समाधि  
मरन कियो पंच अणुव्रत नाम । तथां जयंत विमानमें उपजे सब सुखधाम ॥ \* चौपाई \*

अहंभिद्र पदवी तिनधार । अंत महूरत जोवन सार ॥ दिव्यरतन मुक्ताफल भले । सहित सुगंधित  
माला गले ॥ एक हस्तकी उन्नत काय । अति सुंदर लक्षण हितदाय ॥ समुद तीस अरु तीन प्रमान ।  
आर्विल तिनकी करी बखान । लेस्या शुक्ल भाव मनधर । छहोद्रव्य की चरचा करै । नोः प्रविचार भोग  
सुखजोइ । सील सहित नारी नहि होइ । इत्यादिक सोभा गुनरीत । आन्य शास्त्र सौ जानौं भीत ॥  
इह जिय जिन उपजै हरिसं । सो मुनि श्रीनिक है अवतंस । अथै जंबू बरद पसु नांम । भरत क्षेत्र  
तामै अभिराम । देस बत्स नाम तहं एक । कौशांवीपुर है सुम टेक । मधवा नृप नागर प्रतिपाल । दुर्जन  
जन कौहैं उरसाल । वीत सोकनागीपटनारि । सीलसुलक्षण अति गुनधार । रघु नांमां तिनकै सुतभयो ।

सब जन बल्लभ सुंदर ठयो । वा नगरी में अति बलवन्त । सुमुख नाम हैं सेठ महंत । देस कलंग नगरपुर दत्त । तहसैं आयो बीरक दत्त । बनमाला तिस तनी । रूप सुलक्षण सोभा घनी । सुमुख सेठ निज ग्रह में थाप । बहु आदर करि राखैं आप । कृत बसंत बन क्रीड़ा न गयो । बनमाला तहें देखत भयो । सुमुख काम सर पीडित होइ । अति बिह्वल है चित्तमें जाइ ॥ बीरदत्त कौं अति धन दियो । देसांतर कौं तिन गमन कियो ॥ तिस पीछें उसकी वह नारि । निज ग्रह राखि कै सुखकार ॥ बस्त्राभरण दिए बनवाय ।

काम क्रिया करि सुख उपजाइ ॥ \* दोहा \*

कार्य अकार्य नही लखैं । काम अध जे होइ ॥ जो जन्मांध मनुष्य सब । मारग कौं नहि जोइ ॥ द्वादस बरष बीति जब गए । बीरदत्त तव आवत भए ॥ देखि चरित्र शोक तहं भयो । लज्जित है बन में उठि गयो ॥ धृग संखार अक्ष के भोग । लेन जोग हैं श्री जिन जोग । दिक्षा लै सुरहुवी सोर । चित्रांगबसौ धर्म मझार ॥ सुमुख सहित बनमाला एक । दिन आहार दियो विवेक ॥ सहित सुधर्म सिंध मुनिराइ । पुन समर्जन करि सुखदाइ ॥ चपलापतन भयो इककाल । दंपति प्रांन तजे तत्काल । येही भरत जो क्षेत्र बिसाल ॥ देस तहां हरि वर्ष रसाल । पुरी भोग पुरनांम सुबसैं ॥ नृपति प्रभंजन अति गुन लसैं ॥ बंश बाध हरिबंस बिख्यात । मरकंडनारी सुखदात । सुमुख जीव तिनको सुत भयो ॥ विद्याजुत जोवन तन लयो । वही देशमें शीलपुरेश । धत्र घोषनारी शुभ बंस ॥ बनमालाचर इनकै भाइ । पुत्री विद्युन्माला थाइ ॥ पूरन पुन्य जोग इहनारि । सिंहकेछ परण सुखकार ॥ ते दंपति है भोग कराइ । एकदिन बन क्रीड़के काज ॥ दानपुन्य करिजुग सुखपाइ । गए नारिनर सब सुखसाज ॥

\* अडिल \*

वादिन सौचित्रांगद देव सुआईयो । देखि पूर्व भवं जांनि रेश उपजाईयो ॥ लैदोन्यौ कौ देवविमानं  
चढाईकै ॥ खंडकैं तनु सिंधु डारिहौ जाईकै । प्रख भव जो सुखखमित्र रघु नामसौ । पालि अनौवृत देव  
भयौ सुखधांससौ ॥ कहै देवसुनि देव पाप जनभंगकौ ।

\* दोहा \*

संसारणव पतनकौ । कारणहै इक काज ॥ रवि प्रभु कोय बचन सुनि ॥ अलुंकपा चित साज । चंपा  
पुर के अरण में । दंपति थापे जाइ । गमन कियौ निज अमरपुर ॥ कियौ कांम सुख दाइ ॥

\* अडिल \*

तापुर कौ नृप चंद्र कीर्ति सुतरहित है । मृत्यु भयौ तिसकाल सचीमन चितहै ॥ करै बिचार नरेस  
थापिए कौन कौ । गज सुख कलसा देइ न्हावैं जौन कौ ।

\* दोहा \*

गंधोदिकसौ पूर गज । छोडि दियो तिसवार ॥ गज कलसा लै बनगयौ । सिंहकेतु सिंठार ॥  
प्रजा सहित सब सखिवते सिंह पीठपै थाप । करि अभिषेक नरेस पद । सिंहकेतु नृप आप ॥

\* अडिल \*

मंत्री पूछैबात कहौ नृप कौनहौ । तात मात फुनि जात देस पुर जौनहौ । सुनि हरि वर्ष सुदेस भोग  
पुराइहौ । परभंजन हम पिता मृकंडू माय हो ॥

\* दोहा \*

सिंधकेतु तिस पुत्र हम रिपु सुर हम लैआइ । सुनि नागर मंत्री सबै । हिए में अति हरषाय ॥

\* चौपाई \*

मरकंडू मावा सुत जांनि । मारकंडतिस नामबखानि । फुनि तकिंसुत हरि गिरि भयौ ॥ हरि गिरिकैं हिम

भिर सुत ठर्यौ ।

इत्यादिक हरि बंसमें । राजा भए अनेक सुरसेन नृप अतिबली । विद्या अधिक विवेक ॥ निजभुज बल अरिजीति बहू । कीनों अति सुख काज ॥ निज नामा कित नगर करि ॥ करैं जहां कौ राज ॥

\* दोहा \*

\* चौपाई \*

तिनकै सुरबीर सुत भए । जुगनारी सुत तिन सुखलए । प्रथम धारिणी नांमा सती । दुतिय सुकांता अति गुणवती । धारिणिसेन सुत उपज्यौ एक । अंधकविष्टी सबगुण टेक ॥ नांम सुकांता दूजी तिया । पति िष्टी तिन सुत जनमिया ॥ अंधकविष्टी नृप पद पाइ । नाम सुभद्रा अति सुख दाइ ॥ पुत्र भए दस अति गुणवान । तिनके नाम सुकरौ बखान ॥ \* दोहा \*

जेष्ट तनय सागर विजय सागर वतगंभीर । दानावैष सुर दुम सरस अरु बीरनि मैधीर ॥ \* चौपाई \*  
जिनकै तीर्थकर अवतरैं । कौबुद्धि तिनको वर्नन करैं ॥ दुतियक्षोभ हैं पुत्र उदार । सत भित समुद्र तीसरो सार ॥ हिमवन तूर्य बिजै शुभ खान । पंचमष्टम अचल प्रमान ॥ धारन सप्तम अष्टम देख । धारन धारन पुन्य विशेष ॥ अभिनन्दन नवमौ गुन धार । विद्या रूप कला विस्तार ॥ दसमैं हैं वसुदेव मनोग । रति पतिवत सुन्दर तन जोग ॥ अंधकविष्टी दस सुत युक्त । दश लक्षन द्रव बहु सुख भक्त ॥ तनया जुग उपजी सुख दाइ । कुंती मांझी सुंदर काय ॥ समुद्र बिजैकै नारि प्रवीन । शिव देवी रानी गुनं लीन ॥ जिनके जठर तीर्थकर होइ । वर्नन करत सकत नहिं कोइ ॥ औरनके प्रिय तिया मनोग । करि विवाह सब अपने लोग ॥ पति विष्टीकै पदमावती । प्राण बहूभा अति गुणवती ॥ पुत्र भए त्रिभे तिनकै सार । उग्रसेन आदिक गुण धार ॥ देवसेन दूसरो महंत । महोसेन तीजौ गुणवन्त ॥ एक

सुभा उपजी श्रुति रूप । इन कुटुंब सहित राजें भूप ॥ सूरी पुर नगर सुखदाह । सूर वीर नृप राज कराह ॥

\* दोहा \*

गंध मादन गिरि जहां आए सुनि तपसार । सुप्रतिष्ठ नामां तहां सब जीवन सुखकार ॥ नृप सुनि सब परिवार श्रुति सूरवीर जहं जाइ । करि नमोस्तु सुनि धर्मको दिशालई सुभाइ ॥ \*चौपाई\*  
अंधकबिन्धी नृप पद पाइ । राज करै परिजा सुखदाइ ॥ फुनि सुप्रतिष्ठ मुनी सुर तहां । गंध मादन गिरि आए जहां ॥ निशा समैं धरि व्यान सुजोर । करि उपसर्ग शत्रु सुर घोर ॥ सहै धीर धरि श्रीमुनि राइ । केवल ज्ञान सवै उपजाइ ॥ सुरनर खग आए तिस थान । पूजा करै नृत्य गुनगान ॥ अंधक बिन्धी गज चढि जाँवै । जुत परिवार सुआयौ तबै ॥ करि नमोस्तु ब्रष सुनि मनलाय । सुर उपसर्ग वृच्छि सुनि राइ ॥ निज सुत भव छैनर ईश । सुनि हरष्यौ फुनि नायो शीसं ॥ \* दोहा \*

समुद विजयको राजदे दिक्षा लेहू बिचार । अति तप करि शिव पथ लियो निज आतम सुखकार ॥

\* अडिल \*

सूरी पुरको राज समुद्र विजय करै । नरनारी पुरलोग सबनिको मन हरै ॥ सुनि श्रनिक मनलाइ जनम जिन राइको । शिव देवी उरआइ होइ सुखदाइको ॥ एक समय सुर ईश सभामैं श्रुति करै । जिन जात्राके बचन सकल सुर उबरै ॥ अवधि ज्ञान सुजोय शब्द ऐसै कहै । समुद विजय ग्रह श्री जिनवर उपजै सही ॥

\* दोहा \*

ताही समय सुरसनै धनपति आजा दीन । नौ बारह जोजन तनी नगरी रचौ नवीन ॥ \* सोरठा \*  
पंचा चर्यकराइ आय धनंद रचना करी । अति उत्सव सुखदाइ गर्भ अगालमास छह ॥ \* अडिल \*



शिव देवीकी सेव कुबालाचल बासिनी । करे छुमारी सर रमा नसुहासिनी ॥ बीतेहैं पटमास महा  
अति सरमसै । बहु उत्सव गुनगान नृत्य कर परम सैं ॥

\* दोहा \*

एकदिन रैनि सुसैनिभैं षोडस सुपन निहार । प्रख बर्नन जो कियौ ताहि देखि मन धारि ॥  
कार्तिक शित शुभ छठि दिन ऊषा ऋक्षत्र बखान ॥ सो अहमिन्द्र सुर तहां गरभ  
स्थित भगवान । प्रातसभैं जिन मातउठि । मंजनकरिश्रृंगार । निकटजाइ पति सैंसुनैं । मुपनै फल सुखकार।

\* छंदपद्धटी \*

जिनमंदिर में जिन मात ॥ आइ सुर बनिता सेव करै सुभाइ केई नाचैं गुनगावैं विशेष केई सुकर  
दिखावैं शुद्ध सुरेभ केई बस्त्राभूषण हाथ लेइ । जिन माता के करमांहि देखे केई ले सुमन सुगंध सारै ।  
पल्पंकरचैं सुखसहित धार । केई मंजन करि जल सु त्याइ । गज चरन प्रक्षाल अति सुभाइ । केई ग्रहकाज  
करै मनोक्ष । रस काव्य पहेली मात जोग । केईतनरक्षा करत सेव । केई कर जै जै देव देव । इत्यादिक  
और अनेक रीति । निज निज काज करि करै प्रीति । जिनमातानन सोभा लसंत । सुख वर्नन कहत  
लहन अंत । नवमास वितीते इसप्रकार । सुनि श्रैनिक जिम जन्मावतार ॥ \* दोहा \*

श्रावन शुक्ल सु छठि को । चित्राउड सुखदाइ । तीन लेख सुखकरन को । जन्म लियौ जिनराइ ॥ अपने  
अपने चिन्ह सौं । सुरजान्यौ सुविशेश । निज निज जान सु चढ़ि तहां । आए सकल सुरेस ॥

\* सर्वेया \*

सुरीपुर शक्रआय ऐशपति सजि ल्याय जिन जी चढ़ाय सुर मेर गए तवहीं । पांडुकशिला पैप्रसु प्रख  
सुमुख थापि क्षीरोदिक ल्याइकर कर छुंभज कहीं जिन को नहाय बसु द्रव्य चढ़ाय अति मनहरपाय नम

नाथ नामजवर्हीं । कहि गेह लाय मात अंक थापि नृत्य कर कहत सुफल सक्र पनी मेरौ अवर्हीं

\* दोहा \*

कल्याणक जिन जन्म को । करि सुरपति निज थान । जाइ भक्ति बसि होइ हरि । करै भोग सुखखान

\* चालछन्द \*

जिन बाल अवस्था राजें । देखत सब जन दुखभाजें । जिन श्रवन कुंडल सौहैं । हुतिनील वर्ण मनमोहैं ।  
लटपट पगधरत मनो गैं । सबजीवन को हरैं हसो गैं । कसही कर करत बिहारैं । नरनारी जनहुख करैं ॥  
बसु सहस सुलक्षण काया । गुनकहत पारनहिं पाया । अतिसैं दसयुत जिनराइ । वह बाल क्रिया सुख दाय ॥

\* दोहा \*

तदनंतर वसुदेव सुत । कृष्ण नाम गुणवंत । आता हूँ बलदेव जिस । बलनारायणशंत ॥ \* चौपाई \*  
जिनवर कीडादेखि सुभाइ । हर्ष हिए अति अंगन माइ । सब परिवारसहित नरईस । समुद विजै नृपराजै इस ।

\* अडिल \*

एक समय श्रीकृष्ण गये मुथरा तहां । कंशराय ह्वां भूपजुछ हूवौ जहां । माखौ मुथरा रायनारि जीवजसा ।  
गई तात के पासि कहै मो पति नसा । जरासिंधु मुनि बात कहे किन नाशियौ । अति गदगद हूँ बचन  
तवै तिन भाषियौ ॥ कहै कौन श्रीकृष्ण कहां वहरहत हूँ ॥ नास करैं छिनमाहिं जरासिंधु कहत हूँ ॥

\* सर्वया \*

पुत्रन कौ आजा देइ सूरी पुरजाइ तुम आयसु को पाय सैन लेइ तव चले हूँ । आदिदस प्रात सब आइ रन  
भूमि जुछ कीयौ नहि टले हूँ । जरासिंधु सुत बिजबल सही न देखि भाग गए छिन माहिं सब मदगले

हैं । हारे सुत जानि और पुत्रन कौ आजा दीनी तेउ आइ हारि गए जान्यौ अति बले हैं । \* दोहा \*  
 समद विजय तबैं । मंत्री सो इक बात । कौनमतौ अब कीजिए ॥ ज्यौं होवैं कुसलात ॥ सुनि मंत्री  
 एसै कहै । मुनौं नृपति ममैवन । जोबलवानं विरोध है । तजे देश है चैन । नगर दूसरो कीजिए । इहां तैं  
 चलि सुनि राइ । जरासिंधु को मरन धुव । निश्चै कृसन कराइ । इह विचार मनमाहिं कर हुंडासोपिनि काल ।  
 दोष जानि ताजि नगर कौं । चले तबैं तत्काल ॥ \* चौपाई \*  
 सिंधु देव जिन आगम देखि । अपनौं जन्म सुफल करि लेखि ॥ नौं द्वादश जौजन परमान ।

जल संकोच कियो सुरथान । नंदआय नगरी सुत्रि रची । मणि मानिक मोतिन करि खची ॥ जिनवर  
 सौध सत षनै किये । पंच षनैति षनै कै दिये । पंचाचार्य कियो सुरसार । सदन थापि जिन हर्ष  
 अपार । ऐसी क्रिया करी सुरराइ । अमर नगर कुनि गमन कराइ । समुद विजै नृप सोभित जहां  
 रत्नाकर त्रयुत तहां ॥ \* दोहा \*  
 सुखकर श्री जिन नैमजी । क्रीडा करै सुभाइ आगैं बर्नन और कछु । सुनिए श्रेनिकगइ । जरा  
 सिंधु लखि पुत्र कौं । हारजानं दुख मानि काल जमन आग्या लई । गमन सूरपुर थान चौपाई

आय देखि सूरीपुर तबैं । जान्यो भाग गए जन सबैं । आगैं देखि चलयौ कुलसुरी । माया रची भक्ति  
 अनुसरी । चिता अनेक जलत तहां करैं । रुदन रूप नारी तन धरैं । कालज पूछै मन लखि नारि । कारन  
 कौन कहौ तुम सार । देवी कहै सकल यहुवंस । अग्नि जले सब भए निंस । सुनिकरि फिरि आयो  
 निज थान । पिता अग्र सब चरित बखान \* दोहा \*  
 सुख करिकै तिष्टै तहां ॥ कारन हुवौ और राज ग्रही कैवनिकइक । गयौ द्वारिका ठौर । रत्नादिक

बहु लेइकैं । फुनि राजग्रह आइ जरा सिंधु कैं जाइ तट । रतन सुभेट कराइ । \* चौपाई \*  
 रतन देखि वृद्धै नराय । सब विरतंत तिन दियो बताय । सुनि जाहु कौण्यौ नरनाथ । लडने चल्या  
 चमूळै साथ ॥ सुनि श्रीकृश्न और बलदेव । मनमै उपज्यौ अति अहमेव । मत्र विचारनेम द्विग गए ।  
 जिन मुख हर्षित देखत भए । जयउपनी जानी मनमांदि । जीति होय हम मिथ्या नांदि । सेन्याले आए  
 रनबीच । शुद्धभयौ अति बहु जनमीचि । श्री श्रीकृश्न जीति तवभई । तीन खंड जन आज्ञा लई ॥ आने  
 लोग बहुत तिसमै ॥ सुख मै काल बहुत तहां गमै ॥ \* सर्वैया \*

इकदिन सभामाहि सागर विजैकौं आदि दसो भ्राता बैठे अतिमन हरषायकैं । कृश्न बलदेव पांच पांडव अनेक  
 नृपबल बर्नन बात कहै सुखपाइकैं । कोई बलदेव कौं बतावै कोई पांडव कौं कृश्न बलवानं कहैं अन्य कौं बताइकैं  
 तवबलदेव कहैं काहे झूठी बात कहौ नेमनाथ अति बली देखो लुमजाइ कैं । \* सौरठ \*

इह सुनि तबहिं मुरारि । कहे नेम बल देखिए । तिस अवसर मनधारि । आए अब निज पेषिए ।

\* चौपाई \*

तदनुकूल है बातकैं । बैन परस्पर वल उचरैं । कहै कृश्न प्रभु नेम कुमार । बलदेखन इच्छात्रभधार । स्वाभाविक  
 जिन हाथ प्रलंब । करकनिष्ठका चक्रनलंब । नारायण निज बल अति कियो । सरल करन अंगुरी मन  
 दियो । स्वर्ण शाकुली फुनि पहराइ अंचलेंच बिहल दुखदाइ । जंचौ करिजिन कर पंकाय । कृश्न छुलाय  
 आति हरषाय । लज्जित है नाथौ निज सीस । ठुम प्रभु तीन भवन बलईस ॥ इकदिन सिव देवि द्विजाय ॥  
 निज सुतव्याह कसे किन माइ । कहै मात सुनि कृश्न कुमार । ठुम इहवात करौ सुविचार । आज्ञा लै आए  
 निज थान । निज नारी सौं बात बखान । ब्याहमनाथो केलि कराय । नेमनाथ सौं आति हरषाय ॥ \* दोहा \*

कतु बसंत आए तहां । फूले सब बनराय । रोगी गंधारी सबैं । निज जुत है बनजाइ ॥ जल क्रीडा प्रसुसैं करैं । कहि विवाह की बात ॥ हर्षित जिन मुख लखि तबैं ॥ हरष हिए न समाय ॥ क्रीडाकरि कटि बस्त्र तजि । प्रछालन हित काज ॥ जंबूवती मख उच्चरैं । हम न जोग इह काज ॥ धनुष संख अहिसेज कौं । दलन पराक्रम धार । सो कटि बस्त्र न देइ हम निर्जल कारन सार । सतमासां सुनिइम कहैं ॥ नवीद मूढ एवैन । तीनलोकमें अति बली त्रिभुवन पतिए अैन । \* सर्वैया \*

जिन सुनि बैन आए आयुध सदन मांहि संख धनु अहि सेज दलमल डारी हें ॥ संख धुनि सुनि हरि आइकैं चरन गहे धनुष टंकार सुनि अति भय धारिहैं । आए बलदेव श्रुति करत अनेक विधि कौपें कोपन कीजे प्रसु तुम बल मारीहें ॥ तीनहू भवन सक्र सेव सबकरैं आइ चलयौ निज थान प्रभु विनती हमारीहैं । \* दोहा \*

निज मंदिर आए प्रसु । मनमें हर्ष अपार ॥ हरि बलमतो विचारिकैं । पत्नी भेजी सार । स्वस्ति श्री सुम बांचिकैं । उग्रसेन नृप राज ॥ राजल कन्यादीजिए । नेम विवाहन काज ॥ \* सोरठा \*

उग्रसेन पढ़ि लेखि ॥ हर्षिहिए नसमातेहैं । लगन लिखाय विसैल \* चौपाई \*  
आयौ लगन द्वारका जबैं । अति उत्साह भयौ पुरतबैं । लगन लेइ द्विज दान सुदह । मंगल पांनि ग्रहन करेइ । सुभ मंडप बेदी तव करी । मणि मणिक सुक्ता रचिधरी । नृत्य बधावा मंगलगान । गेह गेह उत्साह बखान ॥ सहज नेमतन अतिसो भाय । और षोडश सिंगार बनाय ॥ सब विवाह सामग्र साथ । समद बिजैं आदिक नरनाथ । उग्रसेन द्वारै जबगए ॥ पशुगन आइ पुकारत भए । सुनौं नाथ त्रिभवन पतिवात । विन तकसीर हमारी घात । \* सर्वैया \*

सुनौदधानाथ हमउपरि दया विधायमहि छुड़ाय सवजग जस लीजिए । तुम तीनलोककारन परबंध दयाहेत  
जानि सुखलास हमकीजिये । हाहा जिन तुम बिन जाईके पुकारै कहावतसै हमछूट बनसौं मिलाय दीजिए  
देखिनेम जिन कहै धृगैह विवाह इहे कारन जगत तजि स्वारथकौं पीजिये । \* अडिल \*  
स्यंदनेश प्रभु उतरि पाशि खोली जैं । दैअसीस सवन जाइ पसु हरये सबै ॥ द्वादश भावन भाइ  
विरक्त भए जहां । ब्रह्मोतर लोक अपर आए तहां ॥

\* दोहा \*

अस्तुति करि निज गुर गए । शक्रपालकी ल्याय प्रभु बढाय गिरि उजियै । गए सुआनंद पाप ॥

\* सवैया \*

परिग्रह त्यागि सब ध्याय तरुतल प्रभु अंनमः सिद्धेभ्ये मुसु तवही उचार्यौ हँ । पंचसुखी लौच करि  
श्रावन सुकल अठि मोह मंदनासि राग दोष सवदास्यौहँ । नृप एक सहस सहित सुभलियो तप आतम मुरस  
लीन महाव्रत धार्यौहँ । सुतप कल्यांनक अमरपति कीर्नी तप कत्र लेइ क्षीरोदिक सिंधु मांहि डार्यौ हँ

\* दोहा \*

प्रभु ध्यान में लीन है ॥ करै आतमांकाज । सीस नवाय गयौ तैं । अमरलोक सुराज । राजल इह  
सब बात सुनि । बली तैं गिरि नारि । अस्तुति करि सिरनाइके छुल्लनी व्रत धारि ॥ \* चौपाई \*  
नारायण बलदेवकुमार । करि नमोस्तु निजग्रह संचार । राजकरै श्रीकृष्ण नरेस । तीनखंड सुखकरन विशेस । श्री  
जिन बेला व्रत करिजैं । उठे आहारहेत फुनितबैं । इर्यापथ अवलोकनकरै । पट काया रक्षा मनधरै ॥ द्वारा  
वत पुरकै पसार । वीर दत्त नृप प्रभु निहार ॥ आगे आय नमोस्तु करी । विनय भक्ति तिन मनमें धरी ॥  
तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठो मुनि राइ । पडि गाहन विधि करि नर राय ॥ प्राशुक क्षीर सुभोजन दियो । अपनो जन्म

सुफल करि लियो ॥ अथै निच्छि जिन मुख उच्चैरै । पंचा चर्य अमर तब करै ॥ सढि द्वादस कोटि प्रमाण ।  
रतन वृष्टि नृप रुदन बखान ॥ टुंढुभि शब्द व्योम अनिवार । होय सुजल कनतन मनहार ॥ सुर  
द्रुम मुमन सुरभ बहु लिए । जैसै सकल सुरासुर किये ॥ एपांचौ अचिरज नृप गेह । करै परस्पर सब जन  
नेह ॥ नेमि जिनन्द बनमें जाय । अचल लोह आतम लौलाय ॥ षट पंचास अहनि जिन देव । छद मस्तक  
बस्ते स्वय मेव ॥ कर्मघातिया प्राकृति हानि । केवल ज्ञान प्रकास्यो भान ॥ सूक्ष्म थूल चराचर जिते ।  
युगपत् भासतहै सब तिते ॥ जीव अजीव सुगुन परजाय । गए समैमें सब दरसाय ॥ \* दोहा \*

महिमा केवल ज्ञानकी कौप्रवन बनराइ । कैतो वह गुन सिद्धमें कैजानै निज राह ॥ अस्वनि सुदि प्रति  
प्रद सुदिन अपरान्हक थित सार । कल्यानक सुरपति कियो अति उछाह मनधार \* चौपाई \*

समोसरन धनपति रचि लेइ । तीन लोक श्री सोभा देइ ॥ तीन कोट गोपुरहैं च्यारि । नृत्य शाल नाचै  
सुर नारि ॥ पूरब वर्नेन को उनमान । समो सरन रचना सबजान ॥ जुग जोजन परमान विशाल । क्षेत्र  
पाल राखे रखावाल ॥ गणधर एकादशहैं तहां । श्री जिन मुख धुनि उपजत तहां ॥ नौसत मन पर्येके धार ।  
अंबधि धारि पंद्रह सौसार ॥ ग्यारह सहस नाग सत कहैं । सिष्यनिकी गिनती यह लहैं ॥ एकादश शत  
वैक्रिया युक्त । षोडस सो केवली प्रयुक्त ॥ वेद सतक पूरबके धार । गज सत भितवादी अतिसार ॥  
सष्टादस सहस परमान । सर्व संघ भित करी बखान ॥ तीन लक्ष श्रावकनी कही । एक लक्ष श्रावकहैं  
सही ॥ द्वादश समा विराजे भले । होत सुधुनियातिक टले ॥ \* दोहा \*

अलय ज्ञान भेरे हिए सोभा अगम अपार । कौशिक सूरजि किरनि किम बरने अति बुध धार ॥

## \* चौपाई \*

आवै सुरनर खग के ईस । पूजा करै नवावै शीस ॥ सुनि श्रीकृष्ण और बलदेव । पूजन आए तजि  
अह मेव ॥ धर्म सुन्यो मन अति हरषाय । शीस नवाय फुनि निजपुर जाय ॥ अर्द्ध चक्र सुख भोगै भोग ।  
करै राज सब जन सुख जोग ॥ सुत प्रदुमन मदन पद धारि । भाउ सुभाउ संबु सुखकार ॥ सब परि  
वार सहित सुख करै । पूजादान अधिक विस्तरै ॥

## \* दोहा \*

समौसरन श्री नेम जिन नाना देश विहार । करि आए गिरि मेरुँ सुर करि जैजै कार ॥  
आए कृष्ण बलदेव पूजा करि धर्म सुन्यो प्रसन्न किया द्वारका की तिथि कहि दाजिये ॥ नारायण आशु

## \* सवैया \*

फुनि गन धर कहै द्वादश बर्ष पूरी तिथि सुकहाँजिये ॥ दीपायन कोप जोग नगर भसम होइ जरद कुमार  
कर नारायण छीजिये । ऐसी सुनि शीस नाय जाय पुर राज करै सका मन हरखिस सेती जानि लीजिये ।

## \* दोहा \*

बर्ष सात सत नेम जिन । केवल पदवी धारि । आदि उन छप्पन दिना । अंत मास इकसार । उर्जयंत  
परजोग प्रभु । रोध कीयौ जिनराय । लघु पंचक्षर कालमें सिद्धि क्षेत्र थितिपाइ । चैत असित शुभ आदि  
दिन ॥ मघवा मन हरषंत । कल्याणक उत्सव करै ॥ बरनत लहूं न अंत ।

## \* चौपाई \*

मनलाय । द्वाबिसति तीर्थकर होइ । कूट प्रकास धाम शिव जोइ । हुंडा दोष जानि सुराइ । जाय कूट  
पेण्डज कराइ । फुनि जिन थान अमरपति गयौ । जान्यौ जन्म सफल अब भयौ । जोनर कूट बंदना करै ॥



स्वप्नमं सं विवगति परि हैं। सकल सिखर प्रणमैं जो कोई। तिस फल वरनत अंतन होइ ॥ \* सर्वैया \*  
 ऐसे सिद्ध क्षेत्रसु कर्म जोग पाइयेत होइ मन सुख जिन पूजा क्योंनैं कीजिए। गेह देह नेह धन जोवन  
 सकल इह चंचला समान छिनक एक मांहि छीजिए। रागदोष त्याग मन समभाव आनि उर संघ कौ  
 चलाइ बहु जनदान दीजिए। फेरिन मिलेगी दांव जांयगे नरक जब सिखर कूटवंदनिज भौ सुधारिलीजिए।

\* दोहा \*

सिखर महातम बरनियौ ॥ लोहाचार्य विशेष। मन सुखउदधिसुकथन करि। सुफल जन्म निज लेख।  
 इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेखुसंदाचल महात्म्ये भापायामन छुद्ध सांगरेण वरणनं २३ ॥

\* सर्वैया \*

सुख करन हार हरत दुख संकट के सेवत धरनेंद्र चिन्ह चीनेहैं। अस्वसेन तात मात बांमा नामा देवि  
 सुभ बाना री नगर मैं जन्म शुभ लीनौ है। सजल जलद तन वरन वरप सत आशु नव धनुष तन  
 ऊंचौ कहि दीनैहैं ॥ ऐसे पार्थनाथ मनसुख सिंधु सुख दायकर जुगजोरि कै नमस्कार कीनो है ॥

\* दाहा \*

ऐसे पारस नाथ प्रभु ॥ सेवत संकट जाय ॥ तिन गुनकथन चरित करि ॥ हिए हर्ष उपजाय ॥

\* चौपाई \*

जंबूदीप परधान। लखजोजन विस्तार बखान ॥ मध्य सुदर्शन मेर बिबेक ॥ उन्नत जे जन लाख सु  
 एक ॥ ताके दक्षिण क्षेत्र सु लसैं ॥ भरत नाम धनुषा कृत वसैं। तहां खंड छह सोभा देत। परम धर्म  
 सुख कारन हेत ॥ आरिज खंड मध्यमैं सार ॥ आरज जन उपजैं सुख कार ॥ धर्म ध्यान ते साधन करैं।

सिवरमणी रामा कौं बैरै । नाना देस बसैं बहु भांति । मानौ अमर लोक क्री पांति । जहां जाइ समोसरन  
 जिनेंद्र ॥ सेवत सुरनर खग धरणेंद्र । पुरपट्टन कर्वट सो भंग ॥ पेट गांव कहि लहूं न अंत । तामै कोसल  
 नाम सुदेस । इति भीति दुख होइ न लेस । बन उपवन सोभैं बहु पास । पंथिक छुधिगतनघूर आस ।  
 कुंवा बापिका निर्मल नीर । सरबिंदंग सोभैं बहुतीर । बारिज करि छादित सुखदाइ । पिए मिष्ट जल  
 जन हरषाय । पुष्प पराग मधुर इंकरै । मानौ देससुजस उबरै । तहां तरंगिनि शुचि जलधार । बहै  
 प्रभाव महासुखकार । तटनी तट मुनि ध्यान धराइ । निश्चलांग आतम लौ लाइ । श्रावक जन आवैं तिसपास ।  
 सुनैं धर्म करि चित्तहुलास । अधिक मुसोभा कही न जाइ । इंद्र जन्म चाहैं तहां आय । नगर विनीता सोभैं तहां ।  
 बरनन करत मोहि बुधि कहां । सजल पातिका च्यारौ वोर ॥ तिन तट नृत्य करै शुभ मोर । पुष्प  
 बाटिका सोभा घनी ॥ सुमन जात बहु जातन गनी । तहां सरोवर विविधि प्रकार ॥ तिन तटतर बर  
 अति सुखकार । मुनि आगम होइ तिस थान ॥ केवल बांनी करै बखान । सोपुरजन पूजन उा  
 हार । बस्त्राभूषण बहुत समार ॥ आइ अचिर पद धर्म जु सुनैं । जीवां जीव भेद हिए सुनैं ॥ च्यारिप्रकार  
 दांन कर सुखी । कोई न बदन पीतम भय दुखी ॥

\* सोरठा \*

सोभा अगम अपार बरनत ग्रन्थ बढ़े बहु । आंगे सुनि विस्तार ॥ कास्य मात्र कहि लीजिए ॥

\* सवैया \*

बत्रवाह भूपति नगर मांदि राज करै बंस हँ इष्याक अति नीति सुखदाइ है । सुंदर सुतनु सुभ  
 छवि राजत है देवा गुरु ग्रंथ कहिए भावनां सुभाई है । प्रभा करि नाम लिया पिया सिय उनहार तेई  
 दोन्यौं दंपति सु प्रीति उपजाई है । भोगत सुभोग बहु धर्म में लीन चित ऐसी राजपदवी सु पुन्य

जोग पाई है ॥

एकदेव अहमिंद्र पद आशु प्ररन तजि आइ । प्रभा करी के गर्भ मैं । थिति कीनी सुखदाइ ॥

\* दोहा \*

\* सारठा \*

प्ररन गर्भ प्रमान । सुदिन महरत शुभ धरी । प्रसव पुत्र गुणखानि ॥ मान अनंद कुमार इम ।

\* चालछन्द \*

आनन्द नाम सुर जायो । नृप देखि महासुख पायो ॥ हुति चंद कला समवाल । दिन दिन चाँडे सुख माल । अति तेज सुलक्षणधर । देखत सबजन दुखडार । बल वीर्य वभै शुभ देह । उपजावै अधिक सनेह । गुन बरनत पार न लहिए । बुधि अल्य कहौ किम कहिए । जेवन तन देखि छु तात । बहुते हिय मैं हरपात । अति सुंदर रति समनारि । व्याही आनन्द कुमार । क्रमसौ पद जनक को पायो ।

\* दोहा \*

मंडलेश पदवी लही । प्रख पुन्य नियोग । नैवें आउसैं छत्रपति । सुखकरि भोगें भोग ॥ चौपाई  
एकदिन सभा मध्य थिति राइ । स्वामी हित मंत्री सुखदाइ कहै सुनौ नृपमो वचसार । ऋन वसंत सब जन मनहार । नंदीसुर पूजा चित धरी । प्रख ऋत पातिग सब हरी । सुनिआनंद नृपति सानंद । जाय जिनंद निरखि पदचंद । सुद्ध द्रव्य बसुभाव समेत । पूजा करि बेयो सुभ खेत ॥ छुनि नृप मन शंका इक भई । प्रतिमांधात उपल निरमई । रूप अचेतन क्यों सुखदेइ । संसैं नृप निज चित करेइ ॥ विपुल मतीगण धर तटजाय । निज शंशैं पूछैं नृपराइ । गणधर कहै सुनौ नृपभूप । जिनपूजा फल अदसुतरूप । जेने भाव करै इह जीव । तैसे फलको लहैं अतीव । अमशुख जावैं फलेदेइ । चेत न रहत

सरूप कहेइ । चिंतामन मनीचिंतत करै । सो जडत्व पदवी कौ धरै ॥ सुद्ध सरूप बिंब अवलोक । सुद्ध  
 भाव उपत्रै गत सोकर । सोवह शुद्धभाव परभाव । सुखउपजावन कारन चाव । बीत राग गुन गर्भित लक्ष  
 सो सुभाव आतम में बसै । सोई इहफलदेइ मनोक्ष । इहकारणह सबसुखजोग । छुनि राजा हिए संभंगई  
 निर्मलबुधि नृगति का भई । नमस्कार करि निजग्रहजाइ प्रतिदिन पूजा रात्रिहरषाय । राजा क्रियो बहुदिवस  
 नरेस । मस्तग देखे धवलजुकेस । निजमनमें जान्यौ इमंकटु । भयकंपते मानौ दुखेहत । जेष्टतनय सिखीनौ  
 राज । करण बिचार्यौ आतम काज । सागरदत्त तपोवनधरी नमस्कार करि बैठौ तीर । धर्म श्रवन करि दुबिधि  
 प्रकार । लख्यौ अथिरे सब जगसंसार । बहु नृप संग महाब्रतलेइ । तेरहबिधि चारित्रधरैइ । तपकरते आनंद  
 सुनीस । जेष्टमास पर्वतके सीश । बृषाकाल बृक्षतल रहै । अचल अंग सुभध्यान सुगहै । सीतसमै तटनीतट  
 जाय । जोग धरै निज चित्त लगाय ॥ रत्न त्रयजुत द्वैदस भेद । धर्म धरै पाले विनखेद । द्वादस बिधि  
 अनुप्रक्षा भाइ । तप द्वादस बिधि करै सुभाय । खोडस कारन करै बिचार ॥ तीर्थकर पदवी दातार  
 ऊंच गीत बांध्यौ सुख कंद । इस बिधि तपै मुनी आनंद । पूरुदिना सुक्षर बनाइ ॥ निश्चल ध्यान  
 धर्यौ मनलाइ । पूर्व सहोदर चर रिपु एक । ससमभू दुख सख्यौ अनेक । सोचर बाहन उपज्यौ आय ।  
 पंचानन की देह धराय । देखि मुनी कोण्यो बिकराल । लाल नेत्र सुखवक जुकाल ॥ आइ अचानक ग्रीवा  
 गही । सब उपसर्ग सख्यौ मुनिसही ॥ करि प्रनाम निहचल धरधीर । निर्मल गुन साधी निजसार ॥  
 प्रान तजे सुभ भाव समेत । आनंत स्वर्ग परम सुख हेत ॥ उपजत अंतर्महस्त सार । जोवन तनसुभ  
 लक्षण धार । बीस उदधि परमाजु प्रमान । सुख सागर में मगन बखानि । बीस यष्यगत सासोसास ॥  
 सुरभि सहत लेखै गुनरास । बिसति सहस बर्ष जबजाहिं । मानसीकआहार कराहिं । पंचम नरक अवाधि

पर्याप्त । करै विक्रिया तहां लग जान । देवनेत्र कमल दिनराइ । तिनसहै भोग करै सुखदाइ । इंद्र नाम अहमिंद्र उचार । बिबिधि प्रकार करै सुखसार । आयु मास पट द्रव्य जुलेख । जिनवर पूजा करै त्रिवेक । पंचानन मरि नरकहि गर्यो । सुनि उपसर्ग महादुख लयो ॥ सुनि श्रणिक अहमिंद्र नरेम । जिनथानक तीर्थकर देस ।

\* दोहा \*

सो बरनन मनलाइ कै । सुनत हर्ष उपजाइ ॥ जिनकी थुति पूजा करै । सुरपद सिवपद पाइ ॥

\* भोती दांम छंद \*

सुंदर इह जंबूदीप मनोहरं । परम सैल सुदृटक भासुरं ॥ जामदिसाता सुक्षेत्र विराजितं । भरतखंड सुषट प्रविराजितं । सरप्रमानं मलेच्छ जनाव्रतं । प्रथम आरिज आरिज आव्रतं । लसत्तदेस अनेक जनाकरं । जिन बिहार पवित्र सुभाकरं ।

\* चौपाई \*

तहां सुकासी देस अनूप है । सकल मालव अधिक सरूपहै ॥ पुर पुनीति बनारसि सोहती । धन सुध्यान सजन मोहती ।

\* दोहा \*

अशसेन नांभां नृपति । राजकरै सुखदाइ । बामीदेवी नागियुत । अधिक प्रीति उपजाइ ॥ शक्राग्या धनपति तहां । नगर आशु सुभकीन ॥ पंचार्च्य करै जहां ॥ तीनलोक सुखलान ॥ अशितद्वैज नैमाखकी । नखत विशाषा जानि । सो अहमिंद्र चरगर्भथिवि । संपुटसीपसमानं ॥ मुक्ता जिमतिष्टे गर्भ अंतरीख जिनराइ ॥ कुभव्यौम ज्यौं कुंभमै । लखिए व्यौम सुभाय ॥ पछिम निशि पोडस सुपन । लखि छानि पति डिगजाय ॥ फल सुनि मन हरपत भई । बांभां अंगनमाय ॥ \* चौपाई \*

देवी सेवकरै जिन गाइ । अति आनंद महा सुखपाइ ॥ भीतहै नव मास अनंद । अन्य महोच्च सुनि

सुखकंद । पौष मास सुभ अलिपक्ष धारि । एकादसमी तिथि कहि सार । बांभां देवी दिसि पूब जांन ॥  
उदयादि अश्वसेन बषांन ॥

\* पट्टड़ी छंद \*

मति श्रुतकिरण बलि अवधि भास । जिनवर सुभानु तम मांह नांस । उदित त्रिभुवन परकास कर्न  
सतइंद्र आइ जिसनमत चरन । आयौ तब सचि पाति हरषाय । जिनवर लै सुर गिरि सिखर जाय । मंजन  
पूजा बिधि सकल साधि । पारससंज्ञा कहिजिन अराधि । फुनि ल्याए कहै करि अंब देइ । तांडव नट  
मधवा तवइ । सुर सेवन ताजि निज थांन जाइ । ऐसे शुभ जोग जुसुख कराइ ॥ दंपति लखि श्रीजिन  
तन मनोग । इकं सहस अधिक बसु चिन्ह जोग । उत्सव पुरमै बहुभांति कीन । जाचिग जन मन बंछित  
सु दीन ।

\* चौपाई \*

बाल अवस्था श्री जिन पास । नरनारी जिन पूरै आस । लीला करै मंजन मनहरै । सब जन देखि चरन  
प्रसु धरै । सुर नारी जिन अकै जेइ । जैजै करि माता करेइ । सुर अपनी वह सक्ति उपाइ । श्री  
जिन हिए आनंद बढ़ाइ । करै अनेक विविधि विधि ज्ञान । बाल पन क्रीड़ा इम जांनि । आगे जिन  
कुमार पदधारि । और कथा सुनिए सुखकार । वह पंचानन पंचम नर्क । जासहे दुख रहित जुतर्क । सत्रह  
सागर आयु महान । भक्ति निकरि तिर्यच बखान । जलथ तीन बीते इसरूप । महीपाल पुर हूवो भूप ।  
महीपाल अभिधान जुगही । जिन जननी को जंनक जुसही । रानी मृत्य देखि दुख कियौ । दुर्मति  
तपसी त्रत गहिलियौ । पंचानल साधत सो आइ । नगर बन शिवन तिह थाय । सुर गज चढ़ि जिन बनमै  
गए । क्रीड़ा करत हर्ष उरभए । करि बिहार ब्रह आवत जैब । पंथ मध्य तपसी लखितबै । कोपयुक्त इम  
वचउच्चरै । अहो कुमार अति मान जु धरै । मेरी सुता पुत्र इहसार । मोप्रमाण क्योंनाही धार । इमकाहि करि

कुठार लै सोइ । दारु खंड नै जिनवर जोइ ॥ कहै पाश सुनि तपसी धीर । इह जुकाठ ताकौं मति चीर ॥  
 जुगल नाग यामैं सुख करैं । सो ततकाल दुःख लाहि मरैं । इह सुनि कहै बड़े सुज्ञान । ब्रह्मा विष्णु रुद्र  
 तुम जान । ऐसो बचन कहि चीरन लाग । खंड भयौ तन उरध अभाग । जिनवर देखि दया मन लाइ ।  
 पंचसुपद तिन श्रवन सुनाय । तिस प्रभावजुग ते भुजगेंद्र । पदमावति हूये धरनेंद्र । धन्यभाग उन सर्पनसार ।  
 अंत समैं जिन दर्श निहार । लज्जित है तपकरि बुतप्रान । जोतिग देव भयौ सोजान । प्रभु निज सोध  
 आइ सुख करैं । पंचअणुव्रत हिए में धरैं । जिन तन स्वगद रहत बखान ॥ बाय पित कफ को पनठान ।  
 इष्ट वियोग न कबहूँ होइ । और अनिष्ट संजोग न जोइ । \* दोहा \*

तीन लोक पति जगत प्रभू । जो सोभायुन युक्त । सो पूरबवत जानि फुनि । कहे दोष पुन रुक्त ॥  
 \* चौपाई \*

आति सुख करि वासुखहु गए । त्रिशत सब्द जिनेसुर भए । तब नृप एक अजोध्या भूप । संज्ञा जिस  
 जैशेन अचूप । भक्ति प्रीति जिनकी हियधारि । भेट बस्तु हयभेजिसार । आइ दूत अस्तुतिबहु करी ॥  
 भेट बस्तु प्रभू आगे धरी । श्री जिन वृद्धैं अवधि सुथान । दूतजोरकर करैं बखान । प्रथम आदि जिन  
 बरनन कियौ । मुक्ति गमन बिबरन कहिदियौ । सुनि पारस प्रभु प्रशमन उपाय । मानुप भव इह योंहीं  
 जाय ॥ ए दुख दाई है सबभोग ॥ आतम काज करन अब जोग । प्रभू मनमें इह भावन भाइ ॥  
 लौकांतिक देव तव आय ध्याय ॥ थुति बहु विधि करि निजपुर गए ॥ विमल सिक्का ल्यावत भए ॥  
 इंद्रचढ़ाय सजिया जिन जबैं ॥ अश्वनाम बनपहुंचे तबैं ॥ जात रूप धरि जिनवर देह । इंद्रनल माणि  
 तेज सु एह । दुनिधि परिग्रह तजि तिसिबार ॥ नमः सिद्धेभ्य सुखउच्चार । पंचसुष्टिक बलौचन करैं ॥

पंचमहाव्रत दिदृ करधरै ।

इह धीरज अब लोइ । तीन सतक नृप छत्रपति । व्रत धारथौ हूँ सोय । श्री जिनपद परनाम करि ॥

\* सोरठा \*

\* दोहा \*

पोड कृष्ण एकादसी । प्रथम पहर शुभवार । कंजाशन श्री पार्श्व प्रभु लीन आतमा सार । शंक्र  
क्षीर निधि जाइकै । कच प्रवाह करि लेइ । निज नियोग कल्यानकर । गमन सुथान करेइ ॥

\* अडिल \*

बेला करि उपवास देह थिति कारनै । ईर्यापंथ बिलोकिकि गमन करि पारनै । गुल्म भेट पुर जाय  
नृपति ग्रह अभिमुखे । ब्रह्मदत्त बहुभाग भूपति जिनवर लेखे ॥ \* दोहा \*  
सन्मुख हूँ करजोरि नमि । अस्तुति करै हरषाई । नौधा भक्ति सुगुन सहित । पडि गाहे जिनराइ ।

\* सोरठा \*

प्राशुक लै आहार । अथै निच्छे सुख उच्चरै । सुरगन हर्ष अपार । पंचाचर्य तहां करै ॥ चौपाई  
गहन आइ लागे निजध्यान । महा घोर तप तपै महान । बन आहिछत नगर तट एक । लता  
बृक्ष नग सहन अनेक । तहां पार्श्व प्रभु अबिचल अंग । कायोत्सर्ग रहित सब संग । धरथौ ध्यान  
आतम रसलीन । कर्म करन बैरी दलहीन । कारन कल देस इक भयो । सो सुनिए ग्रंथन बरनयो ।  
पूर्वक मठव्रत तपकर एव । संवर नाम जोतिषी देव ॥ तिस विमान बिहस्त बनआय । जिनपर  
छत्रोपम ठहराय । अवधि बिलोकिकि कोप अति भयो ॥ लालनेत्र करि उपसर्ग ठयो । महाबात  
झंझा झंक करै ॥ बृष महान गजसे ठेरे । घटा घोर घन गर्जत बहु ॥ चपल चलत चला चला



चला चहू । मूसल प्रमांन धार जल धार ॥ बरषावै उपलादिक भार । सरपस्थांम तन बगन दिखंत । लोपन लालजीभ ललकंत । अति फुंकार फुंकारै झाल ॥ निकल महा अगनि समलाल । भस्म होय बन बेलि बिहंग ॥ निहचल हूँ तहां श्री जिन अंग । सिंघ स्याल सूकर विकराल । वानर व्याघ्र गजानन भाल ॥ मार मार करि शब्द पूचण्ड । मत मतंग सोर कर चंड । और अनेक वैक्रिय धार । कर उपसर्ग महाडुलकार । आसन तव कंग्यो धरनेंद्र ॥ तुरन आइ शिरनाय जिनेंद्र ॥ \* दोहा \*

\* चौपाई \*

निर्विकल्प प्रभू मन भयो । सतम गुण तिथि धारि । चेतन गुण निर्मल करन ॥ धर्म शुक्ल सुविचार ॥

पदमावती प्रभूतन सार । असन करण छत्र सुधारि । संबरदेव भज्यो भयमांनि । नरकबन्धकरि अति दुख खानि ॥ \* दोहा \*

क्षायक श्रेणी प्रभू चढ़े । मनधरि अति बैराग । गुनथानक चढ़ि वार हूँ । आतम गुन अनुराग । ब्यारि घातिया नाश करि । प्रगट्यो केवल ग्यांन । पारस जिन छद्मस्थ रहि । अष्ट एक परमांन पौष कृष्ण एकादसी ॥ इन्द्रादिक सब आय । कल्यानक पूजाकरी । हिय भैं हर्षउपाइ । समोसरन धनपति सुरचि । भूमि सुकर समसार । श्री अंडप द्वादश सभा । हिणु भक्ति अवधारि । सर्वसंघ षोडस सहस । गणधर दस गुणवन्त । ब्यारि ग्यांनधारी सबै । श्री जिन भक्ति धांत । \* मवैया \*

ग्यांन के प्रकास लोका लोक कौ प्रकास भयो चेतन सुहृग ग्यांन सतासुख धारी हूँ । आठ प्रात हार्य बिराजमांन आठौंजांम ॥ छयालीस सुगुन शुद्ध काया अविहारी हूँ । देश देश धर्म उपदेश देत जिनराइ सुचि निजगुन पर्याय के बिचारी हूँ । ऐसो अरहन्त पद परम पुनीति जग सेवो भव्य

जीवतुमैं विनती हमारी हैं ॥

\* दोहा \*

सेष आय इकमास जब । रही पार्श्व जिनराइ । तब सुमेरुगिर शिखरैपै । प्रभव कूटपर आइ ॥ जोग  
ध्यान करि सिव गए । भए निरंजन सिद्ध । निज अनुभूति अनंत जुत । लही आपनी रिद्धि । और  
कोडि इक सुनि तहां । पैतालीस खुलाव । सहस सात सत सात देस ॥ मुक्ति गए श्रुतभाष ॥ प्रभव  
कूट सोहैं महत । जो बंदै मनधारि ॥ नरक पंखु गति नासिकै ॥ सुर नर गति संचार ॥ चौपाई  
आगे एक कथा सुनि राय । प्रभासेन नजि संघ चलाइ ॥ इसही आरिज खंड मझारि । अगर देस  
देसनि शिरदार ॥ गंधपुरी नगरी तहं एक । बसै पूजा सब सहिन बिवेक ॥ प्रभासेन भूपतिवडमाग ।  
जैन धर्म में अति अनुराग ॥ शांतिजुसेना है पट नार । शील सुलक्षण रूप अपार ॥ दंपति भोगें भोग  
महंत । जात न जान्यौ काल अनंत ॥ तिनक सुत उपैजं मरजाइ ॥ इह दुख नर नारी अधिकाइ ॥  
एकदिन बन क्रीडा कौं गये । सोम सेनि ध्यांनी लखिल्ये ॥ \* दोहा \*

करजुग जोर नमोस्तु करि धर्म बृद्धि सुनि देह । पुरन कियो नृपकौं । सुनि सुनि बैन कहव । जो  
ठुम जात्रा शिखर की । करो नारि नरदेइ । बिंब प्रतिधारिचहुतहै । तौ उत्तम सुत होइ ॥ कोट प्रोषधी  
व्रत फल । ठुम जानौं भवि लोइ । एक कूट बंदन करत मन बंछित सुख होइ ॥ इह सुनि कै आयौ नृप  
गेह । जात्रा करन धस्यौ हिएनेह । देशदेश के भव्य बुलाइ ॥ चौबिधि संघ चलयौ ले राइ । पूजा दांन  
करत तहंगए । शिखर सुमेर निहारत भए ॥ पार्श्वनाथ प्रतिबिंब भराइ ॥ करि प्रतिष्ठा हिए हरषाय ॥  
और कूट सब पूजन कियो । दांन आहारदिक नृपहि दियो ॥ सबै पुन्य कियो बहु तहां । कुनि आयो जिन  
मंदिर जहां । राज करत बीते दिन स्वल्प । भावसेन सुत सुगुन अनल्प । जन्मोत्सवकीनो भूपाल । जाचिग जन

सब किए निहाल । कम कम वृद्ध भयो सुतसार । कीनौ पानिग्रहन बिचार । कारन पाय भयो वैराग । अवकीजे आतम वैराग । इह संसार असार महंत । अमत अमत नहीं पायो अंत \* दोहा \*  
 राजा सुत कौ राजदे । श्रुत सागर सिरनाइ । पंच महाव्रत आदरै । यसैं कर्म नसाय । तपकरि प्रभव सुकूट पै प्रजासेन मुनिराज ॥ और अनेक मुनीश जुत कीनौ आतम काज । जो नर नारी भावसौ ॥ जात्रा करै नरेस मन बंछित फल पाइ । सिवलहै न शसैं लेश लौहाचार्य आरज गुरु । कीनौ सिखराविलास । भाषा मनसुख सिंधु कहि ॥ पूगी जिन मन आस

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्ये सुमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणं प्रभव कूटपैसे श्रीपारश्वनाथ मोज्जगमन २४ ॥

### \* सर्वथा \*

सुमति सदन भव कदन मदन हर सिद्धार्थ जनक सुहाटक बरनहै । त्रसला सुमात गात उन्नत धनुष सात वर्ष बहतारि सु थिति जु धरन हैं । पंचानन चिन्ह पर छंडलपुरी बिष्यात एसो महावीर सिवसंपति करन है ॥ मनसुख उदधि निहार काल पंचम में और कोई नाहि जिन वरन सन है ॥ \* दोहा \*  
 सन्मति सन्मति देत है । परम परम रसलीन । सरम सरम अनुभूति जुत । धर्म सुधर्म प्रवीन । महावीर के चरित को । अल्प कथन मन धारि । सुनि श्रैनिक गोतम कहै । मन बंछित दानार । \* चौपाई \*

छत्राकार नगर मनधारि । बसैं नारिनरंसव सुखकार । धन धान्यादिक सोमालसै । अतिगुणवांनसुजनतहं बसैं । सुर सम मनुष रूप अति धरै । बनितासुर बनता दुति हरै ॥ धरि धरि मंगल गीत विलास बिद्यु

तदत नारी मुखदास । ऐसी सोभा नगर वखान । बरनत श्रम उपजै मन आनि ॥ नैद सुबर्छेन तहां को भूप ॥ सुंदर तन अति अधिक सरूप । धर्म बुद्धि धारक धर्मग्य । गुनिजनगुन जानन बहुतरग्य ॥ दर्शन ज्ञान चरित्र सुधार । निहचै गुन निज हिणै विचार ॥ जाचिग जन सुहुम सम जानि ॥ जिन पूजा बृत अति हित आनि । प्रही कर्म षट साधन करै । बहु भिवेक पटना बिस्तै । वीरवती रानजिन सार । सुंदर सुगुन सुलक्षण धार ॥ सुख मयंकतै अति सोभाय । बरनत बहुत कथा बढिजाय ॥ तिन ते तनुज जन्म इक लियौ ॥ बंछित जनम न बंछिन दयौ ॥ सुभ महूरत सुभ लगन निहारि । अश्व नंद अभिधान सुवारि । क्रम क्रम बालकृमार सुभयौ ॥ प्रग्या पूर्वल सुगुन जुनथयौ । इकदिन पौष्टिल गुर ढिग जाइ ॥ धर्म सुन्यौ अति हित मनलाइ । आगम अर्थ सुगुन मन जानि । निरै करि परकास्यौ ग्यान प्रशम भाव हिणै लिये । परभन भाव सकळ नजिदिये । ग्रंथ त्यागि जिन दिक्षा लई ॥ तप करि अति निर्मल बुधिभई । आराधनां ध्यान धरि लेइ । कृत कर्मनि जलंजुल देइ ॥ घोर वीरतप धीरज धरै ॥ निज आतम गुन निर्मल करै । अनसन अमोदर्य बिहिरंग । षट पूधार तप करत अमंग ॥ प्राय श्विन चिनय मन लाइ । अभ्यंतर तप करत सुभाइ । षोडस भावन भावै सार । निहचै अरविबहार विचार तीर्थकर सुनांम को बंध । ऊंच गीत कौ कियौ पूर्वंध ॥ सल्लेखन बृत निज मन धरै । अंत सभै सुभभावजु करै ॥ सोलम स्वर्ग अच्युत अभिगंम । निर्जर पति पद लहि सुखखाम ॥ पुष्यौतर विमान मन हरै । अंतमहूर्त तरुनाधरै । दाबिशति सागर मित सही । लेस्या शुक्ल सहित तहां कही ॥ बाईस पक्ष वितीह जैवै । सुगभिनस्वास लेइ शुभजैवै । ग्याह अगुन बरस अंतरै । मानसक भोजन आवै ॥ सदा मनः प्रवीचार सुभोग । भोगै भोग आपने जोग ॥ अष्टम अब निलग अवाधि निहारि ॥ काया

वैक्रियां तहाँ लगधारि । तीन हस्त उन्नत तनलसै । इसप्रकार सुम सुरपुर बसै । भोगत भोग काल बहु  
 बीत । सुखसागर मैमगन सुरीत । मास एक षट आद्य प्रमान । माला मूर्धित लखि जिय जान । विना  
 सीक निज तन लखि लियो । जिन पूजा करनै चित दियो । सुम सुभाव चित अति बैराग । भोग  
 प्रमाण किए सब त्याग ॥  
 वरनन कर जिन अवतारकौ । सुनौ मगधपतिईस ॥ अंतम प्रगट जिनेंद्र प्रभू । गुनगण नमि सीस ।

\* दोहा \*

जंबूदीप मनोहर सार । भरतक्षेत्र इहअति सुखकार । आरजखंड विदर्भ सुदेस । बसै सुजन जन उत्तिम  
 देस । कुंडलपुर नगरी इक बसै । अति अद्भुत सुंदरतालसै । सिद्धारथ नामां भूपती । राज करै राजा सम  
 कितो ॥ त्रमलापट रांनी मनहार । गुन गर्भित सुम लक्षण धार । मनईसित नारीपति अदा । इंद्रअवधि  
 करि जान्यौ तदा ।

\* चौपाई \*

\* दोहा \*

सिद्धारथ नृप गेह लुम । जाउ धनद मनलाइ । नगरी रचि मणि विष्टि करि । शक कहै इरषाय ॥  
 आज्ञा निज सिर धार । आइ नगर रचना करी । कोटि सार्द्धशतसार । दिन प्रति मणि वरपाकरै ॥

\* सोरठा \*

रसमिति मास वितीतियो । मंगल चलय सुगान । सित अषाढ खधी स्वस्वनि । अघानक्षत्र बखान ॥  
 पश्चिम निसि षोडस सुपन ॥ लखे महा सुखकार । गजमुख प्रविसत अंत में सोच्युतेंद्र थिति धार ॥  
 \* दोहा \*

## \* चौपाई \*

प्रात सूर्य शुभ शब्द अपार । जैजै ख बहु जनउच्चार । तिन करि जिन मातम प्रति बोध । उठि अंजन करि काया सौधि । लई सहचारी संभि अनेक । मृदुबानी युत हिए विवेक । पति के निकट जाइ हरषाइ । अर्द्धासन थिति दीनों राइ करि । आलाप परस्पर जँव । आगम कारन पूछो तँव । पहर एक एक निशि अंत प्रमान । षोडस सुपन लखे सुखदान । तिनके फल जंपो मनधार । सुनत श्रवन हित तन मन हार । अवाधि चक्षु सिद्धार्थ भृगु । लखि वरने फल अधिक अनूप । तीनलोक मंगल सुखकरन । सेवै आइ सुरासुर चरन आतम उपजै अति सुखकार । आतम काज करि सिवपद धारि । सुनि तृशला देवी सुखपाइ ॥ निज गृह गमन कियो सुखदाइ । शुभमन सार्पित बुव समेत । आए गर्भ कल्यान कहेत । थापे सिंघ पीठ दिपती । करि अभिषेक हरप सुरपती बस्त्राभरण भेट बहु देइ । निज निज थांनक गमन करेइ ॥ \* दोहा \*

सित अषाढ़ खष्टी शुदिन ॥ ऋषि जुज्जखानाम । गर्भ कल्याणक आईकें ॥ कीनों पहिले थांम ॥

## \* चौपाई \*

श्रीही धृति देवी मनलाइ । कीरति बुधलक्ष्मी हरषाइ । गर्भ सोधना सेवा करै । श्रीजिन भक्ति हिए मै धरै । षटपंचास कुमारी सुरी । सेवाकरन रहै आतुरी । अन्य देव बनिता तहं रहै । बहु रस काव्य पहेली कहै ।

## \* सवैया \*

केई सुचि जल ल्याइ मंजन करै सुभाइ केई खड़ी नाना विधि अस लिए करमै । केई बहु विधि सुं करत विविधि रूप केई सु सुमन लाइ सेज रहै सरमै । केई अंग रक्षा करै सुकारि दिखवै केई एक नागबेलि देइ हार हिए हर भै । केई काव्य रसकी पहेली पूछै नृत्यकरि केई गुन गावै सुसर्म जन दे घर मै ॥

\* दोहा \*

इस विधि देवी सेवकरि ॥ जिनमाता हरपाय । मास जुनव बीते तहां । जन्मोत्सव सुनि गय ॥ सित  
 त्रयोदशी चैतकी जन्मे श्री जिनराज । सौ धर्म साग मनकर । लैकै सकल समाज ॥ \* चौपाई \*  
 चतुर निकाय देव पति युक्त । आए जैजै स्व सुख मुक्त । सची ल्याय जिन पति करेदेइ । गज चढाय  
 निज हरष धरेइ ॥ सुरगिर जाइ सची पति जैवै ॥ क्षीरोदिक जल ल्याए तवै ॥ सहस एकवसु कलस मनोग  
 श्री जिन राज नबनके जोग । करि अभिषेक पूजि जिनचर्न । भव अनेक पातिग के हर्न । फुनि आए  
 कुंडलपुर बीच । जग मग पुर सुर मुकट मरीच । जिन जननी के अके देइ । तांडव नृत्य जु सक करेइ ।  
 नगर महोत्सव तब अति भयो । सुरपति जब निज पुरमें गयो । सिद्धारथ नृप हरषंत । उत्सव करि कहूं लहुं  
 न अंत । जिन बालक पद क्रीडाकरै । नरनारी जनमन अति हौं ॥ सरभऊ भेष धौं मनलाइ । केकी कोकश  
 रूप बनाइ । नृत्य ततालव धुनिधार । जिन गुन गान सुमुख उचार ॥ पावअटपट जिन भूधरै । घुटुवन  
 चलत सकल मनहरै । गले माल मुक्ता फल लसै ॥ कटि करिधनी कमरशुभ कसै ॥ हीराकनी जड़त किंकिनी ।  
 रुण झुण चरण होय स्वधनी । करपल्लव मैं मूंदरी देइ । हिए हरप जन मन हर लेइ ॥ सुर  
 बालापन भेष बनाय ॥ जिनवरसंग केलि सुखदाय ॥ काव्य कला अरु श्लोक बखान । दृष्ट कूलवहु विधिमन  
 आन । अंतर्हृपन छंद उचरै । बहुरि लायका बहुविस्तरै ॥ सुर सुनिदर्ष हिएमैं धरै । तदनुकूल है सेवाकरै ॥  
 दुतिय इंदु जिम कला प्रकास । कम कम जिनतन बढै हुलास ॥ भई कुमार अवस्था जवै । पंच अनु  
 द्रत धारे तवै ॥ सुरभिलि अथरूप अवधार ॥ जिन चढाय बहु करै विहार । चपल चाल छिन छिनक्रम  
 वैहै । जिम जिनमन तिम हय गतिगहै । फुनि सुरगज संगार समेत । देखत सब जनमन हरलेत ॥

बस्त्राभूषण करि सोभंत । कर असवार सुजिन हरषंत । वनउपवन त्रिचैँ मनलाइ । इस प्रकार सुर सेव कराइ । जिन कीडा जो कैँ मनोग । सो को कवि पटु बरनन जोग \* दोहा \*

सुरुशुक्र शक्र नकाहिसकैँ । गण धर लहनपार । मंद बुद्धि अतिज्ञमैँ । किम गुरु बरनौँ सार । जोगन अतिमय मत गज ढाहन समर्थहीन । सोनग ससंक जुसि । सुबली किमढाहँ अति हीन ॥ बरस तीस इस विधि प्रभु । बालक्रीड सुखेलेइ । मति ज्ञान क्षयो पश महि । प्रगट पूर्व भव जोइ ।

\* चौपाई \*

। लखि पूरव भव श्री जिनगज । चित विरक्त परनंम समाज । छिनभंगुर जान्यौँ संसार । अंजुलजल विनशत नहिं चार । अथिर देखियत सब जगरीति । निज आतम सौँ करिण प्रीति ॥ इह जवलगि चिचैँ जिनगइ । लौकिक सुख तवही आय । कसु कलितकर अस्तुति कैँ । बारबार बरनन मैँ परैँ होजिन जग तुम तारनहार । तुम बिन कोइह कैँ विचार । धर्म जिहाज प्रकाशन वीर । जग जल निधि तुम तारनतीर ॥ तुमबिनजगत जीव दुखलहँ । लौकिक सुख थुति इम कहँ ॥ \* सोरठा \* फुनि निज थानक जाइ । ब्रह्मलोक बासी अमर । बरवा कैँ सुमाइ ॥ द्रव्य छहौँनिणैँ नियत ॥

\* चौपाई \*

शक्र इंद्र प्रभु सिव का ल्याइ । प्रथम युक्त जिन राज चढाइ ॥ गण खंडवन श्री जिन देव । नर खग करत सुरासुर गेह । परिगहपरि हरवीर जिनंद ॥ अवहरन कर्म अरि फंद । नमः सिद्धेभ्यः आननयो ॥ पंचमहा व्रत जिन गहिलियौ । पंच सुष्टिक चलौँचन धार । निज गुन ध्यान लगे सुविचार । सुरपति तप कल्यांक कियौ । अस्तुति करि बहु हरषित हियौ ॥ कचमणि भाजन धरि सुरगय । क्षीरदधि परवाह



\* दोहा \*

कराइ ॥ निज पदधान जाइ सुखकरै । जिन धृजा बहु विधि विस्तरै ।

शिखर

मागशिर दसमी कृशन शतहस्त रिषि शशिचार नगन दिगंबर रूप प्रभू । लियौ महातप सार ॥ व्रत  
बेला जिन राज कर । अशन ग्रहन के हेत ॥ कुंडलपुर परसेस कर । ईर्यापथ चितदेत \* चौपाई\*  
कुंडल नांमां नृप लाखि महावरि । भक्ति सहित है आयौ तीर ॥ तिष्ठ तिष्ठ प्रभू प्रसुक अन्न । जल  
प्रासुक तुम जगमैं धन्न । चरन पूछाल अरच बहुदर्च । जन्म सुफल निज जान्यौ सर्व ॥ क्षीर भक्ति अक्षय  
निधि चवै ॥ जै जै आरव बहु सुर रवै । पंचाचर्य अमर मनलाइ । नृप ग्रह करै अधिक हरपाथ । दुगुन  
साधै षड रत्न सुइष्ट । माहिमां कहिकहि करै सुबिष्ट ।

\* दोहा \*

जिन आहार करि बन गए आतम गुण मनधारि । निश्चलांग करि ध्यान धरि । परम प्रीति सुखकार ॥

\* चौपाई \*

धर्म ध्यान मन करै विचार । बिविधि भांति तप तपै सुचार । मन पर्यै उपज्यौ तत्काल । हीन भई भव  
भृमन कुमाल । दर्शन ज्ञान चरित्र विशेष । सब दूपन तजि कर प्रति लेख । घोरेबीर चर्या तप करै । माहा  
बरपातै उच्चरै । सत्माति धरी हिये प्रसुधार । सभ्मति नांम कहै संसार । दिन दिन बढ़ती पदव जोइ । बद्ध  
मांन कहते सब लोइ ।

\* दोहा \*

सब जिनैद्र के अन्त मैं । जनमे तीस्य नाथ । यातैं धर्म जनेस सुनि जपैं जानि शिवनाथ ।  
द्वादस वर्ष प्रमांन प्रसु । रहे छद्मस्थ अखण्ड । फुनि केवल ज्ञानी भए । तीन भुवन मातंड । आप  
सुरा सुनरंपसु । विपुलाचल बनथान । दशमी सित अषाढ़ शुभ । कीनौ ज्ञान कल्यांन । सर्वसंघ चौदह

सहस्रः। गणधर ग्यारह जाँनि । विद्यमान सो तीर्थ पति । बद्धमान अभिधाम । आयुषा को अन्त लहि ।  
यही शैल के शीस । बिपुल कूटपर ध्यान धर । होइ मुक्ति के ईस ॥ \* सवैया \*

एक निनराज शिवथान मन बचन काय भाव सेती जात्राकर शिवपद लहै है । शिवर सुरे वीश  
जिन शिवपद लह्यौ औरहू अशख मुनि सुस्वभाव गहै है । ऐसो क्षेत्र न कतिर्यचगति क्यों न नरों  
जायतेई जीवजे अचल पद वहै है । बिना पूर्व पुन्य ऐसे क्षेत्र में न जाइ जीव मनसुब सिंधु ध्रुव  
जाँनि ऐसै कहै है ॥ \* दोहा \*

इह विधि शिवर विलास की । रचना सुनि मग देस । करि प्रनाम निज ग्रहगयो । संसँख्यो न लेस ।  
कल्याणक चौबीस जिन । बरन्यो शिष्यविलास । भाव सहित जात्रा करै । लहै मुक्ति विधि नाश ।  
भाषा शिवर सुरे की । सुनै निरंतर सोय । नरपद सुरपद सौँ लहै । मन बँछित फल होइ ॥ चौपाई  
मूल ग्रंथ करता महाबीर । फुनि गोतम श्रेनिकतै हितधीर । ग्रन्थकार तदनुतर जाँन । निजमन चितदे  
सुनौ सुजान । काष्टा संघ जैन आमनाय । मथुरा मछ भव्य सुखदाय । पुष्करगण गुरु मूल बखान ।

लौहाचारिज कृपा निधान । तिनके पट बहुभए जे जती । है निरग्रंथ भए सिवपती । महीचन्द गुरु  
उपजे संत । तिनको पट माहा गुनवन्त । दीपचंद फुनि भए गुनज्ञ । सकल कला जल निधितज्ञ ।  
तिनके पट भटारक एक ॥ विदित भए जग सुगुन अनेक । इंद्र प्रस्थ पद पदवी धार । नाम गुलाल  
कीर्ति सुखकार । तिनके शिष्य ब्रह्म व्रतवान । है संतोष जलधि अभिधान । सिष्ट भिष्ट वादी गुनवंत ।  
सबविद्या निधि महत महंत । सकल शास्त्र पाठि सुखधार । भविजन धर्म प्रकासन हार । जथानाम

आत्म सुख दाइ ॥ लोक पाल जिन भक्ति समेत । आए प्रसम दिवाउहेत ॥ तुम बिन कौ ऐसी चित धरै । तुमबिन कौ दुर्द्धर व्रत करै ॥ इम अनेक अस्तुति चित लाइ । बिनय भक्ति करि निज थल जाइ ॥ अमर नाथ सिव का सिव जोइ । ल्याय आय निज कियौ नियोग ॥ अटबी मध्य नाग तरुतलै । तपलै सब दयातिग दलमैल ॥ सहस एक नृप दिक्षा लेइ । श्री जिन चरनन सीसनमेइ ॥ \* दोहा \*

जेठ मास सित पक्षजुत । दिवस द्वादसी जानि ॥ श्रुपाश्र्व जिन देवकौ । भयौ सुतप कल्यांन ॥

\*अडिल्लु \*

पूजा करि बसु भेद गए सुर नर सवै ॥ प्रभु आत्म लौं लाइ ध्यान धारथौ तबै । मन पैयै सुभ ज्ञान भयौ ततक्षण तहां ॥ करि बेला व्रत गए पुरी पाटल जहां । महीदत नृप देखि चरन सिर नाईयौ नौधा भक्ति बिचारि अहार कराईयौ । अखै निद्धिकहि प्रभु जाइ बन तप लियौ । पंचाचर्य विशेष नृपति ग्रह सुर कीयौ ।

\* दोहा \*

बरस अंग परमानं जिन । तप जुतरहि छदमस्त । ब्यारि घातिथा कर्मकी । करी प्रकृति सब अस्त । केवल ज्ञान सुभानं जग । अंग किरन परगास । निस मिथ्यात .निवारि कै । समकित दिन परकास ।

\* चौपाई \*

आए देव देव प्रद साथ । समोसरन रचियौ धन साथ । केवल कल्याणक सुराइ । करि पूरब सम निज पुर जाइ । फायन बदी छठि सुभ बार । ग्यानं कल्यांनक श्री जिनधार । बिबिध देश बिहरे जिन भूप । करि उपदेश सुधर्म अनूप । आयु रह इक मांस प्रमानं । आए समेद सिखिरि भगवानं । जोग निरोध मौन प्रसुगेहे । कूट प्रभास ध्यान धरिहे । फायण कृष्ण ससमी जानि । इंद्र आइ करि सिव कल्याण ।

तनु संस्कार क्रिया कर तबैं । गए अराचि सुर स्रपति सबैं ॥ सो प्रभास बार कूट महंत । बड़े पुंन्य सौं-  
इसलहंत । महिमां करत न पाऊ पार । लहि अनंत जिनपति सिवसार । लाख बहचरि तीन करोर । सात  
हजार सात सैं जोर । ब्यालीस मुनिवर सुकति जोगए । कूट प्रभास विदित इमभए । सुनि मगथेस  
कूट फल कथा । एक बार बंदन फल यथा । काट बतीस प्रोषधी सार । होइ वरत फल सुख अधिकार ।

\* दोहा \*

याही जंबूदीपमैं । भरत क्षेत्र सुख धामं ॥ आराजि खंड सुदेस तंह । नगर कुसंबी नामं ॥

\* छंदपच्छडी \*

उद्योत नाम राजा पुनीत । तहं राज करैं सुभ राज नीत ॥ जिन भक्ति यथावत हीए धार । सम्यक्त  
सहित धर सील सार ॥ नृप कै ग्रह प्रीति मतीसुनारि । सब गुन लक्षण सुतसदाचार ॥ प्रख कृत  
पाप उदै नरेस । तन कृष्ट भयो भूपति कुंभष ॥ इक दिन दुखकरि बन गयो राय । मुनि चारन जुग  
तहैं ईसपाइ ॥ करमुकलित कर जुग नाइ सीस । बहु विधि अस्तुति करि पुर पुनीस । पछे रिषि सौं  
निज पूर्व पाप । मेरी पर्यायजो कहौ आप ॥ मुनिकैं मुनि बैन कहै रसाल । अपनै दुख फल सुनि  
नगर पाल ॥

\* दोहा \*

प्रख भव बरनौ नृपति सुनिलै यक चित लाय । याही को संबी विषैं । सोम दत्त द्विज थाइ ॥ प्रभा  
चंद्र इक सेठ तहं । धर्मवंत गुन वंत । ते दोऊ मिलि परस्पर । अतिसैं प्रीति करंत ॥ \* चौपाई \*  
लै अहार मुनिवर बनगए । प्रभाचंद्र मन हर्षितमए ॥ सोमदत्त द्विजमित्र मिलान । पूछैं मुनि अहारफल  
दान । सो विद्या मद गर्भित रहैं । हास्य बचन मुख सौं इम कहैं ॥ जो नर मुनि अहार दै सोय ॥

कृष्ट ब्याधि तन पीडितहोइ । इहसन प्रभाचंद दुखपाय । छोडी प्रीति गेह निजआइ ॥ सोमदत्तनिंदक  
 कहवाइ ॥ मरिक्कै प्रथम नरक उपजाय । आउ परी तह सागर एक । लहे महा दुख हरति विवेक ॥  
 मुनि निंदा फल निज मन जानि । पश्चाताप हिण मै आनि ॥ क्रम क्रम करि सो पूरन आव ।  
 प्रणतजे राख्यौ समभाव ॥ आय नरक सँ नृप पद पाय । कृष्ट बिथु तुमरे उपजाय ॥ इहफलेह  
 मुनि निंदा तनौ । सुगतौ राव कियौ आपनौ ॥ इम मुनि नृप मनकंपित होय ॥ हाथ जेरि  
 कैं बिनवै सोय । एप्रसु दीनदयाल महंत । कही जतन जिभि गदहै अंत ॥ मुनि मुनि कहै सिपर समेद  
 करौ जात पूजौ बसु भेद । कूटप्रभास गंधोदक लैऊ । संपूरन गद नास करेऊ ॥ मुनि हर्षितहै मुनि  
 पद नयौ । बन सौनिज पुर आवत भयौ ॥ व्यारि प्रकार संघलै साथ । जात्रा हेत चलो नर नाथ ॥  
 स्यांम बस्त्र पहरे तब भूप । पूजकरै बसुभेद अनूप ॥ औथवि दांन अधिक विशार । देइ अहार दांन ।  
 सुखकार । आतम निंदा निस दिन करै । संग भक्ति बहु विधि विस्तरे ॥ सिखर सुमेर गए इह रीति  
 पूजा करै परस्पर प्रीति ॥ संपूरन गिरि बंदन कियौ । अति उत्सव करि दांनजु दियौ ॥ कूट प्रभास  
 गंधोदक लयौ । ततक्षिन कोढ़ नृपति को गयो ॥ अति आनन्द हिण मै ल्याय । फुनि फिरि निज ग्रह  
 पढुब्यौ आय । बहुत दिवस लौ राज करेइ । है विरक्त सुत नृप पद देइ । सुप्रभ राज सुमगपग धरै ।  
 नृप उद्यौतक अति तप करै । लाख वतीस संघ मुनि लेइ । नाना देश विहार करेइ ॥ अंत आयु आए  
 संभेद । गिरि पवित्र सोहै बहु भेद । कूटप्रभास सीस पर जाय । केवल लहि शिव पदवी पाय । जो नर  
 नारि बंदना करै । नरक पसु दोनौगत हरै । अतिसै कहत पार नहि लहौ । सुलप बुद्धि कै भे कर कहाँ ।

धन्यभाग लौ बंदै कोइ ॥ सुर नर गति ले सिव पद होइ ।

\* दोहा \*

लोहा चार्थ कृत कठिन । अल्प बुद्धि इस काल । मनसुख जलधि विचारि मन । भाषा रबीरसाल ।

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहात्म्ये भाषायामन सुद्धसांगरेण वर्णनं सिद्ध कूट भाषा सुपाश्वर्नीय मोक्षगमन

अष्टमो परिच्छेद ॥ ८ ॥

\* सबैया \*

जिनको नमत है गणेश और सुरेश सेस महा सेन जनक फटिक समेद है । सुलभ्य नामांत सोम पुर है विष्यात जग दसलास पुरष की आयु सब तेरह है ॥ उड़पति चिन्ह है चरन सेवै भावेसेती सद्धी एकसत चाप उचगुन गेह है ॥ ऐसे चन्द्र प्रभु सिवदायक नमत हम मनसुख सिंधु जिन चरन सौ नेह है ॥

\* दोहा \*

चन्द्रा प्रभु चारित्रअब । बरनौहिण हरषाय ॥ शिषसैल परि सिवगये । तिस अतिसै अधिकाइ । नौसै कोटि उदधि गए ॥ श्रीसुपार्थ सिवथान । आय अमरपति सोम प्रभु कीनों जन्म कल्यान । \*चौपाई\* सुनि श्रेणिकइक चितमनि आनि । पंचकल्याण करौ बखानि । दृजो दीपघात की खंड । सोई बल याकार अखंड ॥ प्राचीनांम विदेह महंत । सीता सरिता मध्यबहंत । ताके दक्षन नगर जो बसै । अमरनगर की सोभा लसै । नाम मंगलावती प्रसिद्धि । धन धान्यादि भरी बहुरिद्धि । तहां रत्न सैंचैपुर एक । बसै नारिनर सहित विबेक ॥ कनक प्रभु नृपराज करंत । अति प्रतापंधर बहु गुनवंत । कनकवलिसुंदरि सुकृमार । पटरानीपति सुखदातार । नृप जिन पूजाबसु विधिठानि । अस्तुति पढ़ै करै गुनगान । बृषभावना अंगजुधै । भिनय भक्तिश्रुत गुरु की करै । जाकै राज सुखी सब लोग । मन

बंधित कर भोगें भोग । बहुत दिवस इहि विधि करि गए । पद्मनाभि नामा सुत भए । जौवन दोह  
 पुत्र देराज । मनहि विचारें आतमकाज । गए मनोहर बिपन मझारि । श्रीधर तीर्थ करहि निहारि ।  
 करि नमोस्तु सुनि बृष दो भेद ॥ मन विकल्प सब कियो उछेद । सीसनइ व्रत लीनों राइ । पद्मनाभि  
 नृपराज कराइ ॥ श्रवन नाभि तिनकें सुत भयो । जाचक जनमन बंधित द्यौ ॥ बालकमार अवस्था  
 भई । नृप पदवी राजानें दई ॥ श्रीधर निकटि जाइ सिरनाइ । लयो त्रिपुत्र परमसुखदाइ । सिंघनि क्रीडित  
 तप अतितपैं । पूर्व कृत पातिग सबखिपैं ॥ पक्षमास उपवास करंत । सुमति महाव्रत सुप्ति धरंत ।  
 षोडस कारन भा उनभाय । तीर्थकर पद बंध कराइ ॥ द्वादशानु प्रेक्षा चिंतयो । गहि संन्य मरन मुनि  
 क्रियो । सर्वार्थ सिद्धि ठपजे देव । पूरव सम सब जानौ भव ॥ सुनि श्रेणिक अब आगैं कथा । चंद प्रभु  
 वर्नन हैं जथा । जंबूद्वीप भरत शुभषेत । कासीदेस जु सोभा देत ॥ चन्द्रपुरी नगरी इकवधैं । देवपुरी  
 सम सोभा लसैं । महासेनि भूपति तिहथान । करै राजपुरजन सुखदान ॥ रानी हैं सुलक्षनानांम । पिय  
 प्यारी गुनजुत अभिरांम । सदाचार धारी मनसंत । सील सिरामनि लक्षणवन्त ॥ \* दोहा \*

सोपुर निजकर धनंदन । हरि आयस रचि लीन । सोपुर वर्नन करेन कौ । मेरी बुद्धि मलीन ॥ तीन  
 काल वर्षा करै । मनसुर अति हरषाय । आगमांस प्रमान छह । सबजिवनि सुखदाह ॥ \*सवैया\*  
 एकदिन सुलक्षना सैन करै मंदिर मैं षोडस सुपन लखि लीनै निशि अन्त मैं । प्रात उठि तन सुचि  
 करि सखीसंग लेइजाय पति ढिग प्रैछ सुपन जो संत मैं । सुनि महासेन नृपति अवाधि बिलोकि कहैं  
 जिनपति सुत उरजन मे महंत मैं । दंपति हरष मन करत सनेहधन इन्द्रआय गर्भ कल्यानक करंत मैं ॥

\* दोहा \*

चैत मास अलि आभ पखि दिवस पंचमी जानि । सासि पूभू गर्भ कल्यांन करि गमन करै निजथान ।

\* चौपाई \*

गर्भ सोधनां करै विचार । सैयें सुरी कुलाचल धार । षट पंचास कुमारी सुरी । निज निज काज करै न आतुरी । अति मंगल मन हर्षित रहै । दोहा छंद पहिली कहै । जैसे कर बीते नव मास । जनमैं जिन जग पूरन आस ॥ मघवा पूरब सम तहं आइ । जाय सुराचल नवन कराइ ॥ पूजा करि बसु विधि श्रुतिकरै । जै जै चंद्र पूभू अघ हूरै ॥ सब निज काज साधि हरि गयो । चंद्र पुरी उत्सव भयो ॥ जिन बालक सुर सेव करंत । निरखि निरखि निज मन हरषंत ॥ माति श्रुति अवधि ग्यान त्रयधार । परम पुरुष परमात्म सार ॥ आशु पूर्व दश लाख बखान । कायड्यौ डस धनुष सुजान । \* सर्वैया \*

तनुसुद्ध फटिक समान देइ । बसु सहस चिन्ह जुत सुगुन गेह । सिधुकेलि लाख पूर्व अडाइ ॥ वीते सुर सेव करै सुभाइ ॥ माहासेन सक मिलि करि उछाह । करि पांनिग्रहन पुनराज चाह । साढ़ षटलाख जु पूर्वसार । कीनौ प्रभूराजसु नीतधार । इकदिन लखि उलकापात देव । छिन भंगुर जान्यो जगत भव द्वादश भावन मनमंही भाइ । लौकांतिक सुर पहुंचे मुआइ ॥ \* दोहा \*

अस्तुति करै सुभाव सौ । धन्य धन्य तुम धन्य ॥ जैसे कारिज करन कौ । तुमसम नांही अन्य ॥

\* सर्वैया \*

अहौ तुम दीननाथ शिवपुर पंथ साथ तुम चिन यह काजकरै कौनजगमैं । पंच महाव्रत पंच सुमति



शुभति तीन चरित कौ धारि तुम ठाढ़े सिव मग मैं । तुम्हारी दयासौ सुख लहत जगत जन तुम बिन  
फिरत चौरासीलाख मग मैं । तुममन मांहिजौ विचार सोईधरै कोईमन सुखसिंधु मुक्ति लहैं एक उगमैं ॥

शिवर

\* दोहा \*

इम बिनती करि लोक सुर । निज थानक मैं जाइ ॥ शिव सुंदरि सिव कामधव । श्रीजिनवर बैठाइ ॥  
राजा लै निज कंधधारि । सातपैंड लैजाय । पुनि विद्याधर आपलै । इंद्रादिक बन जाय ॥ मल्लक तरु तलि  
चंद्रप्रभु । बस्त्राभूषन त्यागि । सहस एक नृप संगलै । आत्म ध्यान जो लागि ॥ \* सोरठा \*  
इंद्र कियौ कल्यान रिठु श्रीषम बैसाषमैं ॥ कृश्न एकादसि जानि । पूजा करि निज पुर गए ॥

\* ७२ \*

\* चौपाई \*

पद मासन जुग दिन परमान । करि उपास भोजन चित आन ॥ पदमण्ड पुर करि प्रवेश । सोमदत्त नृप  
लखि मुनि भेस ॥ करि नमोस्तु आनन सौचवैं । तिष्ट तिष्ट तिष्टी मुनि अँवैं ॥ नौधा भगति अहार कराइ  
अषे निछि कहि जिन बन जाइ ॥ पंचार्चय भूप कै होय । जै जै सब्द करैं सुर सोय ॥ दान अहार सुजस  
मन धरैं । मनि गंधोदित वर्षा करैं ॥

\* दोहा \*

वर्ष तीन छद मस्त । जिन रहे मोन ब्रत लीन ॥ नाना विधि तप जोगसौं । कीए घातिया छान ॥ फ्रागुण  
कृष्ण जो सप्तमी । केवल ग्यान प्रकास ॥ तिम भित्यात निसा प्रबल संप्रन कर नास ॥ सत मधवा  
मिलि धनद जू । संमो सरन रच लीन ॥ पूजा करि अति भक्ति सौं । अस्तुत करै नवीन ॥

\* चौपाई \*

दत्तसैन आदिक गुनि धार । सवतिरानवैं सोहै सार ॥ बानी परखैं तीव्र काल ॥ सुनत नासैं

जग जाल । विविधि देश बिहरे भगवान । दया धर्म को करत बखान ॥ एक मास मिति आयु रहाय ।  
सिपर सुमेद जिनेसुर आय ॥ जोग रोधकरि मा भगवान । दयाधर्म को करत बखान । एकमास मिति  
आयुरहाय । सिपरि सुमेद जिनेसुर आय ॥ \* दोहा \*  
सकल सुराधुर व्यामचर । आए अति हरषाय । भादौसित अष्टमि दिवस । उत्सव कुनि जाय ॥

\* अडिछ \*

कोडा कौडि सुनीस चौरासी जानिए । केडि बहतर लाख असी मन आनिए ॥ चौरासी हजार पांचसै पच  
पनै । ललित कुंभ सिर कूट सुक्ति लाहि सुनि गनै \* चौपाई \*  
नरक यस्तु दोन्यौ गति हरे । एक बार जो बंदन करै ॥ सोह कोटि बरत फल होए । जिन भाषित  
जानो भवि लोय । \* दोहा \*

बंदत नर सुर गति उलहि । सिव रमनी बस कीन ॥ ताकी महिमां कथन कौ । मेरी धिखनां हीन ॥  
अब आगै मगयेस सुनि । ललित दक्ष नृप बात । कूट बंदनां करत लहि । चारन रिद्धि अवदात ॥

\* चौपाई \*

मध्य दीप जंबू वर नाम । भरत क्षेत्र तामै अभिराम । आरज षंड जोध तंह देश । इति भीति व्यर्पे नहिं  
लेस ॥ मुर पुर नगर बसै रमनीक । नर नारी सोभै छुक लोक ॥ अजित नाम राजै मूपाल । दुर्जन बैरी  
उर साल ॥ जोवन वंत भयौ सुत सार । दत जुसैन्या व्याही नारि । कारन पाय भयौ बैराज्ञ । माह सैन  
नृप पदवी त्याग ॥ ललित दत कौ दे सब राज । विपनि चले निज आतम काज ॥ तप करिके दल  
ज्ञान उपाय । सिव पदवी पाई सुखदाय । ललित दत अवनी मति पाल । राज करै सज्जन दुख टाल ॥

एक समें बन केलकरंत । चारन मुनि जुगलषि हरंपंत । सीस नवाय धर्म मुनि राय । प्रश्न करै तब  
औसर पाय । चारन रिद्धिहोय किहि रीति । सो बरनन करिए करि प्रीति ॥ भब्य जीव लखि मुनिवर कहै ।  
जिस बिधि रिद्धि चारनी लहै । जात्रा करो सिषर की जाइ । ललितकूट पूजौ मन लाय । स्वल्प तपस्या  
तब आदरै । चारन रिद्धि क्षिनक में फुरै ॥ यह मुनि मुनि नृप बंदत भए । सीस नवाइ नगर में गए ॥

\* अडिछे \*

संघ ब्यारि प्रकार संघ लै आपनै । धर्म ध्यान मन लाइ त्यागि कै पापनै ॥ जाय सिखर के सीस  
ललित घट कूटपै । अरैच श्री भगवंत करम गन दूटपै ॥ \* दोहा \*

हुनि आए निज नगर मै । कीनौ अति उत्साह । सुख भोगत नृप एक दिन । देख्यौ निज पुर दाह ।  
ललित दत भूपति तबै । भयौ हिए बैराग ॥ राज भार दै पुत्रको सर्व परिग्रह त्यागि ॥ तप करिकै दिन  
अल्प मै । गही चारन रिद्धि ॥ केवल पद लहि कूटपै । भए निरंजन सिद्धि ॥ सोई कूट सुमेर कौ । मन  
बंधित फल देइ । संपूरन गिरि की कथा । कौन कबीस कहेव ॥ महिमां सिखर समर की । लोहा चारिज  
कीन ॥ मनसुख सागर श्रुति निरखि । भाषा रची नवीन ।

इति श्री काथा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमैखुसमेदाचल महातम भाषायामन सुद्धसागरेण विरचितं सिद्ध कूटललेतेभ्यो  
नवमौ परछेद ॥ ९ ॥

\* संवेयां \*

सुमुन रदन पदन मत अमर पति रामा देवी मात तात सुश्रीव बखान्यौहै । किदकंदी पुर जन्म हाटक बर  
नतन एक सत धनुष छतंग तन मान्यौहै ॥ मकर मुचिन्ह चरन दोय लाख पूर्व आछु सुर नर खग तीन

लोक पति जान्योहैं ॥ अैसे पुहप दंत जिन मन सुख सिंधुनमि नरभव सुफल सुनिज मन आन्योहैं ॥

शिवर

\* दोहा \*

निवि कोडि जलधि गए । सोम प्रभु सिवलोक ॥ सुमनरदनजन में सुजिन तिन प्रति हमरी धोक ।  
पुहपदंत जिनवर प्रणमि । सारद सीस नवाय । पंच कल्याणक सिषरिगुन बरनौ अति हरषाइ ॥

\* ७५ \*

\* चौपाई \*

खंड-धात की सोहैं सार । ब्यारिलास जोजन विस्तार ॥ प्राचीनाम बिदेह सुजांन । सीता सरिता  
मध्य बहांन ॥ ताकी दक्षन तट इक देश । जाकी महिमाकरैं सुरेस ॥ नाम पुष्कलावति प्रसिद्ध । नाना विधि  
सोभित रिद्धि ॥ पुंडरीक-नगरी तहैं बसैं । गेह गेह उत्सह करि लसैं । महाराजा राजा परचंड । करैं राज  
दुर्जन अरिखंड । प्रजा पुत्र समपालैं भूप । दांन देइ जस लेइ अद्रूप । बिब प्रतिष्ठा श्री जिन गेह । करैं  
ब्यारि विधि सिंध सनेह । पूजा रवैं करैं उत्साह । इह विधि सौं नर भव फललाह । एक दिना बन गयो  
नरेस । देखे सुनिवर खड़े सुभेस । नमस्कार करि बैठे राय । दुबिध धर्म सुनि अति हरषाय । सुत धन  
दत्तराज नृप दियो । तेरह विधि चरित गह लियो । अति तप करि पड़िगार अंग । चौबीसों विधितंजि  
करि संग । षोडस कारन भावन भाइ । तीर्थकर पद बंध कराइ । करि संन्यास मरण तिथि अंत । नाक  
पन्द्र है देव महंत । उपजे बिमल देह दुति सार । अंत महूरत जोवन धार । सोढीतीन भुजा उत्तंग । सातौं  
धातरहि सुचि अंग । सागर बीस तहां हें आनु । लेखा सुकल रैं सुभभातु । बीस हजार-बरस बीतंत ।  
मानसीक तहें असन करंत । दस दूने षषवोर गए । परिमल सहित स्वास जब लए । अवधि भूभि षष्टम  
लौं होइ । काय बिक्रिया तहांलग जोइ । साततत्व चरचा मिलि करैं । जिन पूजा जिय में निति धरैं ॥

## \* दोहा \*

आउरही षटमास जब ॥ सुभ उपजोग कराइ । सुन मगधेसुर जिन जनम । कथा परम पदपाइ । इसही  
जंबूद्वीप मैं ॥ भरत क्षेत्र अभिराम । पाठ देश मैं नगर इक । काकंदीपुर नाम । राजा तहं सुग्रीव हैं ।  
जयनांमां पटनारि । दंपति सुखविलास बिपुल । करैं राज चितधार ॥ हरि आग्या धन देवलै । रच्यौ  
नगर जिन जोग ॥ करैं रतन वर्षा हरष । होइ सुधी पुरलोग ॥

## \* अडिह्ल \*

जय रामा नृपनारि एक दिन सैन मैं । षोडस सुपन निहार पाछिली रेनि मैं । उठि प्रभाति बरनार  
जाय पतिसौ कहै । बीतराग सुत हंइ सुनै फल सुख लहै ॥ जबलौं रानी भूप परस्पर नेह मैं । तबलौं  
अमर सुरेस आइयो गेह मैं । थापि सिंघासन मात नहन विधिवत कियो । वस्त्राभूषन सार चरचि हर  
षित हियो ॥

## \* दोहा \*

फागुन मास असेत पषि । नौमी दिवस निहारि । सुरनर खगमिलि गरभ थित । आए हर्ष अपार ॥  
पूजा गर्भ कल्यान कीर । पुर मैं उत्सव ठानि ॥ गयो देवपति थान निज । करिकैं बहु विधि, ग्यान । षट  
पंचास छमारिका । सेवकरैं जिनमात । काव्य पहेली छंद कहि निसिदिन हिए हरषात । बीते हैं नवमास  
इम । आयो अगहन मांस । गर्भस्थिति पूरन भई । बाढौ परम उलास । कृष्णपक्ष हैं प्रतिपद भान मूल  
सुषकंद । तीनजगत जन सुख करन । लीनों जनम जिनन्द ॥

## \* चौपाई \*

हरि आए औरापति साज । श्री जिननहन करन के काज । देवकरैं सब जै जै नाद । नंद बृद्धे कहिहै अहलाद ।  
जिनवर अकल ईसुरईस । बारंबार नवात्रैसीस । गए देवगिरि देवअनंद पांडुक शिल पर थापि जिनंद । क्षीर  
समुद्र कलस भरवाय ॥ ह्याइ कियौ अभिषेक सुभाइ ॥ पूजा करि कजल दै नैन ॥ कियौ तिलक कंकम

सुख दैन । बस्त्राभूषण भूषित अंग । रूप निरासि लाजै जुअंग । पुष्पदंत अभियांन उचार । लाय नगर जिन मंदिर सार ॥ मात गोद है निस्त करंत । पूरव कृत सब पाप हंत ॥ राखै सुर सेवक जिन जोग । जाय नाय भोगै सुख भोग । दोष सहस पूरव जिन आय । धनुष एक सत उनतकाय । तनकी दुति कलधौत सुमान । बाल सहस पचास बखान ॥ भए तरुन सुग्रीव निहार । आयै सुरपति हरष अपार ॥ उत्सव करि शिवाह नरनाथ । राज छत्र फेर सुर साथ ॥ राज सिंह बिष्टर पर देव । थापि हरषसौ करै सुसेव ॥ इन्द्र गये निज थान कि जवै । प्रजा नीति प्रसु पोषी तबै ॥ बहुत दिक्सलौ राज करंत । पालि अनुव्रत निज मन संत ॥ दिसावलोकन इकदिन करै । उलका पात दिष्टि तब परै ॥ हे विरक्त अनुप्रेक्षा भाइ । लोकांतिक सुर पहुंचे आइ ॥ करि अस्तुति जिन जोगजिनंद । गएब्रह्म पुर करत अनंद । सुरपति जिन शिवका बैठाइ । गए महा बन हर्ष उपाय ॥ बस्त्राभूषण तजि सबसंग । भए दिगम्बर नगन जुअंग ॥ सहस एक नरपति सब लेइ । ध्यान धरयो आतम चित देइ ॥ मन पर्जे सुत भये जिनैस । ठाढ़े अस्तुति करत सुरैस ॥

\* दोहा \*

मार्ग सीर्षि है सेतपक्ष प्रथम दिवस अभिधान । तप कल्याणक करतवै गए आपने धान ॥ शुग्म दिवस व्रत ध्यान धरि उठ पारने हेत । चित हरपुर सुर भिन्न ग्रह जुगयमगचित देत ॥ नोधा मगति विचारि नृप शुद्ध अहार कराइ । अपै निधि कहि बन गये ध्यान धरयो चितलाइ ॥ नृप ग्रह सुर वर्षा करै पंचाश्वकर्थ अनल्प । जस माहात्म्य जग प्रगट करि जैजै सुख जल्प । [अहिल]कीनी तप चित लाय ध्यान शुभ मौनसौ । अचल किए करवर्नकाज नहि मौनसौ ॥ कर्म घातिया ज्ञान केवल लख्यो ।

पाय-चतुष्टय चारि निजातम पद गंधो ॥

\* दोहा \*

समो सरन रचना करी इन्द्र कोस पतिआइ । सुरनर खग मिलिआइ पसु जिन बचन सुन हरषाय ॥  
कातिग पक्ष शशि किरन सम दुतियां दिनके अन्त । केवल ज्ञान भयो विमेल पुष्प दन्त हरहंत ॥

\* चौपाई \*

गनधर नाम बिदर्भक आदि । अग्रासी निजगुण अहलादि ॥ चारि ज्ञान धारक सब जान । श्री  
जिन बानी करत बखान ॥ समो सरन सोभा अधिकाय । बरनन करत ग्रन्थ बढिजाय ॥ देश देश  
उपदेश महन्त । धर्म देशनकरि भगवंत ॥ आयुही षट्मास प्रमान । समेद शिष्यआए भगवान । पूकृति  
कर्मकी सबतहं छूटि । मुक्तगए सुप्रभुवरकूट ॥ भादौमास सांपदुतिपक्ष । तेरसि दिवसजान परतक्ष ॥  
आयु पुलोमिज पतितस्थान । शिव कल्यानककरि सुखदान ॥ सुप्रभास साईबरकूठ जोवंदतसुपातिगछ्छटि ।  
सुप्रभुपमुगति नाशनकरै । सुनरगति लहि शिवपदवरै ॥ एकचन सतकौटि बखान । निबैलाख सहस  
नवजान । चारिसतक अस्सीमुनि राज । सुप्रभासपर निज करकाज ॥ साई कूट बन्डनाकरै । सोरहकौट वरत  
फलधरै ॥ महिमा कहतपार नहि लहौं । अरबबुद्धि कैसे गुनगई ॥ आगे मुनि श्रेनिक मनलहइ । कहैः  
कथा कौठी भटशइ ॥ जंबूदोप भिरताज भरतक्षेत्र सबमहिमामाज ॥ आरजिखंड मध्य में बैसै । कहाकदेश  
अनुपमलसै ॥ श्रपुर नगरीराज करंत । हेमप्रभ राजायुगवंत ॥ जयानामरानी मनहार । भागैभोग सरम  
दातार ॥ तिनके पुत्र सोमप्रभ नाम । कोठी भट सोहै अभिराम ॥ एक समय वरसैन सुराज । मंडलीक  
सब कौ सिरताज ॥ चढि आयो निज बल लैसाथ । ताके संग बहुत नर नाथ ॥ हेमप्रभ निज चमू  
समेत । निकरयो बुद्ध करनके हेत ॥ भयो परस्पर अति संग्राम । हयगयै पहुंचे जमयाम ॥ सोमप्रभ

निज नास निहारि । आत दुष्यत संग्राममञ्जारि ॥ गदात्रिलोकी निज कर लयो । आगे जाय लखतसो भयो ॥

\* दोहा \*

इह कोटी भट अतुलबल । वे नर कुंथ शमान ॥ जिस दिसपै वैभुजन सौं । मार करै धमसान ॥ जेवसैं नर नरेस के हय गय स्थ भट सार । ते सब छिन में मारि कै । डारे रन्हिमञ्जार ॥ भाग गयो बरसैन तव सोम दत नर देखि ॥ धृग धृग कहै विचार । ईबृथा जन्म निज लेख ॥ एक राज के काज । हम नासे जीव अनंत । भो भौ मैं दुख दाईहैं । असो पाप मंहत ॥

\* चौपाई \*

जाय अरन्य महा मुनि पासि । नाश करन करमानि की पासि ॥ मिलै विमल बाहन मुनि धार । करै छिनक मैं भव जल तीर । सीस नाथ आलोचन करै ॥ निज पातिग मुनि ढिग उच्चै । कहाँ मुर गुर पूरव पर जाय । किम कोटी भट पदवी पाय । मुनि बर कहै दीप इहां जानि ॥ यही क्षेत्र मरु क्षेत्र बखानि नगर अन्नूप सेठ धन दत । बहुत द्रव्य सौं रहै प्रमित । अति लोभी कछु दान न देइ । अपकीरत पुरमें बहु लेइ ॥ कोइ नांम लेत नहि तवै । क्रोधसहित है निकस्यौ तवैं ॥ गयौ गहन में लखि मुनि राइ । तीन ग्यांन जुत दुर्वल काय ॥ करि प्रणाम पूछै धनदत्त । देह क्षीन क्यों कहिए तंत । मुनिवरकहे सेठ मुनि बात । अतितपकरत अहर्निसि जात । पक्षमास जुगमास वितीत । बृताउञ्चोदर की रीति । द्वाविसति परी सहमन एक ॥ सहत जैन तप दुद्धर टेक । क्रोध लोभ माया अरु मान । तजैं मुकति पद हौ निदान । मुनि बचन सुनत लोभ तजि गयौ ॥ सेठ उदार चित तब भयो । फुनि मुनि धर्म कथा मनलाइ । करि नमोस्तु फिर निज धरि आय ॥ दांन अहार प्रतिज्ञा करी । जिन पूजा जिन जिन प्रति धरी । देखि पात्र नौ बिबिध विधिधार । दान देइ ब्यासौ परकार । एकदिवसमुभ शैन मुनीस । आएएस



धर्म के ईस । निर्मल तन कंपितव्रत इत धरै । पाखमाश पर भोजन करै । प्रासुक अन्न वोषधी जोग । दे  
अहार तन कियौ निरोग । तप लाइक सुनि तन बलधारि । अस्त्यति करै सुवारंवार । सुनि निज सुखसै  
बर्नन कस्यौ । सुप्रभु कूट बहुत गुन भर्यौ । मुनिवन जाय धर्यौ तप जबै । सेठ चल्या जात्रा कौ तबै  
सिषिर् भूमि पहुँच्यौ चित धारि । जिनवर पूजा करहि विचारि । प्रांन तजे सुभ से तिहि थान ॥ सोम  
प्रभु तुम उपजे आंन । वह मुनि वर कौ दांनछु दियौ । यतै आय सबल तन लियौ ॥ करो जात पुनि  
भाव समेत । शिव पदवी पावन के हेत ॥

\* दोहा \*

इह सुनि हिए बैराग है ॥ दयौ पुत्र कौ राज । चारित ग्रहन कियो तबै । करन आतमा काज । शिखर  
जाय बंदन कियो ॥ सुप्रभास वर कूट । ध्यान धारि मन अचल क्रिय कर्म कालिमां छूट । लहि केवल  
सिव पुर गए । सोम प्रभ बलवंत । और अनेक भये सुइमि ॥ बरन्त लहाँ न अंत ॥ ( अडिल )  
असै सिखर समेद बंदनां जो करै । सोनिहँच नर नारि मुकति नारी बरै ॥ लौहाचार्य कियौ ग्रंथ  
लखि मै लियौ । कठिन जानि मन सुद्ध सिंधु भाषा कियौ ॥

इति श्री काष्ठासंगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्येषु सपेदाचलमहात्म्ये भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनं सिद्ध कूट सुप्रभासपुष्पदंत  
मोक्ष गमन दसमो परिच्छेदा १० ॥

\* सर्वैया \*

कर जुग जोरि क नमत तीन लोक जन दृढ़ रथ जनक सुनंदा देवी माइ है । महलपुरी में जनम सहस  
पूरव एक आयु तन उन्नधनु नवै थाइहै ॥ स्वैतहै बरन काय सब जन सुखदाय सीहत सुभग  
चिन्ह सुर तरु पाइह ॥ असे प्रभु सीतल सुशीत कनहाह मन सुख सागर नमत सुखदाइहै ॥

## \* दोहा \*

नव कोडि जलधि गए । पुहप दंत मिव धांम । सीतल जिन जनमें तवै । तिन प्रति सदा प्रनाम ।  
तिन चरित्र भरनन करथौ । सिषर माहातम मांदि । सुनि श्रेनिक गोतम कहै । बरनत शेष थकाहि ॥

## \* चौपाई \*

पुहकर दीप तीसरी जान । मंदिर नांम सुमेर बखान ॥ तहां बिदेह पूर्व थिति रहै । सीता नंदी  
मध्यमें बहै ॥ दक्षिन कूट पूरब थिति देस । नग्र सुशीमालसैं अशेष । पद्म गुल्म नृप राज करंत ॥  
देइ दांन पूजै अरिहंत । पट नारी बसंत श्री नांम । सील सुलक्षण सब गुण धांम । तिनकें सुत लपल्यौ  
गुणवंत । चंदन संगया सील धरंत ॥ इक दिन भूप जलद पच रंग ॥ देखि जगत जान्यौ छिन भंग  
प्रसम भाव अति चित मन दियौ । चंदन सुत कौ नृप पद कियो । दिक्षा लई क्रियो तप घोर । सहै  
परीस्या तनपै जोर । द्वादश विधि तप करत अभंग । सहै कष्ट नाना विधिअंग ॥ षोडस भावन जिन  
मन धारि ॥ तीर्थकर पद सुख दातार ॥ आयु अंत संन्यास जो लियो ॥ निर्मल भाव मरन तब  
कियौ । दिव्य पंद्रह देव मंहंत । ठाढ़ बरु सुर सेव करंत ॥ पद देवेंद्र जलधि चरिस । आयु पुरी सुर नावत  
सीस । और भेद पूरच व्रत जानि ॥ कहां लागि अब मै कगौ बखान ॥ जनम थान अब सुनि मगधेस ।  
जाकी सेवा करत सुरेस । जंबू दीप सुमध्य मंहंत । भरत क्षेत्र धनुषाक्रत संत ॥ आरज खंड सुमालव  
देस । महलपुर जिमनगर सुरेस ॥ दिठरथ भूप राज तहं करै । प्रजानीति मारग अनुसरै । नारिसुनंदा  
सील निधान । जिन मणि उपजन कीहै खान । \* दोहा \*

हरि आग्या धन पति लई । रथौ महापुर जाय । तीन काल षट मास लौ । मणिकी बृष्टि कराय ॥ चैत

मास शुभ अष्टमी । अंत जामिनी जांभ । जिन माता षोडस सुपन । लखे महा सुख धाम ॥ उठि प्रभात अस्नान करि बस्त्राभूषण धारि । सखी संग लेकर चली । पति ढिग जाइ उचार । अवाधि चक्षु लखि नृप कहँ ! तीर्थकर सुत होइ । तबै गर्भ कल्याण हरि । आय कियौ सुख जौय । छहौ कुलाचल वासनी । षटपचास कुमार और सुरी सेवै जननि । हरि आग्या सिर धारि ॥

### \* चौपाई \*

मंगल भीतकरत दिन गए । नंदमस पूरन इमभए । माघ बदी द्वादसि सुभवार । श्रीजिनजनम लियौ सुखकार ॥ आएहरि दंपति पतिसाज । जिनचढ़ाय पहुंचे गिरिसाज । करि अभिषेक अरवि जिनचर्न । अस्तुति करी जुपातिग हरण । सिध ऋतकरआए निज पुरी । सोहरि मंगल गाँव सुरी । तांडव नृत्य इन्द्रकर गयौ । अति उत्साह नगरसै भयौ । पूरब सहस आयुपरमान । नवै सहस सेतततु जान । सहस पर्वसि बालपनगए ॥ क्रीड़ाकरत तरुन प्रभुभए ॥ पानिग्रहन करि राजकरंत । सहस पर्वश सिरी भगवंत । देखि वृसाभए बैराग । इच्छया करी परिगृह त्याग । अनुप्रेक्षा द्वादसि मनभाइ । ब्रह्मलोकसुरपैडी आइ । करि अस्तुति पहुंचे जिनथान ॥ हरि सिवका थापे भगवान । गए महाबन परिग्रहत्यागि । निजआतम सेती लोलागि । सहस भूपजिन सीसनवाइ । ग्रहनकियौ चरित सुखदाइ । \* दोहा \*

माघ महीना कृष्ण पक्ष दिवस द्वादसी जानि । कचखीरौ दधिडारि कै । कीनौ तपकल्याण ॥ मनपर्यै प्रभु ज्ञान लहै ध्यान कियौ दिन दोइ । असन हेत हरिपुर गए । मार्ग सुचिअवलोइ ॥ देखि पुनर्वसु भूप तब ॥ पडिगोहे जिनराय । नौधाभगति उचारि उरगोपयचरी कराय पट्टडी छंद

एजिन बन में धरौ धान । नृपकै ग्रहपंचाचर्य जानि ॥ छंदमस्त रहे त्रयवर्ष देव ॥ श्लैष्मिण घात्रिणा

कर्म रोव ॥ सुभषौषुदी चौदासि सुअन्हि ॥ करि भस्म करमतप ध्यान बन्हि । केवल मारैड प्रकासलीन ॥  
मिथ्यातमहातमकरनहीन ॥ तवइंद्र कोस पति आइवर्न । पूजाकीरि के रचि समोसरन । गनधइक्यासी  
भए सर्व ॥ जिन बानी परसै है अगर्व ॥ \* दोहः \*

पूरब समसोभासकल ॥ बरनतशेष थकाय । मेरी धिखना है अल्प ॥ क्यों करि बरनी जाय । नानादेश  
बिहार प्रभु कीनों बृषउपदेश ॥ नरबिद्याधर देवमिलि । अस्त्वति करत सुरेस ॥ आयु रही जबमास. इक  
आये सिषरि मुमेर । जोग रोध करि ध्यान धरि । निजआतम गुनहेर । श्रवनसुकल सुदिवस दिन । पूरन  
मासी जान । विधुतनांमा कूटतैं । लख्यो सुअबिचल थान \* चौपाई \*

सुरपति सिवकल्याणक कियौ । अपना जनम सुफल करि लियो ॥ सो विद्युत बरकूट सुधार । बंदनकरत  
लहैं पदसार । पसूनरकगति छिन में नास । करै देवनर गति में बास । बत्तास कोटि प्रोषधी करै । एक  
बारबंदनफल धरैं ॥ अरआगैं सुनि श्रेनिक भूप । अबिचल राज कथा अनूप । हुंडाकाल दोषप्रगटाय ।  
मिथ्या धर्म चलयौतव आय । \* दोहा \*

मलय देस में नगरपुर । भूपमेघरथनाम । अति प्रताप धरभुजबली । बहुदृषकरै प्रनाम ।

\* चौपाई \*

सभा मध्यं इक दिवस नरेस । धर्म कथा कौ करैविसिस । कौनदान तैं अति सुखहोय । मंत्री प्रति पूछैं  
नृपसोय । कहैं अमात्य सुनौ नृपबैन । ब्यारिदान भाषैजिन अैन ॥ औषय शास्त्र अभै अहार । एई दान  
सुकृति आचार । वनस्यंदन भूपत सुनि कहैं । और दान इच्छामम बहैं । प्रोहित सोमसर्म सुततहां ।  
सुंडसाल बाल्यौ नृप जहां । सुनौराइ ए ब्यारथौदान । करैं दीन राखैं अतिमान । दान केहे दसबिधि के भेद

कैं भूप सिवलहैं अपेद ॥ गजहय भूम महलवरनारि । तिलस्यंदनदासी सुखकार । अजादान भूपति  
दसजोग । करि पावै बैकुंठ सुभोग ।

\* दोहा \*

विद्या मंद आंधो पुरुष । लंपट लोभी दर्भ । गिने न काज अकाज कौ । करै पाप बससर्व ॥

\* चौपाई \*

मुंडसालएं दान बताय । मिथ्या धर्म जुदियौ चलाय । जैनधर्म करलोपमहंत । दुर्गति बंदन काज  
करंत । नृपति वंसभूपति बहुभाए । केतिककाल बीतइमगए । अविचल नांम भूपइम ॥ सोवन में क्रीड़ाको  
गए । लखि चारन मुनि सीस नवाय । दुबिध सुन्यौ बृषचित्तलगाय । विद्युत कूट महातम सुन्यौ । जात्रा  
हेत हिए में गुन्यौ । सोरह लाख जीव लैसंग । जात्रा कीनी भूप अभंग । होइवैराग महाव्रतधार ।  
विद्युत कूट सीससुखकार । लखौ सुकति पदपरम रसाल । हृद्यौ जनम मरन जगजाल । जे नरनारिबंदन  
कैं ॥ सो शिवरमणी सम्पति बरैं ।

\* दोहा \*

महिमां एक सुकूटकी सुरगुरुबुद्धि असमर्थ । संपूरन गिरि जोनि में कौकबि कहन असमर्थ ॥ ( आडिल )  
सिखिर महातम ग्रंथ नाम भाषा कद्यौ । लौहाचार्य सूरिसुजग में लखौ । मनसुख सिधुनि आपनै  
पठनि कौ । भाषा सरलबनाय ज्ञान के बढ़नि कौ ॥

\* दोहा \*

चपल चित बरचरसदस । करत ध्यान बनछीन । बांधन सुमति जंजीर कौ ज्ञान खंभइहकनि ॥

इति श्री काष्ठा संगे लौहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेसुपमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुदसांगरण बरणने एकादसमोपरिच्छेद ११

\* सवैया \*

ताके तनसोहत सुलक्षन । अनेक विधि सिध पुरजन्म हेमसमच्छवि काइ हैं । विमल नृपति तात विमला

मुदेवी मात गैड़ाकौ चरन में मुचिन्ह सुखदाइहैं । चारि बीस चापतनउनत चौरासीलाख बरष प्रमानं जिन देवजी की अइहैं । ऐसे हैं श्रीयांस प्रभू मनसुख सागर कौ देहु शिवमाराग नमत शिरनाइ हैं ॥

**\*दाहा \***

निन्याणबे सुलाखवर । अरु निन्याणबैहजार । नौसैनेद सीतलगण । जनम श्रयांस सुधार । तिनके पंचकल्याणअब । बरनौ सीसनवाय । कूटशंखुली सिषरिपैं । अविचल पदबीपाइ । \* चोपाई \* पुष्करार्द्धमुमदीप महांन । मंदिर मेर सुमेरबखान । तहां बिदेह सुप्रख नाम । जहांकाल चौथौ सुख धाम । सीतानंदी मध्यमेंवहैं । निर्मल जल अति सोभालहैं । उतरकूट देससुभ बसैं । नाम मुकक्ष क्षेमपुर लसैं । नलिन प्रभाराजाराजंत । अरिभंजन हरिजिमगाजंत । सहस्र खन परम पुनीति । जिमअंतस्वामी सुभरीति । सुनिकैं राजा अति आनन्द । लैपरवार जाइ जिनअंदि । सागंरीअनगारमहंत । दुत्रिधि धर्म सुनि नृपहूसंत ॥ भोगलखे भोगेंद्रसमान ॥ अक्षविषैं विषसमनृपजान । राजसुभ्रम कागनलखि लीन । नृपपदवी निज मुतकौ दीन । त्यागी परिग्रह चारित लियौ । निर्जनवन में अति तपकीयौ । एकग्राम दिनप्रति जुघटाइ । द्वात्रिसत दिन दिनहि वढ़ाइ । षोडसकारन व्रतकरि राज । निश्रै अरुबिहार समाज । भावन भावैं निजमनलाइ । जिन पति पदबांध्यौ सुखदाइ । धरि संन्यास प्राणतजि दिए ॥ पूरन आउभाउ सुभ किण । सोलम स्वर्ग इंद्र पदधरैं । ठाड़े सबसुरसेवाकरैं । पुष्योतर विमान थितिसार । करैं भोगसवसुखदातार द्वाविंशति सागर थिति परी । जिन सेवा छाड़ै नहिधरी ॥ बाईस सहस वर्ष जवजाइ । मानसीक आहारकराइ । ग्यारह मास वितितैंजबैं । सास उसास लेहिं सुरतबैं ॥ \* दाहा \* आयुर्ही छहमास जब । तब जिन पूज करंत । सुनि श्रेनिक बरनौ जनम । श्री श्रयांस भगवन्त ॥

## \* चौपाई \*

जंबूदीप क्षेत्र है भरत । कौसल देश कहन असमर्थ ॥ सिवपुरी नृप बिमल बिख्यात । बिगला रानी बिमल सुगात ॥ रतन बृष्टि तिनके घर होइ । सुखी बसैं पुरजन सब लोइ । आँगै रिति भितिमास प्रमान ॥ धनद रच्यौ पुर श्री भगवान । जेष्ठदि षट निसि अन्त । सुपन लखि जिन मात तुंरंत । पौडस मान प्रात उठि जैभैं ॥ जाइ कहे जिनपति सौं तबैं । बिमल भूप लखि अवाधि विचारि । तीर्थकर सुत उपजैं सार । इतनें भैं आए हरिदेव । गर्भ कल्यांक करि सुरसेव \* दोहा \*

षट पंचास कुमारिका । निज निज काज करंत । गूढ पहेली छंद कहि । माता मन हरषंत ॥

## \* चौपाई \*

ऐसी रिति गए नवमास । दंपति मन में धरै हुलास । फागुण बदी द्वादसी जान । जनम लियौ श्रयांस भगवांन ॥ ( अडिल ) आए हरि गजराज साजि हरिपुरि विषैं । सची प्रसूत ग्रहजाइ हगनि सौं जिन दिषैं । है प्रसन्न थुति कारी मात निद्वारची । लैकैं अंक जिनस इन्द्र कौ दे सची । सक लेइ जिन थापि छुर गिर गए । क्षीरोदक भरि ल्यायन्हवन करते भए । अरचे पदव सुद्रवसर्व आभरन लै । पहिभए मन मुद्ध सिंधु जिन सर्नाह ॥ कहि श्रयांस जिन जगत श्रेयकारी सदा । पुन ऐरापति थापि पुरी आएतदा । मात गोद दै सक नृत्य तांडव कीयो । सेवा करन सुरगाखि देवपुर मगलियो ॥

## \* सोरठा \*

पिता कियो उत्साह । जाचिकजन बहु दर्ब दे ॥ रही नहीं कछु चाह । जिन दर्शन मन तृपति है ॥

\* दोहा \*

बिबिधि देव स्वगरूप धरि । जिनमन अति हर्षाइ । ईकईसलाख बरष गए । बालब्याल जिनराय ॥

\* चौपाई \*

पांनि ग्रहन शक्र मिलितात । करि मन हर्षे पुलकित गात । ब्यालीसलाख बर्ष करिराज । रिडु बसंत लखि नृप पदत्याजि । द्वादस भावन भावै सार ॥ लौकांतिक आए तिहिवार ॥ करै बानती सीस नवाय । निजधुर गए प्रसन उपजाइ । ल्याय विमल प्रभसिक्का इन्द्र । जै जै करत चढ़ाय जिन्द । जाए विपिन बस्त्रादिक त्यागि । ध्यान धर्यौ आत्म लौ लागि ॥ \* दोहा \* सहस राय अवनीस पद । निज निज सुत को देइ । श्री जिन चरन प्रनामकरि । शुभ चारित गहिलेइ ॥

\* चौपाई \*

बेला व्रत हरि कै जिन भूप । अरिष्टनगरनाह अबूप । गए गेह करिकै आहार ॥ निज आत्म धरिध्यान सुवार । पंचाचार्य भयौ नृपगेह । जै जै सुर कहि करै सनेह । दोय बरष छदमस्थ जो रहै । कर्म वातिया प्रकृति सु देहै ॥ तेदू बृक्ष तलै अरिहंत । धर्यौ ध्यान जिन मनकरि संत । केवल ग्यानभान प्रग टाय । जग मिथ्यात्म नास कराइ । आए इन्द्र संग लै सची ॥ समोसरन की रचनां रची ॥ कुंथ सैनि आदिक गनधार । जिन बानी के हरषन हार । सतहत्तरि परमान बखान । चौरासी हजारसुनि जानि ॥ सब पूरख सम रचनां कही ॥ ग्रंथ उक्त करि जानौं सही । सहसवती सदेस विहंत कृपा धरम उपदेश करंत । रही मास मिति अइ जिनन्द । आए सिपरि सुरासुर बन्द । जोग रोध चढ़ि कै गुनगान । कृत



साक़ली प्रकृति जुहानि । पंच लघुशर काल मझारि । चिदानन्द सिवपद लहिसार ॥ \* दोहा \*  
कूटसाक़ली सीस पर । सो इंद्रादिक आइ । सिवकल्याणक कर गए । मनमें अति हरषाय ।

\* चौपाई \*

सुनि सुगधेस साक़ली कूट । बंदितनरक पसु गति छूट ॥ महा पुन्य थानिक हें सही । अति महिमां  
जिन श्रुति में कही ॥ कांडा कौडी छिनवैं जांनि । अरु छानवे किरोग बखान ॥ लाखछ्यानवे सडम  
पैताल । पांच सतक ब्यालिस सुनि पाल । इतने सुनि सिव पद तहँ लहैं । बलख त्यागि सुनिजगुनगह  
कूट बंदना करै इक बार । बोडि प्रोषधी फल दातार । अब आगे सुनि श्रेणिक भूप । मन बंछित फल  
कथा अनूप । जंबू दीप दीप सिरदार । भरत क्षेत्र तहं धनुषाकार ॥ आरज पंड नांम सुम देस ।  
नगर कल्पपुर वंस अमेस ॥ नंद सैन नरपति सुखदाय । करैं राज अरि नाश कराइ । विजै सुसेना  
रानी सार । ताजुत भोग भोगैजु अपार । इकदिन आमृ विपन में जाइ । लखि सुनि भद्र केवली राइ ॥  
करनयोस्तु सुनि धर्म विसेष । यह संसार अथिर करिलेख । पूछू भूग आत्मा काज ॥ क्यों करि होइ  
महा सुनि राज । तन कोमल तप होय न लेस । धारि सकैं नहि चारित भेस ॥ सिवपदकी इच्छाजे रहैं ।  
सो उपाव बहि भूपति कहैं ॥ बोले केवल ग्यानी धीर । सुनौ नृपति अविचल पद सीर । सिखरि कूट  
संछली धान । बंदित सिव पद लहै निदान । सुनि नृप सीस नवाय । जात्रा करन चलयौ हें राय ॥  
एक कूट लै संघ सुसंग । पूजा दान जुकरत अर्पंग । जात्रा करी जाइ नृप जैं । अति रोग भयो जिय  
तैं ॥ देसुतराज दिगंबर भयो । कूट संछली परि सिव गयो । \* दोहा \*  
सुनि श्रेणिक इहिविधि बहुत ॥ मुक्ति गए नर नाह । यात्रा करि सिव कूट की नर पद लानौ लाह ।

महिमां सिखर अगम्यगम । को कवि कह न समर्थ । जो मनमें बाँधा करै सो पावै निज अर्थ ॥

\* अडिल \*

लोहाचार्य सूरि सिखरि सुर तरु कह्यो ॥ मन कल्पित फल देइ । फौलि जग जस रह्यो ॥ मनसुख सागर जानि आपनै काज कौ करवौ ग्रंथ नर भाष त्यागि कै लाजकौ ।

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्येषु संपदाचलमहात्म भाषाया मनसुपसागरेण वर्णनं सिद्ध कूटवर सांकुलीजाम श्रेयांसनाथ मोक्ष गमन द्वादसमी परिच्छेदा ॥ १.२ ॥

\* सवैया \*

अमल अमंत गुन सोभित सुवर्ण काय चंपापुर नगर सुजनम बखान्योहै । जननी अयासु देवी जनक ह्वे बसुदेव उन्नत सुतनु धनुष सतरि प्रमान्योहै । लक्षण महिष चिन्ह सेवत सुरेन्द्र सत मंदारगिरि कूट सेती कर्मन को भान्यो है । अैसे बास हूजि जिन बसत जो थिर थांन मन सुख सिंधु नमि सुकृत भौ जान्यो है ॥

\* दोहा \*

बास पूज्य बसु दर्ब सौ । जे पूजै मन लाय । बसु करमनि तै रहित है ॥ बसु गुन जुत सुख पाइ ॥ तिन चरित्र मनुलाय कै सुनि श्रेनिकनर इंद । मन बच काया सुद्ध कर । ज्यौ पद लहै सुरिंद ॥

\* चौपाई \*

पुष्करछे मैं दीप महान । पूरव दिगजो मेर बखाव । सीता सरिता उजल नीर । ताके पूरव तटके तीर बत्सकावती देस इक बसै ॥ सुर पुरवत सोभा सब लसै ॥ रतन पुरी पुर उत्तम धाम । अति सरूप गुन जुत नर ठाम ॥ पोहोतर नाम नृप भूप ॥ सुरपति वत सोभित है रूप ॥ धर्म विषै हित अति द्यौत

धारि । पूजा दान अधिक विस्तार । नीति मारग नागरि पूति पाल । दुरजन जन कोहे हर साल ॥  
 अति प्रताप राजै नर ईस । बहु नृप आय नवावै सीस ॥ गुन प्रिय युनं गन जुतहै प्रिया । कटल  
 रहित सरल सुहिया । सो नृप रानी सहत मनोग । मन वंछित वर भोग भोग ॥ नगर वाह्य मन  
 हरि गिरि एक । मन हर सोमा लसे अनेक । तहं आएजु जुगंधर नाम । तीर्थकर सबजन सुख धाम ।  
 पोढोतर नृप सुनि हरषाय । पूजन द्रव्य लेइ नरनाह ॥ जाइ चरन अरचे भगवंत । अस्तुति करि  
 बहू गुन गावंत । करि नमोस्तु नर कोष्ट मझारि । बैठौ मन आनंद अपार । जिन मुख उदित धर्म  
 सुनि लियौ । दादस भावन मै चित दियौ ॥ इंद्रजाल जग रीति बखान । सत्या सत्य न लखै  
 अज्ञान ॥ पंच पराव्रतन यहि जिय करै । थिति छिन एक नहीं अनुसरै ॥ देखत देखत इह जगजाइ ।  
 इंद्र धनुष सम जानि सुभाय ॥ अब कीजे कछु आतम काज । पुत्र बुलाय दीजिए राज ॥

\* दोहा \*

पाढोतर बैराग है । निज सुत दीनों राज ॥ परिग्रह तजि तप ग्रहण करि । करन लगे निज काज ॥  
 बहूत राजवी साथि ले दुद्धरूप जुत होइ । यन्तर सुनि रांय अति । आतम रसलों जोइ ॥ अर्थास  
 जुत मूल गुन । उतर गुन सुबिचार ॥ चौरासी लख आदरै । करै बरत अनगार ॥ एक दभाग अर्थात  
 श्रति । नय बल श्री सुनि रांय ॥ षोडस कारण भावनां । भावै निज लौ लाय ॥ \* चौपाई \*  
 तीर्थकर पदवी दातार । उतिम नाम करम अवधार ॥ भिबिधि तपोधन तप अनुसरै ॥ पूर्व क्रत  
 बसुकर्मनि हरै । अंत समै अन सन व्रतलेइ । निरती चारं हिए मै देइ । प्राण अंतकरि तजि सब आस ।  
 महा सुक्र मै कीनों बास । महा सुक्र अभिधान प्रतिष्ट । आमराछिप है सब सुर इष्ट । महा शुक्रसु

विमान मञ्जारि । सेज्या तहं उत्पात सुसार ॥ अंत महूरत जोवन पाइ । हस्त च्यारि उन्नत सुमकाय ।  
सप्तधातु बर्जित तनु धरै । सत्र सुर मिलि सेवा बहु करै ॥ षोडस उदधि आयुपरमान । लेष्या पदम विसेष  
बखान । अष्ट मास बीते सुभ स्वास । सुरभित सहित बहत है वाम । षट दस सहस वर्ष जत्र जाय ।  
मानसीक आहार कराइ । अविधि चतुर्थ भूम लौ होइ । काय विक्रिया जहां लौ जोइ ॥ \* दोहा \*  
इस विधि सुर सुख भोगकै । सुनि मगधिसुर राइ । षट मासा पुरही जेवै । जिन पूजा सुकराइ ॥

\* सारिठा \*

आगे जिन अवतार । होय तीन जग सुख करन । भो मुनिए मन धार । मन बच काया सुदकरि ॥

\* चाल छंद \*

इम जंबूदीप मझारा । सुर गिरि सुंदर मन हारा । तिस दक्षिन भरत विराजै ॥ षट खंड मांहीं शुभ  
छाजै ॥ तहं अरज क्षेत्र अनूप सब जन सुख कारन रूप । इक अंगदेस तहं सोहै । देखत जन मन  
मोहै ॥ चंपापुर सुर विख्यावा ॥ बहु सोभ सकल सुख दाता ॥ तहं को बसु पूज्य नरसे । विख्यात  
सुदेस विदेश ॥ रानी जयावती नाम ॥ अति प्रिय पति हैं सुख धाम ॥ राजा रानी हित जोगै । मन  
इछत भोगै भोगै । सुख सिंधु मगन है राय । जानौ न काल कित जाइ । जिन जन्म लेइ जिन ग्रेह  
सुख बरनत पार न तेह ॥ \* दोहा \*

सुनासीर स्वावधि लख्यौ चंपापुर जिन राय । गर्भस्थिति षट् मास गति । कीनों अपनों काज ।

\* सवैया \*

आशुधनद पाथ चंपापुर आयत बनौ द्वादस जोजन प्रमिति परकरियो । पंचाश्वर्य तीनकाल करत

हरषयार भंदिंर विचित्र सुरपुर सोभा हरियो ॥ सजन सनेही रूपके निधांन सब नरनारि रूप निरखि सुदेवी पाइ परियौ । मंगल सुगान नृत्य बीते षटमास इम सौधै गर्भदेवी आइ हिये भक्ति धरियो ॥

\* दोहा \*

भृमरामा अषाढ पक्षि षष्ठी शर्ताभषनाम । महा सुक सुराइ तिथि गर्भ कियो सुख धाम ॥

\* चौपाई \*

करत सेव सुरी सब आईकै । अति आनन्द महा सुख पाइकै ॥ कगलिये बरवस्त्र मनोहरं । विविधि भोजन भूषन भासुरं ॥ केइक चंदन केसरि गारती । केइक चवर लिये सिरढारती ॥ केइक छत्र लिये कर फेरती । केई एक मात सुखांबुज हेरती ॥ कहत काव्य कलागुन गावती । शुभ पहेली कथा मनभावनी ॥ सुरभि छुक्ति सुपुष्प विसेषती । सुरविसेज सुजन्म सुखेलती ॥ धरति चर्न सुनृत्यात भावसौं । ताग्रद ताता तता करचावसौं ॥ झुनन झुनन नूपुर बाजती । तनन तानन आनन साजती ॥ सुर ससि चिंता गीत उच रती । जननि अग्र करै शुभ आरती ॥ इंद्र सुअन्य सुसेव करै सुरी । सकल उत्सव होत महा पुरी ॥

\* दोहा \*

फागुन सुकल पक्ष शुभ दिन चतुदसी सार । वरुन जोग जिन जनमियौ त्रिमवन सुख दातार ॥

\* चौपाई \*

चौनिकाय सूर सुचक देखि चिन्ह लख्यौ निज जन्म विशेष ॥ नाग जुसजि गज लायौ तहां । चंपापुर जिन जन्मे जहां ॥ लैप्रभु हरि सुर गिरपर जाइ । पर्यनिधि जल कलसा भषाय । मञ्जन कारि पूजा रचि तबै । अस्तुति करत कहत धन अर्घै ॥ ग्रह ल्यायौ बहु हिये अनंद । वास पुज्य

काहे जयो जिनंद ॥ अंकमात कैदे सुखपाय । नृत्य क्रियो पुन निज पुजाय ॥ श्रीनृपजिन वसु पूज्य  
 निहारि । जयावती जननी हग धार ॥ देखि देखि अति हर्षित गात । बह पुलकित निज तनन  
 समाज ॥ पुर उत्सव कर दान जुदेइ । मन बाँछित देवहु जसलेइ ॥ गेह गेह मंगल सानंद । सब जन  
 के नाशै दुख फंद ॥ रोगी चकित न दीसे कोइ । नृत्य गान सब थानक होइ ॥ इस विधि उत्सव  
 जुत पुरसार । बाल रूप जिन राज कुमार ॥ जंबूनन्द तन सोभा धरे । सुर बालक सब कीड़ा करे ॥  
 सत्तरि धनुष सुकाय उत्तंग । वज्र नृपम नाराच अभंग ॥ लाख बहत्तरि अष्ट प्रमान । वासु पूज्य  
 जिन आशु बखानि ॥ अष्टादस लख वर्ष वितीत ॥ बाल कुमार अधिक सब प्रीनि ॥ इक दिन द्रव्य  
 बिचारन करै । आतम गुन निर्भेमन धरै ॥ हिये उपज्यो संवेग अपार । जल फेनापम लखि संसार ॥  
 इहिन्रिय काल अनादि अनंत ॥ भूमनर नहिं पायो अंत ॥ परभव भावरूप है गह्यो ॥ तजि  
 गुनरूप न कबहु गह्यौ ॥ मोह भूपअपने बसिल्य । अष्टकर्म काराग्रहदेइ ॥ कुमति सुता दीनी परनाइ  
 तिन अपनै बस नाचनचाथ ॥ अपनी बिभौ मोहनेदेई ॥ डारि निगोद खबर नहिंलई । भाग्य जोरग्य  
 तहँतैनिकसंत । लष्य चौरसी जोनि भ्रमंत । फुनि निगोद मै फुनि गति च्यारि । फित फित नहि  
 पावैपार । इमचित तजि नवरसवेग । लौकांतिक सुरआए बेग ॥ करजुग जोर नमस्तुक्रियो । प्रममलिण  
 थुति कर हरषियो ॥ धन्य धन्य पूसुतारनहार । तुमबिन कौ इह बातविचार । जागत जीव  
 तुम नादाहि तरै । गुन गावत भव भव दुखहरै ॥ थुति करि गए आनि थान ॥  
 परम सरमसी भाव बखान । सिवकापर जिनलए चढ़ाय । सत्कंध धरि अति हरषाय अटवी महा मनहार

नाम । जाइ तहां कीनों विश्राम । जंबूतर तलितजि निज ग्रंथ । लीनों तप जान्यौं सिवंपंथ । तपकल्यानक सुरपति कीन । किए पूर्व भवपातिग छीन ।

\* दोहा \*

पूजा करि बिनती करी । हरष हर्ष गुनगाइ । सीस नवाय अति बिनसौ । निज पुर गएसुभाय । ऋगुण कुरुन चतुर्दसी । उइ बिसाष अभिराम । दिन के अंत लियौ प्रभु । महाव्रत सुखधाम । छहसैछिहतरि नृपति तवैं । त्यागि परिग्रहभार ॥ निज पदनमि दिशालई ॥ करन तपस्यासार ॥ \* चौपाई \*

बेला व्रत धरि निज पद जदा । ध्यान धर्यौ निहचल तनतदा । सुद्धातम गुनमन अति लीन ॥ करन मोह अरिसिना क्षीन । चौथौ ज्ञान भगट भयौ जहां । बेला व्रत धार्यौ जिन तहां । चर्या करने उठे जिनराइ ईर्यपंथ चले मनलाइ । सिद्धार्थपुर पहुंचे तवैं । सुंदरनाम भूपलखितवैं । है सन्मुख प्रनम्यौ नरईस । बारंबार नववैसीस । जथायोग्य बिधिवत बिधि धार । धैतुदुग्ध दीनौ अहार । अस्तुतिकरैं हरष निज अंग । पुन्य सर्प जनं कियौ अभंग । अखैनिधि बोले जिनदेव । मनिवर्षीवैं सुरस्वमेव । पंचाचर्य कियौ नृपगेह । दांन सुजस करि धरि हिए नेह । फिरि तीर्थकर बनमैआइ । आतम ध्यान रहे लौलाइ । एक वर्ष छदमस्थ बखानं कर्म छलाचल नासि सुजान । केवल ज्ञान भयौ उद्यौत । भव्य भवांबुध तारनयोत जैजैकरत । सुरासुर सक्र आइ ज्ञान कल्यानकचक्र । समोससुन बिधि पूरब रच्यौ । धनद देव अपनै करसच्यौ निज २ सभाथानं निज जीउ । करैं परस्पर प्रीति अतीव । जिनबानी अमृत करिपान । हैसंतुष्ट हरष उरआनं । केतक जीव महा व्रतधारि केतकलेइअनोव्रतसारि । केइक सीलग्रहन करितहां छ्याछठि गनधर जुताजिनजहां । माघसुकल दुतिया दिनअंत । कियौ ज्ञान कल्यानकअनंत । करिबिहार बरदेस जिनैस ॥ सहस बहतारि संगअसेस । धर्मोपदेस दीयौ

हितखान। रही आयु इकमास प्रमान। गिरिमंदार कूटपरिजाह। जोग ध्यान दीयौ चितलाह। क्लृप्त अपाढ़ अष्टमी सार। अविनासी पदजिनसंचार।

\* दोहा \*

मोक्ष कल्याणकर करि तबैं पूजाकरि लैदर्ब। जिन स्तुति करि कै गण। निज निज थानकिसर्ब ॥ चंपापुर के निकट आति है वैकूट प्रसिद्ध। जेनरघूजैं भावधरि। तेपावैं सिवसिद्धि। एककूट बंदन किए। कोटि बर्त फल

\* अडिल \*

होइ। सिखर कूट जिन बीसनाभि। को फल बनें सोय। सोई सिखर सुमेर सिखर प्रधानहैं। आतिसैवंत महंत भव्य सिवदान हैं। लौहाचार्य सिखर महातम बरनियौ मनसुख सागर देखि। सुहित भाषा कीयौ ॥

इनिश्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्ये भाषा यामन सुद्धमागरेण बर्णन सिद्धकूट मंदगिरिकूट श्रोत्रास्य पुज्य जिन मोक्षगमन त्रयोदसमो ध्याय १३ ॥

\* सर्वैया \*

बिमल उपाड ज्ञान धर्म भए निधान कंपिला जनमथान कृत धर्म तातहैं। मातहैं सुसीमादेवी लाखन बाराह सेबी लाल बरन अतिमुंदर सुगातहैं। साठलाख बरष आयुहैं प्रमान प्रमुउन्नत सरीर साठि धनुष सुहात है। ऐसैं विमल जिन मन सुखसागर कौ देहु मीत विमल नमत हरषातहैं। \* दोहा \*  
बास पूज्य सिवपदगए बीते सागरीस। विमल नाथजनमे तबैंतीन भुवन केईस ॥ विमल करौ मल रहित बुध। नमौ सीस करनाइ। तुमरे पंचकल्यांन अब बरनौ अतिसुखदाइ ॥ \* चौपाई \*

उत्तम खंड धातु की जानि। पश्चिममेर बिदेह बखानि। मध्य बहै सीतोदानंदि ॥ दक्षिन कूट देस एक संदि ॥ परम मन्य है नाम बिल्यात। बसैं तहां सब उत्तम जाति। महानगरपुर पदमा नरेस। करै राज



जिमनाक सुरेस ॥ पूजादान विषै अति लीन । पोक्षजन लखि दुखित दान । अति प्रताप अरिजन  
 भयंत विविधि भेटदै सेव करंत ॥ इतिभीति ब्यापै नहि कदा ॥ रहै सुखित मै पुरजन सदा ॥ इक दिन  
 बन पीतंबर जहां ॥ सर्व सुक्ति सुनि आए तहां । सुनि आगमन भूप बन गए । सीस नवाथ पदबंदत  
 भए ॥ वृषउपदश करै सुनि राज ॥ च्यारि बरग फल सुनि नरराज ॥ प्रथम बर्ग हँ धर्म प्रधान । जातैं तीनुं  
 साधै निदान ॥ धर्महीतैं आति लक्ष्मी होइ ॥ सर्व अर्थ पूरै नरलोइ । धर्म हतैं सब सीझैं काज । धर्महितैं  
 है आतम काज । सोई धर्म बर्गा सुनि राइ । पुलकित है नरपति हरषाय । काम बर्ग सुनि कहै दुतीय ।  
 अर्थ बर्ग फुनि भाषै तीय । काम बर्ग कारिज संसार । पुन्य उदै पावै नरनार ॥ अर्थ मिलै शुभ के परसाद  
 अर्थ बिनां सब कारिज बाद ॥ मोक्ष बर्ग साधनहैं श्रेष्ठ ॥ तीन लोक में होइ सजेष्ट ॥ आवागमन  
 रहित पदहोइ ॥ सीस नवावै त्रिभुवन लोइ ॥ मोक्ष बर्ग सुनिकैं नरनाथ ॥ जानै मुनिशिवमाराग साथ ॥ है  
 बिरक्त सुत कौ देराज । जात रूपवरि तजिकै लाज ॥ तेरहबिधि चरित प्रतिपाल ॥ अति चारपरमाद जोटाल ॥  
 ग्यारहअंग कियो अभ्यास । ग्याना वरणकियो कछु नास ॥ षाडस भाई भावनासार । करै तपस्या सुचि  
 आचार । तीर्थकर सुगोत बांधियो । निजआतम सातासांधियो । अंतसमै ब्रतधरि संन्यास । सहश्रारि में कीनो  
 बास । परी अठारा सागरआव । सुरसैवै अतिमन धरिचाव । बासअठारह सहसचितीत । करै आहारम/नसीक  
 श्रूति ॥ मास गए नव मास प्रमान ॥ सास उसस लहि सुख दान ॥ इंद्र विभूति सकल तिन लही ॥  
 एक भवतारीथिति लही ॥ होय जहां जिनवर कल्यांन ॥ जाइ विक्रिया धर गुण खान ॥ सस तत्व  
 षट द्रव पुनीति ॥ चरषा करै धरै शुभ रीति ॥ इस प्रकार पूरन करि आव ॥ रही मास छह सेष सुआयु  
 मूर्छित माला लखि निज अंत ॥ अष्टदशवि जिनपूजकरंत ॥ अब आगे सुनिसेनिक राय ॥ जहां विमल

जिन जन मै आइ । जंबू दीप लसैं अभिराम । भरत क्षेत्र तामैं सुष धाम । देस हिरन्य मनोहर थान ॥  
नगर कपीली तहां बखान । ऋत वर भूप राज सुख करैं । बहुत राइ अग्या सिर धरैं ॥ नाम सुसीमा  
हैं नृप त्रिया । शुभ लक्षण सोभित तन क्रिया । ते दोऊ दंपति मनलाइ । बिलसैं भोग मनोगत राइ ॥

\* दोहा \*

हरि भंडारी आइ कै । करि अपनो नियोग ॥ मणि वरषाये मास षट । रचि सुर श्री जिन जोग ।

\* आडिल \*

एक दिना जिन मात सौधपर सौवती । सोलह सुपिन विभिन्न अंत निसि जोवती । प्रात जाय पतिया  
सिकहै विधिवत सबैं । तीर्थकर सुतहोइ नृपति भाषैं तबैं । करै परस्पर नेह नारि नरहैजहां । आइ बिजोडा  
देव करै जैजै तहां । कीनौ गर्भ कल्यान बस्त्रआभरन दे । गएथान सुर छरी मात की सरनहैं \* दोहा \*  
जेष्ट मास भृमराभष । दसमी दिवसनिहारि । बिमलनाथ जिन देव की । भयी गर्भ अवतार ॥

\* चौपाई \*

आए देवी सेवनिजोग । करै काज सबआपन योग । पूछैं गूढ़ कथा मडुलाइ । निनै करि जिन मात  
कहाय तीनज्ञान छुत जिन उरबसैं । तिहं प्रभाव जिन संसैनसैं ॥ छंद पहेली दोहाकहैं ॥ ताकौं सब प्रति  
उत्तर लहैं । नऊ मास बीते इह रीति ॥ दिन दिन सुरी करै सब प्रीति । माघ सुकल शुभ चौथि बखान  
तिसदिन भयौजनम कल्यांन । पूरब सुर उत्सव हरि कियो । नन्हन जथावत हरिहरणियो । बिमल नाथ  
मिथ्या मल हर्न । आइ इंद्र सत सेवैं चरन ॥ इंद्र गए थुति करि निज थान । राखे सुर सेवैं भगवांन ।  
जिन बालक सुर सेवा करै । बालक रूप आपनौं चरैं ॥ केइ होय कबूतर देव । केइ मोर रूप धरि सब ।

केई तामृचुड होजाय । मुनिथा भेष धत अधिकाइ ॥ जिनवर तन बंधूक समांन ॥ उन्नत साठिघनुष परमांन । वर्ष साठलख आय जो परी । जिन बांनी अंमृत रसभरी ॥ पंद्रहलाख वरष प्रभु बाल । कीनी कौलि क्रिया सिसु ख्याल ॥ पांनि ग्रहन राज पद धारि । कियो इंद्र कृतवर सुख कार ॥ तीस लाख मिति वर्ष मंहंत ॥ राज कियो जिनवर मत संत ॥ देखि सुतारा पटल जिनराइ ! है वैराग्य चितअधि काइ । लौकांतिक पैडी सुर जहां । आय करै श्रुति श्री जिन तहां ॥ इंद्र लाय सिवकासिवरूप । बैठाये जिन पति जग भूप ॥ बन मैं जाय महाव्रत लियो । जात रूप अपनौ प्रभु कियो ॥ सहस एक भूपति सिर नाय । दिक्षा धरी परम पद पाइ । मन पर्यै उपज्यौ प्रभु ग्यांन । कीनी मधवा तप कल्यांन । माघ शुक्ल दिन चौथि अनंद । गए सुरासुर श्री जिन बंदि । जुगल दिवस धरि ध्यान जिनेस । गए महा पुर नंद नरेस । नोधा भक्ति करी नर राय । श्री जिन राज अहार कराय ॥ अक्षय निच्छि कहि जिन बन गए । पंचार्चय राय ग्रह भए । रहि छदमस्थ वरष त्रय सार । कर्म धातिया पूकति निहारि । माघ स्वेत पंख षष्ठी जबै । केवल ग्यांन प्रगट है तबै । कल्याणक सुरपति तब कीन । समो सरन तहें रव्यौ पूबीन । पचपन गण धर ग्यांन अपार । बांनी परखें संसै द्वार । करि बिहार द्वात्रिसत देस सेवा करै सुरासुर सेस । सिखर सुमेद आय भगवांन । क्रतभंजन है कूट महान । जोग रोध सिव नारी बरी । जैजै कार भयो तिह धरी । चैत असेत अर्मावसि जानि । कियो सक्र तब सिव कल्यांन । नर सुर खगपसु हरष अनंत । क्रतभंजन सुक्कलनमत । सतरकोटिसातलख सार । छहहजार सत सात निहार । ब्यालीस अधिक महा मुनि राज । क्रत भंजन पै है सिव राज । सोई कूट मनुज मनु लाय । बंदन करै हरष उपजाय । प्रभु शुभगति नास करंत । सुर नर गति सिव थान लहंत ॥ गोतम कहै सुनौ मगधेस

सुप्रसु कथा अनूप नरेस । जंबू दीप छुपूर्व विदेह । सीता नदी बहै गुन गेह । उत्तर कुल देस मद  
 याल । नगर हिरन्य पुरी अघटाल । नृप क्रत सैन तहां कौ मूप । राज करै पुर जन सुख रूप ॥  
 अरिवै श्रवन प्रजा दुख देई । क्रत सेना पुर छटि जो लेई । निज बल लेनिकरौ क्रत सैन । नृपवै  
 श्रवन महा दुख दैन ॥ जुद्ध परस्पर भयौ अपार । नृप वै श्रवन हार दुख धार । त्यागि भूप पद दिक्षालई ।  
 क्रोध सहित तपकरि मृत्यु भई ॥ गरिकै चौथे दिवस देव । भयौ सकल सुरकरै जुसेव । मालवेदेस अवंती  
 पुरी । नरनारी मानौ सुरसुरी । रुद्रदत्तराजा बलवान । तारैनारि सुधर्मजांनि । चयौवै श्रवन चरतह आइ ।  
 सुतसुप्रभनांम उपजाइ । महासरूपी सील गुनमान । तेज तपस्वी सील निधान । एकसमै मुनि आए  
 तहां । नगर अवंती बनहै जहां । छुनि नृपगयो बंदन काज । सुप्रभनांम नम्यौ मुनिराज । पूछै सुकति  
 गमन के हेत । दुविध धर्म उपदेश जुदेत । जिसथानिक उपज्यौ सम्यक्त । सबल्य तपस्या अपनी सक्त ।  
 महापुन्य तीरथ जो नमै । सोनर निहचै सिवपुरगमै । सिखर कूट कृतभंजन नाम । बंदन करतलहै सिवधाम  
 सुनि करि भयौ संघ संयुक्त । सुप्रभनांम मुनि वानी उक्त । जाय सकल नगपरि जिन थान । पूजाकरी  
 हर्ष उरजांनि । समर्कित की प्रापति जिहभई । तिह मिथ्यात प्रकृति नसिगई । प्रसम भाव चित्तमै अति  
 भयौ ॥ संग त्यागी शुभ चारित ल्यौ ॥ एकअवर बनकोट नरेस ॥ धास्यो तहां दिगंबर भेष ॥

\* दोहा \*

करी तपस्या अठल अति । क्रत भंजन जहं कूट । सिवरमनी लहि छिनक भै । जनम जरामृत छूट ।

\* अडिल \*

सोई कूट प्रधान जांनि जौं नरनमै । कोट प्रोषधी पाइ महाफल सिवगमै ॥ लौहाचार्य कब्यौ जो प्राकृत

बचन सौं । मन सुख उदधि जो हेत सुभाषा रचन सौं ॥

सुगति दैनि अघहरनकौं । यासम तीरथनाहिं । अन्य क्षेत्र आतिसंघनी । देखत दुख भिटि जांहि ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचिते तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महास्थे भाषायामन सुद्धसांगरेण वरणनं सिद्ध कूट कृतं भजन ऊपर विमलनाथ मोक्षगमनौ नाम चतुर्दशोऽध्याय ॥ १४ ॥

\* सर्वैया \*

दर्शन ज्ञान सुखसता हैं अन्त जाकै जनम विनीता थान तात सिंघसैनहैं । सूर्यादेवी मातहेम बर्न सुभग देह उन्नत पचास जग जस लैनहैं । सेह चिन्ह चरन में तीसलाख वर्ष की आयु लखि जीवन जो जाग जल फैन हैं ॥ ऐसे हैं अनंत जिन व्रत धारि लियौ तिन मन में मोको सुख दैन हैं ॥

\* दोहा \*

गए जलधि नौबीत कैं । विमल नांथ सिव थान ॥ जनमे जवरहि अनंत जिन तीन भुवन भगवान ॥  
गुन अनंत महिमा अठुल मेरी मति आति हीन ॥ भक्ति भक्ति बस होइ हम करौ चरित्र नबीन ॥

\* चौपाई \*

खंड धातकी पूरबमेर । पूरबनांम बिदेह सुहेर । तामैं दुर्ग देस सिरताज । नगर अरिष्ट पदमथराज ।  
पुन्य प्रताप महागुणवंत । अरि छुलकनौ छिन मैं अंत । निज भुजबल राजें नईस ॥ बहुविधि आइ  
नवावैं सीस । इकदिन सभा मध्य जिनराइ । माली तवैं जुहारचौ आइ । नाम स्वयंभू तीरथराज । आये  
बनमें धर्म जिहाज । तिनप्रसाद चिरजीयो नरेस । आनि फिरै तुम देस बिदेस । सुनि नरेद्र हिण हर्ष  
अपार । करी परोक्ष बंदना सार । निज अंकुस आभूषणदेह । पुष्प जीव की बिदा करेइ । लै पूजा पाहर

नृप जाइ । अर्चन श्रुति करि सीस नवाय । श्रावक धर्म अनंतर जहां । अनागार बुधमुनियो तहां ॥  
 पंचमहाव्रत सुमति जुसार । तीन उपति सिव सुखदातार । तेरह विधि चारित मुनिभूप । हैं विरक्त बैराग  
 सरूप । ततक्षिण धनुद तनुज दौराज । आपुन भयो महा मुनि राज । पाखमास उपवास करंत । नानाविधि  
 तप हिए धरंत । ग्यारह अंग पढ़ैमनुलाइ । ध्यान धरन भैं अह निसि जाय । । आयु पूरन करि धरि  
 संन्यास ॥ कीनौ सुर्ग सो लहै बास । पुण्योतर विमान मनहर्न । ठाढ़ेसुरसेधैजुगचर्न । द्वाविसति सागर परवान  
 परी । आयुसुख सहित सुजान । कृतम अकृतम श्रीजिनधाम । निति प्रति सबकौं करै प्रनाम । मन  
 बंछित सब भोगैं भोग । व्यापै नाहि रोग तन सोग । बहुतकअमर समा थितिकरै । छहौं द्रवचरचाविस्तरै ।

\* अडिल \*

इहविधि सो वह देव आयु पूरनकरी । सेषही पठमास माल मूर्छाधरी । मरत चिन्ह लखि अमर भाव  
 बिकल पत जैनिसि दिन लै बसु दर्ब चरन श्रीजिनजजै । \* दोहा \*  
 आगें सुनि मगधेस नृप जिन अनंत अवतार । धर्म पूगट करि मुक्ति लहि तीन लोक सुखकार ॥

\* चौपाई \*

सब दीपन के मध्य बखानि । जंबूदीप अनूपम जानि ॥ भरत क्षेत्र में कोसल देस । साक्रेतापुर  
 बसै सुभेस ॥ सिंह सैनि नगरी पाति कहा । नरनारीजन सब सुखलहां ॥ सूर्यो देवी नारि समेत । करै  
 भोग दंपति अति हेत ॥ सोपुर सोभा करी धनिंद । मान वर्षा तहं करै सुंद्र ॥ इहि विधिसौं वति पट्ट  
 मास । नगर बसै महा सुखरास ॥ सूर्यो देवी इकदिन रैनि ॥ सोध सिषरी करती सुख चैन । सोला  
 सुपिन देखि निसि अन्त ॥ कहै प्रातपति सो हरपंत । अवधि ज्ञान बलि भाषै राइ ॥ तीन जगत

पति सुत उपजाइ । कैर परस्पर दंपति नेह ॥ मगल गांन होइ तिन गेह । कार्तिक बदि एकदिन ॥  
 कीनों इन्द्र गर्भ कल्यांन । राखि सुरि सेवन जिन मात ॥ जांनि नयो सुरपुर अवतार । लुप्यो देव  
 कुमारी आइ ॥ निज निज सब ग्रह काज कराय । गूढ प्रश्न पूछै मुरनारि ॥ उत्तर देइ भात चितधारि ।  
 गए महिनां नौ इहि रूप ॥ जनमे तीन जगत के भूप । आइ इन्द्र सुर गिरि लग्यौ । जन्म कल्याण ॥ इह  
 विधि ठ्यौ ॥ अनन्तनाथ गुन अन्त न लहौ । अल्प बुद्धिमें कैसें कहौ । जैजै करत नगर फुनि आइ ।  
 जिन मात के गोदथपाइ । तांडव नृत्य इन्द्र तव कियौ । निरषि निरषि जिन मुख हरिषियौ । बालरूप  
 सुर सुरपति थाय । गए सुछिन में सुरपुर आय । जिन बालक सुरबाल समेत । क्रीड़ा करै धरै बहुहेत ।  
 अगूठा अमृत रस थापि । करै सीर पृष्ट अतिजानि । दस अतिमें सोहै सुखदाइ । एक सहस बहु लक्षण  
 काइ । बरस तीसलखि आयु मंहत । काय पचास चापि बलवन्त । सातलाख पंचास हजार । बालरूप  
 बीते मनहार । पांनिग्रहन करि कीनों राज । विधि पुरव सब बन्यौ समाज । पंद्रहलाख वर्ष मर्जाद ।  
 प्रजा पोषन करि अहलाद । इक दिन सिंघ पीठि धिति देव । ठाढे सुरनर करत सुसेव । उल्कापात  
 देखि दिसि एक । मन में श्री जिन धखौ विवेक ॥ छिन विधंसी इह संसार । बिबिधि रूप जग दुष  
 भंडार । द्वादस विधि सुभावन भाय । सुर लौकांतिक पहुंचे आइ । अस्तुति विनै भक्ति चित धारि । करि  
 कै गए ब्रह्म सुरमार । सागरदत पालकी जबै । जिन बैग्ये मघवा तबै । गए सहेत कवन के मध्य । जै  
 जै कै देव अनिवध्य । सुभ दुक्कल आभूषन त्यागि । निहचल ध्यान आतमा लागि । दस सत भूप राज  
 तजि जहां । करि प्रनांम तप लीनौ तहां ।

\* दोहा \*

जेट असितथिति द्वादसी । जिन अनंत तप लीन । सुरनर सग सुत इन्द्र मिलि । तप कल्यांनक कीन ॥

\* चौपाई \*

निज निज थान गए सब जीव । दुर्द्धर तप जिन करे अतीव । मनपर्यै उपज्यौ तिनिवार । जुगल दिवस जिन बृत धार ॥ तदनंतर पारन चित लाय ॥ धर्मगढ़ पुर गमन कराय । नृप बिसाल लखि अस्तुति करी । नौधा भक्ति हिए भैं धरी । प्रासुक धेनु दुग्ध आहार । करिकै अखि निधि उच्चार पंचाचार्य देव तब कियौ । नर नारी तब लखि हरषियौ ॥ प्रभुजी जाय बिपिन धरि ध्यान ॥ जुगल वर्ष छद मस्थ बखान ॥ घात घातिया कर्म महंत । जे चेतन गुण घात कंत ॥ केवल ज्ञान भांन प्रगटाइ मिथ्या तम छिन मांहि नसाय । समी सरन रचना धर निंद ॥ कर थुति कर सुरासुर इंद्र ॥ व्योम बांन भिति मन धर सार । जिन बांनी धुनि परखन हार । डादस सभा जनि सब भैर । जिन माषा समझै रुचि धरे । केवल कल्यानक करि इंद्र । गयो निजास्पद हरप सुरिंद्र । तीनकाल बांनी धुनि होय । धर्म बखान सुनै सब कोय ॥

\* दोहा \*

नष्ट कला थिनि चैत की उपज्यौ केवल ज्ञान । अत बिधान जे नर करै । तिनको होय कल्यांन ॥

\* अडिल \*

नाना देस बिहार कियौ जिन राजनै । दुबिधि धर्म उपदेश भव्य जनका जनै । मास एक थिति आशु रहीपर गिति जवै । आए सिपर सुमेद सुरासुजु तबै ॥ \* दोहा \*

समौ सरन तहं परिगयौ । कूटस्वयंभू शीस । जोगरोध श्रीजिन रहै । तीन लोक के ईस । जेठ सुकल तिथि चौथि कौ । मुक्ति बास प्रमुकीन । गुन अनंत जामै लस । मुष्य आठुन लीन । नरसुर गलपसु असुरपति । आए अति आनंद मंगल गान बिधान करि पूजा करि खबंधि । \* अडिल \*



सिवकल्याणक सक्त कियो बहुकूटपै । जेनर नमै त्रिशुद्ध पाप सबछूटपै । नरक पंशुगति नास देव पदनर ।  
 लहै । क्रम क्रम सौ सिव जाय जैन बचयौ कहै \* दोहा \*  
 और मुनी सुरसिध गए ॥ वहैकूटसिर थान ॥ जो आगम गिनती लही । तिन कौ करो बखान ।

\* अडिल \*

मुनिवर कोहाकोहि छ्यानबै जानियो ॥ सतरि कोहि लाख सुसतरि मानियो । सतरि सहस प्रमंनि  
 सानसै अघहरी । कूटसुयंभू सीस सुक्क रमनी वरी ॥ \* दोहा \*

अंस क्षेत्र पुनीति की महिमा कही न जाइ ॥ भक्ति सहित जात्राकरै । तिनके दुख्य नसाइ । औरकथा  
 श्रनिक सुनौ । ब्यारि सैननृप बात । जात्राकरि जोफल लखौ । सोब्रनौ अवतार । \* छंदचाल \*  
 यह जंबूदीप विराजै । बलया कनसाभाजै । तहं भरतक्षेत्र सुखदाइ । धनुषा कनसाभपाइ । कौसांवीपुर  
 इकसाहै । देखत सबजन मनभौहै । एकसेठ बसै बृत्तसन ॥ घरिद्वय प्रभुर सुख दैन ॥ वरनी सुभसेना नाम ।  
 बहुरूप सील गुनधाम । तिनको कोई पूर्व नियोग भयो पुत्रअसुमके जोग । छिनमै लक्ष्मी सवनासी ।  
 समदत नाम सुखरासी । छुनि यात पिता तिस मूवा । तबही अति कृष्टत हूवा । उच्छिष्ट उदर भरि  
 जीवै । सरसरिताको जलपीवै । इक दिन बनभ्रमतो होलै । मुनि देखि पूनग इमबोलै ॥ मै कौन सो  
 कर्म कमायौ ॥ जासौ इहविधि दुखपायौ ॥ मुनि निरखि दयाउरआनि ॥ बोलेथुम अंशुतवानि । इहअंत  
 रायचलकर्म ॥ उपज्यौ बलवन्त असर्म । जय पूजा जिनवर करिए । प्रसन्न पातिग हाए । सुनि  
 बोल्यौ इमसमदत्त । सुनियौ मुनि बच सुत ॥ मेरो मन चंचल रूप । तन छीन पेट जिगि कूप ॥  
 कैसे बृत्त पूजा कीजै । किहि विधि जयध्यान धरीजै ॥ सबसौं मैहौं असमर्थ । कछु होय नहीं बिनअर्थ ॥

\* दोहा \*

फुनि सुनि बोल्यौ मधुर बच । निज मन लेकरि संत ॥ सिखर सुमेद जात्रा करौ । लक्ष्मी होय अनंत ॥ सुनि बूझै समदत्तइम । किहि बिधि जात्रा होय । सोभाषौ अनुकंपि धरि । भाग उदै तुम जोय ॥

\* चौपाई \*

कहै तपोधन हित मित बैन । श्री जिन मारग भाषित अैन ॥ पीत बसन पहैरे मन सुद्ध । जिन ग्रह जाय नमै धरि बुद्ध । संघ भक्ति जिन सक्ति समान । करै च्यारि बिधि विधिवत दान ॥ इह प्रकार जो जात्रा करै । लहि लक्ष्मी सिव लक्ष्मी बरै । दे उपदेस गए सुनि राज ॥ नमि समदत्त चलयौ निजकाज आम्ह बृक्ष तर बैठि लुरंत । निज मन मांही सोच करंत ॥ मोकौ मिले बसन केहि पीत । जात्रा होय कौनसी रीत । इह बिधि चित करै तिस ठौर । कारन आइ बन्यौ इक और ॥ \* दोहा \*

पदमं प्रभु पूजा निमति । इक बिधा धर आय । पूजा श्रुति कर न्याय जुत । वनमै केलि कराय ॥ दान हीन दुखित निरखि । दया दान बहु देइ । जैन धर्म धर्मज्ञ अति । पर उपगार करेइ । मो चतुर सम दच लखि । खग पूछै छुसलात । तरुन रूप है कै कहै । अपनै दुख की वात ॥ \* चौपाई \*

गद गद बचन सुनै खग जबै । करुणा भाव भयौ हिए तबै ॥ हिए वस्त्र पीरे आभनै । चली साथ ले जात्रा करन ॥ पूजा दान करत वह गए । सिखर सुमेर निहात भए । कूट स्वयंभूपै जिन नाथ अनंत नाथ कौ सिव कल्यांत ॥ जहां जाय जिन पूजा रची । भगति बहुत अपने मन सर्ची । विदा किये खग कौतिहि घरी । आय दिगंबर पदवी धरी ॥ तप करि धरि संन्यास मंहत । सुर पद सोलम सुर्ग लंहत । दाबिसति सागर थिति धार ॥ और कथा कौ सुनि विस्तार \* दोहा

इह सुनि जंबू दीप में । भरतक्षेत्र तहं जानि ॥ तहं कुर जंगल देस में । हथनांपुर सुम थान । रतन  
सैन भूपत जहां । सुर बीर अभिराम । मलया देवी नारि घर । सीलवंत सुख थाम । तिनकै सोम  
दंतं चर सोलमं स्वर्ग मझारि । सुस्पद तजि तहं जनमियो । चारिसिन सुतसार । रतन सैन दिक्षालई ।  
चारि सैन दै राज । प्रजा पोषनां करत सुख । राखत सवकी लाज ॥ \* अडिल \*

एक दिन बन केलि करत नरपति गयो । महादरिद्री पुरष एक देखत भयो ॥ पृर्व भवस्थनि जानि  
कहै मुख से तवैं । सिखर जात प्रसाद लखौ इह पद जवैं । \* दोहा \*  
आनि फिरी परदेस मे । विभौ भई आति गेह । सेवा करै अनेक नृप । राखै सब जन नेह ॥

\* अडिल \*

फुनि अबजात्रा करहू जथावत गिरितनी । जो मन बंछित काज होय सव विधिवनी ॥ जनम जरा  
मृतिनासिवास सिव में करौ । आवागमन निवारि कर्म आठौ हरो । \* दोहा \*  
असौ मनहि विचार नृप । फुनि आये निज गेह । अवर दस क्षीहनि संगलै । चलयौ भक्ति धरिनेह  
\* चौपाई \*

थान थान जिन पूजा करै । न्यारि प्रकार दान विसतरै । सबजीवन कौ राखै मान । परम त्रिवेक  
बुद्धि की खानि ॥ जाय सिखर जिन जात्रा करी । कूट कूट पूजा विस्तरी । जेठे सुत कौ दीनोराज ।  
आप लियो तप आतम काज । चारि सैन बुद्धरतप धारि । सिव पदवीपाई सुख कार ॥ भाव सहित जो  
जात्रा करै । सिव रमनी सो निहचै बरै ॥ कूट स्वयंभू बंदै कोइ । कोट प्रोपथी फल तिस होय ॥ जो  
सब गिर बंदै मन लाइ । ताकौ फल बन्यौ नहि जाइ ॥ \* दोहा \*

लौहाचार्य ने कहा ॥ शिखर माहात्म्य ग्रंथ ॥ रवि भाषा मनसुख उदधि । जानौ इह सिव पंथ ॥  
इतिश्री काष्ठा संगे लौहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्ये थाषा यामन सुद्धसागरेण बर्णनं सिद्धकूट स्वयंभूपर  
अनंतनाथ जिनमोक्ष गमन पंचदसमो परिच्छेद ॥ १५ ॥

\* सर्वैया \*

कर्म हरन हार धर्म कहन हार सिव केल हनहारत्न पुरजनम हैं । रत्न सैना तात मात सुव्रता सुने  
विख्यात बज्र दंड चारन चिन्ह हेम डुति तनहैं । दशलाख पूर्व आशु पैतालीस चाप काय देखि जग सुम  
समजाइ बैसे बनमें । ऐसे धर्मनाथ जी कौ मनसुख सिंधु नामि सुफल जनम जानि हर्षित हैं मनमें ॥

\* दोहा \*

जिन अनंत सुकतें गए । बीते सागर चारि धर्मनाथ जन्में जबैं । त्रिभुवनसुखदातार । तिनके पंच  
कल्याणक अब । बरनौ आगम देखि । धर्मी धर्म प्रकास करि । सिव रमनी छवि पेपि । कूटदत्त रवि  
प्रगट करि । भव्य जीव सिवराह । भाव सहित जात्रा करै । लेइ सुनर भवलाह । प्रजाखंड धातु की जानि  
पूरब जहां बिदेह बखानि । सीता नंदी याम्यादास कूल । देस बत्स नामा सुखमूल । तामें नगर सुसीमां  
सार । बसैं नारि नरसब गुनधार । अति प्रतापी दसस्थनाम । राजा राजकरै सुखधाम । प्रजा पोषनाकरै  
नरस । निसि दिन पूजाकरै नरस । धर्म ध्यान सौं राखैं प्रीति । निकट भव्य जनकी इहरिति । सरद पूरणमास  
लखि रैनि । जगत समस्त जानि हिए फैन । है बैराग्य महारथ राज । सुतकौ देय हुवे मुनि राज । अठईस मूल  
गुण धार । उतर गुनकौ करै विचार । बुद्धर व्रत धारै मुनिराह । षोडस कारनकरि मनलाह । \* दोहा \*  
तीर्थकर के गोतकौ । कीनों सदस्य बंध । अंत समैं संन्यास है । तजे प्राण तजि धंध । उपजे छिनमें जाइके

जहं सर्वार्थ सिद्धि । पद अहमिंद्र लक्ष्मी तहां । पाईबहु विधि सिद्धि पूरव समसव जानिए । आयु कायु सुख सर्व । सबसुर मिलि चरचारै । सात तत्व षट्दर्श । त्रय त्रिंशत सागर उमर वीते हैं इह रीति । रहिमास षट

शेष जब । जिनपूजा करि प्रीति ॥

\* चौपाई ❀

अब सुनि श्रेनिक जिन अवतार । धर्मनाथ स्वामी विस्तार । यहजंबू वरदीप महंत । सबदीपन के मध्य वसंत । भरत क्षेत्र तहं कौशल दंस । रत्नपुरी जिम पुरी सुरेस । स्वैसननृप राजसुरै । राजा प्रजानाति पगधरै सो मृतसैना भूपति नारि । दंपति भोगे भोग अपार । तहां आय धनपति सुरस्वयौ । नौ द्वादस जोजन विधि स्वयौ । रत्नद्वीष्ट करि तीनु काल । वीते इमपद् मास विसाल । थिति विसाखअष्टमी ऐन । करै मात निजमंदिर सैन । सो अहमिंद्र चरचइआय । गर्भस्थिति करि सुमलखाय । पोइस मिति उठि मजन कियो । प्राप्तजाइ पति सौ कहि दियो । श्रीजिन जनम सुपन फलजानि । हरष परस्पर करै वखान । इतनेमें आयो अमरैस । जैजै करत सुरासुर शेष । सिंह पीठि थापे जिनमात । करि अस्नान पूजहरषत । गर्भ कल्यानक कीनों जवै । निज निज घांम गए पुनि तवै । छपन देव कुमारी आइ । निज नियाग साधे सुखपाइ । निति प्रति गीत नृत्यधर होय । उत्सव करै सकल पुरलोइ । क्रमकरि वीते हैं नवमास । पूरन भए गर्भ की आस । माघ शुक्लतेरिस अति सार । लीनों धर्मनाथ अवतार । मधवा ऐरापति सजिलीन । जेजे सकल सुरासुर कीन ॥ आये नगर जिनालय चढ़ाय । भक्ति सहित सुर गिरि लेजाय ॥ विधिवत नोन्ह पूज्य करिवीदि । गंधोदिक लै भद्र अनंदि ॥ वस्त्राभूषन सब पहगाइ । माता गोद दिए पुरआय ॥ तांडव नृत्य कियो तव इन्द । गयो रासि सुरभेव जिनन्द ॥ माति श्रुति ज्ञान अवधि प्रसुधरै । बाल केल करि सब मनहरै ॥ पैतालीस चाप उत्तंग । बज्रकाय हुति हेम अंभंग ॥ दसलख सबै आयु परमान । सहस एक वसु विन्ध

बखान ॥ इस अतिसँ सुत जन्म जिनस । वर्ष अढ़ाई लखि सुभेस ॥ गयो व्याह करि नृप पद धारि । बरस पांचलख नीति विचारि ॥ एक समै प्रभु सभा समेत । बैठे बात करि हित हेत ॥ इतने इन्द्र धनुष देखियौ ॥ नासनीक सब जग लाखल्यौ । निज हित निरखि प्रसम उपजाइ ॥ राज दियौ सुत कौ मुखदाय । झादसानु प्रेक्षा भावन्त ॥ सुर लौकांति तव आवन्त । धृति करि ब्रह्मलोक सुरग्यौ । सक पालकी लावत भयौ ॥ नामिदतपुर श्रीजिन थाप । गए लवन वन श्री जिनथाप ॥ \*दोहा\* धर्मनाथ जिन राजहं ॥ जात रूप करि अंक । चौबीसौ परकार कौ ॥ तजियौ जिनवर संग । आतम ध्यान धर्यौ तबैं ॥ लषन आतम रूप । निरखि बरननमि सहस इक ॥ दिक्षा लीनी भूप । अडिल तप कल्याणक सक कियौ हरषाय कै ॥ क्षीर सिंधु केशडारियौ जाइकै । जन्म दिवस तवजांनि सक सुरनर जवैं ॥ निज निज थान के गए सुनमिनमिकै तबैं ॥ \*दोहा\*

दिन द्वै करि ब्रत ध्यान धरि । उठे असन के हेत । धरमनमी जिनपुर गए ॥ सुधर सैन से केत ।

\*चौपाई\*

जिन मुनि भेप लए धरि सैन । जनि ए प्रभु जग सुख दैन । नौधा भक्ति करै तवराइ । धेनु दुग्ध आहार कराइ । अषैं निधि जिन जव उचरै ॥ पंचाचार्य देव तंह करै । छुनिवन आइ धर्यौ प्रभुध्यान ।

\*दोहा\*

एक वर्ष छदमस्थ बखान

पौष मुदि दसमी सुदिन । कर्म घातिया बास । केवल ग्यान भयौ तबैं । लौका लोक प्रकास । समौ सरन रचियो धनपति । झादस समा बिसाल । आइ सुगसुर नर पसु । बांनि सुनै रसाल ॥

\* चौपाई \*

गनधर तेतालीस सुनीस । आदि अरिष्ट सैन गन ईस ॥ विविधि देस में करथौ बिहार । दीनी धर्म देसनांसार ॥ मास पूमान रहि थिति जबै । समेद सिषर आए प्रभु तबै । पोष सुदि दसमी थिति जानि । कीनों सक्रयान कल्यांन ॥ पुंन्य पाप सम करि जिनराय । समो सरन तव बिभोनसाय । कूटदत पर ऊपर गए । जोगरोध निज गुनलौ दिए । जेष्ट सुकल तिथि चौथि बखानि । गए अचलपुर श्री भगवान । तनकपूर समजब खिरि गयो । वेनष केस गाय जो दियो ॥ इन्द्रआय श्री षंड मगाय । अगर कपूर सुरभि बहुल्याय । सुर रचितन माया मई कियो ॥ वेनष केस गाय जो दियो । अगनि कुमार पूणमि युगवर्न । पूगधी अग्नि भस्म तन कर्न । छिन मै डारभई अति सीत ॥ ताल लगावै सुरनर प्रीति । पूजाकरि बसु विधि लै दुर्ब । जैजै कौं अमर गनसर्व ॥ इह विधि सिक्कल्यानक सर । करि करि निज निज पुरसाचार । सोई कूटदत वरपूत । बंदित छुर नरगन संजुत । नरक पसुगति छिन भे हरे क्रमक्रम सौं सिव नारी बरे

\* दोहा \*

महिमा दतबर कूटकी । मोपै कही नजाइ । इतनें मुनि तहं सिवगए । संख्या कही सुभाय । अडिल कोडि उनईस बखान लाखनौ जानिए । नौहजार सतसात पचास खेवांनए । भए निरंजन सिद्ध लखौ पद आपनौ । कर्म कुलाचल भांनि हींनि सब पापनौ ॥ \* दोहा \*

और कथा मगधेस इक । सुनौं सुछ मन लाय ॥ भाउ दत्त नृप जात्रा करि । फल पायो सुखदाय ॥

\* चौपाई \*

जंबू दीप सुचक्राकार । लख जोजन ताकौ बिस्तार । भरत क्षेत्र चापाकत जानि । श्री पुर नामै

नगर बखान ॥ भवदत्त नाम तहांहैं भूप ॥ त्रिया महेंद्रदत्ता अति रूप । दंपति पूजै श्री जिव राज ॥  
 निति प्रति दांन देइ हित काज ॥ संघ भक्ति विधिवत बिस्तरे ॥ अंन प्रतित हिए में धरे । द्रव्य खरवे  
 जिन मंदिर क्रियो । बिब भरा द्रव्य बहु दियो ॥ च्यारि प्रकार संघ लै साथि । जात्रा हेत चल्थी नर  
 नाथ । जाइसिखर परि पूजा करी । इंद्र धनुष की विधि उच्चरी । निस में ध्यान धरथी मनु लाय । लखिकै  
 निर्जन थान कि जाय । निसि दिन नीन बितति जेबै । अंतर कथा सुनौ इक तैवै ।

\* दोहा \*

प्रथम स्वर्ग के इंद्र की ॥ बैठी समा सुनंत ॥ समकितकी चरचा करै । देव परस्पर अंत ॥ भरत क्षेत्र  
 में कौन नर । समकित सहित बखान ॥ सक्त चवै निज मुख थकी भावदत्त नृप जानि ॥ सो आयौहैं  
 सिखरि परि ॥ कूट बंदना हेत ॥ पूजा करि अब ध्यान धरि । तिष्टै निहचल देत । देव अनखुवा अंबिका ।  
 चल्थी परिध्या लैन । बिन देखै मानौ नहौ । इंद्र कहे जे बैन ॥ तीजे दिनके अंत निसि । आइ क्रियो  
 उप सर्ग । भाव दत्त मन बचन । चल्थी नहौ तन वर्ग । \* चौपाई \*

इतने में पुनि भयौ प्रभात । नमस्कार करि सुर हरषात । स्तन अमोलि बस्तु वउ लेइ । धिनौ भक्ति  
 करि भेट धरेइ । कहे बचन सुर अस्तुति किये । सुगति भेट तुमए दिए । भाव दत्त तत्र अभै कही  
 मेरे काम न यकी सही । अति आग्रह सुर करि तिहि थान ॥ भावदत्त यकी नहिमान । निश्चल चित देखि  
 सिर नाथ ॥ कहे धनि समकित धराय ॥ तुम अस्तुति जिम सुर पति करी । इहमें देखी सो इहधरी  
 बारंबार पूणामि सुर जेबै । एक भेरी दीनी करै तबै । भेरी सष्ट जहां लौ होइ ॥ नौकार गद नासन सोय ॥  
 इह गुन सुनि करि भेरी लेइ । पर उपगार चित में देइ । याद करौ तत्र प्रगटौ आय । असा कहि सुर



सुर पुर जाय । भावदत्त पुनि संघ समेत । आयो गेह राज सुख हेत । शुक्ल चतुर दसि व्रतकोधारि ।  
 सांतिक पाठ जंत्र रचि सार । राजा रानी पूजा करें । भाव भक्ति अपने द्विए धरें । तिस दिन भेरि  
 बजै दिन रात । सुनत सबदवाके गद जात । मास मास इह रीति बखान । देस देस  
 जस भयो निदान । इह विधि सौ बहने दिन भए । बहु रोगी आरोगी भए । राज ग्रही को  
 भूप बिसेष । वाइ पीडित नारी एक । भेषज करी अनेक प्रकार । अधिक रोग बाढो दुख कार ।  
 भेरि सुजंस छुनि आयौ तहां । भावदत्त भूपति पुरजहां ॥ पूछै नृप भेरी की बात । कहै नगर बासी दुखदत्त ।  
 परबी परे मास के अंत । सुनत सबद गद नसैं व्रंत । भेरि बजै जबलौ सुखदाइ ॥ तबलौ प्रांन नासि है जाय  
 निज अमात्य सौ भूपति कहै ॥ इहांउपाय कौनसरदहै ॥ मंत्री कहै चिंतमति करो ॥ एकवात मेरीजियधरो  
 दरबि खरच करिए नृपअबै । जाइ रोग छिन मये सबै । जाके सष्ट सुनत दुखजाय । घसिलगाय गदक्यो  
 नामिठाय । राजासुनि मनभयो आनंद । रोगनास कौपायो छंद ॥ दोहा ॥  
 भेरि अनुचर शीघ्र तवै । लीनों एकबुलाय । मिष्ट बचनतव योप करि । बातकहै इमराइ ॥ \*चौपाई\*  
 कोटदर्व तुम हमसौ लेइ । भेरी सष्ट सुनाइ जु देइ ॥ सुनि किंकर ऐसैं उच्चरैं ॥ नृप अग्या बिनु कैसें करैं ।  
 फुनि । भूपति इम बोलै बैन । सुनु सेवक हम तुम सुख दैन ॥ गुप्ति द्रव्य लै कोटि छुजान ॥ भरिखंड रंचक दे  
 आंन ॥

\* दोहा \*

बात मानि राजा तनी । छप्ति दर्व लै लीन ॥ भेरि खंडकरि छिनक में । आइ भूप कौ दीन ॥ राज ग्रही  
 को भूप तव । लै घसि देह लगाय ॥ बाय बिथा नास तुस्त ॥ देह अरोगित थाय ॥ हरिषित होय नरेस ॥  
 फुनि आयौ अपने धाम । खण्ड खण्ड होइ सब गण ॥ भेरि लोभ बस दाम ॥ भेरि सेवक भरि लखि । चिंता

तुर अति होइ ॥ जो कदापि राजा छुनैं ॥ दुख दे डारे खोइ । वही भेरि की खोलि परि ॥ करि भेरि इक आन  
 बाजै भेरि अनेक बल ॥ रोग नासनहि जान राजा मन में सोचित करि ॥ कहैं कौनइहवात ॥ सुमरन कीनौ  
 देव वहै ॥ आयौ सुर हरषत ॥ कहै राय छुनि देवजी ॥ भेरि गयौ गुनआज ॥ सोहम सो तुममति कहौ ॥  
 अबवह कौनिकाज ॥ देव चवै इष्टत बचन ॥ सुनि भूपति मनलाय । मो भेरी गदनासनी । गई लोभवसिगइ ।  
 यह भेरीहैं कृतिमअर्च । क्यों करि नासै रोग । छुनितराय चक्रति भयौ । बढ्यौ हिण मैं सोग । रोग नसिन  
 भिरि यह । खोये अनुचर मूढ़ । खंडखंड करि लोभ बसि । करि राखी पुनि गूढ़ ॥ धृगहैं ऐसे लौभकौ । धृग  
 अनुचर धृगलोग । धृगइह राज बिभ्रुतिकौ धृगपंचद्री भोग । देव कहै सुनि भूपअव । राज करौ सुखदाइ ॥  
 और भेरि तुमलेऊ अब । सबगुन आगमराइ । भाव दतसुर सौ कहैं । सुनौ देव मुझि बात । राज करत  
 बहु दिन गर । बृथा मनुष भवजात । जाय सिखर परि तपकरौ हरौ पूर्व कृत कर्म । जन्म जरा मृति नासि  
 करि । लहौं मुक्ति गत मर्म् । राज दियौ सुत जेष्ट कौ । संघ साथि लै राय । सिखर जाय करि छुटनमि । व्रत  
 लै तपजुकराय । पाखमास उपवासकरि । सही परीस्याधोर । जिन गुनसता सक्ति सब । ध्यान क्रियौ बल  
 फौर । छुटदत बरसीसपर । कर्म धातिया नासि । केवल ज्ञान प्रकासि करि । कीनौ सिवपुर वास । इह विधि  
 जो नरभावधरि । करै जात्रा मनलाय । इष्टबस्तु पावैं छुरत । सेवकरैं सुरआय । कोडि प्रोषधी फललहैं । छुटसुदत  
 नयंत । सो सब गिरि बदैमनुष । तिहिफल लहैं अनंत । लोहाचार्य मुक्ति मग । इहश्रुत दियौ वताय ।  
 मन सुखसागर पठिनकौ । भाषा रची बनाय ॥

इति श्री काष्ठा संग लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्ये छुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुब्र सागरेण वर्णनं सिद्ध कृद दत्तवर  
 धर्मनाथ जिनमोक्षगमन नामषष्ठसौध्याय ॥ २६ ॥

\* सवैया \*

विघ्न हरन हार सुखसांत के करन दुखनासन जिनेस नागपुर अवतरे हैं । विश्वसेनि नृपतात ऐशदेवी नाम मात मृगकौ चिन्ह तन हेम दुति घरे हैं । घनुष चलीस काय एक लाख वर्ष आयु सहस अवतार सु चिन्ह आयु परे हैं । ऐसे सांतिनाथ जीकौ नमै मनसुख सिंधु उनही के चरन की आसहमकरे हैं ।

\* दोहा \*

धर्म नाथ सिवपुरगए ॥ भए जल दधि जवतीन ॥ शांति नाथ सिवसुख करन ॥ जनम अएतब लीन ॥ जिन के चरनांबुजजुल ॥ नमौं जारि करि दोइ । कहत पंचकल्यान अब ॥ विघ्न सांति सबकोइ

\* चौपाई \*

इहजंबूबर दीप महान । तहां विदेह सो पूरब जान । सीता नंदी मध्य में बहै । अमृत सम पांनी तसु कहै ॥ याम्य कूल दिसिबसैं सुदस । लखि विभूति लालै अमरेस । पुंडरीकनगरी मनहार । बन उपवन सोभा अधिकार । श्रीयखेन नमैं नरपाल । दुर्जन जनकौ हैं समकाल । सहसीमयु रानी अतिसंत । सीलरूप निधि बहु गुनवंत ! राज भांग भोगैं दिन राति । जानैं नहि काल कित जात । उत्तम कार्य करे मनु लाय । श्री जिन भक्ति घरैं हिय राय । मृतक पुरुष लखि है बैराग । छिनमें राज विभै सब त्यागि ॥ राज भार जेठे सुत दियौ । जाइ महाव्रत गहि लियौ । जैन महाव्रत दुद्धर धारि । कीनो बृत द्वादस विधि सार । दर्श विशुद्ध भावनां भाय । तीर्थकर पद लै सुख दाइ । उदैं परीस्या औंठे जबै । धरि सम भाव सैं सुनि तैं । आयु वितीत भई इह रीति । व्रत सन्यास धारि अति प्रीति । मरन क्रियौ निज गुन धित देइ । जासौं सिव पुर गमन करेइ । जहं सर्वार्थ सिद्धि बिमान । सिव नगरी लघु लात

समानं । पद अहमिंद्र लयौ गुन धार । ठाढ़े सुर सेवै अधिकार ॥ निर्विकार हिए समता धरै । चरवा सात तत्व की करै । आठ परी सागर तेतीस । तीन ग्यांन जुत बिस्वा बीस । प्रख सम सब जांनि जुलेहु । मन बच काय चित निज देह । अंत मास षट आव जौ र्हा । तब जिन पूजा हिए सरदही आगै कथा सुनौ मग धेस । जहां होय अवतार जिनेस ॥ यह जंबूवर नांम सुदीप । लवणार्ण वतिस लखै समीप । भरत क्षेत्र में आरिज खंड । सोहैतहं कुरु देस अखंड । गजपुर नांम नगर इक बसै । अमर लोग पुर सोभा लखै । विश्व सेनि नृप राज करंत । बहुत देसके नृप सेवंत । ऐरा देवी ई पटनारि रूप सील गुन लक्षण धारि । ते नर नारि करै सुख भोग । श्री जिनवर शुति जनम नियोग । हरि आग्या ले धनपति आइ । रतन बृष्टिकर नगर रचाय । पछिम रैनि सैन जिन मात । सोरह स्वप्न लखे सुख दात । उठिकरि प्रात स्नान सिंगार । अलि साथि ले चली विचार । सभा मध्य पति लखि नामि जैभ । अर्द्धासन नृप दीनौ तबै ॥ आगम कारन पूछै राइ । भिन्न भिन्न सब सुपन बताय ॥ ग्यांन चक्षु लखि जांन्यौ भूप ॥ जिन जन्मोत्सव होइ अनूप । और देवी सुनि हरषंत । करै परस्पर नेह अनंत । भादौं वदि सप्तमी जांनि । आइ सक करि गर्भ कल्यांन । कीनौ उत्सव अधिक सुरेस ॥ इति भीति नासी वह देस ॥ छहौं कुलाचल बासनी जवै । गर्भ सोधनां करती सबै ॥ षट पंचास कुमारी आइ ॥ जिन माता सेवै सुख दाइ ॥ कथा पहेली करत हुलास ॥ इह विधि सों वीते नव मास ॥

\* दोहा\*

जेष्ट मास अलि अभ पक्ष । चतुर दशी सुख दांन ॥ तीन ज्ञान संयुक्त तत्र । लियौ जन्म भग वांन । नित्र निज चिन्ह विचार सुर । आए चतुर निकाय ॥ जन्म कल्यांन करि सबै । निज निज

धांन किजाय ॥ सुद्ध सुवर्ण समानतन । सांति नांथ जिननांम ॥ बालपनै कीडा करै । सब जनकै सुख  
 धांम । आयु एक लख बरसकी । तजुज चाप चालीस ॥ बाल केलि मै तेवरस ॥ गए सहस पचीस ॥  
 दक्षन पग मृग चिन्ह सुभ । दस अतिसै जुत देव । विश्व सेन मुत तरुन लखि । करत सुरा सुर सेव  
 पानि ग्रहन करि भूष तव । क्रियौ राज अभिषेक ॥ सक सुरा सुर मिलि करै । जै जे धोष अनेक ॥  
 जनभ्यौ आय गेहमै । चक्र रतन अभिराम ॥ जिनवर चक्री मदन पद ॥ सांति नाथ सुख धाम ।  
 आनि फिछिह खंड मै चक्र रतन की जानि । एजिनेद्र पदवी धरै त्रिभवन आग्या मांनि ॥

### \* चालछुन्द \*

सबरे छहखंड जो साधै । चक्री जनसवंनि आराधै । तबचौदह रतन जो पाए । नौ निधि आयुनेत  
 आए । चक्रवति बिभौ अधिकारी । तिह सौं जिन लक्ष्मीभारी । किमबरनौ राजबिभूत । मेरी अति बुद्धि  
 कप्रत । तिसतै सुगतै सुखसागरै तवंवर्ष पचासहजारै । इकदिन वैठेहरिपीठे । चपला चमकत लखि जुगदीठे  
 इहजग वस चंचल जान्यौ । बैराग हिएमै आन्यौ । तवलौकांतिक सुरआवै । जबदादस भावन भावै ।  
 श्रुति करिबेनिज पुरजाई । सचीयत तवसिव कल्पाई । गजातट अटवी भारी । तहं जाइ भए बृतधारी ।  
 मनपर्यै ज्ञान प्रकास्यौ । जैजै जे देवनि भास्यौ । जादिन तपकल्यानक कीयौ । अपनौं अपनौं मंगल लीयौ  
 बोइदिन व्रत करि जिनराई । सोमनस नगरतवजाई । पिय भिष्ट नृप जिनवर देखे । नभिं जन्म सुफल करि  
 लेखे । गोडुग्ध अहार जो दीनौ । श्रुति करि शुभ सचै कीनौ । सुरपंचाचय बखानै । वनजाय धर्यौ प्रभु  
 ध्यानै । तबकीनौ बिबिधि प्रकरी । जिन संयम दुद्धरधारी । मर्जाद जो षोडसवर्ष । छदमस्थ रहे जिनमर्ष ।  
 दससभी सुदि पोष महंत ॥ प्रभु ज्ञान भयौछु अनंत । समवाद सरनकी रचना । धनेदेवकरी अति रचना ॥

\* दीहा \*

देवमनुज खग व्योमचर ॥ आए सब तिहिं थान ॥ मिलिसक्रादि करें । सबै श्रीजिन ज्ञानकल्यान ।  
तीन कली बानी खिरैं ॥ भव्य जीव हित हेत ॥ जे हिएधरैं भावसौं ॥ ते पावैं सिव खेत ॥ ( आडिल )  
सातिनाथ जिनराइ सांति करताभए । करि बिहार बहु देस सिखर उपरगए । रहिमास मिति आयु जो  
गरोय न कीयौ । जहं प्रभास बरकूट ध्यान वृह धरि दियो

\* दोहा \*

सितवैसाखी प्रथम दिन सांति गए सिवलोक । मन सुखसागर भावसौं करमु कलित दे धोक ।  
वही कूट परि सिव गए ॥ मुनिवर और अनेक ॥ श्रुतलाखि कछू संष्या कहौं ॥ जितनौ हिए विवेक ॥

\* आडिल \*

कौडा कोडि एक कोडि नौ सतर नौ । कुनि नौलाख प्रमान जानिए सहस नौ । नौसैं अधिक  
निन्याणवैं मुनि इतनें कहे । भए निरंजन सिद्ध आपनैं गुनलहे । सोप्रभास बरकूटनमत जो भावसौं ॥  
सोनर सुरगति पाय लहै सिवचावसौं । नकै प्रमुगति नास करैं छिनमें । सही धरै हिए सम्यक्तजैन श्रुतिहमकहि ।

\* चौपाई \*

कूटप्रभास कथा सुखदाइ । जात्राकरि सुदर्शन राइ । सोम सरम द्विज वंदन कियौ । फल निदान  
बंदन कौं लियौ । सोमुनियौ इक चित लगाय । बरनन करौ जथावतराय । जंबूदीप अन्नूपम  
सार । भरत क्षेत्र तहं धनुषाकार । देस विरंच मित्रपुर बसैं । नरनारी अति सोभा लसैं । नांम सुदर्शन  
राजै भूप । रानी जैसना बहुरूप । बहुत विभूति भूप कैं भई । रोग सेग दुखवाधा गई । दंपति राज भोग  
सुख करै । काल जात हिय भैं नहि धरै ॥ इक दिन भवन क्रीडानृप गयौ । सुनि अनंत वीरज लखि

लियौ । केवल ज्ञानलसैं अवदात । जैसै सष्टहोहि दिनराति । तिनकी तीन प्रदक्षणदर्ई । हिए भगति आति । अदभूत भई । नमि कैं पूछैं निज परजाइ ॥ कौन पुन्य इहलक्ष्मी प्राइ ॥ कहे केवली मुनि नरनाथ ॥ पूरव जनम चलाए साथ । सिपरसुमेद बंदना करी ॥ पूजादान भक्ति बहुधरी । जोनर मन बचकाय समेत ॥ जात्रा करैं लहैं सिवप्रेत । इतनी विभौ कौनसी बात ॥ जो लुम राइ पाइ दरघात । इह निवि सुनि नृप मनहि विचार ॥ करैं राज पुनि सिवदातार । करि नमोस्तु आयौ निज गेह ॥ करैं संघ सामग्री जेह । तदनन्तर इक कथा बिसाल । सोम सर्पद्वज की भूपाल ॥ सुनौ श्रवन दै गोतम कहै । जातै भव्य मुक्ति मग लहै ॥ योदनपुर इक नगर मनोग । धन धान्यादि सहित सब लोग ॥ सोम सरम भूसुर धन हीन । तहां बसैं आति आलुर दीन ॥ दुःखकर अटवी अटैं अनैक । जुग चारन मुनि लखि दिन एक ॥ धाइ पाउ में दीनों सीस । गद गद जल्यौ भूसुर ईस ॥ दुखित देखि दया मुनि भई । श्री जिन धर्म देसनां दर्ई ॥ जात्रा करौं सिपर की जाइ । तव मन बंडित लक्ष्मी पाय ॥ सोम सर्प नमिकै मुनि राज । चलयौ सिपर बंदन के काज ॥ नधैं मित्रपुर पहुच्यौ जाय । जवैं सुदर्सन सिंघ मिलाय ॥ पूजा करैं सुनै श्रुति जैन । सोम सर्प उपज्यौ हिय चैन ॥ राय सुदर्शन भाव समेत । संघ भगति अपनै मन देत ॥ पहुंचे सिपर सुमेर गिरीस । कर जुग जोरि नवावैं सीस । पूजा करत भयौ वैगग । भूप सुदर्शन परि ग्रह त्याग । अपनौ राजपुत्र कौं दिथी ॥ कूट प्रभास सीस तप लियौ । सोम सर्प इह देखि लुरंत । धर्यौ महाव्रत मन महं संत । जात्रा हेत एकखग आइ । भर विभूति जुत अति सुखपाइ ॥ सो निज नारि सहित तिह थांन । बंदत फिरैं टोक भगवान ॥

\* दाहा \*

सोम सर्प लखि खग विभौ । कियौ निदान जो बन्ध ॥ जात्रा तपफल होइ सुधि । छूटै दालिद

दुग्ध । आशु अन्त करि प्रांन तजि । विजयाद्धं उपजाइ । है खगेस सुत-विभौ लहि । कुनि जात्रा कौं आइ । भई भवस्थिति सिपर लखि भयो द्विये वैराग । पंच महाव्रत आदरैं । विभौ करि सब त्यागि । और अनेक मनुष्य तहि । लीनौ चारित भार । करि करि तप सिव पद लहौ । पायौ सुख मंडार । जो नर पूजैं भाव समेत । बसौं कूद प्रभास महंत । कोट प्रोषधी फल लहै । गदैंत भव पाय दहंत । सिपर महातम ग्रन्थ यह । कीनों लोहाचार्य । मनसुख हागर कठिन लखि । भाषा रची सुआर्ज ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्ये पुसपेदाचल महात्म भाषायामन सुद्धसांगरेण वर्णनं सिद्ध कूटप्रभास सांति जिन मोक्ष गमनं सप्तदसमो परिच्छेद ॥ १७ ॥

### \* सवैया \*

ग्यानधर नाम कूट सिवभग पग दियौ अजाकौ चिन्ह अवतरे गजपुर में । सूर सैनि जनक सु कनक समांन तन श्री मती सुमात है । निपुन दया धर में । वर्ष पंचासनवैं सहस आशु पैतीस जुचाय । ऊंची देह केलि करी बालसुर में । ऐसे कुंथनाथ जिन कूंथ वादि जीव रक्ष मनसुख सिंधु नमि हरपित उरमें ॥

### \* दोहा \*

शांतिनाथ सुकै गए । अद्वायल्प वितोत । कुंथ नाथ अवतार लेकरि प्रगट वृष रीति । कुंथनाथ पद पंकज कौ । मौमन मधुकर रूप । पंच कल्यांनक बरनि हौ सिवपद सादन भूप ॥ \* चौपाई \*  
जंबूदीप अनूपमथान । तहां विदेह सुपूरु जानि । बहै बाहनी सीतानाम । मध्य प्रवाहनीरगुनधाम । तकिदक्षन देसबसाय । बत्सदेसनि अधिकाय । नाम सिंधपुर नगर मनोग्य । जहांबसैं सब उतिमलोग । सिंधनांम भूपति महाराज । करै राजपुर जन सुखकाज ॥ सिंधसमान पराक्रम जानि । चौदह विद्या करै बखान । प्रसम भाव



उपलब्धी दिन एक । जब जिय धार्यौ परम विवेक । दियौ तबुजकौ तवहीं राज । लियौ महाव्रत आतमकाज  
 अठईस मूल गुनचरै । पटमाया जिय रक्षकरै । पालै सील बाडिनौ धारि । अतीचार जियधरै विचार ।  
 दर्से भिमुद्ध आदि भावना ॥ भावै सुनि आतम पावना ॥ तीर्थकर पद बांध्यौ गैत । जहां छियालिस  
 अतिसे होत । दुद्धर व्रत धरै सुनि राय । अंत समैं संन्यास धराइ । क्रिये भाव सः सौं अबिरुद्ध  
 प्राण तजे मन वचन मुद्ध । सर्वार्थ बुद्धि अभिराम । पद अहमिंद्र लयौ सुख धामा तेतीस जलवि  
 आयु तहं लही । और कथा सब पूरन कही । रहौ आयु षट मास प्रमान । तब जिन पूजा रची सुजान  
 अब मुनि श्रोनिक जन में जिनस । बर्नन करै होय जिम देस । जंबू दीप भक्त जहं खेत ॥ उत्तम जन  
 उपजावन हेत । कुर जंगल इक देन बसाय । नाग पुगी नगरा मुख दाय ॥ सूर सेन नामा भूपाल ॥  
 सब जीवन पै रहै दयाल । श्री यमतीरानी मन हार ॥ सील रूप सुत मदा अचार । जिन के उर तीर्थ  
 कर होय । जिन थुति करन सकबिकोइ । वह पुर धनद आइ पुनि रच्यौ । मनि मानिक मौतिन करि  
 सच्यौ ॥ तीन काल बरपावै रत्न ॥ श्री जिन जनम करै सच जन । श्रावक कै तिथि दसभी निसि  
 माता पोडन सुम निहार । उठि करि प्रात जाय पति पास । भिन्न भिन्न सुभ स्वप्न प्रकास । सूर सेन  
 सबके फल कहै । बडे भाग जिनत सुत तुम लहै । इतने में अमराधिप आइ ॥ गर्भ कल्यांन कियो  
 हरषाय । देवनि कौ हरि आइसु देइ । नाक लोक पुनि गमन करेय । देवी सेव करै बहु मात । गत नृत्य करि  
 अति हरषात ॥ गूढ पूरन पूछै नर नारि ॥ जिन अंबा उत्तर देसार । क्रम सेती बीते नव मास । पूरन  
 भई गर्भ की आस । सित बैसाख प्रदिपदा जानि ॥ आइ इंद्र करि जन्म कल्यांन ॥ \* अडिल \*  
 दंती परि हरिल्याय थापि जिन राज कौ ॥ सूर गुर जाय नह्यायन क्रियौ निज काज कौ ॥ पूजे

ले बसु दर्ब आय राज पुर जैबै ॥ नृत्य क्रियौ सुर रायगयी थानिक तबै । \* चौपाई \*  
 सुर निज बाल रूप धरि तहां । जिन बालक हरषात्रै जहां ॥ कलि करावै धरि खग रूप । जिनवर  
 क्रीडा करै अनूप । पंचास हजार उज एऊ लाख । आयु कुंथ जिनवर की भाष ॥ उन्नत काय चाप स  
 तीस । हेम बरन तन विश्वा बीस ॥ द्वाविंशति हजार मन आंन ॥ सात सतक पंचास बखान । इतने  
 वर्ष बाल पन गए । फुनि विवाह करि चकी भए । चक्र नियोग विभौ सब भई । दिन विभौति अधि  
 की बरनई । राज क्रियौ श्री जिन सुख दाड । सुर नर खग मिलि सेव कराइ । सोढे सैतालीस हजार  
 बीते वर्ष गज पद धारि । हरि विष्टा तैठे दिन एक । मौन धारि हिए करत शिखेक । इहत्तो राज दुःख  
 मंडार । अथिर रूप लागि संसार ॥ इम चिंतत उपल्यौ बेराग । द्वादस भावनसौ चित लाग ॥ इतने भ  
 लौकांतग देव ॥ अस्तुति करी आइ स्वभव । तागन तान कहे लुमनांथ । तुमहीहौ प्रसु शिवपुर साथ

\* अडिल \*

इह विचारिमन मांहे करै को लुप विना । भिवपुर साथ वाह एक तुमही बिना । करन योग इहवात  
 दयानिधि जानिए । अष्टकर्म आत दुष्ट पुष्ट सबभानिए ॥ \* दोहा \*  
 इहविधि और अनेक थुति । करि जिन थानिक जाइ मुक्ति गमनी पलिकी । सकथापि जिनराइ ।  
 सुर सरिता तट विपनमें । सकल ग्रंथ पाढहार । पंचशुष्टिक चलोच करि । धरेमहा व्रतसार । मनपर्ये अब  
 बौवलहि । निज गुन भिन्न कराय ॥ सहसराय जिनचरन नामि । उत्तम तपसुद्धराय । मिथुन दिवस श्री  
 कुंथ जिन । धखौ आतमा ध्यान । गए सुरासुर खग मनुज ॥ करि करि तपकल्यान \* चौपाई \*  
 असन हेत तवचले जिनेस । मंदिर पुर बरदत नरेस । देखे श्री जिन इर्यापंथ । सोधत आवत हैं निरग्रंथ ।

नौधाभक्ति करी तबसार । दीनों तहं प्राशुक आहार । असन अंत कहि अखैं निधान । कांनन जाइ धर्यौ  
 मुनि ध्यान । नृपग्रह पंचाचर्य करंत । सबसुर भृपसुजस गावंत । साढ़ाद्वादस कौंडि सुरतन । बरषाए नृपघरि  
 करिबल । द्वादश बिधि जिनतप तापिताप । निर्मल करी आत्मा आप । द्वाविंसत उपसर्ग सहंत । जिस दिन  
 उदै जोगिआवंत । थिति छदमस्थ जो षोडसवर्ष । रहे छंथं जिन तजिदुखहर्ष । ब्याख्यौ कर्म धातियानासि  
 केवल ज्ञान सूर्यपरासि । लौका लौक विलोकनि कियौ । समोसरन धनपति रचिलियौ । द्वादस सभा  
 बापिका तूप । जिनमंडप तिहि मध्य अनूप । तीन पीठ सुभजडित जडाव ॥ श्रीजिन अंतरीक सिसुभाव ॥  
 उपरि तीन छत्रराजन्त । तिहि लखि त्रिभवन दुतिलाजंत ।

\*दोहा \*

चैतथुकल तृतियादिवस । आइसुग सुरराइ । केवल वल्यानक करैं । कुनि निज थानिक जाय ॥

\* चौपाई \*

तीनगल जिन बानी होइ । ससैं मेठन समर्थ सोइ । आदिस्वभू गनधरजांनि । औरसबै पैतीस वखान  
 साठि सहस बस जु कहे । देबी देव असंखलहे । करि बिहारि बहुदेस विदेस । सेवैं शेष धनेस हुरेस । आयु  
 रही इकमास जिनन्द । आय सितर सुमेद सुछन्द । पुन्य पाप दोन्यूसम भए । नसुरखग पसृनिज थलगए ।  
 रचना समोसरन की तबै । भई बिनास छिनकमै तबै । कूट ज्ञान धरुपर जाइ । जोगरोध कीनों जिनराइ ।  
 जरी जेवरी समजे रही । कर्म प्रकृति जहं सबजन दही । आइ उकल समय समान । अचल भए सिवमैं  
 भगवांन । सम्यक्तादि मुष्य गुनआठ । तेई करन जोग मुखपाठ । औरसुगन गुन सहित अनेक । को कबि  
 बरने रसना एक । सितबैसाख सु पडिवा जानि । भयौ छंथं जिन सिव कल्यान । कूटज्ञानधरपर जिनअर्च ।  
 रजपलाय तनेकेसरअर्च । सुरपति गीत नृत्य करि तहां । कहै सुरासुर जैजै तहां ॥ उतसव करिते गए सुजान ।

अब मुनि संस्था कहाँ बखानि । कोडा कोडि छथानबैं कहे । कौडि छथानबैं उपरि लहे । सहसछथानबैं लाख बतीस । सात सतक ब्यालीस मुनीस । निर्मल करि आत्म विधि नास । कीनों मुक्ति पुरी मैं बास । सोई कूट मैं जो कोइ । कोडि प्रोषधी फल तिस हेइ । नरक पशुगति नास छुरंत । नरसुर गति लहि मुक्ति बसंत । जो जात्रा करिसिवपदपाइ । अवातिन कथामुनौ नराइ । जंबूदीप विषै सुखदैन । भरतक्षेत्र कहियतु हैं अैन देस मनोहर उतिम लसैं । अति छुंदर नर नारी बसैं ॥ भूप जसोधर राज करंत । पुत्र सोमधर भयो छुरंत ॥ पाय पिता पद पर उपगार । करन सील सुख भोगैं सार । महा विवेकी मम गुन धरैं । जिन प्रजा गुर सेवा करैं ॥ अ्यारि प्रकार देइ सो दान । राज नीति मैं परमसुजान ॥ क्रीडा हेत गयो वन जहां महा मुनी छुर देखेतहां ॥ जाइ निकट नमि छुगपद कंज ॥ अस्तुतिकरि निज पातिग भंज । धर्म वृद्धि दीनी मुनिजबै । तिथि है प्रश्न करी नृपतैव । कौनधर्म सेवन सुखहेइ । किहि विधिमुक्ति लहे नरकाइ । मुनि मुनि बोले अमृतबांन ॥ सुनौ रायतुम धर्म बषांन ॥ दर्शनग्यांन चारित्र जो तीन । करै प्रभावन समकितलीन । श्री जिन चर्न धरैं जिय भक्ति ॥ चौविधि दांनदेइ निजसक्ति ॥ जात्रा करैं सिखर सुमेर । धर्म चक्र पूजा विधि हेर । धरसनादि धरै बसु अंग ॥ लहे मुकति तजिकै सब संग ॥ विन सम्यक्त जीव नहिं तिरै ॥ इह विधि मुनि नृपसो उचरैं ॥ भव मुनि कहाँ कहै इमराव । किहि विधि उपजै सम्यक भाव ॥ फेरि तपो निधि बैन उचार । सुनौ भूप निज चित दे सार । श्री जिन मंदिर करैं उछाह । पूजा करि नरभौ लै लाह ॥ ब्यारि प्रकार संघ लै साथ । जात्रा करैं सिखर गिरि नाथ ॥ जैन सिद्धांत सुगुरु सुख सुनै । सातें तत्व चरचा जिय गुनै । तब उपजै सम्यक्त सुभाव । परधा तम देखनि इहि भाव । मुनि नेंद्र मनि हर्ष अपार । मुनि पद नमि घर आइ विचारि । प्रथम कियो श्री जिनवर

धांम ॥ बिंब भराय खरचि कै दांम ॥ संघ बुलाय प्रतिष्ठा करी । अपने हिए भक्ति अति धरी । नीद देखि-मब संघ समेत । चलयौ भूप जात्रा कै हेत ॥ सिखर सीम मेथा धर कूट । करि पूजा अनभौ रम लूट ॥ आइ सुरा सुर नग खग जहां । थांन थांन पूजै जिन तहां ॥ गिरि परि ध्यान धौं सुनिराज थान थन ठोहे हिन काज । देखि सोमधर गिरि रमनीक । जान्यौ सिवपुर की इह लीक ॥ समकिन भाव प्रबल तब भए । चारित मोह कर्म नसि गए ॥ उपज्यौ प्रसम दिए नरराज ॥ करन विचाग्यौ आतम काज । जेठे तबुज राज पद दियौ ॥ आपुन पंच महा व्रत लियौ ॥ विविधि महा तप तपियौ राज । केवल ज्ञान भान उपजाइ । कूट ज्ञान धर सीस महान । लियौ सोमधर सुनि शिव थांन ॥ और अनेक महा सुनि ईस । लए सुक्ति धियनां धर भीस ।

\* अडिल \*

सो शिवदायक भिखर प्रथान वखानियौ । असौ क्षत्र पुनीति और नहिं जानियौ ॥ जो नर भाव समेत सुंगर बंदन करै । नर सुर पद सुख भोग सुक्तिरमनी बँ ।

\* दोहा \*

सिखर क्षेत्र महिमां अठरु ॥ लोहा चार्य बरन ॥ भाषा निज गुन लखि रची । मन सुख सागरसग्न इति श्री काण्य संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्येयु सपेदाचलभाषा यामन मुद्रमागरेण वणनं भिद्वकूट ज्ञान धरा परकुंथ

जिनमोक्षगपन नाम अष्टादसमेः परिच्छेद १८

\* सर्वैया \*

नृत्य नाम झूटसीसौ भए हँ सुकति इस हस्तनागपुर अवतार तिन लियौ हँ । जनक सुदर्शन है भित्र सैना जननि है स्वर्न सम तन मीन चिन्ह कहि दियौ हँ । तीन चाप ऊंचिकाय चौरासी बरस आप जाइ बन तप करि ज्ञान अमि पीयौ हँ ॥ असे अह नाथजी कौ नमि मन सुख सिंधु जिन

गुन गाय सुभ संचै बहु कीयौ है ।

याउ यल्य बीते तहां गणकुंग सिव थान । आइ सची पति अहांजिन । अरह जिनेसुर  
चरन जुग । बंदौ मनबचकाय । गर्भ जन्म तपज्ञान सिव ॥ बरनौ हिय हरषाय । \*चौपाई\*

जंबूदीप जगत बिल्यात । तहं पूरब बिदेह सिवदात । सीता अपगाउतर कूल । कशदेस सोहै मुखमूल ।  
क्षेमपुरी नगरीहैं तहां । धनपति राज करै नृप तहां । धनेरखा रानी जुतराइ । भोगे भोग सजन सुखदाइ ।  
नगर नारि नरसुखमै रहैं । मन बंछित सब जन धनलहैं । प्रजा पाल उठि देइ असीस । राज करो राजी अब  
नीस ॥ बनआनंद नगर तटलसैं । बंदन बन छवि लखि मन हसैं । अरह नंद जिन के बलधारि । समोसरन  
आयौ सुखेकार । सुनि धनपति मनहंरिषित होइ । करि परीक्ष बंदन दिसि जोय । लैपरिवार चलयौ नरनाथ ।  
दुर्बि लिए बसु पूरजन साथ । जाइ प्रनामि पूजायुतिकरी । अपने हिण भगति आति धरी । नरकोटे बैठेनरनाह ।  
दुबिध धर्म सुनिबे कीचाह । ग्रहआचार प्रथम सुनि लियौ । गुनि बृष सुनत प्रसम उपजियौ । राज दीयौ सुत  
कौ तिह थान । लियौ चरित्र प्रनामि भगवान । धनपति मुनिपतिपदवी धारि । सही परीस्या तपकरि सार । बांनी  
ग्यारहअंग अधीत । त्रसथावरजिय सौं आति प्रीति । सोरह कारन त्रत धरिजबैं । तीर्थकरपदवांध्यौतबैं । अन्त  
समैं धरि कैसन्यास । सर्वार्थ सिध कीनौ बस ॥ पद अहमिंद्र लखौ तहं जाइ ॥ तेतिस जलधि आशु मुखदाइ ।  
पूरब सम बरनन और । जानि लेहु बुधि जन बुध गौर । सात तत्व चरवा दिन रैन ॥ कस्त आयु बीती  
सुख दैन ॥ रही सेष पट मास प्रमान ॥ बसु बिधि पूजा रचि भगवान ॥ \* दोहा \*

सुनि मगधेस नरेस अब ॥ बरनौ जिन अवतार ॥ अरह नाथ जिन गुनकथन । सिवलक्ष्मी दातार ॥

## \* चौपाई \*

जंबूद्वीप लसैं अभिराम ॥ भरत क्षेत्र में आरिज नाम । खंडतहां कुजंगल देस । महिमा कहिनसकै अमरेस ।  
नागपुरी नगरी तहंबसैं ॥ घरघर धनधान्यादि लसैं ॥ सोमवंस मैं सबगुन लीन ॥ राइसुदर्शन अति लवलीन ॥  
नारि मंत्र सेना सुखदाइ । जिनके उरनिज उपजे आइ ॥ करै राज सुख संपति भोग ॥ रहै अनंदित पुरके  
लोग

## \* दाहा \*

भब्य जन्म जिनशहरि जानि पठाइ धनेस । रचि पुरआगम मान मित थुति कैं नेस ॥ तीन समैं  
षटमासलौं । करै रत्न की बृष्ट । आति अद्भुत रचनारची । और न यासम सुष्ट ॥ \* चौपाई \*

इकदिन सौंध मिषरि नृपनारि । उठि प्रभांत चित है अहलाद ॥ जाय सुपनपति सौ बरनए ।  
फल बिचारि आनंदित भए ॥ फागुण सुदी तीज हरिआइ । गर्भ कल्यांनक करि गुनगाय । सेवाकरनि  
राखि सुरसता । षट पंचास प्रमिति गुन जुता ॥ आपुन गयो इन्द्र सुरलोक । त्रिभवन जिनभिद्र  
द्वै धोक ॥ सब निजजोग कुमारी देव । करैं भक्ति जिन माता सेव ॥ सरम कथा दोहा चौपाई । काव्य  
पहेली कहत सां भई ॥ क्रिया करम करता करनांय । वैनै स्वर व्यंजन बहु लोय ॥ कहत श्लोक निरोष्ट  
बिचार । अन्तर बहिर्लपकासार । गीत नृत्य बीते नवमास ॥ जिन जनमें जगपूरन आस । अगहन  
सुदि चौदसि दिन जानि ॥ आइ इन्द्र करि जन्म कल्यांन । अरह जिनेस जगत जयवंत ॥ सुरगिर  
से आए पुर अन्त । थापि जिनेस जननि के अंक ॥ तांडव नृत्य करै अति वंक । बालक सुरसेवन तजि  
तहां । गयो इन्द्र अपने पुर तहां । सुरसिसुजिन सिमु सेवा करै । क्रीडा करि सब जनमन हरै ॥  
जंबू नन्द सम देह दियन्त । बरन्त चिन्ह लहौं नां हंत । दक्षन चरन मीन मनहार ॥ उर्द्ध रेख पगतली

निहार । पदम चक्र असि चाप मनोग । कलस दाम तोरन हय जोग । गज स्वस्तिक अंकुस मन  
 बिंध । चमर छत्र रेषा अनुसंध ॥ इनि आदिक लक्षण तन लसै । एकहजार आठ दुख नसै ॥ सहस वर्ष  
 चौरासी आशु । तीन चाप उन्नत हैं काय ॥ निरखि देह दुति अहुत भूप । कोट कामही भंत सरूप ॥  
 इरुईस सहस वर्ष परजन्त । बालकोलि कीनौ भगवंत ॥ सक्त भूप मिलि क्रियो विवाह । सुरपति पद  
 कौ लीनौ लाह । सहस वर्ष ब्यालीस प्रमान । राज कियो अबिचल भगवान । नीत विनत प्रजा  
 पति पाल । इति भीतिपुरजन सब टाल । रत्न चतुर्दस नौ निधिसार । अर्हनाथ चक्र पदधार  
 पाह अनौ वृत धारी धार । तीन ज्ञान सुत गुन गंभीर । इक दिन सभामध्य थिति जवै । स्यांम  
 घना घन देखे जवै । छिन में बिनसे लखि जिन राइ । अधिर जगत जान्यौ दुपदाइ । अति वैराग  
 दिए मै भयौ । द्वादमांनु प्रेक्षा चित दियो । लौकांतिक निर्जलव आय । अमृतोत करि वैराग दिवाय ।  
 गए देवलौकांतिक जवै । इन्द्र पालकी ल्याए तवै । भक्ति सहित वैराग जिनंद । गए महावन करत  
 अनन्द । भए दिगंबर परिग्रह त्यागि । निज चिहूय ध्यान तव लागि । नृपति हजार जात पद धार ॥  
 करि नमोस्तु तप लीनौ सार । अरहनाथ सब परिग्रह टाल । मन पर्यै उपज्यौ तत्काल । अगहन सुदि  
 दसमी सुख दाय । भए भूप जिनवर मुनि राय ॥ तप कल्यानक मधवा कियो । सुर नर खग पसु  
 हर्षित हियो । निज निज थान गए सब जीव । द्वे दिन मौनि ध्यान धरि देव । चले असन कारन तव  
 एव । पाठ अढाई सुद्ध निहार । धरै चरन चितदया सुधारि ॥ गजपुर जाय राज पद देखि । एरा नृप  
 जिन आवत पेलि । है सनमुख कजोरि नरेस । अस्तुति करि नाम भूप जिनस । आगै है मंदिर  
 ले गयो ॥ तिष्ठ तिष्ठ कहि आसन दियो । प्रासुक धेनु खीर अहार । नौधा भक्ति सहित दे सार ।



करि भोजन मुख अखि निधान । तिहि औसर बोल भगवान । आइ अमर जे जे उचरै । पंचाचर्य  
भूप ग्रह करै ॥

\* चाल छंद \*

फुनि आए श्री जिन बन मै ॥ आत्म अवलोकि निम नमै ॥ लखि निर्जन प्रसुक थान । धरि  
ध्यान खड़े भगवान ॥ सुद्धात्म गुन सुचारै ॥ पूरब क्रत फंद उचरै । निश्चैन यलोक प्रमाणै विवहार  
देह मम जानै । निश्चय जय जीव अंध । विवहार पर्यौ जिम धंध । निश्चय गुन तीत्र अनंत ।  
विवहार उदै आवंत । जिय धरै चतुष्टय व्यार । सुद्ध प्रांत व्यारि प्रकार । इनको नहि धरै जीव ॥  
दुख सैह निगोद अतीव । जग जौनि चौरासी लख । बह कष्ट सैह विधि साख ॥ निज गुन धरै जीय  
वंही । बंसु कर्म नसैगे तबही । इह विधि जिन मनहि विचार । तप कीनौ सिवदातार । वसु  
दुगुन बरस छंदमस्थ ॥ कर कर्म घातिया अस्थ । \* दोहा \*

कातिग सुदि एकादसी । उपज्यौ केवल ग्यान । हरि आयसलै धनंद ॥ तब समोसरन रचिअंद ।  
पूरबे सम सब जानिए । कोट पीठ बन तूप । बीथी गो पुर नृत धर । सोभावनी अनूप । कुम सैनि  
आदिक तहं गनधर तीस लसंत । व्यारि ग्यान जुत जिनसु । धुनि चर्नन बेद करंत । देवी देव अनंत  
जहं । करै नृत्य गुन गांन । नर नारी पूजा करै । अंतरीरु भगवान । तीन काल बानी बिरै । सब  
जन संसै हरन । मन सुख सागर नमहि तब । अरहनाथ जिन चान । देस विदेस विहार करि । बृष  
उपेस करंत । आयु रहीं इक मास जब । सिलर गए भगवंत । \* चोपाई \*

नाटिक कूट भीस जिन राइ । जोगरोध धरि ध्यान सुभाइ । चैत कृशं दिन अंत ॥ जानि । भए  
सिद्ध अविचल भगवान । आए सुरासुर सक नरस । लै पूजो याहार सुभ मेस । कया हुतासनकरि

रजवर्दि । निज निज मंदिर गए अनदि । सौनाटिक बरकट प्रसिद्ध । बंदन करैत लहै सिवशिद्ध । नरक पसुगति  
 नासन करै । श्रीजिन सासन इमउच्चरै । गएसुकृति सुनिवर तिहियान । तिनकी संख्या करौ बखानि । निन्यानवै  
 हजार सुजान । लौसैनि वै इहपरमान । इतने की में संख्या लही । नाटिक कूटमुक्ति मगसही \* दोहा \*  
 नृत्यकूट जात्रा करी । सुप्रभा नाम नरेस । तासुकथा मगधेस सुनि । भव्यलहै उपदेश ॥ \* चौपाई \*  
 सकल देश सबधै परधान । नगर भद्रपुर तामै जानि । भूप अनंद सैनि हैजहां । सुषी प्रजासच दीस  
 तहां । बिजया पटरानी जूतभूप ॥ । राजभोग सुखकरै अनूप । तिनकैसुप्रभ सुतइकभयो । नृपति राज  
 पदताकौ द्यौ । आपजाइ धन दिखालेइ । आवागमन जलांजुलिदेइ । सुप्रभ राजकरै सुखदाइ । प्रजाधर्माराग  
 बलिजाइ । एकसमै निजसभामझारि । जिति है धर्मकथाविस्तार । तिहि अवसरवरसक आय । वेणपात्र  
 भरि पंकज ल्याय । निजकर एक सुमन नृपालियौ । फेरत छतक अमर पेधियौ । भयो हि ए वैराग्यअपार । राजा  
 मनमै करै विचार । ताही समै एकधुनि राज । आए तहं असन केकाज । नौवाभक्ति करी तवराइ । प्राशुक  
 भोजन देमुनिराइ । छानि श्रुतिकरि श्रुति कोनीभूप । पूछै धर्मा धर्मसरूप । मुनि बोलिसुनि क्षिति पतवैन ।  
 जिन भाषित बृष है जग ऐन । पूजा दान दया वृतवर्न । सीलसुतप ए सब अवहर्न । कल्याणक जिनवर  
 जिहथान । जात्रा करत होइकल्यान । सिखर महातम वर्न मुनीस । सुनि नरेस मुनिनाथी सीस । घख्यौ  
 ध्यान मुनि बनमै जाय । चलयौ सिखर भूणति हरषाय । व्यारि प्रकार संघलै साथि । पूजा दान करत  
 नरनाथ । जहां जाय नामि नाटक कूट । सबगिर वंदित पातिगठूट । तप कारन सुतकौदिराज । लीनों वृत  
 निज आतम काज । अचिरकाल में त्यागे प्राण ॥ लेहे स्वर्ग सोलह विमान \* दोहा \*  
 सोपुनि जंबूदीप में भरतक्षेत्र ऋजु खंड । सुरम्य देश योदनपुरी । नृप श्रीखंड प्रचंड । तिनके सुत है

सुगम जुत सुकंभ्रव नाम प्रसिद्ध । जात्रा सिखर सुमेस्कर । लहै मुकतिपद रिद्धि । नाटिक छूट प्रसिद्धसो  
जो बँदै मगधस ॥ नरपसुगति नासकरि नरगति लहै सुरेस । धन्य भाग वे मनुजहँ । बँदैसिखर सुमेर ।  
मनुष धारि भवसिख बँरै ॥ जन्म धरै नहि फेर ॥ कोटिछ्यानरै प्रोषधी । बरत कियौ फल होय ॥ सोई  
नाटिक छूटकौ बँदनकौ फलजोय ॥ ऐसे सिखर समेद गिर ॥ महिमा कहिनजाइ लोहाचार्य कृतनिरंखि ॥  
भाषा सुगम बनाय ॥

इति श्री काथा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेसुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामव सुद्ध सागरेण वरणनं नाटिककूट परअरहनाथ  
जिनमोक्षगमन एकोनवचिस परिच्छेद ॥ १९ ॥

### \* सवैया \*

जाके पद पूजत सुरेस सतभावसेती कुंभरांय जनक सुरेखा देव माईहँ ॥ कलस चरन चिन्हहेम के बरन  
तनधनुष सची सुमभ उन्नत सुकाईहँ ॥ मिथुला जनम आइ साढ़े दसआयु हैसंवल सुकूट सीस सुकति  
सुमाईहँ ॥ ऐसे माछिनाथ सुबिधि मछ मछडारै मनसुख सागर नमित तसु पाईहँ \* दोहा \*  
वर्ष किरोरहजार जब बीते अरह जिनंद । मछिनाथ जिनजन्म लै ॥ कीनौ त्रिजग अनंद ॥  
तिनके चरनांबुज सुनामि ॥ सारद सुमरि सुभाइ । गर्भ जन्म तपज्ञानसिव । बरनै हिण् हरषाय ॥  
\* चौपाई \*

बलयाकृत यह जंबूनांम । दीपनमथ्य दयसुभधांम । अचल सुमेर अचल हैं जहां ॥ श्रीजिन नन्ह होतहँ  
तहां । प्राचिनाम विदेह प्रसिद्ध । धनधान्यादि लसै बहुरिद्धि ॥ देस वत्सकावती मंहत ॥ उपमां कहत न पाउ  
अंत ॥ बीतसोक पुरसोहपुरी । नागर हैमानौ सुरह सरी । अति उत्तंग राजै जिनधाम ॥ रतन मई प्रतिमां

अभिराम । समोसरन बिहैरै सर्वदा । बानीखिरै जथास्थ तदा । बतै काल चतुर्थमसार । ह्वै मुनिभवदधिउतरैपार ।

### \* दोहा \*

माहिमा सोपुरदेसकी । बरन कोविधि सार । पंथवधि भयधारमन । नाहि कियो विस्तार \* चौपाई \*  
 वै श्रवन नांमां तहं भूप । लखन जुतरतिपति समरूप । महा प्रतापी सुगुन अनेक । न्यायवंत हिएधार  
 बिवेक । तीन काल अरुचै अरुहंत । प्रसन्न सहित पुर राज करंत । इक दिन श्री मुनि अटवी आय । मुनि  
 भूपति चाल्यौ हरपाय । नगर बाह्यवट बिटप जुएक । तापरि पंक्षी बसै अनेक । छाया सघन बड़े विस्तार ।  
 अति सीतल परमलगुन धार । राइ सराहन करिकै जाहां । फुनि आगै चाल्यौ मुनि तहां । विद्वृत पात  
 भयौ बट सीस । भस्म भयौ छिन मै नग ईस । राइ जाय मुनि सीस नवाय । दुविधि धर्म सुनियौ  
 चितलाय । व्यास्यौ गति चौरासी लाख । जोनि निभेद भिन्न मुनि भाख । लौका लोक द्रव्य षट वर्न ।  
 कहे तत्व जिय संसै हर्न नमस्कार । करि उठ्यौ नरिंद । धर्म वृद्धि तब दई मुनिंद । आवत मध्य मध्य  
 लखि भूप ॥ दामिनि दग्धित बृक्ष अन्नूप । छिन भंगुर जांन्यौ संसार । दुख दाई कहि जग निरधार ।  
 जात समै देख्यौ बट वृक्ष । आवत नास लख्यौ प्रतक्ष । द्वादसांन प्रेक्षा चित लाइ । पुष्पित भयौ प्रसम  
 नगराइ ॥ अग्रज तनुज राज पद दियौ ॥ आपसु ग्रंथ रहित पद लियौ । निर्जन गहन जाइ कै जवै ॥  
 रत्न त्रय व्रत धरे तवै ॥ तप करि अति उठ्यो ग्रमहंत । ध्यान अग्नि बसु कर्म दहत ॥ द्वादसांग वांनी  
 हिय ज्ञान । तप बल कियौ अचल निज ध्यान । फुनि खोडस कारन धर अंत । गीत तीर्थकर बंद करंत ।  
 व्रत सन्यास लेयतन त्यागि । निज अनुभूत कियौ अनुराग । वास कियौ सरवार्थ सिद्धि । देव मद्धिक पाइ रिद्धि

\* दोहा \*

त्रय त्रिसत सागर तहां । उरुक्छी है आयु । तेतीस सहस बरस गए । लेह आहार सुभाव ॥ साढे सोरह  
 मास जब । बीते सासउसास ॥ आवत इहि स्वय मेव थिति । दिस दिस होत सुभास \* अडिल \*  
 देव खडे करजोरि छुसेवा करवहैं । देवी गावैं गीत नृत्य अचात हैं ॥ रहै सुथिर हरि पीव मूल देही तहां  
 रमें बिक्रिया धर होत निज मन जहां । \* दोहा \*

इह बिधि तेतीस जलधिक्की । आयु सुपूरन कीन ॥ सेष रही षट मास जब । माल भई छवि छीन ॥  
 आंभा रहित सरौर लखि । जान्यौ अपनौ मर्न ॥ चेत्याले मै जायकैं । अरचे श्री जिन चरन ॥

\* चाल छंद \*

अब आगैं छुनि मगंधस । सोचर उपजैं जिस देस । उनीसम जिन पद धार ॥ भवि जीव उतारै पार ।  
 इह जंबूदीप बिराजैं । नामो सम सुर गिरि राजैं । ताके दक्षिन दिसि सोहैं । इक भरत क्षेत्र मन मोहैं ।  
 तामैं है आरिज खंड । बरतै जहां धर्म अखंड । तहां बंक देस सुख दाई । उपमां नदि बरनी जाई ॥  
 उपमां बन सोभा एक । बापी सर हूप अनेक । मिथुलापुर नगर मंहंत । कलसा पति कुंभ कहंत ॥ रानी  
 जुसुरेखा नांम । छत सील सुलक्षण धांम । दंपति मिलि भोगैं भोग । पालैं सुर पूजा सुनि रोग ॥

\* दोहा \*

इक दिन नाक सुधर्म पति । अवाधि ज्ञान सो जानि । मिथुलापुर उनीसमौ । जनमें जिन सुखधांम ॥  
 आयुस दयो धनेस । तव नगर रचना के हेत । पंचार्च्य करौ अर्वे । श्री जिन जनक निकेत ॥

\* छडिल \*

आयौ उरत कुबेर । रच्यौ जिन पुर तहां ॥ उन्नत कीयौ आवास । कुंभ भूपति जहां । बर्यै उत्तम रत्न  
मुमन जलकन झरैं । बाजैं दुंदभि मंद मरुत जन हित करैं । \* दोहा \*  
इह बिधि बीते मास षट उत्सव जुत सर्व । निरखत मंगल गेह छवि । जाय सची पति सर्व ॥

\* आडिल \*

इह दिन मंदिर सीस सुरेखा सेन में खोडस रुपन निहार पाछिली रैनमें ॥ बय सर्वार्थ सिद्धि थकी  
सो आइकैं । करि गर्भ थिति प्रात उठि हरषाइ कै । \* दोहा \*  
मंजन करि शृंगार जुत । गए नाथ के पासि । कहे सुप्रफल सुनि तहां । दंपति भए हुलास ।

\* चौपाई \*

चेत शुक्र परिमां सुभवार । कीनौ गर्भ कल्याणक सार । सेवन आज्ञा दे सुर सुरी । सक्र गयौ कुनि  
अपनी पुरी । मिथुलापुर घर घर सानंद । मंगल गीत जौ होत सुछंद ॥ देवी सेवे श्री जिन मात ॥  
करैं मनोगत हिए हरषात । इह बिधि गर्भ दिवस दस भए । अंक मास दस अहिनि सु भए ॥ जन्म लियौ  
श्री त्रिसुवन नाथ । भव दधि भव्य उतारन हाथ । \* आडिल \*

कल्प बासि घर घंटा अनाहद बाजियौ । जोतिष घर हरनाद सहज गलगाजियौ । सब सष्ट अनिवार  
भवन सुर गेहमें ॥ पटहाब्यंतर गेह बजैं अति नेह में । \* दोहा \*

निज निज चिन्ह सुभाव सौं । जान्यौ जन्म जिनंद । करि बंदन सौ धर्म पति । पायौ हिए अनंद ।  
औरपति असवार है । संघ साहित परिवार । मिथुलापुर के गगन में । जै जै करत अपार । हरि आयुस

ले कैं सची । जन्म गेह में जाय । माता माया नीद रचि । अंक लिए जिन राय । \*सर्वैसा\*

सहस खैयेदु मांन जोजन सुनाग राज सतैह बदन अति तन छवि सितैह । बदन बदन बसु देन  
रदन प्रति सर सर प्रति काजीसर रचि भितैह । कमलनी प्रतिवांन भुजै माठ पुंडरीक बसु सत दलभुभ  
सोभा छवि अतिहै । दल दल प्रति नदी नदत समाज जुत सताईस कोट इम अपछरा विदितैह ।

### \* चौपाई \*

जै जै नन्द बृद्धि जिनदेव । चतुर निकाय करै मिलि सेव ॥ सुर गिरिपैयां डुकवन जहां । जाय नहन कर्  
विधिवत तहां ॥ करम मल्ल मलि डारन हार । मल्लि नांथ संज्ञा उच्चरै ॥ फुनि आयेपुर उत्सव क्रियाँ ॥  
श्री जिन मात गोद तव दियौ । निज सिधु तट बहुचुर सिमुथाय ॥ गयौ जिनालय सुरपति आय ।  
कंभराइ जिन सुत उत्साह । करि जाचिक जन पूरन चाह । पंचोत्तर पंचास हजार ॥ परी आयु  
थिति जन मनहार । देह हेम दुति धनुष पचास ॥ उन्नत काय लक्ष जिन ईस ॥ बालपन सतबर्ष प्रभान ।  
धार अनुव्रत रहे मुजांन ॥ इ ऋदिन उल्कापात बिलोक । सकल चराचर जांन्यौ लोक ॥ द्वादसान प्रेक्षयां चित  
लाय ॥ लौकांतिक सुर पंहंचे आय । अस्तुति करि निज मंदिर गए ॥ इन्द्र पालकी ल्यावत भए । प्रभु  
चढ़ाय गए बन जहां ॥ अति उन्नत चंपक तरु तहां । बस्त्रा भरन तजे तिहिवार ॥ नमः सिद्धेभ्यः सुख  
उच्चार । पंच सुष्टिक चलोचन कियौ ॥ निज आतम आतम चितु दियो । सहस राइ नमि श्री जिन  
चर्न । लीनौ पंच महाव्रत सरन ॥ \* दोहा \*

मथवा तप कल्यांन कर गयौ आपनै धाम । अगहन सुक एकदसी ॥ मल्लिनांथ जिन नाम ।  
मन पर्यै उपज्यौ तहां जब बेलव्रत धारि । नंदसैन नृप सोध फुनि । लीनौ जाय आहार ॥ चौपाई

अपे निछि जिन सुख उचरै । पंचाचर्य देव तब करै । नौसैचौवन सहस जु बर्ष । जाय विपन कीनौ लग  
हर्ष । ताही में षट् वर्ष प्रमान । रहि छदमस्थ भयौ तब ज्ञान । समोसरन रचि हर्ष क्रेवर । श्री मंडप  
सब सोभा हेर । गनधर अठईस यहंत । न्यारि ग्यान धारी बुद्धिवंत ॥ दूरब सम सब और विभेद । जानहु  
सास्त्र देखि बिन खेद ॥ क्रियौ विहार देस प्रीति देस । दीनौ दयाधर्म उपदेश । रही आयु जुग पक्ष प्रमान ।  
सिपर सीस आए भगवान । पुन्य पाप प्रकृति सममई । समो सरन सोभा सब गई ॥ जोग निर्गोध रहे जिन  
राइ । निज निर्मल चेतन लौलाइ । फागुण कृष्ण छादभी सार । लहि सिवथान अष्ट गुणधार । इन्द्र  
क्रियौ कल्याणक आइ । संवल कूट सीस सुखदाइ ॥ जिन निर्वाण प्राप्तु हगवाय । करि पूजा अस्तुति  
गुनगाय । नर सुर पसु खग असुर मंहंत । निज निज आलय गमन करंत ॥ \* दोहा \*  
धानि घरी वह अहन की । धन्य महुगत जानि । निसिदिन संवल कूट पै । इन्द्र क्रियौ कल्यांन ।  
सिषरमहानस प्रचुर अति । बरन्यौ श्री जिन ग्रन्थ । जानहु संवल कूटपल । संवल है सिवपन्थ अडिल  
अब आगै सुनि राय कथा इकराइकी । जात्रा संवल कूट जथावत भायकी । तदभव सिवपद पाइ  
अष्ट विधि जारिकै । किनौ है तप स्वल्प निजातम धारिक ॥ \* दोहा \*  
जंबूद्वीप प्रसिद्ध इह भरक्षेत्र अभिराम । जोध देस श्रोपुर नगर । इन्द्रपुरी समधाम ॥ चौपाई  
बंकदम नांमां अवनीस । भूप अनल्यनवावै सीस । विजय पटरानी जुतराय । भोगैभोग अपे सुखदाइ । तिन  
के तनुज भयौ बलिवंत । गुन लक्षण कहि लहौं न अंत । सतसेन संज्ञा बुधिधार । जौवनवंत भयौ अविहार ।  
कारन मातपिता तपलियौ । सतसेनिकौ नृपपददियौ । राजविभूति पाइ सुखदाइ । इंद्री जनित सुभोग कराइ ।  
पौल प्रजाप्रजा समभूप । न्याय नीति चितधारि अहूप ॥ इकदिन सत्य सेनि गुनरास ॥ पूजन हेत गयौ



कैलास ॥ तहां सुलोचन श्री मुनि एक ॥ लाखि प्रनाम करि धरि सुबिबेक ॥ थिर है विधि धर्म सुनि राइ ।  
 निर्धन धन लाहि इमहराय । फुनि मुनि सिखर महातम कहौ । मुनत भूप दर्शन वृतगह्यो ॥ आइ गेह लें  
 संघमहंत । ज ॥ हरन नो च ॥ यौ ठुरंत ॥ क्रमक्रमसौं मधुवन में गए । देखि सिखर आनंदित भए ।  
 है पूजो पहार मनहर्न गएकूट परपूजा करन । आबिचरन गुनगाय अनंत । विभैभक्ति हिएथारि  
 सुमुन्द । है वैरांग लीयो तपसार । तेरहविधि च रित्रउधार । संबलकूट सीस सिवगंधे । भिच्छि गुनज्ञान रंजन  
 भो । ऐसो कूट नैमै जो कोइ । सोई सिवतारि पतिहोइ । निन्याणनै कोटमुनिराय । वही कूटपरि सिवपदपाइ ।  
 कोटि छ्यानवै वृत्तफल होइ । एकवार वंदै जोकोइ ॥ नर्क पसुगति नास करंत । जात्रा करै भावधरि संत । नर्क  
 पसुगति नैलहि सिवपदलेइ । जन्म मरन जनांजुल देइ ॥ \* दोहा \*

इहविधि लोहाचार्यगुर । बरन्यौ सिखर महात्म । मनसुखधि भापारची कीनौ सुचिनिज आतम ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्म्ये पुसपेदाचल महात्म भाषायामन सुद्धसांगरेण वर्णनं नाम संवल कूट वर्णनं  
 मल्लनाथ मोक्ष गमनं चिमत परिच्छेद ॥ २० ॥

\* संवेया \*

सुवृत्तर निहारसुमित्र जनकसार नगर कुसाग्र नाम सबसुखदाइहै । मात पदमावतीहै हेमके बरनतन कक्षप  
 सुलखन सुचरन सुभाइहै । त्रिसत हजार जो वर्ष आयु भाषियतु उन्नत धनुषवीस अति सुभकार्यहै । ऐसे  
 व्रतसुकूट निर्जर सिव मनसुद्ध सागर नमत जिनपाइहै ॥ \* दोहा \*

चौवनलाख वर्षगण । अन्तर मल्लि जिनेस । मनि सुव्रत जिन जनमियौ ॥ हरये त्रिजग अशेष ॥  
 नमि मुनि सौ व्रत चरन जुग ॥ सारद सीसनवाय बरनौ पंच कल्यान अब श्री गुर भये सहांथ ॥

\* चौपाई \*

सबदीपनि में नामिसमान ॥ जंबूनाम सुदीप बखान । भरत क्षेत्र सेवै सुसुरी अंगदस चंपावतपुरी ॥  
 नरनारी सब सुंदरबसे ॥ धनधान्यादिक रिद्ध बहुलसे ॥ सुसुरिता जुतलसे  
 अनूप ॥ हरि वर्मा राजा बलिवन्त । न्याय निणुन गुनवंत अनंत ॥ महाप्रतापी सीलसुभाव । राजकरे चंपापुर  
 राव । पबिसेना पटनारि समेत ॥ भोग करै इंक्षी सुखेहत ॥ पालै प्रजा तनुज समसवै ॥ कारन एकभयौ पुनि  
 तबै । पुराट बनआए मुनि तहां ॥ षट्कतु पुष्पफलोत्कर जहां ॥ बनपालिक लखि अचिरजएह ॥ भ्रम  
 बिपन में करसेदेह । अटत अटत देखे मुनि राज ॥ अनंत वीर्य गुन धर्म जिहाज । चलयौ नगर कौ मुनि  
 सिरटेक ॥ लै षट्कतु फलफूल अनेक । भेटधरी भूपति के अग्र ॥ दै आसीस बचचवै समग्र ॥ मुनि मुनि  
 आगम राइ अनंद ॥ बस्त्राभूषण दिए सुछंद ॥ करि परोष बंदननृप जबै ॥ आनंद भेरि दिवाई तबै । करि  
 सुभेष नृप पुरजन सर्व । लेचाले पूजन बसु द्रव्य । भृपादिक सब जाइ नमंत । अस्तुति करै हिए हरथतै ।  
 थिति है दुबिधि धर्म सुनि भूप । सागरी अनगार अनूप । मन बैराग भयौ नर राउ । दिक्ष्या लेन  
 चलयौ हिय चाउ ॥ अग्र सुतकौ दीनौ राज । लीनौ व्रत नृप आतम काज । दुबिधि ग्रंथ तजि भजि  
 अरहंत । षोडस कारन हिए धरंत । जीवा जीव दबै षट् भेद्र । निनै करि निज साता बेद । द्वादस  
 रूप अग्र तप तप्यौ । पूरब कृत दुःकृत सबलप्यौ । तीर्थकर तव बांध्यौ गोत । तहां पंच कल्यानक  
 होत ॥ अंत समै धरिकै सन्यास । प्राणतनाकजु कीजौ बास ॥ जलध बीस थिति पदवी इंद्र । अरचै  
 तीन काल जिनेंद्र ॥ सात तत्व की चरचा करै । निर्विकल्प निज गुन उच्चरै ॥ जहं जहं पंच कल्याणक  
 होइ । करै प्रतक्ष बंदनां सोइ ॥ बीस हजार वर्ष बीतंत । मानसीक तव असन करंत ॥ गए मास दस

सासउसास । लेत् दसौं दिसि होइ सुवास । इह बिधिसौं बीती सब आशु । रही शेष षट् भास सुभाव ।  
मणि माला सुछित्त जब भई । रतन अभूषन तन दुति गई ॥ मनहि बिचारि जोइ जिन धाम ॥ करि  
जिन पद अष्टांग प्रनाम । पूजा रची दर्बवसुल्याय । अस्तुति करैसु निज गुन गाए । \*दोहा \*  
तदन्तर सुनि मगध पति । इक मन है अमलांन । सौ चरचइ जिन पद लहै । वह वरनौ सुभथान ।

### \* चाल छंद \*

इह जंबू दीप मझार । तहां भरत क्षेत्रहै सार ॥ गंगा सिंधु अचलै ॥ हैं आरिज खंड विसालै । तामें  
सुभ मागध देस । सरब बन उपवन जुअसेस । कदली सहकार अनेक ॥ श्री फल बन सोभा एक ॥  
उन्नत दुम सारिका राजै ॥ जाती फल बृक्ष विराजै । पूंगी फल लगेइ अनंत । वरनत में लहौं नाअंत ।  
ता बन श्री सुनिवर आवैं । त्रिन भाषित धर्म चलावैं ॥ तहां बसैं छुउत्तम ग्राम । छावत कुसाग्रसु  
नाम ॥ उन्नत सुभ सोभ मंहत । गिरि फटिक शृंग सम संत ॥ पुर मथ्य जिनालय सोहैं । सबसौं ऊंचे  
मनमोहैं ॥ तहां आय भव्य जिन अरचैं । गुन गाय करै सिव परचैं ॥ सुर देवी सम नर नारि । पुर  
सुर पुर सोभ अपार ॥ राजा सुमित्र तहं राजै । दुति देखि सची पति लाजै ॥ सुजदंद प्रताप अखंड ॥  
अरि जीति अधिक प्रचंड । नृत नीति प्रजा सब पालै । उगजार चौर सचटालैं ॥ पदमावति नारि समेत ।  
सुख भोग करै बहु हेतं ॥

### \* दोहा \*

एकह दिनि सौ धर्म पति । सुमिरत जिन कल्याण ॥ पद्मावती सुमित्र घर । जन्म लख्यौ भगवान ।  
आग्या दर्ई धनेस कौ । जाह रच्यौ पुर सार ॥ पंचा चार्य करो तहां । होइ सुखी नर नारि ॥

## \* अडिल \*

आयौ तवहि कुबेर सक्ति निज धारिकैं । नौ बारह प्रमानं नगर विस्तारकैं । पुर छसाप्र नृप गेहस्त  
 वरषा करैं ॥ बाजैं दुंडुभि सुमन अनिल जलकन झरैं ॥ तीन काल मन हरन गान सुर करत हें ॥ घर घर  
 उरसव होइ सव जन मन हरतहैं । इह प्रकार षट मास गए अनि चावसौं । अब जिन गर्भ कल्यांन सुनौ  
 भवि भावसौं ॥

## \* दोहा \*

श्रवन दुतिया असित पक्ष । प्रांनत सो सुर आइ । पद्मावति उर थिति करी । तीन लोक सुखदाय ।

## \* सोरठा \*

एक समैं जिन मात । सैन करत निज महल मैं ॥ सुम लखे अवदात । षोडस पछिम जांमिनि ॥

## \* दोहा \*

सूर्य उदय उठि स्नान करि । पहरि आभुषन चीर । सखी संग लै हर्ष धर । गई लुरत पति तीर ॥  
 ब्यक्त ब्यक्त सुनि सुपन फल । कहै हर्ष नर नाह । तीन लोक पति होइ सुत । लेह मनुष भव लाह ।  
 कहै परस्पर प्रीतिबच । दंपति सुख्य अपार । इंद्रआयु सुर सहित कर । गर्भ कल्याणक सार । छहौं  
 कुलाचल बासनी । मघवा आयशपाइ । गर्भ सोधनाकरहित । सबैनिज चितलाइ । छपन देवकुमार सब ।  
 निज निज काज समारि । सकगयी निज थान सब । हर्षे सुर नस्तारि । घरघर मंगल होइनिनि । गीत  
 नृत्य संगीत । कोइ कबहुन देखिए । बदन पीत भैभीत

## \* चौपाई \*

इहविधिसौं बीते नवमास । आनंद मैं बीते सुखरास । असित दसै बैसाख निहारि । श्री सुनि सुव्रत जिन  
 अवतार । बिरद राज साजि आइसुरेस । दीनों पुलौमजा आदेस । जिन प्रसूति मंदिर मैं जाइ । अंकलेइ प्रभु

ज्वलुम आइ। जाइ सची निद्रा रचि अंब। थुति करि गोद लियौ अर्बिलंब। आइ सचीपति अकैं देइ।  
 पुत्रकित है मधवा प्रभु लेइ। तस न होइ निहारि जिनेंद्र। सहश्राक्षत तबभ्यौ सुरेंद्र। दंती पति पै थापि तुरंत।  
 जय जय नंदि वृधि उचरंत। सुरगिरि जाय नन्ह विधि करी। भक्ति सहित प्रजा विस्तरी। मुनि सुव्रत  
 वृत्त धर्म धरन। जाइ सची पति नामि पुनि चरन। आइ नगर कीनौ उत्साह। नाक ईस पद लीनौ लाह।  
 मात अंक दै नृत्य करंत। छिनक भूमि छिन नभि विचरंत। वीन बासुरी बेन बजाइ। ताल मूर्ज सुह  
 चंग चढ़ाइ। जल तरंग मिरदंग सितार। सारंगी षटताल विचार। सिलमदरा कानून जफ़ीर। बाजैं खंजर  
 अति गंभीर। इत्यादिक बाजैं अमलोन। साढ़े ढादस कोटि प्रमान। सुरसातौ सुरजुत गुनगाइ। साढ़े  
 बाराह ताल बजाइ। बालक सुर सुरपति सुरथाइ। नामि जिन लोक गयौ पुनि आइ। पिता भादि पुरजन  
 मिलि सबै। पुत्रात्सव बहुकीनौ तबै। बीस चाप उन्नत प्रमुकाय ॥ तीस हजार वर्ष जिमराइ। हेमबरन  
 सुरबाल समेत। बाल केलि कीनौ सुख हेत। सात हजार पंच सत वर्ष। बाल पन बीते जुतहर्ष। पुनि  
 विवाह कर राजकरंत ॥ नीति सुपथ हिए धरंत ॥ पंद्रह सहस वर्ष लगराज। कीनौ मुनि सुव्रतजिनराज।  
 प्रसम में जब पढुंच्यौ आय। कारण एक भ्यौ सुनिराय। धन धनि गजप्रभु है असवार। चले चमूले करन  
 विहार। सो गजलखि पावस ऋतु जबै। प्रख भव जिन जान्यौ तबै ॥ दूहौ नागदत पर जाइ ॥ माघा  
 उदै भ्यौ गजआइ। इह विचारि जल असन तजंत। है वैराग भजैं अरहंत। एह विवस्था देखि गइंद्र ॥  
 अविधि ज्ञान लखि कहै जिनंद्र। अरेमंतंग जीव जग अमैं ॥ नरक देव पसु नरगति गमैं। क्रोधं लोम माया  
 अरु मान। ब्याखौं गति मै होइ निदान। चौरासी लखि जोनि अमंत। काया धर दुख सहै अनंत ॥  
 गज सो कहि प्रख परजाइ। पंचअणु व्रत दिए सुणाई ॥ निज भुपति पद सुतकौ देइ। जीवा जीव विचार

करेइ । बारह भावन भाव धरंत ॥ मुरलौकातिग आइ नमंत । अस्तुति करत प्रसम अधिकाइ । गए ब्रह्मसुर  
 आति हरषाइ । अपराजित सिवकातिह थान । लाइ सकथपे भगवान । जैकैकरि पालकीउठाइ गएमहावनमंगल  
 दाइ । बकुल विठपिनीचे धिति धारि । नमः सिद्धिभ्यः सुखउच्चार । पंचमुष्टिक चलोचन कियौ । सहस रायतत्रजिन  
 व्रतलियौ । कृष्ण दसै बैसाख सुजानि । इंद्रकियौ जिन तपकल्याण । मन पैये को भयौ प्रकास ॥  
 सुक्ष्मपुद गलाउ सब मास । बेलाव्रत करि रव गिर आइ ॥ विजयेसेन घा असन कराइ । अक्षे  
 निछि जिनवर सुखचर्यौ ॥ पंचाचर्य भूप घर भयौ । वर्ष जु सोढमात हजार ॥ कीनौ तप आतम चित  
 धार । फुनि बनजाय कियौ तप धौर ॥ वसु विधि कर्म पटल सब तौर । \* सोरठा \*  
 भयौ जु केवल ग्यान । सुनि सुवन जिनराजकौ । तीन लोक सुखदान ॥ प्रसित नवभि वैसाखकी ।  
 समौ सरन धर निंद ॥ रवि निज सक्ति समान सब । राजैतहां जिनन्द ॥ कल्यानक विधिइन्द्रकर ।

\* दोहा \*

महिमेनिहू आदिदे । अठदस गणधर सार ॥ ब्यारि ग्यानधारी सबै । बानी परखन हार ॥

\* चौपाई \*

देश देश विहरै भगवान । हुबिध धर्म को करै बखान ॥ त्रेपन क्रिया कहि सागार । तेरह विधि  
 चारित्र अनगार ॥ पुद्गल जविकाल आकास । धर्म अधर्म् द्रव्य पट्मास । सान तत्त्व पंचास्तिकाय ॥  
 नौ पदार्थ भाषे जिनराइ । गुनथानक चौदहभाषंत चौदह मारग ना । वरनन्त । उनईस जीव समास जु  
 कहे । चौबीसौ दंडक जिय गहे । सुनि सुव्रत श्री जिनवर ईस । बिहस्त गए सियर गिरि सीस । कूट  
 निर्जरा ऊपरि जाइ । जो गरोध कीनौ जिनराइ । आयु अन्त पहुंचे निर्वाण । आइ इन्द्र करि सिव

कल्यांन । सुनर असुर तिर्यंच खगेस । वंदै रज शुनि कैरै फनेस ॥ महिमां निर्जर कूट विथार । निज निज थांन गए विथार ॥ सोवर कूडन मै जो कोइ । सुनर गति लहि सिवपतिहोइ । मन बचकाय भक्ति चित धरै । नरक पसु दोन्यौं गति हरै । आगै और कथा सुनिराइ । निज जात्रा कीनी मनलाई । कौसल नांम देस विष्यात ॥ तहां अयोध्यापुर अवदात । रामधन्द् नांमां अवनीम । आइ बहुन नृप नवावै सीस । पटरानी सीता संयुक्त ॥ भोगै भोग निगमके युक्त । एकदिवस थिति सभा मझारि । धर्म कथा महिमां विस्तार ॥ तिहिं अवसर इक खगपति आइ । अहमिंद्र दुतिवंत सुभाइ । आइ सभा भे देखे राम । कर जुग जोर कियौ परनांम ॥ आज्ञा लहि नमत्र थिति भयो । धर्म कथा सुनि वेचित दयो । औसर पाइ कहै खगवात । जीव उथारन धर्म विख्यात ॥ लहि सुछेप योग जिय सार । भवि जीवननिधिउतरै पार । सुम उपयोग जुसाधन करै । तौ मन बंछित कारिज सारै ॥ \* दोहा \*

कहै व्यौमचर मिष्ट बच । सुनौ रामजी बात । सिपर सुभर पुनीत गिरि । नमत पाप सत्र जात ॥

\* सारठा \*

सुनिसु व्रत जिनराज । सिव कल्यान कहते भयो । तिनकी जात्रा काज । जात हते हम भाव सौं ॥

\* दोहा \*

देखि सभा हम आपकी । धर्म कथा संवाद । सुनि आए लखि दरस तुम । भयो हिए अहलाद जात्रा के बच राम सुनि । सुनि सुव्रत कल्यांन । संघ ब्यारि विधि संघ लै । ततक्षण कियौ पर्यांन ॥

\* चौपाई \*

करतदान पूजा श्रुत सौन । कलह विवाद करत धरि मौन ॥ खेचर आदि संघ बहु भूप । मधुवन

गए सुथान अनूप ॥ पूजा सामग्री सजिपार । मन बच काय भक्ति चिन्धारि ॥ जै जै करत चले गिरि जहां । मुनि सुव्रत कल्याणक तहां ॥ पूजा करि गुनगाय अनन्त । निर्त-क्रियो हिए धरि सुबिबेक ॥ दांन अल्प दियो तहां राम । फुनि आए हर्षित निज धाम ॥ राय सहस चाहु भूपेंद्र । स्वगपति आदिक नभैं सुनेंद्र । कोटि एकपैतालीस लाख । दिक्षा लीनी श्रीजिन साख । धरि बैराग महातप कियो । कर्म रिपु सुजलांजल दियो । विविधि परीस्या सहि तिंहि थान । धर्म शुक्ल फुनि धाखौ ध्यान केवल ज्ञान कियो परतक्ष । भई आतमा केवल सुक्ष । निर्जनाम कूट के सीस । मुक्तिगए द्वैभिवन ईस ।

\* दोहा \*

तिंहि थानक मुनि ध्यान धरि । पायौ पद निर्बान ॥ मुनि सुव्रत पर्यंत नमि ॥ संख्या करौ बखान ॥

\* अडिल \*

एक ऊनसतकोडा कोडि बखानिए । सितानिबैं कियो लाखनौ जानिये । नौसैं अधिक निन्याणबैं मुक्ति गएतहां । सिखर मुमेद सुकूट निर्जरा हैं जहां \* दोहा \*

एक बार एक कूटकौ । जो नरबंदे कोइ । कोटिप्रोषधी फल लहैं । सिवपद पावै सोइ ॥ ऐसे सिखर मुमेर नग । महिमां कहत न अंत ॥ बनबच काया भक्ति सौं ॥ मनसुख जलधि नमंत ॥ लोहाचार्यतना बचन । सिखर महातम बर्न ॥ तिहप्रति मनसुख सिंधु कहि ॥ नरभाषा मन हर्न ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते समेदांचल माहात्म्ये भाषा यामन सुख सांगरण वर्णन निर्जर कूट तैं मुनि सुव्रत नांथ मोक्षगमन नाम वर्णने नाम ईकीसवां पर्व अंपूर्ण ॥ २५ ॥



## \* सवैया \*

आठो अपराजित विमान सों जनम लियौ मिथुला नगर तात विजय सुराईहें ॥ विप्रो देवी नाम मात  
हरित वर्ण गात पंद्रह धनुष कंज चिन्ह सुख दाईहें । आयु है वरप दस सहस सुमेर गिरि प्रभव सुकूट सोस  
सिव पदपाईहें । ऐसे नमि नाथ नेमि धार के मन सुख सिंधु प्रनमि चरन हिए हर्ष द्वाइ ह ॥

## \* दोहा \*

गए वर्ष षट् लाख जब । मुनि सुव्रत सिव लोक ॥ जनम लियौ नमि नाथ तव तिनपद मेरी धोक ।  
गर्भ जन्म तप ग्यांन सिव । एई पंच कल्यांन । पढ़े सुनें अर्चें त्रिविधि ते पावैं सिवथान ॥ चौपाई  
शुभ सहस एकशत मान । जंबूदीप जिनेश बखान । मध्य सुमेर मनोहर अंग । एकलाख जोजन उतंग ।  
ताके यमदिसि क्षेत्र बशंत । भरत नामजुत देश महंत । आर्यपंड वत्स हैं देम ॥ बन उणवन सररूप असेस ।  
कालिंद्री कूलजल भरपूर । अति गंभीर उर्मिजुन भूर । ताही के उपकंड ज बसैं । को संवीपुर उत्तम लसैं  
नगर सच सुरसुरी समान । बसु विधि पूजैं श्री भगवान । पढ़े जैन श्रुत निज मन लाइ । चौ विधि दान  
देइ सुख दाइ । प्रार्थ नाम नृप राज कंत । वंश इरुथाक मध्य गुनवंत ॥ न्याय मार्गमें अति लवलान ।  
प्रजा दुल नासन परवीन ॥ इक दिन मुनि आहार के हेत । आए भूप गेहसम चेत । दै आहार नमि श्री  
मुनि चर्न । दुविधि धर्म मुनि पातिगहर्न ॥ करि नमस्तु पूछैं फुनि भूप । कहिए मुनि सम्यक्त सरूप  
श्रीजिन भाषित तत्व संरधान । इहनिहैचै सम्यक्त बखान । बर्नन करि मुनि गमन कराइ । ध्यान धर्यौ  
निर्जन बनजाइ ॥ प्रार्थनृपति सम्यक्त गुणधार ॥ राजकरैं पुरजन सुखकार ॥ पुखहिखन हैं रमनीक ॥  
नाम मनोहर सिव वृथलीक ॥ तहं आए केवली मुनीश्वर । जुगधर नाम नमे सो ईस । बनके नगसेवा

अनुकूल । हर्षे सहित भए फलफूल । जेयजय शष्टदेव तहंकरै । पूजै जिन धुति उच्चैरै । यहअचिजलखि  
मालाकार । षट्कतु फलसु मनोत्कर सार । धर नृपभेट असीस जो देख । करमुकूलत करबैन कहेइ । तुम  
वन आएहै केवली । सिवनिकेत निरखारै गली । सुनिबच नृपहै पुलकित अंग । नमन चलयौ पुरजन  
ले संग । लैवसु दर्ब अवि पद कंद । दुहुंन कर्म कुलाचल भंग । सागरी अनगरी धर्म ।  
सुनत हिए नृप नास्यौ भर्म । उपज्यौ प्रसम मोह करि छीन । निज पद श्री धर सुनको दीन । आप  
दिगंबर पद आदर्यौ । जन्म जन्म कौ पातिक हर्यौ । भाई माधना खोडस जहां । तीर्थकर पद  
बांध्यौ तहां । विविधि प्रकार महा तप कियौ ॥ अंत समैं संन्यास सुलियौ ॥ अपराजित विमान में  
जाइ । पदअहमिंद्र ल्यौ सुखदाय ॥ जिन पूजा करि लै सुर संग । सुकल बर्ण भास्वत सुत्रि अंग ॥ सब  
मिलि अमर समा थिति होइ । सात तत्व चरचा चित जोइ । आयु काशु भोजन उस्वास । मै पूरव भव  
कियौ प्रकास ॥ क्रम क्रम करि सुखसिंधु मझारि । सेषमास षट आयु विचारि ॥ सोअहमिंद्र निरंतरसंत ।  
पूजै जिन गुन गांन करंत ।

\* दोहा \*

आगै अब सुनि मगध पति । नमि कल्यानक ध्यान । धर्म पूगट करि सिव गए । अष्ट कर्म अरिदान

\* सर्वैया \*

जंबू दीप मध्य मेर दक्षिण भरतक्षेत्र । तहां आरिज खंड बंगदेसमौ रहै । तामै है नगरनाम मिथुला  
पुरी सुधांम बन उपवन सर कूप बहु ठारै है ॥ उन्नत नगर कोट कांठुरे बिाज मान मन के हरन  
हार छबिपुर धारै है । उन्नल अवासु केतु पवन चलत इमि कहत इहां कीसम सोभा नहि आरहै ।

## \* दोहा \*

विजय सैन अघनीप तहं । करै पूजापते पाल ॥ जार चौर ठग दुष्ट जन । इति भीति सब टाल । बिप्रा पट रानी सहित । भोगि भोग सुभूप । तदनंतर इक कथन अब सुनि मगधेस अनूप । \* अडिल \* प्रथम नाक नाकेस समा में थिति करै । धर्म कथा संबंध अबहि हिय में धरै । ग्यांन दृष्ट लखि कहैं नभी जिन राजजी । मिथला पुर अवतार होइ बृषराजजी । \* दोहा \*

हरि आग्या लै धनपती । आइ रब्यौ पुरसार । नौ द्वादस जोजन प्रमिति । ग्रह ग्रह मंगल चार । तीन काल दुहुभि बजै । बरषै रतन मनोग । साढे द्वादस कोटि मिति । श्री जिन जन्म नियोग ॥

## \* चाल छंद \*

एक दिन निज मंदिर माहीं । जिन मात सैत कराहीं । निशि अंत सुम सब देखे । प्रातहि पति पाशि विशेले । सोई चरचय अहमिंद्र । थिति गर्भ कल्यान जिनेंद्र । आए तहं सुरनाकेश । करिकै निज उत्तम भेष । हरि पीठि थापि जिन मात ॥ करि पूजा हिय हरषात । अश्वनि बदि हुतिया जान । हरि कीनौ गर्भ कल्यान । सेवै देवी जिन अंब । त्रिभवन पति गर्भ अवलंब । निज धाम गयौ पुर ईस ॥ हिण भक्ति बुविस्वा बीस । क्रमसै नवमास वितीत । जिन भाषी पूरब । रीति । अषाढ बदी सुमबार दसमी नमि जिन अवतार । \* दोहा \*

आए देबी देव पुनि । चौं निकाय सुर ईस । गजपै थापि जिनेंद्र तब । गए मेर गिरि सीस ।

## \* सवैया \*

प्राबसामान जिमजिन बिधान करि अंतुक अभूषन तन पहिराईयो । लेइबसुद्रव सुचि चरन चढाय

तब बहु बिधि युति प्रभु गुन गाईयो ॥ फेरि ऐरापति थापि अवधि न जाय जपत जय सुर सुर जिन पुर आईयो । मात गोद थापि नृत्य करि निज थानक गयो मन सुख सिंधु असे प्रभु सिर नाईयो ॥

\* दोहा \*

तन उन्नत पंद्रह धनुष । हरित बर्ण हुति वंत । आयु वर्ष दस सहसकी । लक्षण सुगुन अनंत । सहस अढाई बाल जिन । बीते नभिय जिनंद । पांनि ग्रहन करि राज फुनि । कौनों प्रजा अनंद । थारि अनुव्रत नीति पद । प्रजापाल हिय हर्ष । तीन ग्यान धरि धर्म जुत । सहस पंच गत वर्ष ॥

\* चौपाई \*

एकदिन श्री जिन बन में गए । नाना बिधि हुम देखत भए ॥ कमल सरोवर जल करि हीन ॥ मछिन जलज पल्लव सबछीन ॥ तनछिन लखि हियहै बैराग ॥ आतमीकपद करि अनुराग ॥ द्वादस भाव न करै विचार । अथि रूपा जान्यो संसार । इतनेमै लौकांतिक देव ॥ आय जै जै करि स्वय भेव ॥ धन्य धानि निज निज गुनधार ॥ भब्य भाव बुधि तान हार ॥

\* सवैया \*

अहो नाथ तुम बिन कौन इह काज करै दुर्द्धर । बरत तुम बिन कौन गहिहैं ॥ बसु बिधिरूप धरि जीव गुन नासि कौनों असे कर्म । बैरी बिन ध्यान कौन दहिहैं ॥ निज गुनपाय लौका लौककौ प्रकास करि सिव थान जाइ जीव थि होय रहिहैं । मन बचकात मनसुखसिंधु सेवै तुमसे उभव दधितरि सिवपुर लहिहैं ॥

\* दोहा \*

अस्तुति इह बिधि लैक सुर । करि बैराग दिढाइ । ब्रह्मलोक बासी अपर । नमि नमि थानक जाइ ॥

## \* चौपाई \*

विजयसेन पालकी बुल्याये । पुलोम जाय तिन जिन बैगये । बनमें जाय दुक्कल उतार ॥ नमः सिद्धेभ्यः  
 सुख उच्चार ॥ कायौत्सर्ग ध्यान धरि दयौ । तप कल्यानक सुरपति क्रियौ । सहस एक नृप नमि नमि  
 नाथ । लीनौ तप क्रियो सिव साथ ॥ मनपथै तब उपज्यौ ज्ञान । बला वृत कीनौ तिहि थान । जाइ  
 सूर्य गिरि क्षीर आहार । देत राउधर लीनौ सार । पंचात्रय तहां सुर क्रियौ । देखि नगर जब दरख्यौ हियो ।  
 फुनि प्रभु बनमें जाय तुरंत । निश्चलांग होइ ध्यान करंत । प्रीति वर्ष नै रह छदमस्थ । च्यारि घातिया  
 करमनिस्थ । मगि शिर सुकल रुद्र थिति जानि । नमि जिन उपज्यौ केवल ज्ञान । समो सरन रचियौ  
 धनदेव । सुर नर पसु आए स्वय मेव । पूजा करि बसु दर्ब चढाइ । निज निज सभावैठ हरषाय । सत्रह  
 गणधर सुखदातार । श्री जिन बांनी परखनहार । सहस बीस सब संघ बतांहि । ग्रंथ बृद्ध भय बरन्यौ  
 नांहि ।

## \* दोहा \*

देस देस उपदेस करि । समो सरन नमि नाथ । गए वर्ष पचीस सत । कात सुगसुर साथ । रहीं आशु  
 इक मास मित । गए सिखरि गिरि सीस । प्रभव कूट परि ध्यान धरि । भए सुक्ति केईस । अडिल  
 रहे सेष नख केस शक्र रचितन तहां । मलया गिरि श्रीबंड प्रमुख सर साचि जहां । मनम्यौ अगनि कुमार  
 मुकट मणि कांतिसौ । पूगटी अगनि महंत भस्म करि सांतसौ । \* दोहा \*

सोरज भालनि लाय करि सुर नर खग पसु सर्व । शिव थांनिक पूजा करै हाथदेइ बसु दर्ब । मास  
 अंषाढ सुक्लषण पक्ष तिथि अष्टमी महंत । विवहारी बसुगुन धरे निश्चै सुगुन अनंत । कल्यांनक निर्बान  
 करि । हरि अपनै पुरजाय । सो प्रभास बरकूटफल कोकविजन बरनाइ । भाव सहिततहं जाइजो पूजै

नमि शिवथान । कोटनीस सुप्रोषधी । वर्त क्रियौ फल जान । जितने मुनि तिहि थानसैं । लियौ सुकनि पद सार ॥ तिनकीमें संख्या कहौं ॥ श्रीजिन श्रुत अबुसार । नौसैंकोडा कोडिभिति । अरु पैतालिस लाख सात सहस नौसैं अधिक ॥ ब्यालीस श्रीजिन भाष । मेघदत कोकथन अब । सुनिश्रेणिक मनलाइ । संघ सहित लै शिखर नामि । तपकरि सिवपुरजाइ ।

\* चौपाई \*

श्रीपुर नाम नगर इक बसैं । धनधान्यादि सहित जनलसैं । महा बर्तनामा भूपती । शिव सेनापति रानी सती । दंपति भोग करत दिन गए । मेघदत सुततिनके भए । पाइ पिता पदराज करंत । निति प्रति अरुचै श्रीअरहंत । श्रीषेना तिनकै पटनारि । सील सुलक्षण सबयुन धारि । इकदिन नृपरानी जुततहां । कीडा हेत गयौ बनजहां । लखे बसंत सेन मुनि राइ । भक्ति सहित भूपति शिरनाइ । धर्म बुद्धि दै धर्म बखान ॥ मन बचकाय सुनौदे कान ॥ छुनि मुनि आगम सूछि नरेस । बरनन करै सहित उपदेस । सिखरि महात्म कह्यौ सुभाय । जात्रा फल सिव पंथवताय ॥

\* दोहा \*

नमस्कार करि भूपतव । आयौ अपने गेह । जिन मंदिर में जाय कैं । पूजा करि धरि नेह ॥

\* चौपाई \*

व्यारि प्रकार संघ लैं साथि । जात्रा हेत चल्थौ नरनाथ । साततल चरचा भितचाव । दान व्यागिबिधि देत सुभाव । क्रमक्रम से मधुवन में गए ॥ मधुक्कुटु समछवि देखत भए । जायकुट परि पूजाकरी ॥ जय जयजय आख उचरी । इतने मे चारन मुनिराज । आए जुगल सुधर्म जिहाज ॥ जिन श्रुति कीनी प्रसेम सरूप । मुनि चित मै बैराग्यौ भूप । निज पद जिन सुतकौं राइ ॥ मुनि पदनमि तप लै शुखदाइ । एककोटि पैतालीस लक्ष्य । भए महा मुनि मुनि परतक्ष । तपकरि अष्टकरम गननाश । ततक्षिन लौकालौक

प्रकास। अविनाशी पद पायौ तहां। कूटप्रभास नाम है जहां। \* दोहा \*  
मन बचकाया शुद्ध करि ॥ प्रणमैं शिवर सुमेर ॥ सुरनर सिवपद पाइ करि ॥ जन्म धरै नहि फेर ॥

\* अडिल \*

लोहाचार्य धर्म ग्रंथ बर्णन कियौ प्राकृत रूप अनूप कठिन अति वरि दियौ ॥ निज कल्याणक पाठ  
हेत अति चावसौ ॥ भाषा मनसुखसिंधु रचिबहु भावसौ ॥

इति श्री काश्या संगे लोहाचार्य विरचित तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सांगरेण वरणनं प्रभास कूटने नमि  
नाथ मोक्षगमन वर्णन नाम बाईसवां पर्व ॥ १२१ ॥

\* सवैया \*

सील सिंधु धारक बिदारक मदन दल सुरी पुर जन्म सुर संभरत हैं ॥ सागर बिजय पिता सुमाता  
शिव देवी नामक चिन्ह चरन सोभासु धरत है ॥ उन्नत सुतन दस धनुष सजल धन बरन बरस आयु  
सहस चरत है ॥ ऐसे नेमनाथ नेमधार जन सुख सिंधु नमत चरन सिव संपति करत है \* दोहा \*  
नेम नाथ जिन के चरित ॥ सल्प मात्र मनधारि । सुनि श्रेणिक मनलाइकै । ज्यौं पावैं भवपार ॥

\* चौपाई \*

दीप प्रथम जंबू बरनाम । मध्य सुदर्शन सबसुखधाम । भरत क्षेत्र दक्षिण दिसि बसै । अवानि तहां खंड  
खंड जु लसै । आरिज खंड खंड सिर मोर । तदवत सोभा औरन ठौर । तहां देशबहु बसैं असेस ॥ जाइ  
कैं जिन बृषपदेस । कुरजांगल इकदेस विसाल । प्रजा सुखितसौहै गुनमाल । गज पुरनाम नगर प्रसिद्ध ।  
बर विभूत जुत सौहै रिद्ध । लक्ष्मीचन्द्र नृपति परचंड । राजकैं बहुआरिजन खंड ॥ श्रीयमती नामा प्रिय

प्रिया । सीलमुलक्षण सुंदर तिया । सोलम स्वर्ग देवहक आइ । तिन दोन्यौ के सुत उपजाइ । सप्रतिष्ट अभिधान विचार । धरौ गणक सुभलजन निहार । क्रमक्रम बड़े बाल तियथान । रूपमुलक्षण अतिगुणवान । शास्त्र शास्त्र बिद्या पढ़ि लई । नृपनिज कारिज मनमें ल्याइ । पानिग्रहन पिताकरि दियो । नारि सुनंदा सुत जुग कियो । नृप निजकारिज मनमें लइ । राज दियो निजसुत सुखदाइ ॥ जाइ सुमिंद्र मुनि शिर नयो । पंचमहाव्रत तिन गहिलियो । दुछर तप श्रचंद सुनीस । करै हानि त्रिभुवनक ईस ॥ \*दोहा\*

पंच अब्रत राइ सुत लिये पिता मुनि पास । करि नमोस्तु पुर जाइ निज पूरे सबकी आस ॥

\* चौपाई \*

राज करै सुप्रतिष्ट नरेंद्र । अरिगन गज मद हरन शृगेन्द्र ॥ प्रजा पुत्र सम पालै राइ । इतिभीति भय दूर नसाय ॥

\* दोहा \*

तिस अवसर मुनि राज इक आए सब सुखकार । नाम जसोधर जगत हित उपजावन गुनधार ॥

\* अडिल \*

देखि नृपति ऋषाइ अग्रहै भक्तिसौं । तिष्ठ तिष्ठ मुख चवै करे श्रुति सक्तिसौं ॥ धन्य तपोधन धीर बीर तुमहौ सही । जेतुमसैवचरन मुक्ति तिनही लही ॥ \* दोहा \*

अस्तुति करि नव भक्ति युत दाता गुन पुनि सात । शुद्ध आहार सुमुनि दियो देखि नृपति हरषात ॥ अपैं निद्धि मुखतैं जुकहि ध्यान धरे बनजाइ । पंचा चर्य अमर कियो देखि नृपति हरषाइ ॥ \*चौपाई\*

सुख सागर मैमन नरेस । साधिलिये बहु नृपके देस ॥ बहुत कालचीते इसरीति । भोगे भोग नारिनर प्रीति ।



## \* अडिल \*

एक दिना नरनाह सहित नारी तथा । बैठे अति हित मनसो धरुपर जहां ॥ दिस विलौकन करत एक  
दिस देखियौ । उलकापात उद्योत नृपति तथां पेथियौ ॥ \* दोहा \*

सुप्रतिष्ठ नृप देखि इह मन विरक्त अति होय । तव धन पुत्र कलत्र ग्रह उल्कापत पिव जोइ ॥  
अष्टान्हिक पूजाकरी । निजमन हर्ष बढ़ाइ । अष्ट द्रव्य शुभ भाव उत श्री जिन चरन चढ़ाइ ॥ निज  
सुतकौं सब राजदे भाँवै भावनसार । सुमंदिर जिन निकट नृप मुनि मुद्रा अवधार ॥ \* अडिल \*  
पंच महाव्रत सुमति श्रुति त्रय धारही । बसुकरि गुनमन धारि जिनात्म विचारही ॥ द्वादस विधि  
तप करहि लीन मन तत्व सौं । सैह परीस्या विविधि आपने सत्वसौं ॥ \* दोहा \*

षोडस कारन भावना मन धरि करहि विचार । तीर्थकर सुगोतकौं बंध कियौ सुखकार ॥ अंत समाधि  
मरन कियो पंच अणुव्रत नाम । तथां जयंत विमानमें उपजे सब सुखधाम ॥ \* चौपाई \*

अहंभिद्र पदवी तिनधार । अंत महूरत जोवन सार ॥ दिव्यरतन मुक्ताफल भले । सहित सुगंधित  
माला गले ॥ एक हस्तकी उन्नत काय । अति सुंदर लक्षण हितदाय ॥ समुद तीस अरु तीन प्रमान ।  
आर्विल तिनकी करी बखान । लेस्या शुक्ल भाव मनधर । छहोद्रव्य की चरचा करै । नोः प्रविचार भोग  
सुखजोइ । सील सहित नारी नहि होइ । इत्यादिक सोभा गुनरीत । आन्य शास्त्र सौ जानौं भीत ॥  
इह जिय जिन उपजै हरिसं । सो मुनि श्रीनिक है अवतंस । अथै जंबू बरद पसु नांम । भरत क्षेत्र  
तामै अभिराम । देस बत्स नाम तहं एक । कौशांवीपुर है सुम टेक । मधवा नृप नागर प्रतिपाल । दुर्जन  
जन कौहैं उरसाल । वीत सोकनागीपटनारि । सीलसुलक्षण अति गुनधार । रघु नांमां तिनकै सुतभयो ।

सब जन बल्लभ सुंदर ठयो । वा नगरी में अति बल्वन्त । सुमुख नांम हैं सेठ महंत । देस कलंग नगरपुर दत । तहसैं आयो बीरक दत । बनमाला तिस तनी । रूप सुलक्षण सोभा घनी । सुमुख सेठ निज ग्रह में थाप । बहु आदर करि राखैं आप । कृत बसंत बन क्रीड़ा न गयो । बनमाला तहें देखत भयो । सुमुख कांम सर पीडित होइ । अति बिह्वल है चित्तमें जाइ ॥ बीरदत कौं अति धन दियो । देसांतर कौं तिन गमन कियो ॥ तिस पीछें उसकी वह नारि । निज ग्रह राखि कै सुखकार ॥ बस्त्राभरण दिए बनवाय ।

\* दोहा \*

कांम क्रिया करि सुख उपजाइ ॥

कार्य अकार्य नहीं लखैं । कांम अध जे होइ ॥ जो जन्मांध मनुष्य सब । मारग कौं नहि जोइ ॥ द्वादस बरष बीति जब गए । बीरदत तव आवत भए ॥ देखि चरित्र शोक तइं भयो । लज्जित है बन में उठि गयो ॥ धृग संखार अक्ष के भोग । लेन जोग हैं श्री जिन जोग । दिक्षा लै सुरहुवी सोर । चित्रांगबसौ धर्म मझार ॥ सुमुख सहित बनमाला एक । दिन आहार दियो विवेक ॥ सहित सुधर्म सिंध मुनिराइ । पुन समर्जन करि सुखदाइ ॥ चपलापतन भयो इककाल । दंपति प्रांन तजे तत्काल । येही भरत जो क्षेत्र बिसाल ॥ देस तहां हरि वर्ष रसाल । पुरी भोग पुरनांम सुबसैं ॥ नृपति प्रभंजन अति गुन लसैं ॥ बंश बाध हरिबंस बिख्यात । मरकंडनारी सुखदात । सुमुख जीव तिनको सुत भयो ॥ विद्याजुत जोवन तन लयो । वही देशमें शीलपुरेश । वज्र घोषनारी शुभ बंस ॥ बनमालाचर इनकै आई । पुत्री विद्युन्माला थाइ ॥ पूरन पुन्य जोग इहनारि । सिंहकेठ परण सुखकार ॥ ते दंपति है भोग कराइ । एकदिन बन क्रीड़ाके काज ॥ दानपुन्य करिजुग सुखपाइ । गए नारिनर सब सुखसाज ॥

\* अडिल \*

वादिन सौचित्रांगद देव सुआईयो । देखि पूर्व भवं जांनि रेश उपजाईयो ॥ लैदोन्यौ कौ देवविमानं  
चढाईकै ॥ खंडकैं तनु सिंधु डारिहौ जाईकै । प्रख भव जो सुखखमित्र रघु नामसौ । पालि अनौवृत देव  
भयौ सुखधांससौ ॥ कहै देवसुनि देव पाप जनभंगकौ ।

\* दोहा \*

संसारणव पतनकौ । कारणहै इक काज ॥ रवि प्रभु कोय बचन सुनि ॥ अलुंकपा चित साज । चंपा  
पुर के अरण में । दंपति थापे जाइ । गमन कियौ निज अमरपुर ॥ कियौ काम सुख दाइ ॥

\* अडिल \*

तापुर कौ नृप चंद्र कीर्ति सुतरहित है । मृत्यु भयौ तिसकाल सचीमन चितहै ॥ करै बिचार नरेस  
थापिए कौन कौ । गज सुख कलसा देइ न्हावैं जौन कौ ।

\* दोहा \*

गंधोदिकसौ पूर गज । छोडि दियो तिसवार ॥ गज कलसा लै बनगयौ । सिंहकेतु सिंठार ॥  
प्रजा सहित सब सखिवते सिंह पीठपै थाप । करि अभिषेक नरेस पद । सिंहकेतु नृप आप ॥

\* अडिल \*

मंत्री पूछैबात कहौ नृप कौनहौ । तात मात फुनि जात देस पुर जौनहौ । सुनि हरि वर्ष सुदेस भोग  
पुराइहौ । परभंजन हम पिता मृकंडू माय हो ॥

\* दोहा \*

सिंधकेतु तिस पुत्र हम रिपु सुर हम लैआइ । सुनि नागर मंत्री सबै । हिए में अति हरषाय ॥

\* चौपाई \*

मरकंडू मावा सुत जांनि । मारकंडतिस नाम बखानि । फुनि तकिंसुत हरि गिरि भयौ ॥ हरि गिरिकैं हिम

भिर सुत ठयौ ।

इत्यादिक हरि बंसमें । राजा भए अनेक सुरसेन नृप अतिबली । विद्या अधिक विवेक ॥ निजभुज बल अरिजीति बह । कीनों अति सुख काज ॥ निज नामा कित नगर करि ॥ करै जहां कौ राज ॥

\* दोहा \*

\* चौपाई \*

तिनके सुरवीर सुत भए । जुगनारी सुत तिन सुखलए । प्रथम धारिणी नामा सती । दुतिय सुकांता अति गुणवती । धारिणिसेन सुत उपज्यौ एक । अंधकविष्टी सबगुण टेक ॥ नाम सुकांता दूजी तिया । पति िष्टी तिन सुत जनमिया ॥ अंधकविष्टी नृप पद पाइ । नाम सुभद्रा अति सुख दाइ ॥ पुत्र भए दस अति गुणवान । तिनके नाम सुकरौ बखान ॥ \* दोहा \*

जेष्ट तनय सागर विजय सागर वतगंभीर । दानावैष सुर दुम सरस अरु वीरनि मैधीर ॥ \* चौपाई \*  
जिनके तीर्थकर अवतरै । कौबुद्धि तिनको वर्नन करै ॥ दुतियक्षोभ हैं पुत्र उदार । सत मित समुद्र तीसरो सार ॥ हिमवन तूर्य बिजै शुभ खान । पंचमष्टम अचलप्रमान ॥ धारन सप्तम अष्टम देख । धारन धारन पुन्य विशेष ॥ अभिनन्दन नवमौ गुन धार । विद्या रूप कला विस्तार ॥ दसमैं हैं वसुदेव मनोग । रति पतिवत सुन्दर तन जोग ॥ अंधकविष्टी दस सुत युक्त । दशलक्षन द्रव बहु सुख भक्त ॥ तनया जुग उपजी सुख दाइ । कुंती मांझी सुंदर काय ॥ समुद्र बिजैके नारि प्रवीन । शिव देवी रानी गुनं लीन ॥ जिनके जठर तीर्थकर होइ । वर्नन करत सकत नहिं कोइ ॥ औरनके प्रिय तिया मनोग । करि विवाह सब अपने लोग ॥ पति विष्टीके पदमावती । प्राण बहभा अति गुणवती ॥ पुत्र भए त्रिभे तिनके सार । उग्रसेन आदिक गुण धार ॥ देवसेन दूसरो महंत । महोसेन तीजौ गुणवन्त ॥ एक

सुभा उपजी श्रुति रूप । इन कुटुंब सहित राजै भूप ॥ सूरी पुर नगर सुखदाह । सुर वीर नृप राज कराह ॥

\* दोहा \*

गंध मादन गिरि जहां आए सुनि तपसार । सुप्रतिष्ठ नामां तहां सब जीवन सुखकार ॥ नृप सुनि सब परिवार श्रुति सूखीर जहं जाइ । करि नमोस्तु सुनि धर्मको दिशालई सुभाइ ॥ \*चौपाई\*  
अंधकबिन्धी नृप पद पाइ । राज करै परिजा सुखदाइ ॥ फुनि सुप्रतिष्ठ मुनी सुर तहां । गंध मादन गिरि आए जहां ॥ निशा समै धरि व्यान सुजोर । करि उपसर्ग शत्रु सुर घोर ॥ सहै धीर धरि श्रीमुनि राइ । केवल ज्ञान सवै उपजाइ ॥ सुरनर खग आए तिस थान । पूजा करै नृत्य गुनगान ॥ अंधक बिन्धी गज चढि जाँ । जुत परिवार सुआयौ तबै ॥ करि नमोस्तु ब्रष सुनि मनलाय । सुर उपसर्ग वृच्छि सुनि राइ ॥ निज सुत भव छैनर ईश । सुनि हरष्यौ फुनि नायो शीसं ॥ \* दोहा \*

समुद विजयको राजदे दिक्षा लेह बिचार । अति तप करि शिव पथ लियो निज आतम सुखकार ॥

\* अडिल \*

सूरी पुरको राज समुद्र विजय करै । नरनारी पुरलोग सबनिको मन हरै ॥ सुनि श्रनिक मनलाइ जनम जिन राइको । शिव देवी उरआइ होइ सुखदाइको ॥ एक समय सुर ईश सभामै श्रुति करै । जिन जात्राके बचन सकल सुर उबरै ॥ अवधि ज्ञान सुजोय शब्द ऐसै कहै । समुद विजय ग्रह श्री जिनवर उपजै सही ॥

\* दोहा \*

ताही समय सुरसनै धनपति आजा दीन । नौ बारह जोजन तनी नगरी रचौ नवीन ॥ \* सोरठा \*  
पंचा चर्यकराइ आय धनंद रचना करी । अति उत्सव सुखदाइ गर्भ अगाउमास छह ॥ \* अडिल \*

शिव देवीकी सेव कुबालाचल बासिनी । करे छुमारी सर रमा नसुहासिनी ॥ बीतेहैं पटमास महा अति सरमसै । बहु उत्सव गुनगान नृत्य कर परम सैं ॥

\* दोहा \*

एकदिन रैनि सुसैनिभैं षोडस सुपन निहार । प्रख बर्नन जो कियौ ताहि देखि मन धारि ॥ कार्तिक शित शुभ छठि दिन ऊषा ऋक्षत्र बखान ॥ सो अहमिन्द्र सुर तहां गरभ स्थित भगवान । प्रातसभैं जिन मातउठि । मंजनकरिश्रृंगार । निकटजाइ पति सैंसुनैं । मुपनै फल सुखकार ॥

\* छंदपद्धटी \*

जिनमंदिर में जिन मात ॥ आइ सुर बनिता सेव करै सुभाइ केई नाचैं गुनगावैं विशेष केई सुकर दिखवैं शुद्ध सुरेभ केई बस्त्राभूषण हाथ लेइ । जिन माता के करमांहि देख केई ले सुमन सुगंध सौरै । पल्पंकरचैं सुखसहित धार । केई मंजन करि जल सु त्याइ । गज चरन प्रक्षाल अति सुभाइ । केई ग्रहकाज करै मनोक्ष । रस काव्य पहेली मात जोग । केई मंजन करत सेव । केई कर जै जै देव देव । इत्यादिक और अनेक रीति । निज निज काज करि करैं प्रीति । जिनमातानन सोभा लसंत । सुख वर्नन कहत लहन अंत । नवमास वितीते इसप्रकार । सुनि श्रैनिक जिम जन्मावतार ॥ \* दोहा \*

श्रावन शुक्ल सु छठि को । चित्राउड सुखदाइ । तीन लेख सुखकरन कौ । जन्म लियौ जिनराइ ॥ अपने अपने चिन्ह सौं । सुरजान्यौ सुविशेश । निज निज जान सु चढ़ि तहां । आए सकल सुरेस ॥

\* सर्वेया \*

सुरीपुर शक्रआय ऐशपति सजि ल्याय जिन जी चढ़ाय सुर मेर गए तवहीं । पांडुकशिला पैप्रसु प्रख सुमुख थापि क्षीरोदिक ल्याइकर कर छुंभज कहीं जिन कौ नहाय बसु द्रव्य चढ़ाय अति मनहरपाय नम

नाथ नामजवर्हीं । कहि गेह लाय मात अंक थापि नृत्य कर कहत सुफल सक्र पनौ मेरौ अवर्हीं

\* दोहा \*

कल्याणक जिन जन्म को । करि सुरपति निज थान । जाइ भक्ति बसि होइ हरि । करै भोग सुखखान

\* चालछन्द \*

जिन बाल अवस्था राजें । देखत सब जन दुखभाजें । जिन श्रवन कुंडल सौहैं । हुतिनील वर्ण मनमोहैं ।  
लटपट पगधरत मनो गैं । सबजीवन को हरैं हसो गैं । कसही कर करत बिहारैं । नरनारी जनहुख करैं ॥  
बसु सहस सुलक्षण काया । गुनकहत पारनहिं पाया । अतिसैं दसयुत जिनराइ । वह बाल क्रिया सुख दाय ॥

\* दोहा \*

तदनंतर वसुदेव सुत । कृष्ण नाम गुणवंत । आता हैं बलदेव जिस । बलनारायणशंत ॥ \* चौपाई \*  
जिनवर कीडादेखि सुभाइ । हर्ष हिए अति अंगन माइ । सब परिवारसहित नरईस । समुद विजै नृपराजै इस ।

\* अडिल \*

एक समय श्रीकृष्ण गये मुथरा तहां । कंशराय ह्वां भूपजुछ हूवौ जहां । माखौ मुथरा रायनारि जीवजसा ।  
गई तात के पासि कहै मो पति नसा । जरासिंधु मुनि बात कहे किन नाशियौ । अति गदगद ह्वै बचन  
तवै तिन भाषियौ ॥ कहै कौन श्रीकृष्ण कहां वहरहत हैं ॥ नास करैं छिनमाहिं जरासिंधु कहत हैं ॥

\* सर्वया \*

पुत्रन कौ आजा देइ सूरी पुरजाइ तुम आयसु को पाय सैन लेइ तव चले हैं । आदिदस प्रात सब आइ रन  
भूमि जुछ कीयौ नहि टले हैं । जरासिंधु सुत बिजबल सही न देखि भाग गए छिन माहिं सब मदगले

हैं । हारे सुत जानि और पुत्रन कौं आजा दीनी तेउ आइ हारि गए जान्यौ अति बले हैं । \* दोहा \*  
 समद विजय तबैं । मंत्री सो इक बात । कौनमतौ अब कीजिए ॥ ज्यौं होवैं कुसलात ॥ सुनि मंत्री  
 एसै कहै । मुनौं नृपति ममैवन । जोबलवानं विरोध है । तजे देश है चैन । नगर दूसरो कीजिए । इहां तैं  
 चलि सुनि राइ । जरासिंधु को मरन धुव । निश्चै कृसन कराइ । इह विचार मनमाहिं कर हुंडासोपिनि काल ।  
 दोष जानि ताजि नगर कौं । चले तबैं तत्काल ॥

\* चौपाई \*

सिंधु देव जिन आगम देखि । अपनौं जन्म सुफल करि लेखि ॥ नौं द्वादश जौजन परमान ।  
 जल संकोच कियो सुरथान । नंदआय नगरी सुत्रि रची । मणि मानिक मोतिन करि खची ॥ जिनवर  
 सौध सत षनै किये । पंच षनैति षनै कै दिये । पंचाचार्य कियो सुरसार । सदन थापि जिन हर्ष  
 अपार । ऐसी क्रिया करी सुरराइ । अमर नगर कुनि गमन कराइ । समुद विजै नृप सोभित जहां  
 रत्नाकर त्रयुत तहां ॥

\* दोहा \*

सुखकर श्री जिन नैमजी । क्रीडा करै सुभाइ आगैं बर्नन और कछु । सुनिए श्रेनिकगइ । जरा  
 सिंधु लेखि पुत्र कौं । हारजानं दुख मानि काल जमन आग्या लई । गमन सूरपुर थान चौपाई  
 आय देखि सूरीपुर तबैं । जान्यो भाग गए जन सबैं । आगैं देखि चलयौ कुलसुरी । माया रची भक्ति  
 अनुसरी । चिता अनेक जलत तहां करैं । रुदन रूप नारी तन धरैं । कालज पूछै मन लखिनारि । कारन  
 कौन कहौ तुम सार । देवी कहै सकल यहुवंस । अग्नि जले सब भए निंस । सुनिकरि फिरि आयो  
 निज थान । पिता अग्र सब चरित बखान \* दोहा \*

सुख करिकै तिष्टै तहां ॥ कारन हुवौ और राज ग्रही कैवनिकइक । गयौ द्वारिका ठौर । रत्नादिक



बहु लेइकैं । फुनि राजग्रह आइ जरा सिंधु कैं जाइ तट । रतन सुभेट कराइ । \* चौपाई \*  
 रतन देखि वृछै नराय । सब विरतंत तिन दियो बताय । सुनि जाहु कौण्यौ नरनाथ । लडने चल्या  
 चमूळै साथ ॥ सुनि श्रीकृश्न और बलदेव । मनमै उपज्यौ अति अहमेव । मत्र विचारनेम ढिग गए ।  
 जिन मुख हर्षित देखत भए । जयउपनी जानी मनमांदि । जीति होय हम मिथ्या नांदि । सेन्याले आए  
 रनबीच । शुद्धभयौ अति बहु जनमीचि । श्री श्रीकृश्न जीति तवभई । तीन खंड जन आज्ञा लई ॥ आने  
 लोग बहुत तिसमै ॥ सुख मै काल बहुत तहां गमै ॥ \* सर्वैया \*

इकदिन सभामाहि सागर विजैकौं आदि दसो भ्राता बैठे अतिमन हरषायकैं । कृश्न बलदेव पांच पांडव अनेक  
 नृपबल बर्नन बात कहै सुखपाइकैं । कोई बलदेव कौं बतावै कोई पांडव कौं कृश्न बलवानं कहैं अन्य कौं बताइकैं  
 तवबलदेव कहैं काहे झूठी बात कहौ नेमनाथ अति बली देखो लुमजाइ कैं । \* सौरठ \*

इह सुनि तबहिं मुरारि । कहे नेम बल देखिए । तिस अवसर मनधारि । आए अब निज पेषिए ।

\* चौपाई \*

तदनुकूल है बातकैं । बैन परस्पर वल उचरैं । कहै कृश्न प्रभु नेम कुमार । बलदेखन इच्छाप्रबधार । स्वाभाविक  
 जिन हाथ प्रलंब । करकनिष्ठका चक्रनलंब । नारायण निज बल अति कियो । सरल करन अंगुरी मन  
 दियो । स्वर्ण शाकुली फुनि पहराइ अंचलेंच बिहल दुखदाइ । जंचौ करिजिन कर पंकाय । कृश्न छुलाय  
 आति हरषाय । लज्जित है नाथौ निज सीस । ठुम प्रभु तीन भवन बलईस ॥ इकदिन सिव देवि ढिगजाय ॥  
 निज सुतव्याह कसे किन माइ । कहै मात सुनि कृश्न कुमार । ठुम इहवात करौ सुविचार । आज्ञा लै आए  
 निज थान । निज नारी सौं बात बखान । ब्याहमनाथो केलि कराय । नेमनाथ सौं आति हरषाय ॥ \* दोहा \*

ऋतु बसंत आए नहां । फूले सब बनराय । रोगी गंधारी सबै । निज जुत है बनजाइ ॥ जल क्रीडा प्रभुसँ करै । कहि बिवाह की बात ॥ हर्षित जिन मुख लखि तैबै ॥ हर्ष हि ए न समाय ॥ क्रीडाकरि कटि बस्त्र तजि । प्रखालन हित काज ॥ जंबूवती मख उच्चरै । हम न जोग इह काज ॥ धनुष संख अहिसेज कौं । दलन पराक्रम धार । सो कटि बस्त्र न देइ हम निर्जल कारन सार । सतभासां सुनिइम कहै ॥ नवदि मूढ एबैन । तीनलोकैमें अति बली त्रिभुवन पति ए अैन । \* सर्वैया \*

जिन सुनि बैन आए आयुध सदन मांहि संख धनु अहि सेज दलमल डारी हँ ॥ संख धुनि सुनि हरि आइकै चरन गेह धनुष टंकार सुनि अति भय धारीहँ । आए बलदेव थुति करत अनेक विधि कापै कोपन कीजे प्रभु तुम बल भारीहँ ॥ तीनहू भवन सक्र सेव सबकरै आइ चलयौ निज थान प्रभु विजती हमारीहँ । \* दोहा \*

निज मंदिर आए प्रभु । मनमें हर्ष अपार ॥ हरि बलमतो विचारिकै । पत्नी भेजी सार । स्वस्ति श्री सुम बांचिकै । उग्रसेन नृप राज ॥ राजल कन्यादीजिए । नेम बिवाहन काज ॥ \* सौरठा \* उग्रसेन पढ़ि लेखि ॥ हर्षिहि ए नसमातैहँ । लगन लिखाय विसैल \* चौपाई \*

आयौ लगन द्वारका जबै । अति उत्साह भयो पुरतबै । लगन लेइ द्विज दांन सुदइ । मंगल पांनि ग्रहन करेइ । सुभ मंडप बेदी तव करी । मणि मणिक सुक्ता रचिधरी । नृत्य बधावा मंगल गांन । गेह गेह उत्साह बखान ॥ सहज नेमतन अतिसो माथ । और षोडश सिंगार बनाय ॥ सब बिवाह सामग्र साथ । समद भिजै आदिक नरनाथ । उग्रसेन द्वारै जब गए ॥ पसुगन आइ पुकारत भए । सुनौं नाथ त्रिभवन पतिवात । बिन तकसीर हमारी घात । \* सर्वैया \*

सुनौदधानाथ हमउपरि दया विधायमहि छुड़ायसवजग जस लीजिए । तुम तीनलोककारन परबंधदयाहेत  
जानि सुखलास हमकीजिये । हाहा जिन तुम बिन जाईके पुकारै कहावतसै हमछूट बनसौं मिलाय दीजिए  
देखिनेम जिन कहै धृगैह विवाह इहे कारन जगत तजि स्वारथकौं पीजिये । \* अडिल \*  
स्यंदनेश प्रभु उतरि पाशि खोली जैं । दैअसीस सवन जाइ पसु हरये सबै ॥ द्वादश भावन भाइ  
विरक्त भए जहां । ब्रह्मोतर लोक अपर आए तहां ॥

\* दोहा \*

अस्तुति करि निज गुर गए । शक्रपालकी ल्याय प्रभु बढाय गिरि उजियै । गए सुआनंद पाप ॥

\* सर्वैया \*

परिग्रह त्यागि सब ध्याय तरुतल प्रभु अंनमः सिद्धेभ्ये मुसु तवही उचार्यौ हँ । पंचसुखी लौच करि  
श्रावन सुकल अठि मोह मंदनासि राग दोष सबटास्यौहँ । नृप एक सहस सहित सुभलियो तप आतम मुरस  
लौन महाव्रत धार्यौहँ । सुतप कल्यांनक अमरपति कीर्नी तप कत्र लेइ क्षीरोदिक सिंधु मांहि डार्यौ हँ

\* दोहा \*

प्रभु ध्यान में लीन है ॥ करै आतमांकाज । सीस नवाय गयौ तैं । अमरलोक सुराज । राजल इह  
सब बात सुनि । बली तैं गिरि नारि । अस्तुति करि सिरनाइके छुल्लनी व्रत धारि ॥ \* चौपाई \*  
नारायण बलदेवकुमार । करि नमोस्तु निजग्रह संचार । राजकरै श्रीकृष्ण नरेस । तीनखंड सुखकरन विशेस । श्री  
जिन बेला व्रत करिजैं । उठे आहारहेत फुनितबैं । इर्यापथ अवलोकनकरै । पट काया रक्षा मनधरै ॥ द्वारा  
वत पुरकै पसार । वीर दत्त नृप प्रभु निहार ॥ आगे आय नमोस्तु करी । विनय भक्ति तिन मनमें धरी ॥  
तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठो मुनि राइ । पडि गाहन विधि करि नर राय ॥ प्राशुक क्षीर सुभोजन दियो । अपनो जन्म

सुफल करि लियो ॥ अथै निच्छि जिन मुख उच्चै । पंचा चर्य अमर तब करै ॥ सदि द्वादस कोटि प्रमाण ।  
रतन वृष्टि नृप रुदन बखान ॥ दुंदुभि शब्द व्योम अनिवार । होय सुजल कनतन मनहार ॥ सुर  
द्रुम मुमन सुरभ बहु लिए । जैसै सकल सुरासुर किये ॥ एपांचौ अचिरज नृप गेह । करै परस्पर सब जन  
नेह ॥ नेभि जिनन्द बनमें जाय । अचल लोह आतम लौलाय ॥ षट पंचास अहनि जिन देव । छद मस्तक  
बस्ते स्वय मेव ॥ कस्मघातिया प्राकृति हानि । केवल ज्ञान प्रकास्यो भान ॥ सूक्ष्म थूल चराचर जिते ।  
युगपत् भासतहै सब तिते ॥ जीव अजीव सुगुन परजाय । गण समैमें सब दरसाय ॥ \* दोहा \*

महिमा केवल ज्ञानकी कौप्रवन बनराइ । कैतो वह गुन सिद्धमें कैजनै निज राइ ॥ अस्वनि सुदि प्रति  
प्रद सुदिन अपरान्हक थित सार । कल्यानक सुरपति कियो अति उछाह मनधार \* चौपाई \*

समोसरन धनपति रचि लेइ । तीन लोक श्री सोभा देइ ॥ तीन कोट गोपुरहैं च्यारि । नृत्य शाल नाचै  
सुर नारि ॥ पूरब बर्नन को उनमान । समो सरन रचना सबजान ॥ जुग जोजन परमान विशाल । क्षेत्र  
पाल राखे रखावाल ॥ गणधर एकादशहैं तहां । श्री जिन मुख धुनि उपजत तहां ॥ नौसत मन पर्येके धार ।  
अवधि धारि पंद्रह सौसार ॥ ग्यारह सहस नाग सत कहैं । सिष्यनिकी गिनती यह लहैं ॥ एकादश शत  
वैकिया युक्त । षोडस सो केवली प्रयुक्त ॥ वेद सतक पूरबके धार । गज सत भितवादी अतिसार ॥  
सथादस सहस्र परमान । सर्व संघ मित करी बखान ॥ तीन लक्ष श्रावकनी कही । एक लक्ष श्रावकहैं  
सही ॥ द्वादश सभा बिराजे भले । होत सुधुनियतिक टले ॥ \* दोहा \*

अलथ ज्ञान भेरे हिए सोभा अगम अपार । कौशिक सूरजि किरनि किम बरने अति बुध धार ॥

## \* चौपाई \*

आवैं सुरनर खग के ईस । पूजा करैं नवावैं शीस ॥ सुनि श्रीकृष्ण और बलदेव । पूजन आए तजि  
अह मेव ॥ धर्म सुन्यो मन अति हरषाय । शीस नवाय फुनि निजपुर जाय ॥ अर्द्ध चक्र सुख भोगै भोग ।  
करैं राज सब जन सुख जोग ॥ सुत प्रदुमन मदन पद धारि । भाउ सुभाउ संबु सुखकार ॥ सब परि  
वार सहित सुख करैं । पूजादान अधिक विस्तरै ॥

## \* दोहा \*

समौसरन श्री नेम जिन नाना देश विहार । करि आए गिरि मेरुं सुर करि जैजै कार ॥  
आए कृष्ण बलदेव पूजा करि धर्म सुन्यो प्रसन्न किया द्वारका की तिथि कहि दाजिये ॥

## \* सवैया \*

फुनि गन धर कहै द्वादश बर्ष पूरी तिथि सुकहींजिये ॥ दीपायन कोप जोग नगर भसम होइ जरद कुमार  
कर नारायण छीजिये । ऐसी सुनि शीस नाय जाय पुर राज करैं सका मन हरखिस सेती जानि लीजिये ।  
बर्ष सात सत नेम जिन । केवल पदवी धारि । आदि उन छप्पन दिना । अंत मास इकसार । उर्जयंत  
परजोग प्रभु । रोध कीयौ जिनराय । लघु पंचक्षर कालमें सिद्धि क्षेत्र थितिपाइ । चैत असित शुभ आदि

## \* दोहा \*

जै जै सुरनर खग सत्रकरैं । पूख कृत पातिग सबहरैं । सुर्युत सिखर सैल परिजाइ । सुनि श्रिनिक निहचै  
मनलाय । द्वांबिसति तीर्थकर होइ । कूट प्रकास धाम शिव जोइ । हुंडा दोष जानि सुराइ । जाय कूट  
पेण्डज कराइ । फुनि जिन थान अमरपति गयौ । जान्यौ जन्म सफल अब भयौ । जोनर कूट बंदना करैं ॥

## \* चौपाई \*

अंत मास इकसार । उर्जयंत  
परजोग प्रभु । रोध कीयौ जिनराय । लघु पंचक्षर कालमें सिद्धि क्षेत्र थितिपाइ । चैत असित शुभ आदि  
जै जै सुरनर खग सत्रकरैं ॥ बरनत लहूं न अंत ॥

स्वप्नमं सं विवगति परि हैं । सकल सिखर प्रणमैं जो कोई । तिस फल वरनत अंतन होइ ॥ \* सर्वैया \*  
 ऐसे सिद्ध क्षेत्रसु कर्म जोग पाइयेत होइ मन सुख जिन पूजा क्योंनैं कीजिए । गेह देह नेह धन जोवन  
 सकल इह चंचला समान छिनक एक मांहि छीजिए । रागदोष त्याग मन समभाव आनि उर संघ कौ  
 चलाइ बहु जनदान दीजिए । फेरिन मिलेगी दांव जांयगे नरक जब सिखर कूटवंदनिज भौ सुधारिलीजिए ।

\* दोहा \*

सिखर महातम बरनियौ ॥ लोहाचार्य विशेष । मन सुखउदधिसुकथन करि । सुफल जन्म निज लेख ।  
 इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेखुसंदाचल महात्म्ये भापायामन सुद्ध सांगरेण वरणनं २३ ॥

\* सर्वैया \*

सुख करन हार हरत दुख संकट के सेवत धरनेंद्र चिन्ह चीनेहैं । अस्वसेन तात मात बांमा नामा देवि  
 सुभ बाना री नगर मैं जन्म शुभ लीनौ है । सजल जलद तन वरन वरप सत आशु नव धनुष तन  
 ऊंचौ कहि दीनैहैं ॥ ऐसे पार्थनाथ मनसुख सिंधु सुख दायकर जुगजोरि कै नमस्कार कीनो है ॥

\* दाहा \*

ऐसे पारस नाथ प्रभु ॥ सेवत संकट जाय ॥ तिन गुनकथन चरित करि ॥ हिए हर्ष उपजाय ॥

\* चौपाई \*

जंबूदीप परधान । लखजोजन विस्तार बखान ॥ मध्य सुदर्शन मेर बिबेक ॥ उन्नत जे जन लाख सु  
 एक ॥ ताके दक्षिण क्षेत्र सु लसैं ॥ भरत नाम धनुषा कृत वसैं । तहां खंड छह सोभा देत । परम धर्म  
 सुख कारन हेत ॥ आरिज खंड मध्यमें सार ॥ आरज जन उपजैं सुख कार ॥ धर्म ध्यान ते साधन करैं ।

सिवरमणी रामा कौं बैरै । नाना देस बसैं बहु भांति । मानौ अमर लोक क्री पांति । जहां जाइ समोसरन  
 जिनेंद्र ॥ सेवत सुरनर खग धरणेंद्र । पुरपट्टन कर्वट सो भंग ॥ पेट गांव कहि लहूं न अंत । तामै कोसल  
 नाम सुदेस । इति भीति दुख होइ न लेस । बन उपवन सोभैं बहु पास । पंथिक छधिगतनधरैं आस ।  
 कुंवा बापिका निर्मल नीर । सरबिंदंग सोभैं बहुतीर । बारिज करि छादित सुखदाइ । पिए मिष्ट जल  
 जन हरषाय । पुष्प पराग मधुर शंकरै । मानौ देससुजस उबरै । तहां तरंगिनि शुचि जलधार । बहै  
 प्रभाव महासुखकार । तटनी तट मुनि ध्यान धराइ । निश्चलांग आतम लौ लाइ । श्रावक जन आवैं तिसपास ।  
 सुनैं धर्म करि चित्तहुलास । अधिक मुसोभा कही न जाइ । इंद्र जन्म चाहैं तहां आय । नगर विनीता सोभैं तहां ।  
 बरनन करत मोहि बुधि कहां । सजल पातिका च्यारौ वोर ॥ तिन तट नृत्य करैं शुभ मोर । पुष्प  
 बाटिका सोभा घनी ॥ सुमन जात बहु जातन गनी । तहां सरोवर विविधि प्रकार ॥ तिन तटतर बर  
 अति सुखकार । मुनि आगम होइ तिस थान ॥ केवल बांनी करैं बखान । सोपुरजन पूजन उा  
 हार । बस्त्राभूषण बहुत समार ॥ आइ अचिर पद धर्म जु सुनैं । जीवां जीव भेद हिए सुनैं ॥ च्यारिप्रकार  
 दांन कर सुखी । कोई न बदन पीतम भय दुखी ॥

\* सोरठा \*

सोभा अगम अपार बरनत ग्रन्थ बढ़े बहु । आंगे सुनि विस्तार ॥ कास्य मात्र कहि लीजिए ॥

\* सवैया \*

बत्रवाह भूपति नगर मांदि राज करैं बंस हँ इष्याक अति नीति सुखदाइ है । सुंदर सुतनु सुभ  
 छवि राजत है देवा उरु ग्रंथ कहिए भावनां सुभाई है । प्रभा करि नाम लिया पिया सिय उनहार तेई  
 दोन्यौं दंपति सु प्रीति उपजाई है । भोगत सुभोग बहु धर्म में लीन चित ऐसी राजपदवी सु पुन्य

जोग पाई है ॥

एकदेव अहमिंद्र पद आशु प्ररन तजि आइ । प्रभा करी के गर्भ मैं । थिति कीनी सुखदाइ ॥

\* दोहा \*

\* सारठा \*

प्ररन गर्भ प्रमान । सुदिन महरत शुभ धरी । प्रसव पुत्र गुणखानि ॥ मान अनंद कुमार इम ।

\* चालछन्द \*

आनन्द नाम सुर जायो । नृप देखि महासुख पायो ॥ हुति चंद कला समवाल । दिन दिन चाँडे सुख माल । अति तेज सुलक्षणधर । देखत सबजन दुखठार । बल वीर्य वभै शुभ देह । उपजावै अधिक सनेह । गुन बरनत पार न लहिए । बुधि अल्य कहौ किम कहिए । जेवन तन देखि छु तात । बहुते हिय मैं हरपात । अति सुंदर रति समनारि । व्याही आनन्द कुमार । क्रमसौ पद जनक को पायो ।

\* दोहा \*

मंडलेश पदवी लही । प्रख पुन्य नियोग । नैवें आउसैं छत्रपति । सुखकरि भोगें भोग ॥ चौपाई  
एकदिन सभा मध्य थिति राइ । स्वामी हित मंत्री सुखदाइ कहै सुनौ नृपमो वचसार । ऋन वसंत सब जन मनहार । नंदीसुर पूजा चित धरी । प्रख ऋत पातिग सब हरी । सुनिआनंद नृपति सानंद । जाय जिनंद निरखि पदचंद । सुद्ध द्रव्य बसुभाव समेत । पूजा करि बियो सुभ खेत ॥ छुनि नृप मन शंका इक भई । प्रतिमांघात उपल निरमई । रूप अचेतन क्यों सुखदेइ । संसैं नृप निज चित करेइ ॥ विपुल मतीगण धर तटजाय । निज शंशैं पूछैं नृपराइ । गणधर कहै सुनौ नृपभूप । जिनपूजा फल अदसुतरूप । जेने भाव करै इह जीव । तैसे फलको लहैं अतीव । अमशुख जावैं फलेदेइ । चेत न रहत



सरूप कहेइ । चिंतामन मनीचिंतत करै । सो जडत्व पदवी कौ धरै ॥ सुद्ध सरूप बिंब अवलोक । सुद्ध  
 भाव उपत्रै गत सोकर । सोवह शुद्धभाव परभाव । सुखउपजावन कारन चाव । बीत राग गुन गर्भित लक्ष  
 सो सुभाव आतम में बसै । सोई इहफलदेइ मनोक्ष । इहकारणह सबसुखजोग । छुनि राजा हिए संभंगई  
 निर्मलबुधि नृगति का भई । नमस्कार करि निजग्रहजाइ प्रतिदिन पूजा रात्रिहरषाय । रात्रिक्रियो बहुदिवस  
 नरेस । मस्तग देखे धवलजुकेस । निजमनमें जान्यौ इमंकटु । भयकंपते मानौ दुखेहत । जेष्टतनय सिखीनौ  
 राज । करण बिचार्यौ आतम काज । सागरदत्त तपोवनधरी नमस्कार करि बैठौ तीर । धर्म श्रवन करि दुबिधि  
 प्रकार । लख्यौ अथिरे सब जगसंसार । बहु नृप संग महाब्रतलेइ । तेरहबिधि चारित्रधरैइ । तपकरते आनंद  
 सुनीस । जेष्टमास पर्वतके सीश । बृषाकाल बृक्षतल रहै । अचल अंग सुभध्यान सुगहै । सीतसमै तटनीतट  
 जाय । जोग धरै निज चित्त लगाय ॥ रत्न त्रयजुत द्वैदस भेद । धर्म धरै पाले विनखेद । द्वादस बिधि  
 अनुप्रक्षा भाइ । तप द्वादस बिधि करै सुभाय । खोडस कारन करै बिचार ॥ तीर्थकर पदवी दातार  
 ऊंच गीत बांध्यौ सुख कंद । इस बिधि तपै मुनी आनंद । पूरुदिना सुक्षर बनाइ ॥ निश्चल ध्यान  
 धर्यौ मनलाइ । पूर्व सहोदर चर रिपु एक । ससमभू दुख सख्यौ अनेक । सोचर बाहन उपज्यौ आय ।  
 पंचानन की देह धराय । देखि मुनी कोण्यो बिकराल । लाल नेत्र सुखबक जुकाल ॥ आइ अचानक ग्रीवा  
 गही । सब उपसर्ग सख्यौ मुनिसही ॥ करि प्रनाम निहचल धरधीर । निर्मल गुन साधी निजसार ॥  
 प्रान तजे सुभ भाव समेत । आनंत स्वर्ग परम सुख हेत ॥ उपजत अंतर्महस्त सार । जोवन तनसुभ  
 लक्षण धार । बीस उदधि परमाजु प्रमान । सुख सागर में मगन बखानि । बीस यष्यगत सासोसास ॥  
 सुरभि सहत लेखै गुनरास । बिसति सहस बर्ष जबजाहिं । मानसीकआहार कराहिं । पंचम नरक अवाधि

पर्याप्त । करै विक्रिया तहां लग जान । देवनित्र कमल दिनराइ । तिनसहै भोग करै सुखदाइ । इंद्रनांम अहमिंद्र उचार । बिबिधि प्रकार करै सुखसार । आयु मास पट द्रव्य जुलेख । जिनवर पूजा करै त्रिविक । पंचानन मरि नरकहि गर्यो । सुनि उपसर्ग महादुख लयो ॥ सुनि श्रणिक अहमिंद्र नरेम । जिनथानक तीर्थकर देस ।

\* दोहा \*

सो बरनन मनलाइ कै । सुनत हर्ष उपजाइ ॥ जिनकी धुति पूजा करै । सुरपद सिवपद पाइ ॥

\* भोती दांम छंद \*

सुंदर इह जंबूदीप मनोहरं । परम सैल सुहटक भासुरं ॥ जामदिसाता सुक्षेत्र विराजितं । भरतखंड सुषट प्रविराजितं । सरप्रमानं मलेच्छ जनाव्रतं । प्रथम आरिज आरिज आव्रतं । लसचंदेस अनेक जनाकरं । जिन बिहार पवित्र सुमाकरं ।

\* चौपाई \*

तहां सुकासी देस अनूप है । सकल मालव अधिक सरूपहै ॥ पुर पुनीति बनारसि सोहती । धन सुध्यान सजन मोहती ।

\* दोहा \*

अशसेन नांभां नृपति । राजकरै सुखदाइ । बामीदेवी नागियुत । अधिक प्रीति उपजाइ ॥ शक्राग्या धनपति तहां । नगर आयु सुभकीन ॥ पंचार्च्य करै जहां ॥ तीनलोक सुखलिन ॥ अशितद्वैज वैमालकी । नखत विशाषा जानि । सो अहमिंद्र चरगर्भथिवि । संपुट सीपसमानं ॥ मुक्ता जिमतिष्ट गर्भ अतरीख जिनराइ ॥ कुभव्यौम ज्यौं कुंभमै । लखिए व्यौम सुभाष ॥ पछिम निशि पोडस सुपन । लखि फुनि पति ढिगजाय ॥ फल सुनि मन हरपत भई । बांभां अंगनमाय ॥ \* चौपाई \*

देवी सेवकरै जिन गाइ । अति आनंद महा सुखपाइ ॥ नीतैहै नव मास अनंद । जन्म महोछव सुनि

सुखकंद । पौष मास सुभ अलिपक्ष धारि । एकादसमी तिथि कहि सार । बांमां देवी दिसि पूरव जांन ॥  
उदयादि अश्वसेन बर्षान ॥

\* पट्टड़ी छंद \*

मति श्रुतकिरण बलि अवधि भास । जिनवर सुभानु तम मांह नांस । उदित त्रिभुवन परकास कर्न  
सतइंद्र आइ जिसनमत चरन । आयौ तब सचि पाति हरषाय । जिनवर लै सुर गिरि सिखर जाय । मंजन  
पूजा बिधि सकल साधि । पारस संज्ञा कहिजिन अराधि । फुनि ल्याए कहै करि अंब देइ । तांडव नट  
मधवा तवइ । सुर सेवन ताजि निज थान जाइ । ऐसे शुभ जोग जुसुख कराइ ॥ दंपति लखि श्रीजिन  
तन मनोग । इक सहस अधिक बसु चिन्ह जोग । उत्सव पुरमै बहुभांति कीन । जाचिग जन मन बंछित  
सु दीन ।

\* चौपाई \*

बाल अवस्था श्री जिन पास । नरनारी जिन पूरै आस । लीला करै मंजन मनहरै । सब जन देखि चरन  
प्रसु धरै । सुर नारी जिन अकै जेइ । जैजै करि माता करदेइ । सुर अपनी वह सक्ति उपाइ । श्री  
जिन हिए आनंद बढ़ाइ । करै अनेक विविधि बिधि ज्ञान । बाल पन क्रीड़ा इम जांनि । आगे जिन  
कुमार पदधारि । और कथा सुनिए सुखकार । वह पंचानन पंचम नर्क । जासहे दुख रहित जुतर्क । सत्रह  
सागर आयु महान । भक्ति निकरि तिर्यच बखान । जलध तीन बीते इसरूप । महीपाल पुर हूवो भूप ।  
महीपाल अभिधान जुगही । जिन जननी को जंनक जुसही । रानी मृत्य देखि दुख कियो । दुर्मति  
तपसी ब्रत गहिलियो । पंचानल साथत सी आइ । नगर बन शिवन तिह थाय । सुर गज चढ़ि जिन बनमै  
गए । क्रीड़ा करत हर्ष उरभए । करि बिहार ब्रह आवत जैव । पंथ मध्य तपसी लखितवै । कोपयुक्त इम  
वचउच्चरै । अहो कुमार अति मान जु धरै । मेरी सुता पुत्र इहसार । मोप्रमाण क्योंनारी धार । इमकहि करि

कुठार लै सोइ । दारु खंड नै जिनवर जोइ ॥ कहै पाश सुनि तपसी धीर । इह जुकाठ ताकौं मति चीर ॥  
 जुगल नाग यामैं सुख करैं । सो ततकाल दुःख लाहि मरैं । इह सुनि कहै बड़े सुज्ञान । ब्रह्मा विष्णु रुद्र  
 तुम जान । ऐसो बचन कहि चीरन लाग । खंड भयौ तन उरथ अभाग । जिनवर देखि दया मन लाइ ।  
 पंचसुपद तिन श्रवन सुनाय । तिस प्रभावजुग ते भुजगेंद्र । पदमावति हूये धरनेंद्र । धन्यभाग उन सर्पनसार ।  
 अंत समैं जिन दर्श निहार । लज्जित है तपकरि बुतप्रान । जोतिग देव भयौ सोजान । प्रभु निज सोथ  
 आइ सुख करैं । पंचअणुव्रत हिए में धरैं । जिन तन स्वगद रहत बखान ॥ बाय पित कफ को पनठान ।  
 इष्ट वियोग न कबहू होइ । और अनिष्ट संजोग न जोइ । \* दोहा \*  
 तीन लोक पति जगत प्रभू । जो सोभायुन युक्त । सो पूरबवत जानि फुनि । कहे दोष पुन रुक्त ॥

\* चौपाई \*

आति सुख करि वासुखहु गए । त्रिशत सव्द जिनेसुर भए । तब नृप एक अजोध्या भूप । संज्ञा जिस  
 जैशेन अन्नूप । भक्ति प्रीति जिनकी हियधारि । भेट बस्तु हयभेजिसार । आइ दूत अस्तुतिबहु करी ॥  
 भेट बस्तु प्रभू आगे धरी । श्री जिन वृद्धैं अवधि सुथान । दूतजोरकर करैं बखान । प्रथम आदि जिन  
 बरनन कियौ । मुक्ति गमन बिबरन कहिदियौ । सुनि पारस प्रभु प्रशमन उपाय । मानुप भव इह यौहीं  
 जाय ॥ ए दुख दाई है सबभोग ॥ आतम काज करन अब जोग । प्रभू मनमें इह भावन भाइ ॥  
 लौकिकदेव तव आय ध्याय ॥ धुति बहु बिधि करि निजपुर गए ॥ विमल सिक्का ल्यावत भए ॥  
 इंद्रचढ़ाय सजिया जिन जबैं । अथनाम बनपहुंचे तबैं ॥ जात रूप धरि जिनवर देह । इंद्रनल माणि  
 तेज सु एह । दुबिधि परिग्रह तजि तिसिबार ॥ नमः सिद्धेभ्य सुखउच्चार । पंचसुष्टिक चलोचन करैं ॥

पंचमहाव्रत दिदृ करधरै ।

इह धीरज अब लोइ । तीन सतक नृप छत्रपति । व्रत धारथौ हूँ सोय । श्री जिनपद परनाम करि ॥

\* सोरठा \*

\* दोहा \*

पोड कृष्ण एकादसी । प्रथम पहर शुभवार । कंजाशन श्री पार्श्व प्रभु लीन आतमा सार । शंक्र  
क्षीर निधि जाइकै । कच प्रवाह करि लेइ । निज नियोग कल्यानकर । गमन सुथान करेइ ॥

\* अडिल \*

बेला करि उपवास देह थिति कारनै । ईर्यापंथ बिलोकि गमन करि पारनै । गुल्म भेट पुर जाय  
नृपति ग्रह अभिमुखे । ब्रह्मदत्त बहुभाग भूपति जिनवर लेखे ॥ \* दोहा \*  
सन्मुख हूँ करजोरि नमि । अस्तुति करै हरषाई । नौधा भक्ति सुगुन सहित । पडि गाहे जिनराइ ।

\* सोरठा \*

प्राशुक लै आहार । अथै निछे सुख उच्चरै । सुरगन हर्ष अपार । पंचाचर्य तहां करै ॥ चौपाई  
गहन आइ लागे निजध्यान । महा घोर तप तपै महान । बन आहिछत नगर तट एक । लता  
बृक्ष नग सहन अनेक । तहां पार्श्व प्रभु अबिचल अंग । कायोत्सर्ग रहित सब संग । धरथौ ध्यान  
आतम रसलीन । कर्म करन बैरी दलहीन । कारन कल देस इक भयो । सो सुनिए ग्रंथन बरनयो ।  
पूर्वक मठव्रत तपकर एव । संवर नाम जोतिषी देव ॥ तिस विमान बिहस्त बनआय । जिनपर  
छत्रोपम ठहराय । अवधि बिलोकि कोप अति भयो ॥ लालनेत्र करि उपसर्ग ठयो । महाबात  
झंझा झंक करै ॥ बृष महान गजसे ठेरे । घटा घोर घन गर्जत बहु ॥ चपल चलत चला चला

चला चहू । मूसल प्रमांन धार जल धार ॥ बरषावैँ उपलादिक भार । सरपस्थांम तन बरन दिखंत ।  
लोपन लालजीभ ललकंत । अति फुंकार फुंकारैँ झाल ॥ निकल महा अगनि समलाल । भस्म होय  
वन बेलिं बिहंग ॥ निहचल हूँ तहां श्री जिन अंग । सिंघ स्याल सूकर विकराल । वानर व्याघ्र गजानन  
भाल ॥ मार मार करि शब्द पूचण्ड । मत मतंग सोर कर चंड । और अनेक वैक्रिय धार । कर उपसर्ग  
महाडुखकार । आसन तव कंथ्यो धरनेंद्र ॥ तुरन आइ शिरनाय जिनेंद्र ॥ \* दोहा \*

\* चौपाई \*

निर्विकल्प पूसू मन भयो । सप्तम गुण तिथि धारि । चेतन गुण निर्मल करन ॥ धर्म शुक्ल  
सुविचार ॥  
पदमावती पूसूतन सार । असन करण छत्र सुधारि । संबरदेव भज्यो भयमांनि । नरकबन्धकरि अति दुख  
खानि ॥

\* दोहा \*

क्षायक श्रेणी पूसू चढ़े । मनधरि अति बैराग । गुनथानक चढ़ि वार हूँ । आतम गुन अनुराग ।  
ब्यारि घातिया नाश करि । पूगढ्यो केवल ग्यांन । पारस जिन छद्मस्थ रहि । अष्ट एक पगमांन ।  
पौष कृष्ण एकादसी ॥ इन्द्रादिक सब आय । कल्यानक पूजाकरी । हिय भैँ हर्षउपाइ । समोसरन  
धनपति सुरचि । भूमि सुकर समसार । श्री अंडप द्वादश सभा । हिए भक्ति अवधारि । सर्वसंघ षोडस  
सहस । गणधर दस गुणवन्त । ब्यारि ग्यांनधारी सबै । श्री जिन भक्ति धांत । \* मवैया \*  
ग्यांन के प्रकास लोका लोक कौ प्रकास भयो चेतन सुहृग ग्यांन सत्तासुख धारि हूँ । आठ प्रात  
हार्य बिराजमांन आठौंजांम ॥ छयालीस सुगुन शुद्ध काया अविहारी हूँ । देश देश धर्म उपदेश  
देत जिनराइ सुचि निजगुन पर्याय के विचारी हूँ । ऐसो अरहन्त पद परम पुनीति जग सेवो भव्य

जीवतुमैं विनती हमारी हैं ॥

\* दोहा \*

सेष आय इकमास जब । रही पार्श्व जिनराइ । तब सुमेरुगिर शिखरैपै । प्रभव कूटपर आइ ॥ जोग  
ध्यान करि सिव गए । भए निरंजन सिद्ध । निज अनुभूति अनंत जुत । लही आपनी रिद्धि । और  
कोडि इक सुनि तहां । पैतालीस खुलाव । सहस सात सत सात देस ॥ मुक्ति गए श्रुतभाष ॥ प्रभव  
कूट सोहै महत । जो बंदै मनधारि ॥ नरक पंखु गति नासिकै ॥ सुर नर गति संचार ॥ चौपाई  
आगे एक कथा सुनि राय । प्रभासेन नजि संघ चलाइ ॥ इसही आरिज खंड मझारि । अगर देस  
देसनि शिरदार ॥ गंधपुरी नगरी तहं एक । बसै पूजा सब सहिन बिवेक ॥ प्रभासेन भूपतिवडमाग ।  
जैन धर्म में अति अनुराग ॥ शांतिजुसेना है पट नार । शील सुलक्षण रूप अपार ॥ दंपति भोगें भोग  
महंत । जात न जान्यौ काल अनंत ॥ तिनक सुत उपैजं मरजाइ ॥ इह दुख नर नारी अधिकाइ ॥  
एकदिन बन क्रीडा कौं गये । सोम सेनि ध्यांनी लखिलये ॥ \* दोहा \*

करजुग जोर नमोस्तु करि धर्म बृद्धि सुनि देह । पुरन कियो नृपकौं । सुनि सुनि बैन कहेव । जो  
ठुम जात्रा शिखर की । करो नारि नरदेइ । बिंब प्रतिष्ठारिचहुतहै । तौ उत्तम सुत होइ ॥ कोट प्रोषधी  
व्रत फल । ठुम जानौं भवि लोइ । एक कूट बंदन करत मन बंछित सुख होइ ॥ इह सुनि कै आयौ नृप  
गेह । जात्रा करन धस्यौ हिएनेह । देशदेश के भव्य बुलाइ ॥ चौबिधि संघ चलयौ ले राइ । पूजा दांन  
करत तहंगए । शिखर सुमेर निहारत भए ॥ पार्श्वनाथ प्रतिबिंब भराइ ॥ करि प्रतिष्ठा हिए हरषाय ॥  
और कूट सब पूजन कियो । दांन आहारदिक नृपहि दियो ॥ सबै पुन्य कियो बहु तहां । कुनि आयो जिन  
मंदिर जहां । राज करत बीते दिन स्वल्प । भावसेन सुत सुगुन अनल्प । जन्मोत्सवकीनो भूपाल । जाचिग जन

सब किए निहाल । कम कम वृद्ध भयो सुतसार । कीनौ पानिग्रहन बिचार । कारन पाय भयो वैराग । अवकीजे आतम वैराग । इह संसार असार महंत । अमत भ्रमत नहीं पायो अंत \* दोहा \*

राजा सुत कौ राजदे । श्रुत सागर सिरनाइ । पंच महाव्रत आदरै । यसैं कर्म नसाय । तपकरि प्रभव सुकूट पै प्रजासेन मुनिराज ॥ और अनेक मुनीश जुत कीनौ आतम काज । जो नर नारी भावसौं ॥ जात्रा करै नरेस मन बंछित फल पाइ । सिवलहै न शसैं लेश लौहाचार्य आरज गुरु । कीनौं सिखराविलास । भाषा मनसुख सिंधु कहि ॥ पूगी जिन मन आस

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहात्मसुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणनं प्रभव कूटपैसे श्रीपारश्वनाथ मोज्जगमन २४ ॥

### \* सर्वथा \*

सुमति सदनभव कदन मदन हर सिद्धार्थ जनक सुहाटक वरनहै । त्रसला सुमात गात उन्नतधनुष सात वर्ष बहतारि सु थिति जु धरन हैं । पंचानन चिन्ह पर छंडलपुरी बिष्यात एसो महावीर सिवसंपति करन है ॥ मनसुख उदधि निहार काल पंचम में और कोई नाहि जिन वरन सन है ॥ \* दोहा \*

सन्मति सन्मति देत हैं । परम परम रसलीन । सरम सरम अनुभूति जुत । धर्म सुधर्म प्रबीन । महावीर के चरित को । अल्प कथन मन धारि । सुनि श्रेनिक गोतम कहैं । मन बंछित दानार । \* चौपाई \*

छत्राकार नगर मनधारि । बसैं नारिनरंसव सुखकार । धन धान्यादिक सोमालसैं । अतिगुणवांनसुजनतहं बसैं । सुर सम मनुष रूप अति धरैं । बनितासुर बनता दुति हरैं ॥ धरि धरि मंगल गीत विलास बिष्टु



तदत नारी मुखदास । ऐसी सोभा नगर वखान । बरनत श्रम उपजै मन आनि ॥ नैद सुबर्छेन तहां को भूप ॥ सुंदर तन अति अधिक सरूप । धर्म बुद्धि धारक धर्मग्य । गुनिजनगुन जानन बहुतरग्य ॥ दर्शन ज्ञान चरित्र सुधार । निहचै गुन निज हिणै विचार ॥ जाचिग जन सुहुम सम जानि ॥ जिन पूजा बृत्त अति हित आनि । प्रही कर्म षट् साधन करै । बहु भिवेक पटना बिस्तै । वीरवती रानजिउत सार । सुंदर सुगुन सुलक्षण धार ॥ सुख मयंकतै अति सोभाय । बरनत बहुत कथा बढिजाय ॥ तिन के तनुज जन्म इक लियौ ॥ बंछित जनम न बंछिन दयौ ॥ सुभ महूरत सुभ लगन निहारि । अश्व नंद अभिधान सुवारि । क्रम क्रम बालकृमार सुभयौ ॥ प्रग्या पूर्वल सुगुन जुनथयौ । इकदिन पौष्टिल गुर ढिग जाइ ॥ धर्म सुन्यौ अति हित मनलाइ । आगम अर्थ सुगुन मन जानि । निरै करि परकास्यौ ग्यान प्रशम भाव हिणै लिये । परभत्र भाव सकळ नजिदिये । ग्रंथ त्यागि जिन दिक्षा लई ॥ तप करि अति निर्मल बुधिभई । आराधनां ध्यान धरि लेइ । कृत कर्मनि जलंजुल देइ ॥ घोर वीरतप धीरज धरै ॥ निज आतम गुन निर्मल करै । अनसन अमोदर्य बिहिरंग । षट् पूधार तप करत अमंग ॥ प्राय श्विन चिनय मन लाइ । अभ्यंतर तप करत सुभाइ । षोडस भावन भावै सार । निहचै अरविबहार विचार तीर्थकर सुनांम को बंध । ऊंच गीत कौ कियौ पूर्वंध ॥ सल्लेखन बृत्त निज मन धरै । अंत सभै सुभभावजु करै ॥ सोलम स्वर्ग अच्युत अभिगंम । निर्जर पति पद लहि सुखखाम ॥ पुष्यौतर विमान मन हरै । अंतमहूर्त तरुनाधरै । द्वाविंशति सागर मित सही । लेस्या शुक्ल सहित तहां कही ॥ बाईस पक्ष वितीह जैवै । सुगभिनस्वास लेइ शुभजैवै । ग्याह अगुन बरस अंतैरै । मानसक भोजन आवै ॥ सदा मनः प्रवीचार सुभोग । भोगै भोग आपने जोग ॥ अष्टम अब निलग अवाधि निहोरि ॥ काया

वैक्रियां तहाँ लगधारि । तीन हस्त उन्नत तनलसै । इसप्रकार सुम सुरपुर बसै । भोगत भोग काल बहु  
 बीत । सुखसागर मैमगन सुरीत । मास एक षट आद्य प्रमान । माला मूर्धित लखि जिय जान । विना  
 सीक निज तन लखि लियो । जिन पूजा करनै चित दियो । सुम सुभाव चित अति बैराग । भोग  
 प्रमाण किए सब त्याग ॥  
 वरनन कर जिन अवतारकौ । सुनौ मगधपतिईस ॥ अंतम प्रगट जिनेंद्र प्रभू । गुनगण नमि सीस ।

\* दोहा \*

जंबूदीप मनोहर सार । भरतक्षेत्र इहअति सुखकार । आरजखंड विदर्भ सुदेस । बसै सुजन जन उत्तिम  
 देस । कुंडलपुर नगरी इक बसै । अति अद्भुत सुंदरतालसै । सिद्धारथ नामां भूपती । राज करै राजा सम  
 कितो ॥ त्रमलापट रांनी मनहार । गुन गर्भित सुम लक्षण धार । मनईसित नारीपति अदा । इंद्रअवधि  
 करि जान्यौ तदा ।

\* चौपाई \*

\* दोहा \*

सिद्धारथ नृप गेह लुम । जाउ धनद मनलाइ । नगरी रचि मणि विष्टि करि । शक कहै इरषाय ॥  
 आज्ञा निज सिर धार । आइ नगर रचना करी । कोटि सार्द्धशतसार । दिन प्रति मणि वरपाकरै ॥

\* सोरठा \*

रसमिति मास वितीतियो । मंगल चलय सुगान । सित अषाढ खधी स्वस्वनि । अघानक्षत्र बखान ॥  
 पश्चिम निसि षोडस सुपन ॥ लखे महा सुखकार । गजमुख प्रविसत अंत में सोच्युतेंद्र थिति धार ॥  
 \* दोहा \*

## \* चौपाई \*

प्रात सूर्य शुभ शब्द अपार । जैजै ख बहु जनउच्चार । तिन करि जिन माता प्रति बोध । उठि अंजन करि काया सौधि । लई सहचारी संभि अनेक । मृदुबानी युत हिए विवेक । पति के निकट जाइ हरषाइ । अर्द्धासन थिति दीनों राइ करि । आलाप परस्पर जँव । आगम कारन पूछो तँव । पहर एक एक निशि अंत प्रमान । षोडस सुपन लखे सुखदान । तिनके फल जंपो मनधार । सुनत श्रवन हित तन मन हार । अवाधि चक्षु सिद्धार्थ भृगु । लखि वरने फल अधिक अनूप । तीनलोक मंगल सुखकरन । सेवै आइ सुरासुर चरन आतम उपजै अति सुखकार । आतम काज करि सिवपद धारि । सुनि तृशला देवी सुखपाइ ॥ निज गृह गमन कियो सुखदाइ । शुभमन सार्पित बुव समेत । आए गर्भ कल्यान कहत । थापे सिंघ पीठ दिपती । करि अभिषेक हरप सुरपती बस्त्राभरण भेट बहु देइ । निज निज थांनक गमन करेइ ॥ \* दोहा \*

सित अषाढ़ खष्टी शुदिन ॥ ऋषि जुज्जखानाम । गर्भ कल्याणक आईकें ॥ कीनों पहिले थांम ॥

## \* चौपाई \*

श्रीही धृति देवी मनलाइ । कीरति बुधलक्ष्मी हरषाइ । गर्भ सोधना सेवा करै । श्रीजिन भक्ति हिए मै धरै । षटपंचास कुमारी सुरी । सेवाकरन रहै आतुरी । अन्य देव बनिता तहं रहै । बहु रस काव्य पहेली कहै ।

## \* सवैया \*

केई सुचि जल ल्याइ मंजन करै सुभाइ केई खड़ी नाना विधि अस लिए करमै । केई बहु विधि सुं करत विविधि रूप केई सु सुमन लाइ सेज रहै सरमै । केई अंग रक्षा करै सुकारि दिखवै केई एक नागबेलि देइ हार हिए हर भै । केई काव्य रसकी पहेली पूछै नृत्यकरि केई गुन गावै सुसर्म जन दे घर मै ॥

\* दोहा \*

इस विधि देवी सेवकरि ॥ जिनमाता हरपाय । मास जुनव बीते तहां । जन्मोत्सव सुनि गय ॥ सित  
 त्रयोदशी चैतकी जन्मे श्री जिनराज । सौ धर्म साग मनकर । लेकै सकल समाज ॥ \* चौपाई \*  
 चतुर निकाय देव पति युक्त । आए जैजै स्व सुख मुक्त । सची ल्याय जिन पति करेदेइ । गज चढाय  
 निज हरष धरेइ ॥ सुरगिर जाइ सची पति जैवें ॥ क्षीरोदिक जल ल्याए तवें ॥ सहस एकवसु कलस मनोग  
 श्री जिन राज नह्नके जोग । करि अभिषेक पूजि जिनचर्न । भव अनेक पातिग के हर्न । फुनि आए  
 कुंडलपुर बीच । जग मग पुर सुर मुकट मरीच । जिन जननी के अके देइ । तांडव नृत्य सु सक करेइ ।  
 नगर महोत्सव तब अति भयो । सुरपति जब निज पुरमें गयो । सिद्धारथ नृप हरषंत । उत्सव करि कहूं लहुं  
 न अंत । जिन बालक पद क्रीडाकरैं । नरनारी जनमन अति हें ॥ सरभऊ भेष धरैं मनलाइ । केकी कोकश  
 रूप बनाइ । नृत्य ततालव धुनिधार । जिन गुन गान सुमुख उचार ॥ पावअटपटे जिन भूधरैं । घुटुवन  
 चलत सकल मनहरैं । गले माल मुक्ता फल लसैं । कटि करिधनी कमरशुभ कसैं ॥ हीराकनी जड़त किंकिनी ।  
 रुण झुण चरण होय स्वधनी । करपल्लव मैं मूंदरी देइ । हिए हरप जन मन हर लेइ ॥ सुर  
 बालापन भेष बनाय ॥ जिनवरसंग केलि सुखदाय ॥ काव्य कला अरु श्लोक बखान । दृष्ट कूलवहु विधिमन  
 आन । अंतर्हृपन छंद उचरैं । बहुरि लायका बहुविस्तरैं ॥ सुर सुनिदर्ष हिएमैं धरैं । तदनुकूल है सेवाकरैं ॥  
 दुतिय इंदु जिम कला प्रकास । कम कम जिनतन बढै हुलास ॥ भई कुमार अवस्था जवैं । पंच अनु  
 द्रत धारे तवैं ॥ सुरभिलि अथरूप अवधार ॥ जिन चढाय बहु करैं विहार । चपल चाल छिन छिनक्रम  
 वहे । जिम जिनमन तिम हय गतिगहैं । फुनि सुरगज संगार समेत । देखत सब जनमन हरलेत ॥

बस्त्राभूषण करि सोभत । कर असवार सुजिन हरषत । वनउपवन त्रिचै मनलाइ । इस प्रकार सुर सेव कराइ । जिन कीडा जो कै मनोग । सो को कवि पटु बरनन जोग \* दोहा \*

सुरुशुक्र शक्र नकहिसकै । गण धर लहनपार । मंद बुद्धि अतिज्ञमै । किम गुरु बरनौ सार । जोगन अतिमय मत गज ढाहन समर्थहीन । सोनग संसंक जुसि । सुबली किमढाहै अति हीन ॥ बरस तीस इस विधि प्रभु । बालक्रीड सुखेलेइ । मति ज्ञान क्षयो पश महि । प्रगट पूर्व भव जोइ ।

\* चौपाई \*

। लखि पूरव भव श्री जिनगज । चित विरक्त परनम समाज । छिनभंगुर जान्यौ संसार । अंजुलजल विनशत नहिं चार । अथिर देखियत सब जगरीति । निज आतम सौं करिण प्रीति ॥ इह जवलनि चिन्है जिनगइ । लौकिक सुख तवही आय । कसु कलितकर अस्तुति कै । बारबार बरनन में परै होजिन जग तुम तारनहार । तुम बिन कोइह कै विचार । धर्म जिहाज प्रकाशन वीर । जग जल निधि तुम तारनतीर ॥ तुमबिनजगत जीव दुखलहै । लौकिक सुख थुति इम कहै ॥ \* सोरठा \* फुनि निज थानक जाइ । ब्रह्मलोक बासी अमर । बरवा कै सुमाइ ॥ द्रव्य छहौनिणै नियत ॥

\* चौपाई \*

शक्र इंद्र प्रभु सिव का ल्याइ । प्रथम युक्त जिन राज चढाइ ॥ गण खंडवन श्री जिन देव । नर खग करत सुरासुर गेह । परिगहपरि हरवीर जिनंद ॥ अवहरन कर्म अरि फंद । नमः सिद्धेभ्यः आननयो ॥ पंचमहा व्रत जिन गहिलियौ । पंच सुष्टिक चलौवन धार । निज गुन ध्यान लगे सुविचार । सुरपति तप कल्यांक कियौ । अस्तुति करि बहु हरषित हियौ ॥ कचमणि भाजन धरि सुरगय । क्षीरदधि परवाह

\* दोहा \*

कराइ ॥ निज पदधान जाइ सुखकरै । जिन धृजा बहु विधि विस्तरै ।

शिखर

मागशिर दसमी कृशन शतहस्त रिषि शशिचार नगन दिगंबर रूप प्रभू । लियौ महातप सार ॥ व्रत  
बेला जिन राज कर । अशन ग्रहन के हेत ॥ कुंडलपुर परसेस कर । ईर्यापथ चितदेत \* चौपाई\*  
कुंडल नांमां नृप लाखि महावरि । भक्ति सहित है आयौ तीर ॥ तिष्ठ तिष्ठ प्रभू प्रसुक अन्न । जल  
प्रासुक तुम जगमैं धन्न । चरन पूछाल अरच बहुदर्च । जन्म सुफल निज जान्यौ सर्व ॥ क्षीर भक्ति अक्षय  
निधि चवै ॥ जै जै आरव बहु सुर रवै । पंचाचर्य अमर मनलाइ । नृप ग्रह करै अधिक हरपाथ । दुगुन  
साधै षड रत्न सुइष्ट । माहिमां कहिकहि करै सुबिष्ट ।

\* दोहा \*

जिन आहार करि बन गए आतम गुण मनधारि । निश्चलांग करि ध्यान धरि । परम प्रीति सुखकार ॥

\* चौपाई \*

धर्म ध्यान मन करै विचार । विविधि भांति तप तपै सुचार । मन पर्यै उपज्यौ तत्काल । हीन भई भव  
भृमन कुमाल । दर्शन ज्ञान चरित्र विशेष । सब दूपन तजि कर प्रति लेख । घोरबीर चर्या तप करै । माहा  
बरपातै उच्चरै । सत्माति धरी हिये प्रसुधार । सभ्मति नांम कहै संसार । दिन दिन बढ़ती पदव जोइ । बद्ध  
मांन कहते सब लोइ ।

\* दोहा \*

सब जिनैद्र के अन्त मैं । जनमे तीस्य नाथ । यातैं धर्म जनेस सुनि जपैं जानि शिवनाथ ।  
द्वादस वर्ष प्रमांन प्रसु । रहे छद्मस्थ अखण्ड । फुनि केवल ज्ञानी भए । तीन भुवन मातंड । आप  
सुरा सुनरंपसु । विपुलाचल बनथान । दशमी सित अषाढ़ शुभ । कीनौ ज्ञान कल्यांन । सर्वसंघ चौदह

सहस्रः। गणधर ग्यारह जाँनि । विद्यमान सो तीर्थ पति । बद्धमान अभिधाम । आयुषा को अन्त लहि ।  
यही शैल के शीस । बिपुल कूटपर ध्यान धर । होइ मुक्ति के ईस ॥ \* सवैया \*

एक निनराज शिवथान मन बचन काय भाव सेती जात्राकर शिवपद लहै है । शिषर सुमेर वीश  
जिन शिवपद लह्यौ औरहू अशख मुनि सुस्वभाव गहै है । ऐसो क्षेत्र न कतिर्यचगति क्यों न नरों  
जायतेई जीवजे अचल पद वहै है । बिना पूर्व पुन्य ऐसे क्षेत्र में न जाइ जीव मनसुब सिंधु ध्रुव  
जाँनि ऐसै कहै है ॥ \* दोहा \*

इह विधि शिषर विलाश की । रचना सुनि मग देस । करि प्रनाम निज ग्रहगयो । संसँख्यो न लेस ।  
कल्याणक चौबीस जिन । बरन्यो शिषरबिलास । भाव सहित जात्रा करै । लहै मुक्ति विधि नाश ।  
भाषा शिषर सुमेर की । सुनै निरंतर सोय । नरपद सुस्पद सौँ लहै । मन बँछित फल होइ ॥ चौपाई  
मूल ग्रंथ करता महाबीर । फुनि गोतम श्रेनिकतै हितधीर । ग्रन्थकार तदनुतर जाँन । निजमन चितदे  
सुनौ सुजान । काष्टा संघ जैन आमनाय । मथुरा मछ भव्य सुखदाय । पुष्करगण गुरु मूल बखान ।

लौहाचारिज कृपा निधान । तिनके पट बहुभए जे जती । है निरग्रंथ भए सिवपती । महीचन्द गुरु  
उपजे संत । तिनको पट माहा गुनवन्त । दीपचंद फुनि भए गुनज्ञ । सकल कला जल निधितज्ञ ।  
तिनके पट भटारक एक ॥ विदित भए जग सुगुन अनेक । इंद्र प्रस्थ पद पदवी धार । नाम गुलाल  
कीर्ति सुखकार । तिनके शिष्य ब्रह्म व्रतवान । है संतोष जलधि अभिधान । सिष्ट भिष्ट वादी गुनवंत ।  
सबविद्या निधि महत महंत । सकल शास्त्र पाठि सुखधार । भविजन धर्म प्रकासन हार । जथानाम

शिखर

\*१८३\*

तैं सो गुन लियो । साम्यभाव अमृत रसपीए ॥ तिनके सिष्य अल्पधी धार । मनसुख सिध संग्या  
विस्तार । तिन इह सिखरमहातम ग्रन्थ । भाषा कियो जानि सिवपंथ ॥ \* दोहा \*

सब्दकोश अरुन्याय के । तर्क छंद लंकार । ध्यंमल काब्य प्रबंध श्रुति । पढ्यो न एकोसार । अक्षर मात्र  
सब्द पद । अंश बंध जो होइ । पढ़ो सुनौं तुम शुद्ध करै । दोश न दीजो कोय । धर्म ध्यान साधन  
निमत । भव्य जीव हित जानि । सिखरमाहातम भाषा कियो । नहि बिद्या अभिमान ॥ बांनवेद शसिगये ।  
विक्रमार्क तुम जान । अस्व निशित दशमी सु गुरु । ग्रंथ समापत ठान । भू रंवि शशि सुमेर सम आयु  
ग्रंथ की होइ ॥ पढ़ै पढ़ावै सुनहिं जे । सिवपद पावै सोय ॥

इतिश्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेसुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सांगरेण वरणनं महावीर चरित्र संपूर्ण ॥२५॥  
श्री रस्तु कल्याणमस्तु शुभं भूयात् । बांचै पढ़ै त्यानै मंगल दाता शुभ होइ । संपूर्ण लिख्यौं भित्ती  
फागण शुक्ला ३ । सम्बत १९४१ । का ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥